

राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली



अमृतलाल नागर

मूल्य सात रुपये (7 00)



राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, से पहली बार प्रकाशित 1970

रूपाभ प्रिंटर्स, शाहदरा दिल्ली, में मुद्रित

BHOOKH (Novel) by Amrit Lal Nagar

भूमिका

आज से इक्कहत्तर वर्ष पहले सन १८९९ १९०० ई० यानी संवत् १९५६ वि० में राजस्थान के अकाल ने भी जनमानस को उसी तरह से झिझोड़ा था जैसे सन '४३ के बंग दुर्भिक्ष ने। इस दुर्भिक्ष ने जिस प्रकार अनेक साहित्यिकों और कलाकारों की सर्जनात्मक प्रतिभा को प्रभावित किया था उसी प्रकार राजस्थान का दुर्भिक्ष भी साहित्य पर अपनी गहरी छाप छोड़ गया है। उस समय भूख की लपटों से जलते हुए मारवाड़ियों के दल के दल एक ओर गुजरात और दूसरी ओर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के नगरों में पहुँचे थे। कई बरस पहले गुजराती साहित्य के एक वरेण्य कवि शायद स्व० दामोदरदास खुशालदास बोटादकर की एक पुरानी कविता पढ़ी थी जो करुण रस से ओत प्रोत थी। सूखे अस्थिपंजर में पापी पेट को गड्ढा धसाए पथराई आँखों वाले रिरियाते हुए मारवाड़ी का बड़ा ही मार्मिक चित्र उस कविता में अंकित हुआ है। सन '४७ में आगरे में अपने छोटे नाना स्व० रामकृष्ण जी देव से मुझे उक्त अकाल से संबंधित एक लोक-कविता भी सुनने को मिली थी जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस समय याद आ रही हैं—

'आयो री जमाईड़ो धम्मयो जीव कहाँ से लाऊँ शक्कर घीव—
छप्पनियाँ अकाल फेर मती आइजो म्हारे मारवाड़ में।'

सन् '४३ के बंग दुर्भिक्ष में मनुष्य की चरम दयनीयता और परम दानवता के दृश्य मैंने कलकत्ते में अपनी आँखों से देखे थे। सियारम्ह

स्टेशन के प्लेटफार्म कलकत्ते की सड़कों के फुटपाथ ऐसी वीभत्स करुणा से भरे थे कि देख देखकर आठों पहर जी उमड़ता था। कलकत्तावालों को उन दृश्यों से घिर जाने के कारण अपना शहर काटता था। इतनी बड़ी भूख के वातावरण में लोगों से मुँह में कौर तक नहीं बनता था। बहुत से ऐसे भी थे जिनके ऊपर उन दृश्यों का उतना ही असर होता था जितना चिकने घड़े पर पानी का होना है। दुनिया दुरंगी मकारा सराय कहीं खूब खूबा कहीं हाय हाय। यही हाल था।

धनाभाव में अथवा अपने से शक्तिशालों के द्वारा भूखे रहने पर विवश किए जाने और स्वेच्छा से व्रत लेकर निराहार रहने में बात एक होने पर भी जमीन आसमान का अंतर होता है। सन ४१ में एक बार अर्थाभाव के कारण मुझे बंबई में चार दिनों तक भूख की ज्वाला सहनी पड़ी थी। सन ४५ के अंत में कलकत्ते से वापस लौटने पर मैं स्वेच्छा से चार दिनों तक भूखा रहा था। पहले अनुभव में बड़ी घुटन बेबसी और विद्रोह भावना पाई दूसरे अनुभव में सहनशक्ति बढ़ी और चेतना गहराई। मेरा मन उन दिनों कलकत्ते के दृश्यों से इतना भरा हुआ था कि अपनी इच्छा से आरोपित भूख को जनमन की करुणा में लय करके सहज बिसार देता था। इस उपन्यास के आरंभिक नोट्स मैंने अपने उसी उपवास के दौर में लिखे थे। लेकिन यहाँ पर अपना एक और अनुभव लिखे बिना बात अधूरी ही रह जाएगी। सन् ४४ में अपने फिल्मी धंधे से एक महीने की छुट्टी लेकर बंबई से आगरे आने पर जब मैं इस कथानक के दृश्य बाँधने लगा तो शुरू के आठ-दस दिनों तक मुझे भूख ने बेहद सताया। लिखते लिखते बीच में कुछ खाने को मचल मचल उठता था। बाद में यह मनोविकार स्वयं ही दूर भी कर लिया।

सन् ४३ का बंग दुर्भिक्ष दैवी प्रकोप न होकर मनुष्य के स्वार्थ का एक अत्यंत जघन्य रूप प्रदर्शन और उसका स्वाभाविक परिणाम था। भारत के एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो० महालनवीस ने उन दिनों सही आँकड़े प्रस्तुत करके यह सिद्ध कर दिखलाया था कि उस साल बंगाल में धान की

उपज के हिसाब से अकाल पड़ने की कोई संभावना ही नहीं थी। द्वितीय महायुद्ध में गला फंसाए हुए तत्कालीन ब्रिटिश सरकार और निहित स्वार्थों भरे अफसर-व्यापारियों के षड्यंत्र के कारण ही हजारों लोग भूखों तड़प-तड़पकर मर गए, सैकड़ों गृहिणियां वेश्याएं बनाई जाने के लिए और सैकड़ों बच्चे गुलामों की तरह दो मुट्ठी चावल के मोल बिक गए। महायुद्ध की पृष्ठभूमि में तस्वीर यों बनती थी कि एक शक्तिशाली पुरुष दूसरे निर्बल के मुंह का निवाला छीन और खुद खाकर तीसरे शक्तिशाली से मारने या मर जाने की ठानकर लड़ रहा था। उसके इसी हठ में असम्भव सम्भव हो गया। वही असम्भव सम्भव इस उपन्यास में अंकित है। उत्तर प्रदेश के एक बड़े कम्युनिस्ट नेता, मेरे मित्र रमेश सिन्हा ने सुप्रसिद्ध फोटो चित्रकार श्रीयुत चित्ताप्रसाद से बंबई में मेरी भेंट करा दी। उन्होंने अकालग्रस्त क्षेत्र में जाकर कई सौ चित्र खींचे थे। चित्ता बाबू ने मुझे उन चित्रों के पीछे की घटनाएं भी सुनाई थीं। श्रीयुत् जैनुल आब्दीन के बनाए रेखाचित्र भी देखने को मिले थे। मानवीय करुणा के उन मार्मिक चित्रों से मैंने प्रेरणा पाई थी अतः इनका कृतज्ञ हूं।

इस उपन्यास का पहला संस्करण सन् '४६ में प्रकाशित हुआ था। तब से अब तक कई विद्वान आलोचकों और उपन्यास साहित्य पर शोध प्रबंध प्रस्तुत करनेवाले अनेक छात्रों ने इस उपन्यास को अपनी अपनी कसौटियों पर कसकर इसे जीवन का सही दस्तावेज बतलाया है। कसने का कष्ट उठाने के लिए उन सबके प्रति कृतज्ञता अनुभव करता हूं।

इस संस्करण में उपन्यास का पुराना नाम बदल देने के लिए भी सफाई देना आवश्यक है। प्रकाशक को लगा कि नाम बदल देना चाहिए। उनकी इस बात से सहमत होने के लिए मेरे पास भी एक कारण था। लगभग सात सवा साल पहले एक सज्जन, जिन्होंने इस उपन्यास का नाम भर ही सुना था, मुझसे पूछने लगे—क्या यह पौराणिक उपन्यास है। उनके इस प्रश्न से लगा कि जो नाम २६ वर्ष पहले अकाल की स्मृति ताज़ी

होने के कारण पाठकों के मन में अपना स्पष्ट अर्थ बोध कराने में समर्थ था वह अब अकाल से संबंधित जन-स्मृति के पुरानी पड़ जाने के कारण शायद दुरूह हो गया है। जिन भावी शोधकर्ता छात्रों को नाम परिवर्तन के कारण कुछ अड़चन महसूस होगी उनसे अभी ही क्षमा माँग लेता हूँ। बाकी पाठकों के लिए नाम परिवर्तन से कोई समस्या उत्पन्न होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

चौक लखनऊ ३ —अमृतलाल नागर

६ जुलाई १९७० ई०

कथा-प्रवेश

बर्मा पर जापानियों का कब्ज़ा हो गया। हिंदु
स्तान पर महायुद्ध की परछाइं पड़ने लगी।
हर शख्स के दिल से ब्रिटिश सरकार का
विश्वास उठ गया। 'कुछ होने वाला है—कुछ
होगा!'—हर एक के दिल में यही डर समा गया।
यथाशक्ति लोगों ने चावल जमा करना शुरू
किया। रईसों ने बरसों के खाने का इंतज़ाम कर
लिया। मध्यवर्गीय नौकरपेशा गृहस्थों ने अपनी
शक्ति के अनुसार दो तीन महीने से लगाकर छः महीने
तक की खूराक जमा कर ली। खेतिहर मज़दूर भूख
से लड़ने लगा।
व्यापारियों ने लोगों को कम चावल देना शुरू
किया।
हिन्दू और मुसलमान व्यापारी और धनिक वर्ग,
अपनी अपनी कौमों को थोड़ा बहुत चावल देते रहे।
खेतिहर मज़दूर भीख मांगने पर मजबूर हुआ।
शुरू में भीख दे देते थे, फिर अपनी ही कमी का

रोना रोने लगे। दया दान की भावना मरने लगी।

भूख ने मेहनत मजदूरी करनेवाले ईमानदार इंसानों को खूंखार लुटेरा बना दिया।

भूख ने सतियों को वेश्या बनने पर मजबूर किया।

मौत का डर बढ़ने लगा।

मौत का डर आदमियों को परेशान करने लगा, पागल बनाने लगा।

और एक दिन चिर आशंकित चिर प्रत्याशित मृत्यु भय को दूर करने के समस्त साधनों के रहते हुए भी भूखे मानव को अपना आहार बनाने लगी।

तब आशावादी मानव कठोर होकर मृत्यु से लड़ने लगा। उपन्यास का प्रारम्भ यहीं से होता है।

मोहनपुर ऐंग्लो बंगाली स्कूल के बरामदे में पैर रखते ही हेडमास्टर बाबू गोपाल मुखर्जी को ध्यान हो आया कि हीरू बाग्दी का लड़का गणेश लगातार दस दिन तक मलेरियाग्रस्त शरीर की सारी शक्ति के साथ भूख से लड़कर, आज सवेरे चल बसा।

बाबू ने अपने दिल पर एक गहरा धक्का महसूस किया। उसे लगा जैसे कि आज उसका स्कूल मर गया। चार दिनों के अटूट उपवास और काल भविष्य की चिन्ता भी जो आघात उसे न पहुंचा सकी थी, वह सहसा गणेश के मरने की खबर से उसे पहुंचा था। लगा, जैसे मौत बहुत निकट से उसे अपना परिचय देने के लिए आई हो।

अकाल की न हल होने वाली समस्या 'क्या होगा' प्रश्न के साथ, सारी मानसिक और शारीरिक शक्ति छीनकर, घोर अंधकार के 'कल' में जब उसे फेंक देती थी तब वह मोहवश अपने आने वाले कल को ठीक ठीक देख न पाता था। लेकिन आज गणेश की मृत्यु ने सहसा उसकी और उसके परिवार के आने वाले कल की तस्वीर उसके सामने लाकर खड़ी कर दी थी।

आंखों के आगे अंधेरा छा गया। सहसा बाबू को किसी सहारे की जरूरत महसूस हुई। उसका हाथ अपने आप खम्भे की तरफ बढ़ गया—

और उसके सहारे, गिरते शरीर को टेक देकर उसने अपने को सभाल लिया।

खम्भे के सहारे टिका हुआ वह गणेश की सिर्फ गणेश की बात सोचने लगा। गणेश बाग्ची उसका पहला शिष्य था।

पाचू की आखो के सामने वे सब दिन एक पलक दिखाकर तेजी से आपस मे घुल मिल गए। फिर एक एक बात उसे याद आने लगी। इण्टर मीजिएट पास करने के बाद एक ओर सरकारी वजीफा लेकर आगे पढने का प्रलोभन और दूसरी ओर मा का पत्र। जीवन मे पहली बार उसे अपना कर्तव्य सोचने के लिए गम्भीर होना पडा था।

पाचू अपनी वर्तमान परिस्थितियों को बीते दिनो की बातें सोचकर बहलाने लगा—'अगर मैं बराबर पढता ही जाता! कितना अच्छा करियर था मेरा। प्रिंसिपल जाडन मुझे शर्तिया स्कालरशिप दिला देते लेकिन उससे क्या आज की परिस्थिति मे कुछ सुधार हो जाता?

पाचू के विचारो को सहसा एक झटका लगा। अपने कल्पित स्वर्ग को ठोकर से तीन-तेरह करने के लिए उसने फिर सोचा— मैं होता इग्लण्ड मे और यहा घर भर सब खतम हो चुका होता। आई० सी० एस० होकर ही मुझे कौन सुख मिलता।

पाचू को अपना आई० सी० एस० न होना अच्छा लगा। इतने सिविल सर्वेण्ट होकर आए और अभागे देश के सर पर शासन के बूट गाडकर चले गए। भारतीय नागरिको के नौकर भारतीय नागरिको के हुक्काम बनकर अपनी असलियत और अपना कर्तव्य भूल गए।

पाचू सोचने लगा— वह भी इसी तरह का एक नागरिक नौकर होता। एस० डी० ओ० होकर वह भी शायद इसी तरह भुखमरी का निरीक्षण करने आता। दयाल जमीन्दार का आतिथ्य ग्रहण कर स्काच ह्विस्की के जोर पर नवाबी प्लेटें हजम करता। मोनाई बनिया इसी तरह उसके अहलकार के सामने खीसें निपोर निपोरकर अहलकार की जेब को फुला देता। और थोडी ही देर बाद अहलकार की जेब की अधिकाश सूजन

खुद उसकी—एस० डी० ओ० पाचू गोपाल मुखर्जी आई० सी० एस० की—जेब मा उडनी बीमारी की तरह छू जाती।

पाचू को अपने गाव म एस० डी० ओ० की 'विजिट' याद आने लगी। दयाल जमीन्दार के यहा जिस तरह और जो कुछ उसने देखा था एस० डी० ओ० के रूप म उसी तरह अपने लिए भी वह उसकी कल्पना करने लगा।

सहसा पाचू का मन घृणा से भर उठा। ध्यान दूसरी तरफ करने के लिए उसने स्कूल के बरामदे के सामने फैले हुए मोहनपुर गाव की तरफ से अपनी खोई हुई आखें फिरा लीं खम्भे का सहारा धीरे धीरे हाथ हटाकर छोटा और क्लास रूम की तरफ चला। दीवाल पर स्कूल म लगाए जाने के लिए भेजे गए सरकारी पोस्टर चिपके थे। क्लास के दरवाजे के पास ही पहला पोस्टर था—'अन्न की पदावार बढाओ।'

घृणा की भावना का एक झोका उसे फिर लगा। झुझलाहट म उसके मुह से अपने आप ही निकल पडा—"किसके लिए?"

फिर उसने हाथ म झटककर पोस्टर को चीर डाला।

पाचू ने जस बदला ले लिया हो। उसकी उत्तेजना कम हुई। तभी उसके मन मे एक आशका भी उठ खडी हुई— किसीने उसे पोस्टर फाडते कहीं देख न लिया हो!'

पाचू ने झटपट मुडकर सामने की ओर देखा। आसपास मे कोई नहीं था। दूर, मोनाई बनिये की दुकान पर जीवित नर ककालो की भीड हो हुल्लड मचा रही थी। शायद किसीकी निगाह उसपर नहीं पडी।

पाचू ने एक नि श्वास छोडी और कमर का ताला खोलने लगा। वह सोच रहा था—'अगर किसीने देख लिया हो नहीं नहीं मान लो, अगर कोई देख लेता? मोनाई की दुकान पर पुलिसमन तो खडा ही है, अगर उसकी नजर पड गई हो तब तो बडी आफ्त होगी। वह आएगा हाथ पकडेगा नहीं तो फिर थाने म रिपोट! दूगा कहा से खाने को? देने को ही होता तो आज चार दिन से घर म यू एकादशी न होती

पर वह क्या समझे ? गाव म तो सब यही समझते हैं कि पाचू मास्टर न न जाने कहा-कहा की जमा गाडकर रख ली है।'

पाचू ने मुडकर फिर देखा, कहीं कोई आ तो नहीं रहा है। फिर झटपट क्लास रूम म घुस गया जैसे वह सुरक्षित जगह म पहुच जाना चाहता हो।

कमरा स्तब्ध। डेस्कों और बेंचों की लम्बी लम्बी चार कतारें डेस्कों पर स्याही के तमाम दाग और गर्द की पर्त कुर्सी मेज दीवालों पर टगे हुए बगाल, हिन्दुस्तान और योरप के तीन नक्शे, कोने म छोटी सी मेज पर रखा हुआ ग्लोब, ब्लैक बोर्ड पर लिखी हुई अंग्रेजी की एक कविता।

पाचू का ध्यान उधर गया। बोर्ड पर भी धूल जम रही थी। आज हफ्ते भर से स्कूल का चपरासी नहीं आया था। जब से वह गाव छोडकर गया है तब से किसीने स्कूल की सफाई नहीं की, उसने भी नहीं। एक दिन था जब वह हर शनिवार की शाम को छुट्टी से पहले लडकों के साथ खुद सारे स्कूल की सफाई करता था।

पाचू के होठों पर एक फीकी सी हसी की रेखा खिंच गई। उन दिनों की चहल-पहल वह जोश उसका और उसके स्कूल का वह एश्वय

मीठे स्वप्न सी इस तेज याद को पाचू का चार दिन का भूखा शरीर और विताक्षत मन सह न सका। बडी मुश्किल से अपने शरीर को सभाल कर कुर्सी पर अपने आपको जसे छोडकर वह बठ गया। दोनों बाह मेज पर टिकाकर उसने सिर झुका लिया।

तो क्या स्कूल बन्द हो जाएगा ?'

यह प्रश्न इतना साफ साफ और कुछ इस तरह स्पष्ट होकर पाचू के मन म आज उठ आया था मानो पहले इस प्रश्न स उसका कभी वास्ता ही नहीं पडा हो। असल बात यह थी कि अब स पहले इस प्रश्न के उठने की सम्भावना होने पर पाचू अपने मन को बहलाने म सफल हो जाता था लेकिन आज गणेश की मृत्यु ने उसकी आखों के सामने से भुलावे का पर्दा

हटा दिया था।

'तो फिर ?"

यह एक ऐसा प्रश्न था जो स्कूल बन्द हो जाने की कल्पना के बाद पाचू के मन में फांस की तरह चुभता था और अंधेरे में भूत की तरह उसकी सारी शक्तियों को स्तम्भित कर देता था।

ग्यारह आदमियों के परिवार का यह स्कूल ही तो आसरा था। तुलसी इस साल पार लगती। मां के सिर से चिन्ता का बोझ उतर जाता। लेकिन जाने कहां से आ गया यह अकाल। क्या हो गया, कुछ समझ में नहीं आता—'दुनिया जाएगी किधर? क्या यह अकाल कभी खत्म न होगा? क्या यही प्रलय है ?"

पाचू के दिमाग को प्रलय के घनघोर बादलों ने ढक लिया। उसकी बन्द आंखों के आगे घना अंधेरा-सा छा गया। उसे लगा जैसे उस घने अंधेरे में वह कहीं बहुत ऊंचे पर से नीचे की तरफ, जोरों के साथ खींच कर ले जाया जा रहा हो।

पाचू के लिए यह एक नया अनुभव था— क्या मैं मर रहा हूं? लेकिन मरूंगा किस तरह? गणेश को भूख के साथ साथ उसका इतना पुराना मलेरिया भी तो था। मैं तो खाली भूखा ही हूं—और मां-वां सब लोग भी बस भूखे ही हैं। फिर चार दिन की भूख भी कोई भूख है? हिन्दू का घर हमारे यहां चातुर्मास का उपवास होता है। और बस तो आज शाम तक चावल मिल ही जाएगा। कुछ नहीं, डर की कोई बात नहीं है।'

एक बार अपनी सारी शक्तियां बटोरकर पाचू ने मेज पर से अपना सिर उठाया। फिर उसी जोश में कुर्सी से उठकर क्लास रूम में टहलने लगा। दो चक्कर पूरे किए तीसरा चक्कर लगाते ही एक डेस्क पर हाथ टेककर खड़ा हो गया।

अंधेरे में नीचे की तरफ खिंचते चले जाने के कल्पनामिश्रित अनुभव ने पाचू के मन को जैसे कील दिया था। मृत्यु के समान उस स्तब्धता के बंधन से अपने को मुक्त करने के लिए ही जैसे उसने उठकर टहलना

पर वह क्या समझे ? गाव म तो सब यही समझन ः
न जाने कहा वहा की जमा गान्कर रख ली है । '

पाचू न मुडकर फिर देखा, कही कोई था
पटपट क्लास रूम म घुस गया जस वह सुरक्षित
चाहता हो ।

कमरा स्तब्ध । डेस्को और बेंचा की नम्
डेस्का पर स्याही के तमाम दाग और गन्द की पा
पर टगे हुए बगाल हिंदुस्तान और योरप के तो
सी मेज पर रखा हुआ ग्लोब, ब्लक बोड पर नि
कविता ।

पानू का ध्यान उधर गया । बोड पर भी
हफ्त भर स स्कूल का चपरासी नही आया था ।
गया है तब स किसीन स्कूल की सफाई नही
न्नि था जब वह हर शनिवार की शाम को
एद सारे स्कूल की सफाइ करता था ।

पाचू के होठा पर एक फीकी सी हसी
की चहल पहल वह जोश उसका और उस

मीठे स्वप्न सी इस तेज़ याद का पाच
और विताक्षत मन सह न सका । बडी मु
कर कुर्सी पर अपन आपको जस छोडकर
पर टिकाकर उसन सिर झुका लिया ।

तो क्या स्कूल बन्द हो जाएगा ?'

यह प्रश्न इतना साफ साफ और कू
मन म आज उठ आया था माना पहले
हो नही पडा हो । असल बात यह थी कि
की सम्भावना होने पर पाचू अपन मन
लकिन आज गणेश की मृत्यु न उसका

पर एक लम्बी लकीर और उसके नीचे गाढ़े तीन हाथ की लम्बी मूछें, उसी गोल के अन्दर समाई हुई।

इस छोटे गोले को एक बहुत बड़े गोले से मिलाने के लिए गले से बाबा आदम के पुल का काम लिया गया है। मालूम पड़ता है, कची से गला मन मुताबिक कट न सका इसलिए बाप के ब्लेड से फिनिशिंग टच दिया गया है। बड़े गोल में से दो मुसल्लम हाथ और दो पैर निकालने में किस मशक्कत से काम लिया गया है इसकी गवाही कैंची और कटाई का दाग देती है। पैरों के नीचे जमीन है और उसपर अंग्रेजी अक्षरों में लिखा हुआ है— दिस इज दि वानाई मास्टर रटटूवीर।"

पाचू देखते ही हँस पड़ा—"लड़के भी बस शैतान होते हैं।'

मन बहल गया। शायद और कुछ हो, यह देखने के लिए दराज जरा बाहर खींची। अंग्रेजी किताब का फटा हुआ एक वर्क पाचू ने देखा— 'लिसन नम्बर टवन्टीफोर, हम्प्टी डम्प्टी पढ़ने बैठा हूँ, कम्बख्त किताबों से कुश्ती लड़ते हैं!'

पाचू ने उसी हेडमास्टराना तिलमिलाहट और बदले हुए तेवरों में पन्ने के दूसरी तरफ देखा। कोने पर दो जुदा जुदा लिखावटों में कुछ लिखा हुआ था। पहले बंगला में लिखा था 'कुन्टी', और उसके नीचे अंग्रेजी में दस्तखती लिखावट से डी० आर०। दूसरी लिखावट, उसके ठीक नीचे ही अंग्रेजी में 'प्राटेड, बकलम खुद तीन हर्फ, जी० के० सी०। नीचे ठाठ से लकीर मारकर तारीख तक लिख दी गई थी—२७ १ ४३।

"जी० के० सी०, ये कौन बिगडदिल हैं?" पाचू अपने शिष्यों में छुट्टा घाट करनेवाले जी० के० सी० महाशय को पहचानने की कोशिश करने लगा—'गोपाल, बच्छा! अपना वो काकी नम्बर आठ का भतीजा।"

पड़ोस के रिश्ते से रिटायर्ड सब पोस्टमास्टर रामतनु बाबू पाचू के काका हुए। रामतनु बाबू की किस्मत का फूल सुबह ही जोरआ का नाश्ता करने की आदत थी, लेकिन ये काकी नम्बर आठ मालूम पड़ता है काका को ही पचाकर मानेंगी। इस अकाल में भी अमर रहने की चुनौती देती

लिया। उस वक्त तो वह कुछ बोला नहीं, किताब लेकर चला गया। चार दिन बाद आया, किताब सामने पटक दी और जबान से जो शुरू किया तो पहले पेज के मोटे-मोटे फुलस्टॉप से लगाकर प्रेस के भूतों तक की ऐसी फुलझड़ी की तरह जबान से दास्तान छूटने लगी। चार घंटे में सारी किताब खतम—यान में पुस्तक के अन्त में छपी हुई प्रकाशक के अन्य प्रकाशनों की सूची भी, कुल तारीफों के साथ, गुना डाली सजिल्द-अजिल्द के दाम तक। तब पानी पिया।

कानाई मिस्त्री की यह सनक दूर-दूर तक कहावत बन गई थी। पाचू ने जब स्कूल शुरू किया तो सारा गांव खिलाफ। इधर स्कूल भी बराबर चालू रखना और बीच-बीच में प्रिंसिपल जॉनसन से मशवरे और सलाह मागने के लिए शहर भी जाना। बड़ी मुसीबत हो गई थी। घर में हिम्मत बधाने वाली एक अकेली मा थी, जब कहू तो कहती—'पाचू घबराना मत बेटा मुसीबत में ही तो नारायण परीक्षा लेते हैं। उन्हें जब उबारना होता है तो आप आते हैं।'

एक दिन कानाई मिस्त्री आया। आते ही बड़े रोब के साथ कहने लगा—"तुम्हारे साहस को देखकर मुझे तुमपर श्रद्धा हो गई है। तुम हमारे गाव के नेपोलियन बोनापार्ट हो!'

फिर कुछ सोचकर कानाई बिलकुल नजदीक आ गया और धीरे धीरे कहने लगा—'मेरे पास कोई जमा तो है नहीं भाई। हा जो कमाई है उस हैसियत से जो कहो तुम्हारे स्कूल की सेवा करू।

पाचू को उस समय पैसे से अधिक सहयोगी की चाह थी। कानाई छाती भरकर बोला—जहा तक मैं पढ़ा हू सब लड़कों को पढ़ा दूगा। तुम बेफिक्र रहो। शहर जा के स्कूल के लिए मदद मागो। यहा मैं सभाल लूगा। बाकी एक बार ऐसा स्कूल बनाओ मास्टर कि लाट साहब को भी यहा आना पड़े। तब इन गाववालों को मालूम होगा कि विद्या पढ़ने में कोई जात छोटी बड़ी नहीं है।

यह कहके उसने पाचू के कंधे पर हाथ से एक थपकी दी और बस बाबू

राइट अवाउट टर्न !' पाचू को एक सेकंड लगा, जैसे मां के नारायण ही दिमाग से निकलकर कानाई के रूप में सामने दिखाई दिए हों। चित्त की सिमटती हुई अवस्था में उसे कानाई का यह अयाचित, अप्रत्याशित सहारा मिला था।

प्रसन्नता मिश्रित आश्चर्य से स्तब्ध पाचू अभी कानाई के बारे में सोच ही रहा था कि कानाई फिर से कमरे में लौटकर बोला—'उस वक्त जल्दी में मुझसे कुछ भूल हो गई थी, पाचू बाबू। मैंने तुम्हें भूल से गाव का नेपोलियन बोनापार्ट कह दिया। दरअसल मैं तुम्हें शेक्सपियर कहना चाहता था। तुम भी शेक्सपियर से कम विद्वान नहीं हो, पाचू बाबू ! उसने 'पोयट्री' लिखकर लोगों को पढ़ाया और तुम स्कूल खोलकर पढ़ाते हो।''

फिर जरा एक सेकंड निश्चय करके बोला—''बस यही ठीक है। तुम शेक्सपियर हो, नेपोलियन बोनापार्ट तो लड़ता था।''

'हू हू हू !'

ज़ोर ज़ोर से हंसने की अपनी ही आवाज़ को सुनकर पाचू को होश आया। दीमक भरी दराज़ सामने आई। अकाल, इस अकाल ने ही कानाई मास्टर को छुड़ाया। गोविन्द मास्टर भी माघ के पहले हफ्ते में चले गए—'बारह रुपये में अब पोसाता नहीं, पाचू बाबू ! कोई दयाल ज़मींदार से पूछे, सांस के बिना भी आदमी जी सकता है जो बैल खोल-कर ले गए। इससे तो भीख मांगकर जीना भला। चार पेटों की आग से तो बचा रहूंगा।

चले गए, गोविन्द मास्टर भी चले गए—सब चले गए—गणेश भी चला गया। ये स्कूल भी आज बन्द हो जाएगा। इसे बन्द करना ही पड़ेगा। अब तो यहां भी जी नहीं लगता। फिर ?

इस 'फिर' की खोज में पाचू ने एक बार इधर उधर, अपने चारों ओर, खोई हुई-सी आंखों से देखा।

जी न लगने की समस्या पाचू के दिमाग में पुनः बनकर समा गई

थी। घर म जी नही लगता। गाव जसे काटने को दौडता है। कहा जाए ? स्कूल म एक लडका न आने पर भी पाचू नियमित रूप स रोज स्कूल आता है, दिन भर बठा रहता है और आई गई, नई-पुरानी बातो से अपना जी बहलाया करता है। लेकिन आज गणेश की मृत्यु न स्कूल की बिल्डिंग से उसका मन एकदम उचाट कर दिया है किसी तरह भी मन नही लगता। अब वह अपना जी कस बहलाए—कहा जाए ?

पाचू का मन इस वक्त चिडचिडा हो रहा था।

बाहर निकालकर डस्क पर रखी हुई दीमक भरी दराज स पाचू के हाथ अपन आप ही खेलन लग। इसस उसका ध्यान बटा। उसन अपने हाथो को उस दीमकवाली दराज पर महसूस किया। उसने चौंककर फौरन अपने हाथ हटा लिए। उस अनायास ही एसा महसूस होन लगा जसे दीमको वाली दराज पर इतनी देर तक हाथ रखकर उसने कोई बहुत बडी गलती की है।

"दीमको की यह दराज ! मतलब यह कि दीमको की फौज की फौज डटी है। वह यहा से नही हटगी। और साहब क्या हटे ? लकडी कागज वगरा उसकी खुराक है। और आदमी न उसपर भी अपना अधिकार कर लिया है—वह भी खाने के लिए नहीं ! ओफ्फोह इतना अन्याय ! भला सोचिए हजारो साल से जब से आदमी ने लकडी पर अपना अधिकार कर उसका प्रयोग करना सीखा दीमको की जाति म अकाल पड रहा होगा ! ओफ्फोह इस तरह दीमकें हजारो साल से अकाल की यातनाए भुगत रही है ? बेचारी !

पाचू की आखो मे आसू छलछला उठे। अकाल की सारी यातनाओ को सहते हुए, अपने को मजबूत बनाने के लिए वह बार बार आसुओ का दमन करता आया है। लेकिन अगर आज हजारो साल से अकाल पीडित दीमक-जाति की दुदशा की कल्पना से उसकी आखो म आसू दिखाई पड गए तो इसका यह अथ नही कि उसका धय घुटने टेक रहा है। नही, उसका धैय भग नही हो सकता। उसका धय अडिग है।

और, उसने अपने अदिग धैर्य को और भी अधिक अडिग बनाने के लिए दीमकों के अकाल पर आंसू आ जाने की बात के बारे में, अंग्रेजी में, बढ चढकर सोचना शुरू किया—

"जस्ट इमेजिन, देयर चिल्डरन—सम डाटर्स, नेफ्यूज, नीस—ऐंड, नीस—यस, यस, नीस आलसो। नीस मस्ट बी दयर, मूड बी देयर, आट टू बी "

पाचू ने एकाएक अपने में एक हल्की-सी चेतना का अनुभव किया। उसे लगा कि वह विचारों में बहक रहा है। पर यह चेतना उसे अच्छी न लगी। मन को भुलावा देकर बहलाने का और कोई साधन उसके पास नहीं था। अपने विचारों का जबरदस्ती न्यायपूर्वक सत्य सिद्ध करने के लिए जो कुछ भी वह सोच रहा है वह सब निहायत ही समझदारी के साथ सोच रहा है। विधि का विधान ही ऐसा है। हमने दीमकों को भूखा मारा और दीमक हम "रिमम्बर दिस आल्वेज माई ब्वाय, देयर इज लिमिट फॉर एवरीथिंग तुम अभी दीमकों पर चाहे जितना अत्याचार कर लो, लेकिन दीमकों की सहनशक्ति का भी अन्त होता है। तो ? लेकिन वह तुम्हारा बिगाड ही क्या सकती है ? '

पाचू ने एकदम से अपने दोनों हाथों को बहुत पास लाकर देखना शुरू किया। गौर से देखा। इतनी देर से दीमकवाली दराज पर हाथ रखे हुए थे, शायद एक आध चढ गई हो।

"तब फिर ? काटेगी ? जरूर काटेगी। अरे, जब लकड़ी और कागज को काट सकती है तो आदमी के मांस में क्या रखा है—मुलायम गोश्त और पीने को आदमी का गर्म-गर्म खून। अगर कहीं दीमकों की जबान को चस्का लग गया। फिर तो क्या होगा ? अरे, अभी इतने में ६ मौतें हुई हैं, तब छः सौ, छः हजार, लाख, दस लाख, करोड़, दस करोड़, अरब, पद्म, शंख महाशंख—इसके माने सब गिनती खत्म। तब तो बस प्रलय—एकदम प्रलय।'

पाचू अपने दिल को बेलगाम बहलाए जा रहा था—"दीमकों द्वारा

पृथ्वी का अंत ? ऐसा तो कहीं ...''

तभी पट से ध्यान आया—''अरे अपने वाल्मीकि ! जस्ट इमर्जिंग, आदमी इतना बेहोश कि शरीर पर दीमक चढ़ने की खबर न हुई। नान सेन्स दरअसल इसका अर्थ है कि इस बार आदमी पर दीमकों की विजय होगी—वाल्मीकि विजय। ठीक तो है, पहली प्रलय में मनु बचे और उनकी संतान—मानव, निकम्मी सिद्ध हुई। इस बार प्रलय के बाद वाल्मीकि की संतानों से नया ग्लोब बसेगा। वाल्मीकि के राम राज्य की अमर कल्पना। प्रलय के बाद—हां यह प्रलय तो है हां। दीमकों की दीमक प्रलय !'

पांचू एकाएक चौंककर उठा। उसे अपने दिमाग की इस हालत पर बड़ी शर्म आने लगी। अब इतना भी अपने दिमाग पर अधिकार न रहा। इस अपने दिमाग की कमजोरी दूर करने के लिए दवा खाने की जरूरत एकाएक महसूस होने लगी। वह कौन सी दवा खाए ? उसकी दराज में एस्प्रो की टिकिया है। जब सर्दियों में एक दिन सिर दुखा था तब वहीं तो मंगा के खाई थी और बाकी वहीं दराज में रख दी थी। जरूर होगी।

पांचू कुछ सहमा। लेकिन मेज की दराज में भी अगर कहीं दीमकें छि वाट नानसेन्स फिर बहका। बुरी बात। यू कान्ट अफोर्ड टू डू दिस मिस्टर पी० मुखर्जी, तुम्हारे ऊपर इतनी बड़ी जिम्मेदारी है, सारे घर की जिम्मेदारी है।

लेकिन कहां ? मैं सतर्क तो हूं। मैंने अभी तक कोई गलत बात नहीं की। मैं बिलकुल ठीक हूं। तब फिर यह दवा किसलिए एस्प्रो की टिकिया '

इस वक्त तक पांचू अपनी मेज के पास पहुंचकर कुर्सी पर बैठने वाला था कि यह विचार आते ही वह एकदम गंभीर हो गया। उसके हाथ मेज पर टिक गए, और वह बस नककर खड़ा सोचने लगा—' खाऊं कि न खाऊं ?

पूरी चेतना के साथ निष्पक्ष भाव से, उसने अपने स्वास्थ्य की मन

ही मन परीक्षा लेनी शुरू की—"कहीं दद है? हाथ परा म, पेट म, सिर म?"

बगर जबान चलाए उसने पूरी चेतना के साथ अपने आपसे सवाल जवाब करना शुरू किया और महसूस किया कि एडी से लेकर चोटी तक रग रग म, पोर पोर म, दद समाया हुआ है। इसके बाद उसने महसूस किया कि उसकी आखें जल रही हैं, और उसका बदन भी गम है। तब तो दवा जरूर ही खानी चाहिए। हा, सास भी गम है।

पाचू ने अपन हाथ को नाक के पास ले जाकर सास को महसूस किया—' इसके माने ये कि मुझे बुखार है मलेरिया।"

मलेरिया का खयाल आते ही उसे तुरत ध्यान आया कि वह भूखा भी है। डर ने उसे फिर घेरना शुरू किया। उसे फिर स चक्कर आने लगा, मज पर टिके हुए हाथ कापने लगे, पर एकदम सुन्न पड गए—उनम जसे दम न रहा हो।

अपना सारा मानसिक बल शरीर को देकर वह फिर सीधा तनकर खडा हो गया—"मैं बिलकुल ठीक हू। मुझे कोई बीमारी नही है। जरा भी बुखार नही है। ये सब मेरी खामखयाली है। मैं बडा बवकूफ हू जो यह सब खुरापात सोचता हू। मेरी समझ मे नही आ रहा है कि आखिर मैं यह सब सोचता ही क्या हू? नही, नही, अब ऐसे वेहूदे विचार अपन मन म आन ही न दूगा!"

अपने को जगाकर पाचू दिल का बहलाने के लिए फौरन ही काम की सोचन लगा। उसने एक बार चारा तरफ नजर डाली—ऊच प्लेटफाम पर मेज और कुर्सी रखी थी। कुर्सी पर बैठे हुए पाचू की आखें, अपनी दृष्टि के क्षेत्र को बहुत सकुचित कर, अपनी बाइ तरफ से दाहिनी ओर तक अध-चन्द्राकार म भ्रमण प्लेटफाम के सहारे घूमन लगी। आखो को फोकस करते हुए पहले फ्रेम मे उसने प्लेटफाम के नीचे सीमेण्ट वालू के फश को जरा दूर तक देखा। सीमेण्ट के चौके जडे हुए हैं, यह शुबहा दिलाने के लिए ही शायद इमारत बनानेवाले कारीगरो ने फश भर मे ये चौकोर

लकीरें काटी हाथी।

प्लेटफाम के चारों ओर अर्द्ध चन्द्राकार में अपनी आँखें घुमाते हुए दृष्टि सीमा पहले फ्रेम में ही, मेज का कोना आ जाता था। गोलार्द्ध में यात्रा करती हुई आँखें मेज की सतह को छूती हुई उसके ऊपर से गुजरीं—तीन चार डेस्कों के सामने दिखाई पड़नेवाले हिस्से पर से होती हुई। पाचू सोचने लगा, समझो क्लास में सब लड़के मौजूद हैं। जिस हद तक पाचू की आँखें प्लेटफाम के आस पास उस गोलार्द्ध में घूमी थीं उस हद में सारा दर्जा लड़कों से भरा होने पर भी वे उसके लिए अदृश्य ही रहते थे।

पाचू की गर्दन इन डेस्कों को देख घूमते घूमते जरा थम गई। आँखों की पुतलियों को उसी सीमा के अंदर वापस लौटाकर उसने आराम से हल्के को महसूस किया और पुतलियों फिरने के साथ ही गर्दन फिर उसी सीमा में घूमती और क्रमशः आनेवाले कुछ ज्यादा उजाले को देखती प्लेटफाम के नीचे जरा दूर तक सीमेण्ट बालू के चौके कटे हुए फर्श पर टिक गई। सूर्य का प्रकाश दरवाजे से कमरे में मद्धिम होकर आ रहा था। सीलन की हल्की सी नमी लिए हुए सीमेण्ट-बालू के चौके कटे हुए फर्श पर वह मद्धिम रोशनी उसे बड़ी हल्की और शीतल मालूम हुई। उसने अपने आपमें संतोष का बोध किया और इससे उसको आनन्द हुआ।

गोलार्द्ध में नजर दौड़ाने की क्रिया के इस एक सेकण्ड में पाचू ने अपने आपमें एक तरह की उमंग का अनुभव किया। और उसी उमंग के सहारे उसने अपने को यह सोचने दिया कि तमाम बेंचों पर लड़के बैठे हैं। उसने उन सबको कुछ काम दे रखा है—गाय पर लेख लिखने के लिए आज्ञा दी है और वह स्वयं मेज पर झुका हुआ—रजिस्टर पर—फीस का हिसाब जोड़ रहा है।

उसने अपना फाउण्टेनपेन कमीज की जेब से निकालकर मेज पर रखा। फिर ताला खोलकर दराज बाहर खींची। चाक स्टिकों का आधा भरा हुआ डिब्बा, ब्लैक बोर्ड साफ करने के लिए डस्टर, काजलवाली की एक दवात और पीछे की तरफ बँधे हुए कागजों का एक बंडल था।

'चाक चुराने का शौक लडकों में कितना होता है! जिस दिन दराज़ ज़रा देर के लिए भी खुली रह गई कि चार पांच चाकें गायब!"

पाचू अपने मन को गुदगुदाने लगा—"मैं अभी ज़रा देर के लिए दराज़ खुली छोड़कर बाहर चला जाऊं लेकिन लड़के कहा हैं?"

पाचू इस बार अपने को धोखा न दे सका—सहसा उसके मुंह से सच निकल ही पड़ा।

सूने क्लास रूम को देखने के लिए, फासी के तख्ते पर कदम रखे हुए शहीद की दृढ़ता के साथ, पाचू ने अपना सिर ऊंचा उठाया।

कमरा स्तब्ध। डेस्कों और बेंचों की लम्बी-लम्बी चार सूनी कतारें, डेस्कों पर स्याही के तमाम दाग और उनपर गर्द का पर्त। अन्दर आते ही सामनेवाली डेस्क पर उसने ताला खोलकर रखा था। पीतल के उस बड़े ताले पर पाचू का ध्यान एक सेकेण्ड के लिए अटका। ताला इस जगह कभी भी नहीं रखा जाता। दीवारों पर टंगे हुए बंगाल, हिन्दुस्तान और योरप के तीन नक्शे, कोने में छोटी-सी मेज़ पर रखा हुआ एक ग्लोब। ब्लैक बोर्ड पर अंग्रेज़ी की एक कविता और उसपर धूल जमी हुई। पाचू का दम घुटने लगा। तीव्र पीड़ा तीर की तरह सनसनाती हुई उसके दिल में समा गई।

सूनापन, अपनी असमर्थता और निष्क्रियता का अनुभव कर उसका हृदय फटने सा लगा।

दराज़ खुली हुई थी। सामने ही चाक स्टिकों से आधा भरा हुआ डिब्बा रखा था। आज इसका क्या उपयोग है? आज इसे चुरानेवाला कौन है? आज उसके दर्जे में अगर लड़के बैठे होते तो वह कहता—'लो, सब लूट ले जाओ।'

काश कि अपने स्कूल का सब कुछ लुटाकर इन सूनी डेस्कों को एक बार भी लड़कों से भरी हुई अगर आज वह देख सकता!

अपनी असमर्थता पर उसे बड़ी जोर से झुंझलाहट आ गई। चॉक-स्टिकों से आधे भरे हुए डिब्बे पर छूते ही उसकी नज़र गई और उसने

उसके घर में भी अकाल पड रहा है। किसीने भात की एक कनी भी मुह से नहीं लगाई। उसकी दस बरस की छोटी बहन कनक ने भी अपने छोटे छोटे भतीजा—दानू और परेश के पक्ष में अपना हिस्सा त्याग दिया है। सिर्फ इन्हीं दानों को दो चार बार खिलाकर चावल का माड पिला दिया जाता है। लेकिन वह उनका पेट भरने के लिए काफी नहीं। सारा दिन 'भात भात' चिल्लाते ही बीतता है। उसकी आठ महीने की नन्ही-सी भतीजी चुन्नी भूख के मारे रोते रोते अधमरी-सी हो गई है। मां का दूध पीती है, जब उसे ही खाने को नहीं मिलता तो वह बेचारी दूध कहां से पाएगी? चावल का माड उसे भी थोडा बहुत चटा दिया जाता है। मां, बौदीदी, उसकी पत्नी मंगला तुलसी कनक बाबा दादा और वह खुद भी तो आज चार दिन से बस पानी पी पीकर ही जी रहे हैं।

लेकिन आज तो शाम को दयाल जमीदार के यहां से चावल मिल ही जाएगा। पर इस तरह कितने दिन चलेगा? आखिर कब तक बचेंगे? फिर आखिर किसकी बचेगी और किससे बचेगी? घर घर में यही ठंडे चूल्हे हैं। क्या कुलीन क्या अकुलीन—एक मोनाई और दयाल जमींदार तथा उनके जैसे दस पांच को छोडकर अब किसके यहां चूल्हे में बराबर आग दिखाई देती है? सारा गांव इसी तरह भूख से तडप-तडपकर जान दे देगा। पार्वती काकी मरी हारान मरा तिनकौड़ी मरा गणेश मरा। गांव में बराबर मौतें होती जा रही हैं। और इसी तरह एक दिन उसके घर के लोग भी एक एक करके

'ओह!' —पाचू के माथे पर सिकुड़नें पड गई। चेहरा खिसलाहट से भर उठा। उसका जी बुरी तरह से विचलित हो गया।

लाख न चाहने पर भी बार बार अपने विचारों में मृत्यु तक पहुंच जाने की आत्म ग्लानि पर पाचू की आंखों में आंसू बरबस छलछला उठे। इन आंसुओं पर वह और भी खीझ उठा—वह यह सब बातें सोच ही क्यों रहा है? क्या उसे दुनिया में और कोई काम नहीं है?

धोती के छोर से आंसू पोंछकर पाचू ने सुनो दराज की तरफ देखा।

पीछे की तरफ कागजा का बडल बधा रखा था। उसन झट उसे बाहर निकालकर उसपर बधी हुई सुतली खोल डाली। उसमे चिट्ठिया पत्रिया, डिग्रिया के सर्टिफिकेट वगरा, बधे रखे थे। एक बार जब उसके दादा न अपने जोम म आकर उसका एक सर्टीफिकेट फाड डाला था, तब स वह अपने निजी कागज-पत्र स्कूल की दराज म ही रखता है।

पाचू ने कागजा को उलटना शुरू किया। प्राफेसर बनर्जी का दिया हुआ सर्टीफिकेट, जॉडन साहब का सर्टीफिकेट, जाडन साहब की चिट्ठी, फिर जाडन साहब की दूसरी चिट्ठी, राय भुवन मोहन सरकार की चिट्ठी गणेश की लिखावट

सुचारु रूप से बगला लिखना-पढना सीख लेने के बाद गणेश एक बार कुछ दिना के लिए अपने काका के पास ढाका गया था। वहा से उसने यह चिट्ठी लिखी थी— 'श्रीचरण कमलेषु "

अपने दिल के अन्दर ही अन्दर उसने यह जाना कि गणेश के इस पत्र पर जरा-सा ध्यान देते ही फौरन मृत्यु उसके विचारा म आ जाएगी। और जब तक मृत्यु स्पष्ट रूप से उसके दिमाग म आए आए, उसे अपना ध्यान किसी और तरफ '

अरे हा वह तो पिछले महीने की फीस का हिसाब देखने बैठा था न!

उसने अपने आगे रखे हुए कागजो को बायें हाथ से झटककर एक ओर सरका दिया। कागज ऊचे नीचे होकर जरा बिखर गए।

फौरन ही दूसरी दराज का ताला खोलकर उसम रखे हुए दोनो रजिस्टर उसने बाहर निकाल लिए। रजिस्टर बाहर निकालते समय बीच से कोई चीज खिसककर प्लेटफाम पर जा पडी। पाचू न उस देखा। उसकी आखें खुशी स चमक उठी—एस्प्रो का पकेट!

फौरन ही रजिस्टरो को मेज पर पटक और फुर्ती स झुककर उसन एस्प्रो का पकेट उठा लिया। लिफाफे क अन्दर दो टिकिया रखी थीं।

'खा लू ? यानी बीमार नहीं जी बीमार नहीं, या ही सिर म दद है। सच ? हा हा, इतने ढग कुढग विचार सिर म समाए हुए हैं तो

क्या दद भी न होगा। जरूर दद हो रहा है।"

कागज के अन्दर चमकती दो सफेद टिकिया को पाचू ने भूखी आशा से देखा। फिर कागज फाडकर उसने दोना टिकिया हाथ मे रखी और इससे पहले कि कोई नया तक दिमाग म उठे, पाचू ने अपने से चुराकर उन्हे झट से मुह म रख लिया।

'निगल जाऊ ?—नहीं, चबाना चाहिए। जरा देखें तो इसका स्वाद कैसा होता है।"

कट कट, दोनो टिकिया दातो म बोल गइ। जसे कोई खाने की बढ़िया चीज हो, इस तरह उसने उन दोनो टिकिया को चबाया और फिर फिर चबाना चाहा लकिन वे तो घुलने लगी। दाता की अक्षमता को समझकर पाचू ने घुली हुई टिकिया के बारीक कणा को जबान से तालू म रगड रगड कर और भी घुलाना शुरू किया। मुह म कसैला लुआब बढने लगा। पाचू उन्हे घुलाता ही रहा। दोनो गालो म फूलने की हद तक वह लार को घोंट कर बढाता ही रहा—यहा तक कि उसने जबडे दद करने लगे। तब वह मजबूरन उसे पी गया।

कसैला ही सही आज चार दिन के बाद पाचू की फीकी जबान का किसी तरह का स्वाद तो मिला था। इससे उसे एक तरह का सतोष हुआ।

पानी पीना चाहिए। वह उठा और बाहर आया।

मुह का यह कसैलापन अब धीरे धीरे फीकेपन म बदल चुका था। यह पाचू को अखरने लगा। उसकी भूख एकदम तज हो गई। सिर की झनझनाहट बढ गई। स्कूल के पीछे ही पोखर थी। पाचू कदम बढाकर वहा पहुचा। दोना हाथा की अजुली बाधकर उसने पानी पिया। पानी खाली पेट म लगा। उसने फिर पिया तीसरी बार चौथी बार, पाचवीं, छठी बार—सातवीं बार उसने अजुली भरकर फिर छोड दी।

उसका पेट तन गया था। उसम अब पानी पीने की ताब नहीं थी। लेकिन पानी से अभी मन न भरा था। उसने अपना मुह धोया सिर पर छींटे मारे, कुल्ला किया और पानी के छीटे से मुह और हाथ पोछते हुए

उठ खड़ा हुआ। उसने जानबूझकर अपने में एक ताज़गी महसूस करना शुरू किया और सोचना शुरू किया कि उसका पेट भरा हुआ है, वह अब मज़े में है।

पेट भरा होने की कल्पना उसके विचारों को अपने परिवार की ओर खींच ले गई।

उन सबों ने भी पानी पी लिया होगा। वे सब भी मज़े में होंगे। बस, अब देर ही कितनी है। दिन के ढलने ही

पांचू ने धूप से अन्दाज़ लगाया, ढाई बज रहे होंगे। डेढ़ घंटा और यहीं बैठना चाहिए। साढ़े तीन बजे चलना ठीक होगा। लेकिन रोज़ तो साढ़े चार पांच तक जाता है। दयाल बाबू अपने मन में सोचेंगे कि आज चावल लेना है इसलिए जल्दी चला आया। ऊंह, सोचेंगे तो सोच लें। कह दूंगा कि कोई काम तो था नहीं, इसलिए सोचा, लाओ जल्दी ही पढ़ा आऊं। और जब जल्दी ही जाना है तो अभी क्यों न चला जाए? नहीं अभी जाना ठीक नहीं। तब तो साफ़ खुल जाएगा कि चावल के लिए इतनी जल्दी की गई है। मगर यह कोई झूठ बात थोड़ी है। हां, आबरू का सवाल ज़रूर है। आबरू चली गई तो लाख का आदमी खाक का।

पांचू के मन में प्रश्न उठा—'तो क्या चावल मांगने से आबरू नहीं गई? नहीं, इसमें आबरू का कोई सवाल नहीं उठता। तनख्वाह न ली, चावल ले लिया। लेकिन चावल तो मोनाई की दूकान से भी '

आठ दिन पहले जब दयाल ज़मींदार से उसने वेतन के रुपयों के बजाय चावल मांगा था और दयाल ने उसे देना स्वीकार कर लिया था तभी से उसे आशा बंध गई थी कि दयाल बाबू वेतन के रुपयों से चावल न तौलेंगे। वह मोनाई तो हैं नहीं, ज़मींदार हैं इतने बड़े, और फिर उसे इतना मानते हैं। वह उनके लड़के का गुरु है उन्हें अखबार पढ़कर सुनाता है, साहबों के लिए उनकी चिट्ठियां अंग्रेज़ी में लिख देता है। इन सबका कभी एक पैसा आज तक उसने नहीं लिया। कोई किसी तरह से समझता है, कोई किसी तरह से। लेकिन आठ रुपये में मन दो मन तो उठाकर देने से रहे।

अरे, ज्यादा से ज्यादा पांच सेर में दस सेर दे देंगे, बस ! ज्यादा भी दे सकते हैं। हां भाई, जमीदार जो ठहरे। भला राजा के घर मोतियों का काल ? वो चाहें तो उठाकर मन दो मन दे दें। उनके लिए कौन बड़ी बात है ? खैर, इतना तो नहीं, अगर पन्द्रह सेर भी दे दिया तो ठाठ से महीना बीत जाएगा। आध सेर में रोज़ पेट भर निबट लिया करेगा। न सही भर पेट, अरे न होने से तो काना मामा ही भले। फिर किया क्या जाए ? ज़माना कैसा आ लगा है ! जब तक लड़ाई चलेगी ये अकाल नहीं जाने का। लड़ाई की वजह से ही तो यह अकाल है।

पांचू ने अखबार में दूसरे प्रान्तों से यहां के लिए अनाज भेजे जाने की खबरें पढ़ी थीं। गांव गांव में यूनियन बोर्ड खोल जा रहे हैं जो मिट्टी के मोल चावल बेचेंगे। यह सुनकर दयाल भी हंसे थे मोनाइ भी हंसा था। और उन दोनों की हंसी में सोने के बंगाल के मरघट हो जाने की सूचना छिपी थी, उनके साथ इतने दिनों के अपने संबंध की वजह से पांचू यह भी समझता था। फिर भी अगर उसे और उसके परिवार को दयाल जमीदार से रोज़ आध सेर चावल मिलता रहे तो वह अपनी सारी सहृदयता को बंगाल के साथ ही मरने दे सकता है।

पांचू सोच रहा था—'आठ रुपये में तो वह हर महीने पन्द्रह सेर देने से रहे। हां अगर वह तनख्वाह बढ़ा दें तो अलबत्ता गुजारा हो सकता है। अच्छी बात है, तो आज मैं दयाल बाबू से तनख्वाह बढ़ाने की बात कहूंगा। मान जाएंगे ? अरे मैं उनका कोई दूसरा काम कर दिया करूंगा। कलकों ही सही, किसी तरह मरा पेट तो पेट की ज्वाला में जलने से बचे ! वह तो मैं उनकी सारी जमीदारी में झाड़ू लगाया करूं। जान है तो जहान है। पेट भरे पर आबरू भी भली लगती है। हे भगवान् बस ऐसा ही कर दो। हे नाथ, मेरी सुन लो। किसी तरह दयाल बाबू मान जाएं बस ऐसा कुछ कर दो !'

प्रार्थना से हृदय गद्‌गद् हो उठा। पांचू इस वक्त तक क्लास रूम के दरवाज़े के सामने पहुंच चुका था। फटे हुए पोस्टर पर नज़र गई। पांचू ने

खट् से पलटकर मोनार्द की दूकान की तरफ देखा—पुलिसमैन ? नहीं जा रहा ! पाचू एक निसास छोड़कर कमरे में दाखिल हुआ। और कमरे की तमाम चीज़ों से जबरन निगाह बचाकर वह कुर्सी पर बैठ गया।

वह अब सूनी डेस्कों की बात नहीं सोचेगा, दीमकों की भी नहीं। भाड़ में जाए स्कूल, उसे अब करना ही क्या है ? बस, दयाल जमींदार के यहां उसे काम मिल जाए।

दराज़ के अन्दर रख देने के लिए उसने दोनों रजिस्टरों को उठाया। उनके नीचे उसके कागज़ बिखरे हुए पड़े थे। छटते ही उसकी नज़र पड़ी—मां की लिखावट। ढाई बरस पहले जिस पत्र ने उसे आई० सी० एस० होने से रोक दिया था उस पत्र के ऊपर का कुछ हिस्सा दूसरे कागज़ों में दबा हुआ था। जहां से दिखाई देता था, पाचू उस पत्र को वहीं से पढ़ने लगा—

" कल रात तुलसी के ब्याह के लिए बनवाए हुए सारे गहने जुए में हार आया। मेरे सिरहाने से कुंजी निकालते समय बहू की नज़र पड़ गई थी। मैं छत पर खड़ी रामतनु की घरवाली से बातें कर रही थी। बहू जब तक कहने आए वह अपना काम कर चुका था। तेरे बाबा के कानों में जब कोठरी और सन्दूक के ताले खुलने की खटर-पटर गई, तो 'वह कौन है, कौन है' कहके पुकारने लगे। तू तो जानता ही है, अपनी कोठरी में बैठे बैठे वे इसकी कैसी ताव बजाते रहते हैं। पर वे पुकारा करें, बन्दा बोला तक नहीं। और मैं जब घबराकर नीचे आई तो बाहर के दरवाज़े से निकल रहा था। कितना पुकारा, 'शिबू ! शिबू !' पर शिबू किसकी सुनता है ? जब मां थी, तब थी। अब तो वह अपने मन का हो गया है भैया ! क्या करूं जो लिखा के लाई हूं वह भोगना ही पड़ेगा। तेरे बाबा आज या कल के हो के पड़े हैं। शिबू के रूप में नारायण मेरी या परीक्षा ले रहे हैं। नहीं जानती और आगे क्या-क्या देखना बदा है। शिबू आज ऐसा न उठता तो भगवान के चरण पकड़कर अपनी मौत मांगती। मेरे ऐसा सोहाग किस स्त्री का है ? जिसके दो-दो जवान बेटे हों, उस मां को चिन्ता रहे ? पर

बटा एस तप मैंने किए कहा थ ? मेरी हालत तो कजूस के धन सा है जो ईश्वर की दया से सब कुछ हाते सोत भी उसका सुख नहीं भोग सकता।

' मैं अब शिबू की या तरी बात नहीं सोचती बेटा ! तुम लोग तो, नारायण कृपा पर अपन हाथ पर ब हो गए हो। शिबू बहू के गहन पहले भी बच चुका है। दो बार तो उस मारा भी। बहू न कल तक मुझसे य सब बातें छिपाकर रखी। जुआ खेलने लगा है यह बात तो बहू ने एक बार पहले भी कही थी। मना करन पर कहता था तकदीर का व्यापार है जो लगाऊगा दूना दस गुना मिलेगा। बार बार न सही तो बस इकट्ठा एक ही दाव म। और भी बहुत सी बातें बनाता रहा। और जुलुम भी शुरू हुए। बहू से लडता था यह तो मैंन भी कई बार सुना। पर इतना नहीं समझी थी। शिबू की यही दशा रही तो घर का भगवान ही मालिक है। और मैं तो बेटा जब तक जिऊगी चिता करती रहूगी—बहू की तुलसी क ब्याह की। कनक भी अब दस बरस की हो गई है। इसक अलावा अब तो दीनू और परेश की भी चिन्ता है। वे दुधमुहे बच्चे क्या समझ कि उनका बाप जुआरी है और जुआरिया क बटे सदा पराया मु ही जोहते हैं।

कल की घटना पर खरे बाबा स भी बातें हुइ। कहन लग, जब तक *आखें रहीं तब तक दुनिया को न देख पाया। और अब अधा होन पर,* जिस दुनिया का भयानक रूप मैं अपनी आखा स देख चुका था उसका अत कसा भयावह होगा यह साफ साफ देख रहा हू।

मुझस कहन लगे—निरु तुम्हारे ही लाड प्यार क कारण हाथ ॥ निकल गया। बच्चे को एक उम्र स ज्यादा अगर बच्च की तरह ही रखोगी तो उसकी मर जिम्मेदारिया का सारा ताप भी तुम्हारे ऊपर ही आएगा। अगर मैं जानती होता कि मा का प्यार आशीवाद न होकर कभी कभी शाप बनकर बच्चा को लग जाता है तो कलेजे का पत्थर बनाने का कोशिश करती। पाच बच्चा का धरती माता की गोद म देकर निरु का मुह देखा था। इसीलिए उस गोद स उतारन भी डरती थी। तू होना पर लिख गया है शायद मा का यह बात समझ सकेगा। पर अब ॥ और कितना

पढ़ेगा पानू ? तू अपने मन में कहेगा, मां मेरी तरक्की होने भी नहीं देख सकती। पर बेटा, एक तेरी ही सोचती रहूं तो ये तुलसी, ननद कहां जाएगी ? दीनू, परेश का क्या होगा ? तुलसी अब सोलह बरस की हो गई है। इसकी पहाड़-सी उमर कब तक दुनिया की आंखों से छिपाती रहूंगी। सात बरस में तार-तार जोड़कर इतने गहने बने थे सो भी भगवान ने छीन लिए। कैसे बेड़ा पार लगेगा ?

"तूने लिखा है छुट्टियों में नहीं आऊंगा, विलायत की पढ़ाई करनी है। सो ठीक है, पर एक बात मुझे बता दे। तू तो विलायत चला जाएगा लेकिन तेरी मां कहां जाएगी ? किसे अपना दुखड़ा सुनाएगी ?

"जो मन की थी सो तेरे आगे कह चुकी। आगे तू समझदार है। नहीं तो फिर भगवान तो हैं ही बेटा ! तू जहां भी रहे सुखी रहे। मेरे जी से तो सदा यही असीस निकलती है।'

पत्र पूरा होते ही एक ठंडी सांस पानू के मुंह से निकल गई। उसने अपनी पीठ कुरसी से टिका दी। बीते हुए दिन एक-एक करके उसके मन की आंखों के सामने आने लगे। लाख अनिच्छा होने पर भी उसे अपनी मां के इस पत्र के सामने झुकना पड़ा था। और वह एक बार घर आया था, यह सोचने के लिए कि अब क्या किया जाए।

दादा उससे बड़ा है। पानू जानता है अपना निरक्षर रह जाना उसे खलता है। जिसका छोटा भाई इतना तेज है उसे उससे भी बढ़कर कुछ होना चाहिए, इसी एक धुन ने दादा को जुआरी बनाया है। बाबा जो कहते हैं कि मां के लाड़-प्यार ने ही दादा को हठी, स्वार्थी और निकम्मा बना दिया, सो कुछ झूठ बात नहीं है। मां को अभी भी दादा का बहुत पक्षपात है।

मां का पत्र पाकर पानू जब गांव आया, तो दिन में दस बार उस पर अपने बड़प्पन का ज्ञान झाड़ने से नहीं चूकता था।

घर आकर पानू अभी यह सोच ही रहा था कि जीवन निबाहने के लिए उसे कौन-सा काम करना चाहिए कि एक दिन गांव का डीह बाबा अपने

आठ बरस के लड़के रणेश के साथ आकर गमम करने लगा— एकट समा करबेन मा ठाकुर। आपको दगकर तब बात मर मा म म आद कि हमारी तो सात पुरखा स आप लोगा के चरना म कट गई। यादी इन लड़का की न निभगी। य लाग तो अभा स हा गाधी बाबा का झण्डा उठाते हैं। बड़े होकर मिट्टी खराब हो जाएगी इनकी। इसरा जा य गनता चार अच्छर यस नो मे सीख लगा आपकी दया से ता सहर म बड़ा नौकरी पा जाएगा। और मेरा बुढ़ापा भी आपके चरना की दया स बन जाएगा।'

पाच को उसी दिन यह मालूम हुआ कि गवई-गाव के डोम-बाम्हिया मे भी अब इतनी समझ आ गई है। यह समझते हुए भी पानू के सस्कारी मन को डोम बाम्हिया का अग्रेजी शिक्षक बनने म सकोच हुआ। वह उस मना करने जा ही रहा था कि पास खड़े हुए बूढ़े रामलाल चक्रवर्ती, जो उधर स जाते हुए हीरू पाच की बात सुनने के लिए खड़े हो गए थ अपन सम्पूर्ण ब्रह्मतेज को आखा म दरशाकर बोल उठे—"छोट जातर मुख आगुन! शालार ब्याटा डोम-बाग्दी अब ऊच जाति की बराबरी करन चले हैं?

दूसरे के मुह स विशेषकर एक ऊची जाति वाले के मुह स छोटी जाति वालो के लिए गालिया सुनकर शहर की राजनीतिक और सामाजिक हलचलो से प्रभावित पाच की साम्यवादिता चेतन हो गई। उसका हृदय ऊची जाति वालो के प्रति विद्रोह से भर गया। उसकी निगाह गणश के चेहरे पर जा पडी। भोला सा चेहरा, आशा भरी दृष्टि स उसकी ओर देख रहा था। रामदुलाल खूड़ा के व्यग्य की प्रतिक्रिया स्वरूप उस लगा गणेश को न पढाकर वह सरस्वती का अपमान करेगा। और उसन रामदुलाल के देखते ही हीरु को आश्वासन दिया कि जब तक वह गाव म है गणेश उससे पढने आ सकता है।

गाव वाले कितने नाराज हुए थे! खुद उसके घर म उसकी मा न भी पहले उसे मना किया। दादा ने तो कहनी न कहनी सभी सुना डाली।

सारा गाव उसकी निन्दा करने लगा। और ज्यों ज्यों गाव का विद्रोह बढता गया, पाचू का हठ भी जोर पकडता गया—"सबको विद्या पढने का सामान अधिकार है।"

पाचू के जीवन म नया रस आ गया। केवल अपने उत्साह के बल ही वह अपनी जिद पर अड़ गया था। और उसी जोश म एक दिन उसने गाव-भर के 'छोटे लोगों' के लडको को एकत्रित कर पेड के नीचे बैठकर पढाना शुरू कर दिया।

वह आया था घर के लिए कुछ सहारा करने, कहा इस मुसीबत को गले डाल लिया? लेकिन अब तो बात पर बात अड गई थी। उसने निश्चय किया कि वह स्कूल खोलेगा और धीरे धीरे आगे चलकर स्कूल को ही अपनी आमदनी का जरिया बनाएगा।

जब सारा गाव स्कूल के खिलाफ, पाचू के खिलाफ, तब कानाई मिस्त्री ही बढकर उससे हाथ मिलाने आया था—"शहर जाके स्कूल के लिए मदद मागो। यहा मैं सभाल लूगा। बाकी एक बार ऐसा स्कूल बनाओ मास्टर, कि लाट साहब को भी यहा आना पडे।"

कानाई की शुभकामना फली। शहर जाकर प्रिंसिपल जार्डन के अदम्य उत्साह और सहयोग के कारण अनेक धनवान और सम्मानित नागरिकों से उसने अपने स्कूल के लिए सहायता प्राप्त की। उन रुपयों से जब वह किताब, स्लेट, पेंसिल आदि लेकर गाव आया तब लडके कितने खुश हुए थे! और एक दिन जब अमेरिकन मिशनरी जार्डन अपने कुछ विलायती और देशी मित्रों के साथ उसका स्कूल देखने के लिए आए थे, तब गाव-वालों पर उसका कितना प्रभाव पड़ा था।

प्रिंसिपल जॉर्डन ने उसके स्कूल के लिए पक्की इमारत बनवा देने का वचन दिया। गवर्नमेंट कॉन्ट्रैक्टर राय भुवन मोहन सरकार तथा उनके द्वारा आसपास के बडे-बडे जमीदारों का सहारा पाकर स्कूल की इमारत देखते देखते खडी हो गई। कलक्टर आए, बडे बडे लोग आए, जल्सा हुआ, लडकों को मिठाइया बाटी गई। दयाल जमींदार भी अब **उसकी पीठ**

हाथ रखने लगे, उस अपने लड़के का दिवान नियुक्त किया। अपने पिता की मृत्यु के बाद रामदुलाल चपरासी का लड़का गोविन्द भी किसी गाँव वाले साले की परवाह न कर शुभ काम में हाथ बटाने पाचू के स्कूल में मास्टर हो गया।

गोविन्द मास्टर के आने से गाँव में खलबली-सी मच गई। रामदुलात शर्मा से पाचू के स्कूल के सबसे बड़े विरोधी थे। जब उन्होंने लड़का नीच जाति को पढ़ाने लगा तो चार उँगलियाँ गोविन्द पर उठीं। गोविन्द ने अपने काम का समर्थन करने के लिए ब्रह्मास्त्र खोज निकाला— 'कलेक्टर साहब ने पाचू बाबू से यह स्कूल खुलवाया है। वह सबको राज भाषा सिखाना चाहते हैं। कल यही डोम-चाण्डियों के लड़के अंग्रेजी पढ़कर हमारे ऊपर राज करेंगे और कलेक्टर साहब के हुकुम से बामन-कायथों से मैला उठवाएँगे—देख लेना।' इतने बड़े-बड़े आदमी एक इशारे पर दौड़े चले आए। हमारे पाचू बाबू क्या कोई मामूली आदमी हैं? कलेक्टर साहब के बड़े जिगरी दोस्त हैं। जो उनके स्कूल के खिलाफ बोलेगा उसीको जेल हो जाएगी।'

गोविन्द मास्टर की अतिशयोक्ति में थोड़ी-बहुत गुंजाइश रखते हुए भी गाँव वालों को यह मानना पड़ा कि पाचू मामूली लड़का नहीं है। उसके स्कूल के विरोधी को जेल न सही, जुर्माना अवश्य हो सकता है। लोग उसके प्रभाव के कारण अब उसका आदर भी करने लगे। पर बामन कायथों की नाक न कटे, इसलिए संधि के प्रस्ताव में एक शर्त यह रखी गई कि स्कूल में नीच जाति के लड़कों से अगर ऊँचा को अलग बैठाने को राजी हो तो सब जने अपने लड़कों को पढ़ाएँगे। प्रस्ताव पाचू की माँ की मार्फत आया, और माँ के विशेष आग्रह पर पाचू को ऐसी व्यवस्था करनी पड़ी।

पाचू को आज भी याद है अपनी इतनी बड़ी सफलता पर बच्चों की तरह उल्लसित हो गणेश की पीठ थपथपाते हुए उसने कहा था—'गणेश अगर तू न आया होता तो गाँव में आज यह स्कूल भी न होता।"

बालक गणेश का भोला सा मुह उस समय आत्म गौरव और प्रसन्नता मे चमक उठा था। आज भी पाचू की आखों के सामने वही चेहरा फिर रहा है।

'आज गणेश नही रहा, यह स्कूल भी नही रहा!'

पाचू की इच्छा हुई कि वह फूट फूटकर रोए। गणेश और स्कूल दोनों, शरीर और प्राण की तरह एक थे। एक के न रहने पर दूसरे का न रहना भी ठीक उसी तरह स्वाभाविक था। गणेश को फिर से लाकर अपने स्कूल को पुनर्जीवित करने की असमर्थता को, आतरिक विद्राह और पीडा के साथ अनुभव करता पाचू विकल हो उठा।

छोटे बच्चे जिस तरह किसी चीज को पाने के लिए पैर रगड रगड-कर मचलते हैं, पाचू का मन उस समय ठीक उसी तरह गणेश को पाने के लिए मचल रहा। उसकी कल्पना कमरे के जर्रे-जर्रे से गणेश को खोज निकालने लगी। वह महसूस करने लगा, गणेश दरवाजे से अन्दर आ रहा है। गणेश डेस्क पर है—गणेश सब डेस्कों पर है। वह चाक बटोर रहा है। ग्लोब के पास—हा, ग्लोब के पास गणेश ही खडा है। उसने ग्लोब घुमाया। सचमुच ग्लोब घूम रहा है? नक्शे के अन्दर से भी गणेश निकलता हुआ दिखाई दिया। उसे एकसाथ कई जगह से गणेश अपने पास आता हुआ महसूस हुआ।

"सर!"

पाचू ने चौंककर अपने पीछे देखा। कुछ भी नहीं। 'लेकिन आवाज गणेश की ही थी—साफ गणेश की। तब क्या?'

सहसा उसने खिलखिलाकर हसने की आवाज महसूस की। पाचू का दिल धक धक करने लगा। साथ ही साथ दिमाग के अन्दर एकदम सुन्न पड जाने का अनुभव हुआ। पाचू का सिर अपने आप ही चाका खा गया।

सारी शक्ति के साथ कुर्सी के पीछे लटकते हुए दोनों सुन हाथों को उसने अपने आगे मेज पर लाकर पटक दिया, फिर हथेलियों पर अपने

शरीर का सारा भार टिकाकर प्राणपण से उसने अपने शरीर को उठाने की कोशिश की—और वह उठ खड़ा हुआ। यह कम्पायमान होकर कमरे से बाहर झपटकर निकला। बरामदे में आकर कमरे की तरफ देखते हुए उसने महसूस किया कि उसका दिल अभी भी धड़क रहा है उसकी सांस तेज हो रही है। तो क्या सचमुच

पाचू की चेतना वापस लौट आई। समझकर उसने अपने को फटकारा— फिर बहके ! नहीं नहीं मगर वो आवाजें और वो ?"

पाचू की सांस अपनी असली गति से चलने लगी, दिल की धड़कन भी स्वाभाविक हुई— सब मेरी कल्पना थी और कुछ नहीं। सब कुछ भी सच कुछ भी नहीं था।'

एक इच्छा हुई अन्दर चलकर बठे। पर

उसने एकाएक घूमकर धूप को देखा। साढ़े तीन बज रहे होंगे, बल्कि अब तो पौने चार होंगे। चलना चाहिए।

लेकिन ये रजिस्टर कागज—अभी पड़ा रहने दो इन्हें। कौन आता है यहां ?

ताला दो कदम अन्दर जाकर डेस्क पर रखा था।

उठाता हूं—हां उठा लाऊंगा। कोई बात नहीं है।

कदम तौलते हुए पाचू का साहस स्वयं उसे भी चकित कर लपककर ताला अन्दर से उठा लाया, और दोनों हाथों से खींचकर कमरे के दरवाजे बन्द कर दिए।

दरवाजे की कुण्डी लगाते हुए पाचू जरा मुस्कराया—"बेकार में डर गया। डरा नहीं जी अच्छा होगा दयाल बाबू ने यहां जाना है। वक्त से उठ आया नहीं तो ख्यालों में ही बैठा रह जाता।

ताला लगाते लगाते वह सोचने लगा— क्या सचमुच दयाल बाबू ने मुझे आज चावल देने का वायदा किया था—या यह भी मेरी कल्पना ?'

नहीं बिलकुल सच है। तत्क्षण दूसरे विचार ने उसके मस्तिष्क में आग्रहपूर्वक प्रवेश किया और आत्मा की दृढ़ता के साथ उसने अपने

को विश्वास दिलाया कि दयाल ने उसे चावल देने का वचन दिया था।

फिर एकदम से पाचू को हंसी आ गई।

२

बड़ी बहू ! चलो, चलो। बखत न गवाओ। चूल्हा सजाए तयार रखा था ! और पानी की पतीली गरम होने को रख दो। पाचू के आते ही चावल उसमें डाल दिया जाएगा—बस, छिन भर में भात रधकर तैयार !'

पानी पीकर रीता गिलास हाथ में लिए पार्वती मां, एक सुर में बोलती हुई, गिलास माजने में अपनी सारी फुर्ती दिखाने लगी।

शिबू की बहू, दालान में बैठी, पास ही चटाई पर पड़ी हुई मुन्नी को थपकी देकर सुला रही थी। अभी अभी उसकी आख लगी है, बड़ी मुश्किल से सोई है।

पास ही मगना भी सो रही थी। शिबू की बहू मुन्नी को धीरे धीरे थपथपाती ही रही। सास की बात पर मुस्कराते हुए उसने सिर उठाया और धीरे से बोली— लेकिन, ठाकुर-पो (देवर) की घड़ी में तो अभी बड़ा सबेरा ही दिखाई देता है न !'

बात कहते हुए उसने मुंह का रुख दीवाल से टिककर बैठी, दोनों घुटनों की 'वर्किंग टेबिल' सी बनाकर तकिये के गिलाफ पर हरे-लाल डोरों से 'गुड लक' काढ़ने में लीन, पांचू की पत्नी मगना की तरफ ही था।

आवाज के अंदाज पर मगना का चेहरा उठा। चहरे की विशेषता के रूप में मगना की बड़ी बड़ी सपना भरी आखों की पुतलियां चमककर शिबू की बहू की आखों में समा गई, और दो जोड़ी होंठों पर शैतान मुस्कराहट खिलवाड़ कर गई।

बात खत्म करने के बाद उसने ज़रा अहिस्ता से एक सर्द आह की सलामी मंगला को सुनाते हुए छोड़ दी। भारीटी आह भरने से उसके भूखे शान्त पेट में एक गति-सी मालूम हुई। यह उसके पेट में ठंडी-सी भली मालूम हुई।

सपना भरी आशा की पुतलियां में घुमा कर बहाना बनाकर फिर अपने काम में लगी हुई मंगला चटपट बोल उठी— अरे अभी तो ज़माने की घड़ी में दोपहर और शाम भी बीतने को पड़ी है। और फिर अभी घर की घड़ी ठहरी—उसमें कब जाने दोपहर हो और कब शाम! भई बकुलफल तुम तो भूख के मारे अभी से ही बच्चों बनी जा रही हो।

'तुम चाहे जैसा समझो। आज तो तेरे उनकी बाट में मैं भी तेरी तरह ही मन मार बैठी हूं सखी! हाय दुख रोज़ इतनी बाट जोहनी पड़ती है।'

बड़ी बहू ने फिर एक लम्बी सर्द आह खींचकर मंगला की तरफ देखा लेकिन इस बार ठंडक पाकर पेट गुड़गुड़ाने लगा।

मज़ाक करते-करते ही बड़ी बहू अनमनी हो गई। पेट की गुड़गुड़ाहट से बचने को उसे भूलने के लिए वह चुप ही हो गई। जिठानी को उठते देख मंगला भी काम में हाथ बंटाने के खयाल से अपना सारा सामान बटोर कर ऊपर अपने कमरे में रख आने के लिए उठी।

सूरज की रोशनी की एक लकीर दालान के आगे की टूटी मेहराब से गुज़रकर दालान के अन्दर की दीवाल पर पड़ रही थी। मंगला के खड़े होने पर रोशनी उसकी गर्दन, होंठ, नाक और सिर के कुछ हिस्से पर पड़ने लगी। उस रोशनी में नाक की सोने की कील में जड़ा हुआ लाल नग दमक उठा। आज चार दिन से जब से इस घर में अकाल आया है पार्वती मां ने बचे खुचे एक एक, दो-दो गहने सब लड़की बहुओं को पहना दिए हैं। रसोईघर में भी ज़रूरत से ज़्यादा बर्तन खनकते हैं। औरतें ज़रूरत से ज़्यादा काम काज में व्यस्त सदा की भांति ही आज भी जीवन में मन में पूर्ण निश्चिन्तावस्था का अभिनय करने के विफल प्रयत्न में

प्राणपण से लगी हैं।

पिछली शाम पाचू यह सब देखकर हस पडा था। कहने लगा—'मा, अगर कोई अखबार का रिपोटर इस समय तुम्हारे घर म आए तो उसे यहा जरा भी कंगाल नज़र नही आएगा। मेरी समझ म नही आता कि तुम छिपाती किससे हो ? सबके घरो म यही तमाशा तो है।'

पावती मा खिसियानी हसी हसकर बोली—"चाहे जो हो पर आबरू तो सभालनी ही पडती है न। भगवान न यही तो छोटे लोगो से हम लोगो म फरक रखा है। नहीं तो हम लोग भी उनकी तरह गली गली गाव गाव मे भीख न मागने होते लूट मार न करते होते।'

पाचू ने इसपर फिर हसकर जवाब दिया—'पर कब तक नही करेंगे मा ? आबरू से पेट तो भरता नही, फिर उसे बचाकर रखने से भी क्या लाभ ?'

पावती मा को कुछ जवाब न सूझा हारकर कहने लगी—"तेरा मन तो सारी दुनिया से निराला है। भला आबरू के बधन भी कही छूटते हैं ? कुलीनो की आबरू तो चिता तक साथ जाती है बेटा।"

पर पुरानी धोती के हजार पैबन्दो की तरह कुलीनो की आबरू भी अब अपनी असलियत को, लाख कोशिश करने पर भी, छिपा नही पाती मा।"

"ये तो सच है। किया भी क्या जाए। नगे की तो दानो टागें उघाडी, तब भी वह किसी तरह लाज तो समेटता ही है बेटा।'

इसके जरा देर बाद ही रामतनु की घरवाली आ गई। पावती मा उनमे बातें करने म लगी। सारा घर काम काज म व्यस्त हो गया। लेकिन बीच मे ही दीनू ने भूख भूख चिल्लाना शुरू कर दिया, परेश भी उसका साथ देने लगा। डाट धमकी बहलाने फुसलाने से काम नही चला। आबरू की रक्षा म मा को हार मानते देख शिबू भी आ गया और उसने लडको को मारना पीटना शुरू कर दिया।

पाचू किसी तरह दोना भतीजो को शिबू से छुडाकर ऊपर अपने

कमरे में ले गया। उसके बाद उसने अपनी डायरी में लिखा — आदत के असत्य से दूर की सराम ग्लानवाना गन्दा जवाम अगर कोई इस दम में मिल सकता है तो वह कोई छोटी उम्र का बच्चा ही होगा, जो भूख लगने की इन्सानी कमजोरी के लिए जरा भी लज्जित नहीं।

पास की छोटी सी मेज पर मंगला के हाथ का कढ़ा हुआ मेजपोश बिछा हुआ था। बीच में शीशे का छोटा सा कलमदान रखा था जिसकी दोनों दवातों की स्याही सूख गई थी।

बाईं तरफ एक ईंट के दो टुकड़े पर उनपर पतली चपटी, ऊपर से मंगला के बनाए माम के रंगीन मोतियों की चादर पड़ी हुई थी। इस तरह दोनों ईंटों के सहारे से उनके बीच में आठ-दस किताबें सजाकर रखी गई थीं। दाहिनी ओर पीतल की ॐकार बनी हुई छोटी सी धूपदानी और मेज के ऊपर दीवाल पर भारतीय चाय का एक कलण्डर टंगा था। दीवान के दोनों तरफ गाँव की ओर खुलती हुई दो खिड़कियाँ थीं। दीवाल से सटी हुई बड़ी चारपाई उसपर करीने से बिस्तर लगा हुआ। चारपाई से लगी हुई दीवाल के ठीक बीचोबीच एक राधाकृष्ण की तस्वीर अगल बगल सुभाष बोस और जवाहरलाल की तस्वीरें। एक तरफ तीन सन्दूक एक दूसरे पर चुने हुए रखे थे, उसके ऊपर के आले में रद्दी अखबार बिछाकर एक शीशा, कंघा तेल आलता की शीशियाँ और बनारस की बनी हुई लकड़ी की सिन्दूर की डिबिया रखी हुई थी।

मंगला ने मेज पर धूपदानी के पास, अपने कातने-बुनने का सामान रख दिया।

डायरी खुली हुई सामने ही रखी थी। बीच में पेंसिल रखी हुई थी। मंगला ने पाँचू का लिखा एक बार पढ़ा। पेंसिल उठाकर कलमदान में रख दी और डायरी बन्द कर किताबों के पास। फिर शीशे में एक बार मुँह देखा कंधे से बालों को जरा सा टेच दिया और नीचे जाने लगी। दरवाजे से इधर से ही फिर लौटी खिड़की बन्द करने के लिए। बाहर देखा, पाँच छ आदमियों के बीच में बैठा हुआ शिबू जोर जोर से कह रहा

था—"खुद मोनाई ने मुझसे कहा कि सरकार जबरदस्ती फौज के लिए उससे सारा अनाज खरीद ले जाती है। अर "

मंगला ने खिड़की बन्द कर दी और नीचे चली गई।

वह सोच रही थी—"चावल लेकर आते होंगे।"

जीने के नीचे पर रखा ही था कि बाहर के दरवाजे से तुलसी और दीनू परेश अन्दर आते दिखाई दिए।

मंगला को देखते ही बच्चे एकसाथ ही बोल उठे—"काकी मां, हमने छन्देच खाये, दो-दो!"

सारे घर का ध्यान बच्चों की तरफ चला गया।

पार्वती मां और बड़ी बहू चौके में बैठी थी। ममता तब तक जाग चुकी थी। हथेली पर सिर टिकाकर लेटी हुई, चटाई की सींक तोड़कर दांतों से चबा रही थी, उठ बैठी। पार्वती मां ने पूछा—"सन्देश कहां पाए दीनू?"

बच्चों से पहले तुलसी बोल उठी—"काकी नम्बर आठ के भाई आए हैं कलकत्ते से।'

बात काटकर पार्वती मां बीच ही में घुड़क पड़ी—"फिर कहा काकी नं० आठ! तुझे भी पाचू की आदत पड़ गई है? रामतनु की घरवाली सुनेगी तो क्या कहेगी? खबरदार, जो आज के पीछे फिर कभी कहा तो!"

तुलसी चुप हो गई। बच्चे सहमकर वहीं के वहीं खड़े रह गए।

एक सेकण्ड चुप रहकर पार्वती मां फिर स्निग्ध स्वर से बोलीं—'गोपाल का बाप सन्देश लाया होगा। कब आया वो?"

'अभी दिन में ही तो आए हैं। गोपाल को ले जाएंगे।" तुलसी ने सिर झुकाकर कहा।

परेश दादी के पास आकर बोला— थाम्मा छन्देच खाया। मीथा मीथा।'

दीनू से भी दूर न रहा गया पार्वती मां के पास जाकर कहने लगा—

'ठाकुम्मा हमरा ता मामा ने ए पर दिया और बुआ रा ता बीर ग गिनाए।'

तुलसी एक गदरा छिपाकर लाई थी। उस चुपा ग बना था दर यह उसके पास ही चटाई पर बैठ गई थी। तब मा डपट पड़ी — झूठ बाला है। दो लिए थे मुआर। मैं तो बहुत मना करता रही मा!'

दीनू भी कम नहीं, लड़ पड़ा—' नई, दो तो अपन हान म तुम गिनाए स मामा न। हमने गिना ता—एक दा—था जब बारी आई थी हमर म, आ।

और तुम लोगा को भी तो दो-दो दिए थ उन्हान।'

'वो तो हम बाद म चाची न० आ '

'फिर कहा आ तो सही!" पावती मा दीनू पर घुड़क पड़ी।

दीनू चट स भागकर चाची के परो से चिपक गया। मगना तुलसी मडप के आस पास बुहार रही थी। दीनू क अचानक परा म आ लिपटन स वह जरा लड़खड़ाई फिर सभल गई।

"अरे अरे '

"काकी मा" दीनू न उससे धीर धीरे कहना शुरू किया—'काकी मा सच्ची! अमको तो एक एक सन्देश दिया मामा ने और बुआ को ता बीत स सन्देश भी दिए और बीत सा प्यार बी किया। अमको तो प्यार बी नई किया मामा ने।'

दीनू रूठी हुई आवाज म धीरे धीरे कह रहा था। बीच बीच म अपनी दादी की तरफ भी दखता जाता था गोया इशारा हो— 'तुमन हमारी शिकायत नहीं सुनी तो हम अब सुनाने के भी नहीं, हम तो अपनी चाची को सुना रहे हैं चुपके चुपके।'

गुस्स को बेबसी से दबाए सकपकाई हुई नजरा से, तुलसी दीनू का तरफ ही दख रहा थी। मगला न यह बात सुनकर क नजर से तुलसी की तरफ देखा। आखें मिलते उसन आख चुरा चटाई की

यह दीनू-परेश को काकी न० आठ के यहा अपने साथ ले ही क्या गई। पर उसे मालूम थाड ही था कि मामा आए हैं, और मामा उसके साथ ऐसा बर्ताव करने लगेंगे।

मामा के बर्ताव का ध्यान आते ही तुलसी ने अपनी रग रग म गुदगुदी से भरी हुई सिहरन महसूस की। झुका हुआ चेहरा अपनी तमतमाहट को रोकने के लिए दोना घुटना के बीच और भी गड गया। बाल की एक लट खिसककर चेहरे पर आ गिरी। तुलसी अपन सारे बदन को और भी सिकोडकर बठ गई। मामा के रूप म एक पुरुष ने आज उसकी कल्पना की दुनिया म पहली बार कदम रखा था। घर मे, पास-पडोस मे बरावर की ब्याही हुई लडकियो म, बकिम शरत् के उपन्यासो मे, और अपनी उम्र के तकाजे स, सारी समझी-समझाई हुई बातो को वह जिस तरह आप-बीती बनाने के लिए पिछले दो-ढाई बरसो से दिल ही दिल म तडपा करती थी मामा से उन्ही बातो का कुछ-कुछ आभास उसने पाया था। फिर दीनू परेश गडबड कर उठे। काकी न० आठ आ गई। उन्ह देखते ही वह कमी घुट्-स रह गई थी। फिर काकी की मुस्कराहट और मतलब भरी निगाहो से उसकी और मामा की तरफ देखना, फिर दीनू परेश को बहलाकर बाहर ले जाना। उसके बाद मामा की रसीली बातें उनकी वह प्यार भरी छेड-छाड। वह लाज के मार पसीना-पसीना हो गई। बाहो से निकलकर भागी। मामा की बकरारी, कमर के दरवाजे पर चट से उसका हाथ पकडकर मामा ने कहा—"शाम को आना। जरूर-जरूर। उमा दीदी कुछ न कहगी—किसीसे कुछ न कहेंगी।'

शाम का आना। शाम को आना।"—गदन उठाने की ताब नही, वह देखे क्स कि अधेरा हो रहा है शाम हो रही है।

तभी कनक न उसका हाथ झटककर पूछा— मामा ने तुम्हें कितने सन्देश दिए थे दीदी ?"

'कह तो दिया कि दो—एक तुझे ठुसा तो दिया।"

तुलसी तडपकर उठ खडी हुई लेकिन उसकी समझ म

था कि वह घर में और वहां जाकर बैठे। उसके लिए वहां स्थान नहीं। घर में हर एक का चेहरा उसे दुश्मन जैसा नजर आ रहा था। उसका सारा बदन अकड़ रहा था। खड़े रहने की ताब न थी। वह कहीं जाकर चुपचाप लेट जाना चाहती थी, अपने में खो जाना चाहती थी।

'अरे सुनती हो, एक गिलास पानी तो दे जाना!' बाबा की कोठरी से आवाज आई।

आवाज के कानों में पड़ते ही तुलसी के ख्यालों ने करवट ली। शाम का आना।'—वह जानती है जब बाबा पानी मांगते हैं तो मां को जाना पड़ता है। तुलसी ने अपने में स्फूर्ति का अनुभव किया। आगे मां की ओर उठ गई।

पार्वती मां मन ही मन कटी जा रही थी। झुंझलाहट पेशानी की नसों में तनी जा रही थी। लटके हुए गालों पर शर्म का बोझ पड़ रहा था जिसे उठाना अब उनकी उम्र के लिए दूभर था। काश कि कान बहरे हो जाते। उनकी आंखें क्या फूटी हैं कि दिन और रात का लिहाज भी न रहा!

'अरे सुना नहीं तुलसी! अपनी मां से कह एक गिलास पानी दे जाए।'—फिर आवाज आई।

दालान में खड़ी हुई तुलसी ने फौरन ही बड़े उत्साह के साथ कहा—'मां, बाबा पानी मांग रहे हैं।'

पार्वती मां की आत्मा पर तमाचा पड़ा। वह तिलमिला उठी। जवान-जवान बहुएं, बेटियां—तीन-तीन पोती-पोता की दादी के पद की प्रतिष्ठा को आघात लगा। गुस्सा उतारा तुलसी पर—'तो मुझ ऐसा खड़ी-खड़ी सुन क्या रही है? दे क्यों नहीं आती एक गिलास पानी उन्हें? अन्धे क्या हो गए हैं, मेरी जान पर संकट आ गया है। दिन-रात हाय-हाय, हाय-हाय। पानी चाहिए औ पान चाहिए औ पत्ता चाहिए। बुढ़ापे के दिनों की तरह भी राम का नाम नहीं लिया जाता। उंह!'

अपनी कोठरी में केशव बाबू चारपाई पर अधलेटे से पड़े थे। पार्वती

मा का एक एक शब्द उनके दिल को अंधी आंखों पर ही, चुभता हुआ महसूस हो रहा था। मोतियाबिंद से भरी हुई आंखों की पुतलियां इधर-उधर फड़फड़ाने लगीं। फीके चेहरे पर तमतमाहट छा गई। केशव बाबू एक बार उठकर बैठ गए। बेताबी और झुंझलाहट से उनके बदन में एक किस्म की फुरती आ गई। मगर दूसरे ही क्षण वह फिर निढाल होकर तकिये के सहारे टिक गए, टांगें ऊपर की ओर समेट लीं।

एक हल्की-सी निसास केशव बाबू ने छोड़ दी।

आज पांच बरसों से वह अंधे होकर पड़े हैं। राम का नाम भी कोई कहां तक लेता रहे। चौबीस घंटे कोठरी में पड़े रहो। नरक के कुत्ते की तरह दो रोटियां खा लीं, बस। कोई बात भी पूछनेवाला नहीं... अरे जब पत्नी ही अपने कहे की न रही तब और किससे आशा की जाए? वो तो भाई अब जवान जवान बेटों की मां है। कमाऊ-धमाऊ बेटे हैं, बहुएं हैं। मेरी बात भला अब वो क्या पूछेगी? परन्तु उसे बेटोंवाली बनाया किसने? आज मैं अंधा हो गया हूं तो क्या मेरी बात भी नहीं सुनेगी?"

पानी का गिलास लेकर आए हुए तुलसी को एक मिनट से ऊपर हो हो चुका था लेकिन वह चुपचाप खड़ी हुई बाबा की तरफ देख रही थी। केशव बाबू का चेहरा उस धुंधली रोशनी में भी भारी और तमतमाया हुआ उसे दीख रहा था।

केशव बाबू ने एक भारी निसास छोड़ी और टांगें फैलाकर तकिये के सहारे ज़रा और झुक गए। तब कड़ी आवाज़ में तुलसी ने कहा— 'बाबा, पानी।'

तुलसी की आवाज़ कानों में पड़ते ही केशव बाबू उत्तेजित हो उठे। लड़की के हाथ पानी भेज दिया। अब इतनी अवहेलना होगी मेरी... नहीं चाहिए मुझे उसका एहसान!

'नहीं चाहिए पानी-वानी, ले जा! जब भगवान ने आंखें ही छीन लीं, अन्न ही छीन लिया तब पानी पीकर क्या करूंगा!'

केशव बाबू ने अपनी अंधी आंखों को तुलसी की आवाज़ के अनु-

पर टिकाकर गुस्से से कहा। पावनी मा की इस अवहेलना ने केशव बाबू के पुरुष मन को विरक्ति से भर दिया था।

प्राणो से अधिक प्यार किया—उसका ये फल दे रही है मुझे ? इच्छा करते ही पचास विवाह कर सकता था। एक से एक बढ़ी चढ़ी इन्द्र की अप्सराएं इन चरणो पर शीश झुकाती। बड़े बड़े श्रीमान् और धीमान जिसके आगे हाथ जोड़े खड़े रहते थ उसकी अवहेलना करती है यह नारी ! आखिर तो ठहरी स्त्री की जाति, जवानी रहने की साथी। — फिर जरा सा भी बुलाओ तो हजार नखरे पर दोष तो मेरा ही है। मैंने ही इसको लाड कर करके सिर पर चढा लिया है। जो यह कहती थी, करता था। इसका दिल न दुखे इसलिए शिबू को इसके पास ही रहने दिया। इसके कारण ही मैं उसे पढा लिखा न सका नहीं तो आज वह भी पाचू की तरह ही विद्वान होता। अरे विद्वान के बेटे विद्वान ही होगे—परन्तु यह मूर्ख मेरी कद्र क्या समझे ? फिर अपने को बड़ी पतिपरायणा और बुद्धिमती समझती है। पत्थर पड़ें ऐसी बुद्धि पर ! आना चाहे तो सौ बहाने निकाल कर आ सकती है। मगर नहीं इसमें भी जैसे उसकी कोई जमा जाती है। दो घड़ी इस शुष्क जीवन में रस आ जाता है, सो भी इसे '

केशव बाबू के मन में फिर गर्मी चढ़ने लगी। अपनी परवशता पर वह मन को मसोस मसोसकर रह जाते थे। भूखे शरीर और भूखी वासना के घात प्रतिघात से उनका मन जर्जर हुआ जा रहा था। सिर में चक्कर आने लगा। तन थकने लगा। सांस भारी चलने लगी।

केशव बाबू ऊब गए हार गए। सारा मन खीझ से भर गया। अगर ये लड़के-बच्चे न होते तो अवश्य चली आती। लड़के बच्चे, बहुएं पोती पोते उन्हें जहर से लगने लगे। इन्हीं के कारण वह इच्छा करने पर अपने जीवन में रस नहीं पा सकते। पत्नी के ऊपर भी क्रोध आ रहा था— इशारा नहीं समझती। पत्थर है पत्थर ! अपनी इच्छा हो तो सारी दुनिया की आखो में धूल झोककर मेरे पास आ सकती है। पर तु इच्छा करे तब न ! नानी और सास बनकर वह भूल गई है कि पहले वह पत्नी है। शास्त्र

न पत्नी के लिए पतिसेवा ही श्रेष्ठ धर्म बताया है। परन्तु किसका शास्त्र ? किसकी पत्नी ? ये सब मोह हैं। मायाविनी ! नारी आखिर है तो माया की ही मोहिनी। बड़े बड़े ऋषि मुनियों की तपस्या भग कर दी। अरे, दूर कहा जाऊ—मुझे ही इसने पथभ्रष्ट कर दिया, अन्यथा आज लोक परलोक सुधर गया होता मेरा। किन्तु नारी। नरक का द्वार ! हरे ! हरे ! कहा इस गृहस्थी के माया जाल म फस गया ? गोविन्द ! गोविन्द ! इस स्त्री ने मुझे बहुत लुभाया।'

केशव बाबू की अधी आखो न कोठरी मे इधर उधर दौडकर चारो तरफ टाडो पर लदे हुए अनक ग्रथो और पोथियो के बस्तो को अनुमान से देख लिया। स्वय शास्त्री, तकरत्न निमवर विद्यावागीश के पुत्र ! बडे बडे इनकी विद्वत्ता का लोहा आज भी मानत हैं। ढाका कॉलेज म सस्कृत के प्रोफेसर थे। इन अधी आखो न उन्हें कही का न रखा। और इस नारी नरक द्वार

कोठरी के दरवाज़े की कुण्डी धीमे स खनक उठी। सारा दशन, नान और पाण्डित्य कपूर की तरह पल भर म उड गया। "आई शायद पसीमी '—केशव बाबू की अधी आखें आशा की ज्योति से चमक उठी। किन्तु 'चू चू चू —चिडिया थी। कुण्डी पर आकर बैठी, और फिर पर फफनाकर उड गई।

केशव बाबू के मुह से बरबस एक ठडी आह निकल गई—' अरे वह भला क्या आने लगी। कुछ नही, अब तो बस सन्यास ले लूगा। एस घर से लाभ ही क्या ? एसी पत्नी से सुख ही क्या ? यो ही देश के ऊपर इश्वर का कोप हो रहा है। और उसके ऊपर घर म अपनी पत्नी ही जब अपन सुख की शत्रु हो जाए हो जाने दो नारी नरक का द्वार ! गोविन्द ! गोविन्द !

काम-वासना की उत्तेजना क्रोध बनकर फिर धीर धीरे, मन ही मन म, विरक्ति भाव धारण कर मन को सन्यासी बना चुकी थी। परन्तु यह कोई नई बात नही। ऐसा अक्सर होता है। केशव बाबू का पुरुष-मन जब

रस नहीं पाता तो स यासी हो जाता है। और एक बार तो ऐसे ही स यासी पन के 'मूड' म उ होने खिझलाकर दीवाल से अपना सिर फोडकर खून निकाल लिया था। जब स यास आता, तब शकराचाय की चपट मजरी का पाठ आरम्भ कर देत है। आज भी हारे हुए स यासी मन न चपट मजरी की शरण ली। विरह कातर क्षीण वाणी को स यास का पुश्ता चढान लग—

का त का ता कस्ते पुत्र
ससारोऽयमतीव विचित्र ।
कस्य त्व वा कुत आयात
तत्त्व चि तय तदिद भ्रात [1]

भज गोवि द भज गोपाल गोवि द भज मूढमते।

शिवू की बहू चल्हे के पास बठी थी। मगला चल्हे म जलाने क लिए लकडिया लेकर आई थी वही खडी थी। पावती मा जरा दूर पीढे पर बठी थी। बाबा की कोठरी से चपट मजरी सुनाई पडने लगी। शिवू की बहू न मतलब भरी आखें ऊपर उठाइ। मगला की आखो स मिली। दो जोडी होठो पर शतान मुस्कराहट खिलवाड कर गई।

सास की तरफ मगला की पीठ थी शिवू की बहू ने अपनी मुस्कराहट छिपाने क लिए मुह फिरा लिया फिर भी पावती मा स छिपा न रहा। पद गौरव और बुढापे की झुझलाहट बेबसी म झप बनकर रह गई। बहुए जानती है सास भी स्त्री है।

चपट मजरी भज गोवि द भज गोपाल तक पहुच गई। यदि कुछ देर तक और इसी तरह कु मन का गोवि द गोपाल भजन चल तो सिर फोडन की नौबत आ जाएगी यह डर पावती मा को समपण के लिए धीर धीरे प्रस्तुत कर रहा था। अठारह बीस साल की जवान बहुओ की कक्षा म बठन हुए सुहागिन सास की उम्र का अडतालीसवा बरस बूढी लाज क घूघट स जवान बनकर झाकने लगा— फिर क्या किया जाए नही मानत तो !

पर जवान कुंवारी बेटिया के आगे दिन दहाड़े संन्यासी पति को फिर से गृहस्थ बनाने के लिए जाते हुए बूढ़ी सुहागिन के पैर कैसे उठेंगे ?

सप्त मंजरी का पाठ चल रहा था— प्राप्ते सन्निहिते मरणे "

"तुलसी ! जा बेटी, रामतनु की घरवाली से पूछ तो आ, एकादशी कब की है ?"

अंधे को जैसे आंखें मिल गईं। तुलसी चल दी। कनक को एक ही संदेश मिला था, वह भी उठ खड़ी हुई—' मैं भी जाती हूं मां ! "

' तू क्या करेगी चलकर ?" तुलसी भड़की।

मंगला तुलसी को कड़ी निगाह से देखकर बोल उठी—' ले जाओ न उसको। कनक, दीनू, परेश को भी ले जाओ। और तुम लोग सब मामा के पास ही रहना—अच्छा !"

तुलसी झुंझला उठी—' तो फिर कनक ही पूछ आए न, मैं क्या करूंगी जाकर ?"

" पुत्रादपि धनभाजा भीतिः "बाबा की कोठरी बोल रही थी।

मां तड़ककर बोली— ले क्या नहीं जाती उसे ? बिचारी दिन भर से कहीं गई नहीं, आई नहीं। और वो भला क्या पूछेगी एकादशी दुआदशी ? खेल में भूल जाएगी, मेरा बरत रह जाएगा। जा, और दिया-जले ॥ पहले ही लौट आना—भला ! और किसीको संदेश न मांगन देना, सुना ?"

कनक, दीनू और परेश पहले ही जा चुके थे। तुलसी गुस्से में मुंह लटकाए सुनी अनसुनी सी करके तेजी से निकल गई।

कोठरी में आवाज तेजी पकड़ रही थी—' भज गोविन्द, भज गोपाल—भज गोविन्द, भज गोपाल '

' ऊंह मौत भी नहीं आती मुझे नसीबाजली को।' कहते हुए पार्वती मां पीढ़े से उठी। खड़े-खड़े एक सकंड के लिए ठिठकी, फिर कोठरी की तरफ सिर झुकाए हुए चल दी।

बड़ी बहू और मंगला ने आजादी के साथ मुस्कराने के लिए सिर उठाया। सास का पीढ़ा पास खींचकर उसपर बैठते हुए मंगला ने कहा—

"तुम क्या हसती हो रानी ? जब सास बनोगी तब मालूम पडेगा। ज्याठा माशाइ आखिर हैं तो अपन ही बाप के बेटे। तुझे बुढापे म माला जपने के लिए छोड थोडी देंग !

मजाक करने का हौसला और चेहरे की मुस्कराहट एकदम गायब हो गई— जान द दूगी अगर ऐसी नौबत आएगी तो।

बात कहते कहते बडी बहू का चेहरा तमतमा उठा। अपनी बेबसी से विद्रोह करते हुए वह केवल मौखिक रूप से ही जान द सकती है बडी बहू इसे अच्छी तरह जानती है। तन की मशीन ज़िंदा रखनेवाली अनिम सास तक वह अपने स्वामी की मिल्कियत है। पारसाल एक सौ तीन डिगरी के भरे बुखार म भी न छोडा था—मरने से बची थी उस बार।

बडी बहू सिहर उठी। भूख की कमजोरी से दिमाग की उत्तेजना उसे चक्कर देने लगी। किसी तरह अपने को सभालकर एक उसास लेती हुई बोली— स्त्री जीवन भी भला कोई जीवन है ! मा पर तरस आता है मुझे तो।

'पर मैं कहती हू दोष इसम मा का ही है। कठोर बन के बठ जाए बाबा कर ही क्या लेंगे ? एक बार सिर फोडेंग दो बार फोडेंगे—अत म पित्ते मारकर आप ही बैठ जाएगे।

"भोला भाला पा गई है न ! सारी दुनिया के मरदा को ठाकुर-पो जसा हा समयनी है तू ता। उनके ऐसा

चुन्नी जाग पडी थी रोना शुरू हो गया था। दालान की तरफ एक बार देखकर बडी बहू बात कहते-कहते रुक गई। तन और मन की थकान चेहरे और आखो के भावो म उभरकर सामने आइ। रीढ की हड्डी उचका कर पीठ का तानते हुए बडी बहू ने दीनता भरे स्वर म मगला से कहा— 'उस उठा ता ले पुन ! मेरे बस्न म तो सत नहीं रहा।

चुन्नी के रोने और मा के फज म आत्मायना की नाजुक डार गज ग्रह द्वन्द्व-सा खिच रही थी। दूध उतरता नहीं, नन्ही-सी जान रोते रोते गला के लिए गमान हो जाएगी। मा अपनी छातिया म दूध कहा से पैदा कर ?

और अपने कलेजे की कोर के बिलख बिलखकर भूखे मर जाने की कल्पना से मां का दिल अपनी पूरी शक्ति के साथ क्या न धड़क उठे ? क्या न चीख उठे ?

चुन्नी के आंसू बड़ी बहू की आंखों में आ गए। आंसू आते गए, बढ़ते गए। गोदी के बच्चे की तरह उसका बवल मन अपने शरीर की जिम्मेदारियों को उठा सकने में अशक्त होने के कारण हुमड़-हुमड़कर रोने लगा।

चुन्नी के रोने की आवाज बराबर नजदीक आते-आते बड़ी बहू के कानों में कहीं गुम हो गई। चुन्नी को लेकर मंगला रसोई घर में आ गई थी। चुन्नी—बड़ी बहू की सावन बरसाती हुई आंखों ने उसे 'शायद देखा—आंखें अपनी आदत से लाचार होकर सिर्फ अपना फर्ज अदा कर रही थीं लेकिन मन उनसे अलग होकर आंसुओं में डूबता जा रहा था। डूबता ही चला गया—कहीं थाह नहीं, कहीं थाह नहीं। मन के पैर उखड़ने लगे, दम घुटने लगा। दिमाग नहीं, शरीर नहीं सिर्फ दम है—और वह आंसुओं के बोझ से दबता जा रहा है घुटता जा रहा है। आंसुओं में प्राणों का साथ अब छूट रहा है। अंधेरा, भूरा, मटमैला सा धुआं- "धुआं '

"फूल, ओगो !"

कहीं असीम-अनन्त से फिर प्राणों के साथ शरीर का नाता जुड़ता हुआ जान पड़ा। प्राण हिल रहे हैं, ऊपर उठ रहे हैं। शरीर हिल रहा है। कहीं दूर से एक परिचित स्वर सुनाई पड़ रहा है—'फूल ओगो।'

डूबते हुए मन को शब्दों का सहारा मिला। चेतना से दूर उस अंधेरे में वे परिचित शब्द प्राण और चेतना के बीच की टूटती हुई कड़ी को जोड़ रहे हैं— 'फूल ओगो ओगो !"

ये शब्द उस दम घोटनेवाले अंधेरे से उसे उबार रहे हैं। उसे संतोष मिल रहा है। प्राणों में उत्साह आ रहा है। आंसुओं के वेग को चीरकर वह उस परिचित स्वर को अपनी चेतना का सन्देश सुनाना चाहती है।

स्वर का उद्वेग बढ़ रहा है। प्राण फिर तेजी से अपनी शक्तियों क

सचय कर रहे है। आवाज को अपनी ताक्त मिल रही है। आवाज़ अपनी पूरी ताक्त क साथ कहना चाहती है कहती है—'ह अ आ ह अ आ!'

मगला हक्की बक्की सी हो गई थी। चुन्नी को लकर आई। दखा बहुत फूट रो रही है। अर क्या हुआ क्या रो रही है? कितना ही पूछा, कुछ जवाब नही देती। रोता जा रही है फूट फूटकर रो रही है। हिच किया घुट घुटकर आ रही है। उसने दखा, बडी बहू का शरीर अपने काबू म नही रहा है। गिरना ही चाहती है। उसकी गोद म चुन्नी थी। वह भी रो रही थी। मगला पल भर के लिए तो घबरा गई। फिर अपने को झटपट सभालकर चुन्नी को जल्दी स वही जमीन पर लिटा दिया और बडी बहू का लपककर उसन दोना हाथा से रोक लिया। बडी बहू के कधा को जोर से झकझोरकर उसन घबराहट के साथ पुकारा— फूल, ओगो फूल फल!'

बडी बहू बोली— ह ! हा!

क्या हो गया है तुम्हे? अरी बोलती क्या नही बोल ना'

बडी बहू न अब तक अपन को काफी सभाल लिया था। वह सुबकिया स लड रही थी। सुबकिया का काफी तौर पर उसने अपने कब्जे म कर लिया। गला खखारकर साफ किया।

अरी क्या हो गया तुझे? मगला न फिर पूछा और अपने आचल स उसके आसू पोछती हुई बोली— पागल कही की। इस तरह अपने को मिटाते है भला। पगली, कहा की बात कहा जोड ले गई। ले, लडकी को सभाल। रात राते गला बैठा जा रहा है बिचारी का।

मगला न चुन्नी को उठाकर उसकी गोद म दे दिया। बडी बहू ने अब तक अपन को अच्छी तरह सभाल लिया था। आखें और नाक अपनी धोती के पल्ल स पोछकर उसने चुन्नी को ठीक तरह से अपनी गोदी म लिटा लिया और घुटन हिलाते हुए उस थपकिया देकर चुप कराने लगी।

मगला की सपना भरी आख बराबर अपनी सहेली के चेहरे को ही टकटकी बाधकर लग रही थी। जिस दिन स इस घर म आई उसी दिन

से इन दोनो में बहनापा जुड़ गया। एक दिन के लिए भी देवरानी जिठानी बनकर नहीं रहीं। ब्याह के बाद एक बार मगला मैके गई थी तो सास से कहकर इसे भी अपने साथ ले गई। बड़ी बहू के मा बाप नहीं थे। मामा ने किसी तरह ब्याह के बाद अपना पिंड छुड़ाया और फिर कभी नाम भी न लिया।

बचपन में मामा की लड़की बहन थी जो सदा इसे दुतकारती रही, घर में मामी ने इसे नौकरानी की तरह जोतकर रखा इसलिए बाहर कोई सखी सहेली मिल न पाई। इस घर में आई तो किस्मत बदल गई। उसे सास नहीं मिली, मा मिली। पांचू, तुलसी, कनक, बाबा—सभी उसे इतने अच्छे मिले थे। शुरू शुरू में तो शिबू भी उसे अच्छा लगता था। अब भी वह उसे प्यार करती है, लेकिन

बड़ी बहू और मगला की आखें मिलीं। आखें चार होते ही रिश्ता प्यार की गहराई में उतर गया। गीली गीली आखें अनुराग से चमक उठीं। होठ फड़के। दो जोड़ी होठों पर प्यार भरी मुस्कान की रेखाए खिंच गई।

'शैतान कहा की! रो रो के मरा जी दहला दिया कमबख्त ने!" मगला रसोईघर के दरवाजे की तरफ मुड़ते हुए बोली—'एक तो भूख की मारी, दूसरे तेरी ये रोनी सूरत देखकर चक्कर आ गया मुझे तो। पानी पिएगी पीले थोड़ा-सा, लाती हू।

अपनी भूल का हा ना कुछ सुने बिना ही मगला रसोईघर के बाहर चली गई। बड़ी बहू छिन भर तो दरवाजे की तरफ देखती रही, फिर चुन्नी को गोदी से उठाकर अपनी छाती से चिपका लिया। चुमकारने लगी—'आ-आ आ !'

चुन्नी बहलती नहीं। अब तो रोया भी नहीं जाता। हांफ रही है। बड़ी बहू ने हारकर अपनी छाती खोलकर उसका मुह लगा दिया। चुन्नी चुप हो गई। दूध उतरता नहीं। भूख की बावली नन्हीं सी जान मा का स्तन खींच खींचकर अपनी खुराक के लिए जान लड़ाए रही है। मा का

तकलीफ हो रही है लेकिन यह तकलीफ इस वक्त बरदाश्त कर सकती है। बड़े जो पाप करते है, उसका ये फल भोग रहे हैं। लेकिन इस बिचारी बच्ची ने ऐसा कौन सा पाप किया है जो धरती पर आते ही ये अकाल के दिन देखने पड़े !

'ले पानी।' मंगला ने पानी का गिलास लिए हुए रसोईघर में प्रवेश किया।

बड़ी बहू की विचार धारा टूटी। फीकी हंसी हंसकर गिलास के लिए हाथ बढ़ाते हुए बोली— हम लोग तो पानी पी पीकर जी लेंगे फूल पर इसका क्या होगा ?

क्या होगा ? इस प्रश्न का उत्तर दोनों जानती हैं यही नहीं बल्कि उन्हें मालूम है सारा गांव जानता है सारा बंगाल जानता है फिर भी मौत का नाम लेते हुए हर एक की जबान लड़खड़ाती है। दिल दहल उठता है।

मंगला चुप हो गई। गम्भीर हो गई। मंगल का व्रत का बहाना देकर सारा घर आज चार दिन से टाल रहा है। घर में अनाज भरा हो तो चार दिन क्या, आठ दिन भी व्रत रखा जा सकता है पर यहां ? कुछ नहीं आते होंगे चावल लेकर।

अरे अभी आते होंगे चावल लेकर। तू घबराती क्या है ? मंगला सांत्वना देती हुई बोली— भगवान सब ठीक करेंगे। ला चुन्नी को मुझे दे। खींच-खींचकर जान निकाल लगी मेरी।

पास आकर चुन्नी को बड़ी बहू की गोद से लेकर मुस्कराते हुए चुन्नी की ओर देखकर मंगला बोली— अरी बस कर। सब दूध तू ही मत पी जा कुछ अपने होने वाले भाई-बहिनों के लिए भी छोड़ दे।'

उसने चुन्नी को अपनी गोद में खींच लिया। खुराक पाने के उस भूखे महार को चुन्नी किसी तरह भी छोड़ना नहीं चाहती थी। वह पूरी ताकत से मां की छाती को अपने मसूड़ों से दबाकर जोंक की तरह चिपटी हुई थी। बड़ी बहू का भूखा और कमजोर तन इस कर्षण को न कर सका।

निलमिला उठी—'सी आट कमबख्त मर!"

गाली देना चाहती थी। तमाम हिन्दुस्तानी माताओं की तरह बडी बहू को भी अपने बच्चों को गालियां देने की आदत थी। "मर जा। भाड़ में जा। वगैरह किस्म के आशीर्वाद वह दिन में पचासों बार अपने बच्चों को दिया करती थी। और अगर कोई इसपर कुछ कहता तो जवाब देती—'मा की गालियों से ही बच्चे अगर मरते तो ये दुनिया आज न दिखाई देती।' मगर आज चुन्नो का मर जाने की गाली देते हुए बड़ी बहू की आत्मा बेसाख्ता चीख उठी। यों बिना बुलाए ही मौत हर घडी मेहमान बनने को तैयार रहती है। जबान से उफ निकालने में सांस के तार टूटते हैं। तब भला ये गाली ।

बडी बहू का जी उस गाली को वापस लेने का बे असर करने के लिए अंदर ही अंदर बेताब हो घुटने लगा—'ये बच्चे सलामत रहें। सब आदमी सलामत रहें। मुसीबत तो आती जाती रहती है। राम करे सबकी मौत मुये '

मौत जब दूर थी गांव में कभी-कभी किसीके यहां आया करती थी, तब उसमें इतना डर न लगता था, लेकिन आज मौत सिर पर नाच रही है। इस लड़ाई और अकाल का लाभ उठाकर मौत अपनी भूख को बेतरह से इजाफा दे रही है, इसलिए आज बडी बहू बच्चों से लेकर अपने तक, किसीके लिए भी, मौत नहीं चाहती। वह मौत से भागना चाहती है, जान चुराना चाहती है।

तभी सदर दरवाजे पर शिबू की आवाज सुनाई पड़ी—'नि शक हाक मोशाई! मैं तुम्हारा लीडर होकर एस० डी० ओ० के यहां चलूगा आमि गभरमेन्ट के बालबो जे शाला तूमि आमार देश को भूखा मार डालोगे?"

शिबू के साथ और दो-तीन लोग दहलीज पारकर अब दालान में आ चुके थे। शिबू आगे उसके पीछे सोमेन, पाचू का अनन्य मित्र। वह अक्सर पाचू के साथ घर आता है। बडी बहू मगला सभी उसे जानते हैं।—

शिबू सबको ऊपर अपने कमरे में लिए जा रहा था।

चुन्नी अभी भी रो रही थी। शिबू ने रौब जमाया—'अरे क्या रो रही है चुन्नी ? उसे दूध पिला दो—और ?

शिबू ने अपने साथियों की तरफ देखकर कहा—'तुइ चाय खाबी तोमेन ? अच्छा चार पांच प्याला चाय भी बना देना। और थोड़ा सा नाश्ता भी—हलुवा बना लेना। और कुछ नमकीन भी ? अच्छा नमकीन भी सही सुना। हां तो बाद आई वाज स्पीक हां गभरमेन्ट

शिबू और उसके साथी सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जा चुके थे। मंगला और बड़ी बहू एक दूसरे को देखकर मुस्कराने लगीं। बड़ी बहू बोली—चाय बनाओ रानी ! और हलुवा भी बना लेना। भंडारघर खाली हो जाए तो मोनाइ के यहां से रवा और शक्कर के बोरे खुलवा लेना। कल तुम्हारे ज्याठा राजा तगड़ बनकर सुराज लेन जाएगा।

'स्वराज ? अरे आई नो तूमि मांगो स्वराज,—एण्ड द बाले जे तुम शाला हिंदुस्तानी लोक यू वान्ट स्वराज ? आच्छा शाला आमि तोमाके जमराज देबो।' ऊपर शिबू जी लीडराना मूड में चहक रहे थे— अरे बाबा आमि जानी एइ तो गभरमेंटेर पालिसी। एइ शाला चालीस कोटि भारत मातार शोंतान खिदे पेये बिल डाई फेमीन बिल एण्ड और तब शाला टू आस्क स्वराज ? शा बोलबे आमि ब्रिटिश गभरमेन्ट ! इण्डिया इज नेवर फिट—आमार बोस्तु !

शिबू की लीडरी में एक शान है—दस हो, हजार हो, दस हजार हो किसीको बोलने नहीं देता। यह काम वह सिर्फ अपने जिम्मे ही रखता है। लोगों को लीडर की जरूरत हो या न हो, मगर शिबू मुकर्जी हर वक्त लीडर है। कांग्रेस से लेकर कम्युनिस्ट पार्टी तक और हिंदू महासभा से लेकर मुस्लिम लीग तक मनुष्य मात्र के जन्मजात लीडर निवगोपाल मुखर्जी अभी कुछ देर पहले अचानक ही घोषपाड़ा अकाल निवारिणी महासमिति के दफ्तर में पहुंच गए थे। सामने उनका सम्पादक मंत्री है। दफ्तर में कुछ युवक बैठे हुए तय कर रहे थे कि एक डपुटेशन लेकर एस० डी० ओ० से मिला जाए। शिबू फौरन लीडर बन गया।

एक बार लीडरी सभाल लेने पर शिवू मुखर्जी को फिर कोई टस से मस नही कर सकता। सन् ४२ के अगस्त आदोलन म पहली बार शिवू मुखर्जी को लीडरी का खयाल आया था। पाचू का स्कूल उस वक्त जोरो स चल रहा था। सात गावा म पाचू के नाम का फरा लगता था। पाचू का बडा भाइ होन के कारण शिवू अपने को स्वाभाविक रूप से बड नाम और बड काम करने का अधिकारी समझता था। अगस्त आदोलन ने स्फूर्ति दी। देश हित के लिए शिवू मुखर्जी ने बहुत अच्छा उपाय सोच निकाला।

आदोलनकारियो पर लाठिया और गालिया कौन बरसाता है?—पुलिस। इसलिए अगर पुलिस को रोक दिया जाए तो आदोलन सफल हो जाए! यह सोचकर शिवू मुखर्जी न एक फावडा लिया और जाकर कोतवाली के सामन की सडक खोदन लगे। पकडे गए तो 'इन्कलाब जिंदाबाद' का नारा लगाया। फिर पुलिस वालों को अपने प्रचड रूप का परिचय देकर डराना चाहा—' आमा के ठीक कर बूझो ना तूमि भावचि। ताइ जयेइ जानाच्चि जे कलियुगे आमि भगवनेर अवतार। ब्राह्मोन शाप्तान आमि। एके मारे जाड खोद डालेगा शाला!"

बाद म जब बेंत पडने लगे तो दूसरे ही बेंत पर पुलिस अफसर के पर पकड लिए। माफी मागने लगे। छोडे गए। बात फैल गई। लोग चिढात हैं, मगर इमस उनकी लीडरी पर जरा भी आच नही आती।

सोमन आजिज आ चुका था। पाचू के कारण सोमन भी शिवू का अदब करता है। मगर अदब की भी एक हद होती है। शिवू किसी हद को मानता ही नही। अकाल निवारिणी महासमिति के सब सदस्य शिवू के आते ही एक एक करके चले गए। सोमन बेचारा फस गया। पास के गाव के दो युवक उससे सलाह मशविरा करन आए थे उन्ह भी उसके साथ ही साथ परेशान होना पडा। जान छुडान के लिए सोमेन न दफ्तर बद किया तो दादा उसे और उसके साथियो को जबरदस्ती अपने घर ले आए। गल्प-भर अग्रेजो की पालिसी स्वराज्य लेन के नुस्खे और एम० डा० आ० को

पत्नी और बच्चों को वल पछाह भज रह है। भुखमरो की बन्ती हुई लूट पाट और हमला से दयाल भी डरत है। डाकू को डाकुआ का डर है। पचास भोजपुरिये लठत और दो-दो बदूकें पास रखकर भी सपना म चौंक चौंक उठते है कि कहो !

दयाल वग क प्रति पाचू का निष्क्रिय विद्रोह अपनी असमथता पर व्यग्य बनकर उसके मस्तिष्क म चुभ रहा था। अतचेतन मन म छिपा हुआ यह व्यग्य पाचू को चिढा रहा था। अपनी इस खीझ का उलट पुलटकर अनेक पहलुआ से देखत हुए सोचने लगा कि हमारी कमजोरी न ही उन्हे बढावा दिया है। हमारे निष्क्रिय त्याग और सहनशीलता न ही इनकी स्वार्थी प्रवत्तियो को हमपर अधिकाधिक अत्याचार करने का उकसाया है। सदियो की आदत न इन्हें एक झूठा बल दे दिया है। मदाग्नि रोग स पीडित चर्बी बढे हुए पुसफस बदन के मसनन्दी गद्दी के आगे नगड से तगडा पहलवान भी एडिया रगडने लगता है। बड स बडा बुद्धिमान भी इन कुदजेहन पैसे वालो की अक्ल को इनकी तिजोरी का तरह बडी बता कर अपन अस्तित्व को साफ भुला दने म अपनी रक्षा समझता है। यह सब इसलिए न कि इनके पास पसा है।

एक दयाल एक मोनाई, गाव भर का अनाज खा जाता है गाव भर के कपड पहन लेता है। हमारी खूराक, हमारे तन ढकने के कपड उनकी तिजोरियो म नोटो के बडल सोन चादी और हीरे-जवाहिरात के तोडो की शकल म हिफाजत स रखे हैं। उनकी हिफाजत क लिए भोजपुरिये लठत हैं बन्दूकें हैं पुलिस है कानून है—और हमारी हिफाजत ?

पाचू की झुकी हुई आखें मोहनपुर की ओर उठी। दयाल जमीदार की हवेली गाव हद के पार थी। पाचू अब मोहनपुर म प्रवेश कर रहा था। झापडिया दिखाई पडने लगीं। अब तो इन्हे झोपडिया कहना भी पाप होगा—मिट्टी की चार टूटी हुई दीवालो के ढूह, जिनके बास बिके, छप्पर बिके विचड गुदड बिके, घर-गृहस्थी लुटी।

दो बच्चो की नगी लाश पडी हुई थी रामू की झोपडी क पास। बच्चे

शायद रामू के ही हैं। पाचू से रहा न गया। पास जाकर देखा, मौत अभी बच्चा के साथ खेल ही रही थी। घड़ी-पल के मेहमान हैं। रामू की बहू बहुत पहले ही भाग गई थी और रामू लुटेरो म मिल गया था। घर बार, मा-बाप, सब साथ छोड़ गए, बस ये थकी मरी सासें, एक एक कर पल दिन गिनती, किसी तरह अपना फर्ज पूरा होने तक साथ दिए जा रही हैं।

पाचू मौत का बहुत नजदीक से देख रहा था। बहुत गौर से देख रहा था। इस अकाल म यही हालत एक दिन उसकी और उसके घरवालो की । लेकिन अभी तो उसके पास चावल हैं। घरवाले उसकी प्रतीक्षा कर रहे होग—दीनू परेश, नन्हे सी चुन्नी, कनक

पाचू फौरन ही वहा से हट आया और तेजी से अपने घर की तरफ चलने लगा।

यह फजलू चाचा अपनी झोपड़ी से टीन निकाल रहे हैं, बेचने के लिए। और यह पेड के नीचे बूढ़ी सेनमनि कमर म एक लगोटी लगाए दोनो हाथो से मिट्टी की एक हडिया थामे, सिर झुकाए खोई हुई सी बैठी है। कभी गाव भर की परिक्रमा किया करती थी। पाचू ने इसका नाम नारदजी रख छोड़ा था। ब्राह्मणो के टोले से यह मछुआ की बस्ती की ओर कैसे चली आई? यह भी एक दिन यों ही बैठे बैठे मर जाएगी। रामू के बच्चे तो शायद अब तक मर गए हो। उन्हें कौन उठाएगा? यों ही लाशें सडती रहेंगी? क्या आत्मियों की लाशें यो ही सडती रहेंगी। क्या एक दिन उसकी भी लाश इसी तरह ?

पाचू ठिठका। उसकी तबीयत हुई कि लौटकर बच्चो को देख आए। लेकिन उसे घर जाना है। दीनू-परेश, चुन्नी-कनक सब भूखे होगे।

रामू के बच्चा को लावारिस लाशो से लेकर अपनी कल्पना तक, सारी विचार धारा से हठपूर्वक मन मोड़कर वह आगे बढा। कदम तेजी से आगे बढ़ रहे थे।

यह बेनी की झोपड़ी है। बेनी की बैठा है। अपने घुटनो पर सर झुकाए उसकी पत्नी बैठी है। दो महीने पहले ही उसका ब्याह हुआ था।

नई जवानी, नई उमगें और यह श्राप । कभी बजाते म बनी अपना गाना नहीं रचना था। पांचू ने देखा दोनो की जवानी बूढ़ी हो गई है। साथ-साथ रहने पर भी न औरत को मर्द का होश है न मर्द को औरत का। पांचू सोचने लगा, अकाल पीड़ित नव दम्पती का यह मधुचन्द्र उस मगरा की याद आई—वे सपना भरी आग उसकी अल्हड़पन उसकी मुस्कराहट

चार दिन से वह भी भूखी है। पांचू के कदम और तेज पड़ने लगे।

आंखों के सामने थोड़ी ही दूर पर मोनाई की दूकान थी। मांस की पतली पतली झिल्लियों में चमकती हुई पुतलियों की पुतलाई डगमगाते हुए कदमों से इधर उधर डोल रही थी। गड्ढों में धसी हुई डगर डगर आंखें घूर घूरकर अन्न के एक दाने की तलाश में मोनाई की दूकान के आस-पास मडरा रही थी। कितने ही नर-ककाल झुके हुए जमीन में चावल की सिर्फ एक कनी को खोज रहे थे। बेतरतीबी के साथ उनकी दाढ़ियां बढ़ी हुई थी। औरतों के बाल अस्त-व्यस्त तमाम जिस्म की नसें और हड्डियां चमक रही थी। बच्चे इसान के बच्चे नहीं मालूम पड़ते—ये समूची बस्ती ही इसान की बस्ती नहीं मालूम पड़ती।

झुटपुटी सांझ धीरे धीरे घिर रही थी। उसके मद्धिम उजाले में ये हिलते डोलते प्राणी

पांचू सोचने लगा ' रईसों और अफसरों की दुनिया में क्या इन इसानों को कोई इसान मानेगा ? वे इन्हें भूत कहेंगे भूत। हालांकि वे खुद मुर्दा इसानियत के भूत बनकर हमारे सिरों पर सवार हैं। हमारी भूख की नींव पर उन्होंने अपनी सोने की हवेलियां बनवाई हैं। आदमखोर हैवान ! "

शहर के राजनीतिक वातावरण में पनपा हुआ पांचू का दिमाग इस समय शौकिया तौर पर जोश खा रहा था। उसके पास इस समय पांच सेर चावल हैं। वह आज खाना खाएगा। चावल पाने के पहले वह भी भूख मरों में से एक था। वह भी भूख की तकलीफ को उसी तरह महसूस कर रहा था जैसे कि ये चलते फिरते नर ककाल। लेकिन यह सतोष कि उसे

और उसके परिवार को आज भोजन मिलेगा उसे तमाम भुखमरो से अलग किए दे रहा है। इसके साथ ही साथ वह यह भी जानता है कि उसका यह सतोष अस्थायी है। उसका मन इसलिए इन भुखमरे साथियो का साथ छोडने से इन्कार करता है। परसो से उसके परिवार का भविष्य भी इन्ही की तरह कठोर हो जाएगा। लेकिन इस वक्त तो वह खुश है। फिर भी, अपने साथ ईमानदारी बरतते हुए वह अपने आनन्द को अस्थायी बना देनेवाले दयाल और दयाल-वर्ग के लोगो पर, बौद्धिक बडप्पन के साथ झुझला रहा है। खाने के मामले म आज वह दयाल और मोनाई के बराबर का ही दर्जा रखता है। फिर क्यो न वह उनपर झुझलाए, और क्या न अपने भविष्य के साथियो का पक्ष ले ?

सहसा पाचू का ध्यान टूटा। मोनाई की दूकान के सामने पाच छ जीवित ककाल एक को घेरे हुए छीना झपटी और हाथापाई कर रहे थे। उनकी अस्पष्ट और भयावह आवाजो के सामूहिक स्वर साझ की बढती हुई अधियारी को मनहूसियत का गहरा रग दे रहा था। फिर पाच न देखा, उस घिरे हुए आदमी की चीख इस मनहूस शोर म एक दद पदा करती हुई अचानक घुट-सी गई और वह घिरा हुआ आदमी गिर पडा।

पाचू दौडकर पास पहुचा। उसने देखा, मुनीर बढई था। सास नही चल रही थी। मर गया। हाट फेल हो गया शायद। मुनीर की लाश के आस-पास चावल बिखरा था, जिसे बटोरने के लिए लोग गिद्धो की तरह टूट पड थे। उन्हें इस बात का कोई खयाल न था कि उनके पास ही एक आदमी की—उनके ही एक साथी की—लाश पडी हुई है। वे इस समय पूरे उत्साह के साथ ज्यादा चावल बटोर लेन के प्रयत्न म थे। एक बार लाश को, फिर एक बार पाचू को कुठ खोई हुई दष्टि से देखकर वे अपने काम म लग गए। उनके हाथ छीना झपटी करने लगे।

पाचू चिल्लाया— मार डाला न तुम लोगो ने इस बेचार को।'

पाचू की आवाज सुन जीवित ककालो के चेहरे उठे। उनके चेहरे ...

रहन कर रही थी—'क्या जाता है। हम अपना काम कर रहे हैं।"

दो एक निगाहें पाचू के हाथ की पोटली पर भी गई। पाचू सकपकाया। वह उठ खड़ा हुआ। उसने एक बार मुनीर की लाश की तरफ देखा। मुनीर ने उसके स्कूल की बिल्डिंग में लकड़ी का बहुत-सा काम किया था। बड़ा भला आदमी था बेचारा!

लेकिन मन कह रहा था, कहीं उसके चावल के लिए भी छीना झपटी न करें। उसे यह चिन्ता नहीं थी कि उसका चावल ये लोग छीन सकेंगे बल्कि इस छीना झपटी में उसके धक्के से अगर एकाध और मर गया तो ?

एक लाश और बढ़ जाएगी। लाशें—मुनीर की लाश, रामू के लावारिस बच्चों की लाशें और एक दिन वह खुद भी

नहीं नहीं वह इसे दफनाने का प्रबन्ध करेगा। इन्सानियत का तकाजा है। और फिर मुनीर ने उसके साथ स्कूल में काम किया था।

बढ़ई नूरद्दीन आज चार दिनों से दोनों जून पेट पर हाथ फेरकर डकार ले रहा है। अज़ीम के घर मेहमान है। सांझ होते ही बड़े सुरीले गले से टीप लगाता है—

जीवनेर आज फूल फूटे छे

आशाबे बोले शाश बेसाथ

बेफिक्री से गूंजता हुआ स्वर पड़ोस के भूखे घरों की दीवालों से टकराकर लोगों के दिलों में टीसें उठाता है। नूरद्दीन के घर में कोई नहीं। बाप बहुत पहले ही मर चुका था। एक बहन थी, जिसकी शादी हो चुकी थी। मां थी तो पिछले हफ्ते एक रोज सात दिन की भूख का गुस्सा नूरद्दीन ने उसके गले पर उतार दिया। गला घुटते ही भूखी लागर बुढ़िया की रूह तड़पकर अर्शे मोअल्ला को छेदती हुई खुदावन्द करीम से फरियाद करने पहुंच गई। मां के मरते ही गुस्से की लगाम

बाद् म आद, लेकिन भूख म साझीदार के लिए नफरत इतनी थी कि गुनाह को गुनाह न समझा। भूख न मर गई, इस तरह मन को समझा कर, अज़ीम की मदद से, उसे दफनाने का इन्तज़ाम किया। उस दिन अज़ीम ने उसे अपने घर खाना भी खिलाया।

अज़ीम मोनाई का दाहिना हाथ है। बचपन से ही उसकी दुकान पर नौकर है। अकारण भी उसके घर झांकने की हिम्मत भी नहीं कर सकता। नूरुद्दीन ठहरा उसका लंगोटिया यार, एक जान दो कालिब। मुसीबत म दोस्ती का हक अदा करना इंसान का फर्ज है। अलावा इसके नूरुद्दीन बड़े काम का आदमी है। अज़ीम समझता है, जस रोज गार-व्यापार म वह दूर की कौड़ी ले आता है, वैसे ही नूरुद्दीन भी कहा तो राजा इन्दर के घर से परी निकालकर ले आए। अज़ीम को जब से मोनाई का विश्वासपात्र और प्रधान मंत्री का पद मिला है वह अपने को (मोनाई के बाद) गाव के बड़े आदमियों म समझने लगा है।

नूरुद्दीन की दोस्ती से अज़ीम का भी कभी कभी शेर के शिकार म सियार की जूठन मिल जाया करती है। इसीलिए उसम दबता है। नूरुद्दीन के साथ रहते रहते बहुत दिन पहले एक बार खुद उसने भी मुनीर की बीवी के साथ छेड़ छाड़ करने की हिम्मत की थी, पर मुह की खाई। तब स उस औरत पर उसके दांत हैं। पर जूठन चाटने की तबीयत अब नहीं होती। इसीलिए नूरुद्दीन से उसने मुनीर की बीवी के लिए फरियाद न की।

औरतों के सामने ही नूरुद्दीन मज़ाक मज़ाक म उसका पानी उतार लिया करता था। इस बार वह पकड़ म आया है। एहसान का कर्ज पाटने का अच्छा मौका हाथ लगा है। अज़ीम ने मोनाई के यहा उसका घर और चार बीघे ज़मीन गिरवी रखकर पच्चीस रुपये उसे दिला दिए अपने घर लाकर उसे रात खाना वक्त भरपेट खाना भी उसे खिलाया। इसके एवज म अज़ीम ने नूरुद्दीन से मुनीर की बीवी तलब की। साथ ही उसकी यह शर्त भी थी कि इस बार शेर वह खुद बनेगा और सियार नूरुद्दीन। यह शर्त

नूरुद्दीन के लिए सख्त थी, मगर अज़ीम से उसे चावल मिलते थे। अलावा इसके वे पच्चीस रुपये भी अभी अज़ीम ही के पास थे।

नूरुद्दीन के चक्कर मुनीर के घर की तरफ लगने लगे।

सात दिन से मुनीर के यहां किसीके मुंह में अन्न का एक दाना भी न पहुंचा था। दो छोटी छोटी लडकियां चाद और दरिया अन्न बिना मुर्दे सी पडी रहती थी। मुनीर भूख के साथ-साथ मलेरिया से भी लड़ रहा था। लेकिन मुनीर की बीवी को आज भी पाचों वक्त की नमाज़ का सहारा था।

नूरुद्दीन हमदर्दी दिखाने आया। पर मुनीर की बीवी उसकी परख में खरी उतरी।

नूरुद्दीन ने दाव पलटा। मुनीर की बीवी के खुदा में रास्ता लगाया। इलहाम के चर्चे होने लगे।

मारगंज की मसजिद मोहनपुर और सीरगंज की हद पर थी। पीढ़ियों से भूतों की मसजिद के नाम से मशहूर थी। नूरुद्दीन ने बताया—"वहां एक भूत सवाब करता है। पिछले हफ्ते मैं उधर से आ रहा था। छः रोज़ से फाके हो रहे थे। शाम की नमाज़ का वक्त। फिर सोचा भूतों के डर से खुदा बहुत बड़ा है। जी कड़ा करके वहीं नमाज़ पढ़ी। नमाज़ पढ़कर मसजिद से बाहर आया, तो देखा कि ज़ीने पर एक केले के पत्ते पर भात और भुनी हुई मछलियां रखी हैं। मैं घबराया। मुंह में पानी भर आया मगर भूतों का डर था। तभी कहीं से आवाज़ आई— ए खुदा के बन्दे ये तेरे ही वास्ते हैं। ढाई सौ बरस के बाद तू ही एक ऐसा इन्सान मिला जिसने खुदा के खौफ को हमसे बड़ा माना। आज की दुनिया में अज़ाब बढ़ गया है। दुनिया, खुदा को भुला बैठा है। मगर जो खुदा को नहीं भुलाता उसको खुदा प्यार करता है। ले खा ले। और रोज़ आकर यहां नमाज़ पढ़। तुझे कोई खौफ नहीं। मैं भूतों का सरदार हूं। खुदा के हुक्म से खुदा के बन्दों का इम्तिहान लेता हूं। तुझे यहां रोज़ खाना मिलेगा। खुदा के बन्दे कभी भूखे नहीं रह सकते।'

नूरद्दीन एक दिन शाम को यह करिश्मा दिखाने के लिए मुनीर की बीवी को ले गया। नमाज के बाद मसजिद के ज़ीने पर दो आदमियों के लिए खाना परोसा हुआ मिला।

उस दिन, पूरे सात दिनों के बाद, मुनीर की बीवी ने भर पेट खाना खाया था।

बच्चियों का खयाल आता था, बीमार और भूखे मुनीर का खयाल आता था, मगर नूरद्दीन ने साफ जता दिया था कि खुदा की मर्जी के खिलाफ अपना हक अपने प्यारे से प्यारे को भी तुम देने के हकदार नहीं।

अपनी भूखी बेटियों और बीमार पति के सामने खुदा के घर से खाना खाकर लौटने पर मुनीर की बीवी की आखें न उठती थीं। जी बेहद कलपता था, मगर शाम होते ही नमाज के बाद परोसी हुई पत्तल का खयाल आता, जिसमें खुदा के हुकम से उसके सिवा और किसीका हक ही नहीं।

खुदा के खौफ ने मुनीर की बीवी को झूठ बोलना सिखाया। आत्मा सोने लगी, स्वार्थ जगने लगा।

मुनीर की बीवी रोज नमाज पढ़ने जाने लगी।

नूरद्दीन खाली परोस चुका था। अज़ीम आज खाने पहुंचेगा। चालाक नूरद्दीन जानता था, वह हर तरह से अज़ीम के हाथ में है। उसने मुनीर की बीवी को अपना हथियार बनाया। पहले अपने पच्चीस रुपये वसूल किए और सोचा कि शहर जाकर मिलिटरी में बढ़ई का काम करूंगा। उसके लिए औज़ार चाहिए। अपने औज़ार, घर की तमाम चीज़ों के साथ बेचकर पहले ही वह अपना और अपनी मां का पेट अब तक चला भरता रहा। उसने सोचा भूखे मुनीर से औज़ार खरीदे जा सकते हैं।

नूरद्दीन मुनीर के घर आया। उसकी बीवी से बोला—'अपना हक भी आज से तुम्हें देता हूं। मैं शहर जाऊंगा। मेरा हक खुदा की मर्जी से तुम्हारी बच्चियों और तुम्हारे शौहर को मिलेगा।

मुनीर की बीवी खुशी खुशी नमाज पढ़ने गई।

यह पहला मौका था जब नूरद्दीन नहीं गया और अजीम को शेर वनन का मौका मिला। आज अजीम सुग्रा खाना लकर मसजिद पहुचनेवाला था। अपने पच्चीस रुपये वसूल करन के बाद नूरद्दीन न उसे सब कुछ समझा दिया— भूखी बच्चियों और शौहर से चुराकर अकेले खाने की आदत डलवाकर मैंने उसका जमीर चर चर कर दिया है। अब सच्चाइ और पाक दिली की वह अकड उसम नहीं रही है। थाली दिखाकर सामन स घसीट लना। वह तुम्हारे पीछे पीछे चली आएगी। सबज बाग दिखाना सबज बाग।

मुनीर की बीवी नमाज पढने गइ इधर नूरद्दीन ने अपना जाल फैलाया। भूख हाथ काटने के लिए तयार हो गई। मुनीर ने सिफ एक अठन्नी के लिए सारे औजार बेच दिए। अठन्नी पाकर बारह रोज के भूख और बीमार मुनीर के डगमगाते हुए कमजोर पर जल्द स जल्द सोनाई की दूकान पर पहुच जाने के लिए उतावले हो उठ थे।

मुनीर की लाश को उठाकर ले चलने के लिए पाच न अपनी ही तरह के सहृदय और मृत्यु भीरु दो मजबूत मरभुखा को राजी कर लिया। चावल की गठरी अपन गले स बाधकर पीठ की तरफ कर ली। चलने म पाच सेर चावलों की गठरी इधर उधर हिलती और उसका गला घुटन लगता। हाथो पर एक आदमी की लाश का बोझ और मन भारी बडी मुश्किल से रास्ता तय हुआ। चाद और रकिया बाप की लाश को देख कर वहाल हो गइ। भूख की कमजारी और बाप की मौत का गम न्ही सी रकिया की वर्दाश्त स बाहर हो गया। वह बेहोश हो गइ। चाद दस वरस की थी रकिया स ज्यादा समझदार बाहोश और इसलिए ज्यादा नसीब म।

मा घर पर नहीं है बाप की लाश घर पर आई है और छोटी बहन बहोश पड़ी है वह क्या कर? बिलख बिलखकर रो रही है दम घुटन

लगना है, एक दुःख में हजार दुःख याद आ रहे हैं। अब्बा गए थे चावल लाने और खाली हाथों, या आए। हाय अब्बा !

अब्बा की याद में भूख की तड़प थी जो उस वक्त अब्बा की तरह ही अज़ीज़—अब्बा से भी ज्यादा अज़ीज़ थी।

भूतों की मसजिद के पास झाड़ी की आड़ में, मुनीर की बीवी खाना खा रही थी। और अज़ीम उसके पास ही बैठा उसके बदन पर हाथ फेर रहा था। अज़ीम की आंखों में वहशत थी उतावलापन था। जब्त की शिद्दत से बीच-बीच में होंठ काटने लगता था। उसकी आंखें चढ़ जाती थीं। मुनीर की बीवी के बदन पर उसके हाथों का दबाव सख्त होता जाता था और मुनीर की बीवी—वह खाना खा रही थी और उसी में अपने को खोए रखना चाहती थी।

नूरुद्दीन मुनीर के मरने की खबर सुनकर उसके घर आ पहुंचा। बगला भगती मुरव्वत वगैरह आंसुओं के उसे ज़ोर ज़ोर से रुला रही थी। दिमाग में पेच पड़ रहे थे—'औरत खाली हुई है। शहर ले चलें। इस तरह से अपने काम आएगी। दो लड़कियों की मां हो जाने पर भी अभी ढली नहीं है। काठी अच्छी है इसकी। चार दिन और अच्छी तरह से इसको खिलाई पिलाई करूंगा, निखर उठेगी।'

मुनीर की लाश उठाकर लानेवाले तीनों आदमियों में से किसी में इतनी ताकत नहीं थी कि लाश को कब्रिस्तान तक ले जा सके। घर के पिछवाड़े जरा दूर पर एक ऊसर खेत था। नूरुद्दीन कहीं से फावड़ा ले आया। किसी तरह जमीन खोद रहा था। साथ ही साथ उसका दिमाग भी चल रहा था—'लौटकर आए तो दांव पकड़ूं। कहीं भटकी हुई न आए ! फुसलाना चाहिए। दो रुपये दूं। मुसीबत में हमदर्दी ! मगर रुपये तो शायद अज़ीमा भी दे। यों तो घाघ है मगर औरतों के मामले में साले की अक्ल घास चरने चली जाती है। और फिर इसपर तो महीनों से तबीयत आई थी। ऐसे तो जरूर ही रुपये देगा वह। तब फिर ? लौंडियों को हथियार बनाना चाहिए। मां का दिल लूटने के लिए सबसे अच्छा यही

तरीका होता है। करें क्या? खिलाओ।
है। मास्टर बाबू की गठरी में अनाज
चाहिए। मगर टटोल तो लिया जाए। देखें

नूरद्दीन ने फावड़ा रख दिया। हाँफने
गया हो। दूसरा आदमी उठा। आप पाव
में बहाने से गठरी पर हाथ रखकर टट
उड़ाना चाहिए। ऐसे तो हाथ नहीं आएगा
को उकसा दें। पढ़े लिखे तो बेवकूफ होते ही
इनमें। और जिसमें मास्टर बाबू तो बस
और रकिया को उकसा दें कि मास्टर बाबू
जाए खाना मांगें। बस फिर गठरी में घरवा
न पसीजें तो? यकीन तो नहीं होता। अगर
तो या लाश लेकर न आते। नहीं, दांव खाली
तो कौड़ी चित ही पड़ेगी। और जब
तसल्ली बड़ा काम देगी। बस फिर बाबू
इन्हें साथ ले जाना तो बेवकूफी होगी। लेकिन
किया जाएगा? खैर, यह फिर सोच लेंगे।
गठरी

नूरद्दीन ने झट से एक लम्बी आह
बोला—'इसकी बीवी बेचारी मसजिद में नम
कर देखेगी तो (गला भर आया। आंसू पा
में मुंह छिपाकर दो एक सुबकियां भी ले डाल
बाबू खुदा जाने क्या-क्या दिखाने वाला है
तो मैं मुनीर को दो रुपये देकर गया था। आप
मेरी तो कोई औकात ही नहीं पर अपनी सी
दस रोज खाने को न मिला। मां बिचारी मे
रुपये लाया था सो उसमें से पहले इसे दो रुपये

हिम्मत ! बेचारा अपनी जान से गया। हाय ! आज बारह दिन से फाके हो रहे हैं इसके यहां। जब से रुपये लेकर सोनाई की दूकान की तरफ गया था, लड़कियां बेचारी आस लगाए बैठी थीं कि अब अन्ना चावल लेकर आते होंगे। (गला फिर भर्रा गया) बेचारियों को यह मालूम नहीं था कि अब्बा अब सामने भी साथ लेकर न लौटेंगे। हाय !'' (फिर सुबकियां और रोना।)

पाचू स्तब्ध। अपने जीवन में मुनीर की इस घटना का समावेश कर वह देख रहा था। जिस तरह बरफ का टुकड़ा देर तक हाथ में रखा रहे तो वह हाथ सुन्न पड़ जाता है उसी तरह मृत्यु का भय पाचू के हृदय पर इस समय तक पूरी तरह से छाकर उसे स्तब्ध कर चुका था। मुनीर की लाश के स्थान पर वह अपनी लाश देख रहा था। नूरुद्दीन की एक एक बात उसके मन की ऊपरी सतह को छूती हुई, उसे इस तरह लग रही थी जैसे उसके मर जाने के बाद उसकी तथा उसके परिवार की कहानी, नूरुद्दीन किसी दूसरे को सुना रहा हो।

पाचू मुनीर की लाश की तरफ देखता रहा। उसमें वह अपनी लाश देख रहा था। गड्ढा खुद गया। बगैर कफन के लाश दफना दी गई। मिट्टी पड़ रही है। पाचू की लाश पर मिट्टी पड़ रही है। पाचू खड़ा देख रहा है। लाश है। ढक रही है। मिट्टी का बोझ लाश पर पड़ता जाता है। लाश अब दिखाई नहीं देती। गड्ढा भर रहा है। मुनीर की लड़कियां के रोने की आवाज उसके कानों को सुनाई दे रही है। नूरुद्दीन का जोर जोर से आह भरना भी वह सुन रहा है।

गड्ढा भर गया। लोग फावड़े और पैरों से मिट्टी दबा रहे हैं।

मुनीर इस संसार से चला गया। मुनीर अब संसार में दिखाई नहीं देगा। मुनीर ने उसके स्कूल की बेंचें बनाई थीं ब्लैक-बोर्ड बनाया था। मुनीर हंसता था बोलता था, चलता फिरता था काम करता था। थोड़ी देर पहले तक उसका शुमार है में किया जाता था अब 'था' में किया जाएगा। एक कहानी बन गया। कालिदास था शेक्सपियर था, अकबर, सीज़र, चन्द्रगुप्त था। मुहम्मद था ईसा था, बुद्ध था, राम, कृष्ण—

परिवार को तड़पकर मरना होगा।

पीड़ा और क्रोध से उसके पैरों की निरुद्देश्य गति और भी अधिक शिथिल हो गई। पाच सेर चावलों की गठरी लेकर आते वक्त उसमें उत्साह था। पाच सेर चावलों की गठरी के वजन ने मुनीर की लाश को उसके घर तक पहुचाने के लिए उसको शक्ति प्रदान की थी वह इस समय छिन चुकी थी। चार दिन की भूख निराशा और कमजोरी के साथ ही साथ लाश उठाने और ले जाने की थकान उसे इस समय तक अत्यधिक अशक्त कर चुकी थी। और उसके ऊपर से ताजी चोट यह आत्मग्लानि और निराशा उसे चक्कर आ गया, उसके पैर लड़खड़ाए—बड़ी मुश्किल से उसने अपने को गिरने से बचाया।

पाचू के आस पास कुछ दूर पर उसीकी तरह जीवित कंकाल डोल रहे थे। उसे उनसे घृणा हो गई। उसे अपने से घृणा हो गई। उसे तमाम अकाल पीड़ितों से घृणा हो गई। उसे मरे हुए मुनीर से भी घृणा हो गई। कम्बख्त को उसके ही रास्ते में आकर मरना था! और अगर मरना ही था तो किसी दूसरे वक्त न मरा—जब वह चावल लेकर आ रहा था, तभी साले की मौत आई!

पाचू को मुनीर की लड़की पर क्रोध आ रहा था नूरद्दीन पर क्रोध आ रहा था उन शास्त्रकारों पर क्रोध आ रहा था जिन्होंने शव को छूने से उसकी पाच सेर चावलों की गठरी के अपवित्र हो जाने का विधान बनाया। उसे अपने ब्राह्मण और आबरूदार होने पर क्रोध आ रहा था। नपुंसक क्रोध के कारण पाचू की आखों से आसू बहने लगे। पर इस बार उसे अपने आसुओं पर क्रोध न आया। उसे इस समय रोने में ही शान्ति मिल रही थी।

आसू जोर पकड़ते गए। अपनी हीन और असहाय अवस्था के ध्यान से रह रहकर पाचू के अहं को चोट लगती। रह रहकर पीड़ा के दौरे-से उठते जिससे उसका मानस तूफानी समुद्र की तरह उमड़ने लगता। आसू घुमड़ घुमड़कर आखों से बहने लगे।

पाच फूट फूटकर रो रहा था। सुबकियां सांस खींच खींचकर उठने लगीं।

पाचू के पैरों में दम न था। वह वहीं, मेला के पास ही जमीन पर धम्म से बैठ गया। मन में राम राम की रटन थी। निःसहाय अवस्था में वह 'निबल के बल राम' से सहारे की प्रार्थना कर रहा था। अज्ञात शक्ति के नाम का सहारा पाचू को धैर्य धारण करने में सहायता देने लगा। आंसू रुके सुबकियां खत्म हुईं। आंखें खुश्क हुईं, दो एक सर्द आह दिल से निकलीं।

मगर फिर चिन्ता— 'आखिर इस तरह से बाहर भी कब तक रहा जा सकता है। मुनीर के यहां चावल दे आने की बात भी शायद घर में सबको मालूम हो चुकी होगी। मैं अब तक नहीं पहुंचा, इससे और भी चिन्ता होती होगी। लेकिन खाली हाथों—घर में अंधेरा और मसजिद में दिया बालकर "

तभी, अचानक ही उसे खयाल आया स्कूल का कुछ फर्नीचर मोनाई के हाथ बेचकर वह उससे चावल खरीद सकता है।

विचार ने उसे एकदम स्फूर्ति दी। नया उत्साह आया नया बल आया। पाचू एकदम से उठ खड़ा हुआ। मोनाई के घर की तरफ चला।

रास्ते में वह सोच रहा था, स्कूल की चीजें बेच देने का उसे हक ही क्या है? वह उसकी निजी सम्पत्ति तो है नहीं। लेकिन कौन पूछता है? और फिर उससे? अगर वह चाहे तो सारा स्कूल ही उठा के बेच दे। उसने ही तो इस स्कूल को बनाया है। इसकी एक-एक ईंट में उसके जीवन का त्याग छिपा है। दिन और रात एक करके उसने ही ये चीजें इकट्ठा कीं। और वही इसे बेच भी देगा।

आत्मा कह रही थी यह चोरी है। पर आत्मा के इस उपदेश पर इस समय उसे झुंझलाहट आ गई। वह खाएगा क्या? उसका परिवार भूखा रहेगा? ये आदर्श, धर्म, पाप पुण्य सब पेट भरे की लीला है। अकाल पड़ने पर विश्वामित्र ने भी डोम के घर मांस चुराकर खाया था। उन्होंने

तो बाहर चोरी की थी, वह तो अपने ही स्कूल म चोरी करेगा। दरअसल यह चोरी है ही नही। दीमकें लग गई हैं। अगर ये डेस्कें बगरह ज्यादा दिन तक स्कूल म रही तो तमाम स्कूल का खा जाएगी। इन डेस्का का न बेचने स सबड़ा रुपया का स्कूल बिल्डिंग नष्ट हो जाएगी।

डेस्कें बचने के पक्ष म यह दलील पाचू को मन ही मन और भी अधिक उत्साहित कर रही थी। अपने आपका इस सफाई स धोखा देने क कारण उसे इस समय अपनी बुद्धि पर घमण्ड हो रहा था। सारा घर भूख के भूत से छुटकारा पा जाएगा। और इस बहाने तो जरूरत पड़ने पर एक एक, दो-दो करके स्कूल की बहुत सी चीजें बेची जा सकती हैं। इस तरह वह अपने परिवार के साथ बहुत दिना तक अकाल स लड सकता है।

मोनाई का घर दस कदम पर सामने था। पाचू ठिठका—स्कूल की डेस्कें बेचने की बात वह मोनाई से कैसे कहेगा ? मोनाई उसके बारे म क्या सोचेगा ? मोनाई उसका बड़ा अदब करता है। आज उसकी आखें सदा के लिए मोनाई के सामने नीची हो जाएगी। घर की बात खुल जाएगी—उसकी चोरी खुल जाएगी। हा चोरी तो यह है ही। पब्लिक के पैसे का अपने लिए उपयोग करना। मोनाई अगर यह सवाल कर बैठा तो ?

सारा जोश ठडा पड गया। निराशा सिर मे चक्कर बनकर छाने लगी। लेकिन वह लडखडाया नही, हिला डुला तक नही पत्थर की मूर्ति की तरह निश्चल, स्त ध खडा रहा। उसकी आखो के आगे तारे छूट रहे थे, और कुछ भी नही सूझ रहा था—कुछ भी नही। उस क्षण वह चेतना-शू य हो गया था।

'अहा ! मास्टर बाबू हैं ?"

पाचू के कानो मे मोनाई की आवाज पडी। जोश न फिर से उसे अपने कब्जे म लिया। पाचू चौका। देखा, मोनाई अपने घर के दरवाजे पर खडा था।

"कहो, इस वक्त यहा कसे ?'

"कुछ नहीं। अरे यों ही चला आया।"

मोनाई पास आया। बोला—"मुनीर बचारे की मिट्टी ठिकाने स लगा दी तुमने। दूसरा कोई होता तो नजर भी न डालता।

पाचू चुप। वह सोच रहा था, अपनी बात मोनाई से कहे कि न कहे।

मोनाई उसे चुप देखकर आगे बढ़ा—'सुना, बेचारे की लडकियो को चावल भी दिया है तुमने? नहीं जस गा रहा था तुम्हारा। बड़ा धरम करत हो मास्टर बाबू! नहीं तो आजकल का जमाना! गोपीकृष्ण, कोई किसीका नहीं। भगवान जी ने क्या जमाना दिखाया है! राधे राधे कस नया पार लगगा!"

मोनाई ने एक नि श्वास छोडी। पाचू ने भी एक नि श्वास छोडी—वह मोनाई से अपनी बात कहने का विचार त्याग रहा था। कैसे कहेगा, यही सबस बडी उलझन थी यही उसके त्याग का कारण था। लेकिन घर भर भूखा मरेगा। तो फिर

मोनाई की व्यावहारिक बुद्धि भापने लगी। चेहरे का भाव पढना चाहता था अधेरे म दिखाई नहीं पड रहा था। हाथ जोडकर बोला—"जब यहा तक आए हो तो मेरे घर म भी अपने परो की धूलि डालते जाओ। आओ न।'

मोनाई के पीछे पीछे पाचू चला। दहलीज म चारपाई पर बठाकर लालटेन की रोशनी म मोनाई बातें करने लगा। आप नीचे जमीन पर बैठा, पाचू को मात दिया। मास्टर बाबू आए किसी पच स है, मानाई ताडने लगा लेकिन मौका साधकर पाचू स ही दिल की बात निकलवानी है। दम देने लगा—"और इखबार म आज क्या क्या खबरें हैं मास्टर बाबू? लडाई की क्या खबर है? भाव कुछ और चढ़गा?"

पाचू को मोनाई स घणा हुई। स्वार्थी अभी और भी लूटना चाहता है। गाव वालो की लाशें भी खा जाएगा क्या? घणा व्यग्य बनकर फूटी—खबरें क्या, चादी है तुम्हारी।'

बुद्धू की तरह मोनाई ने हाथ मलते हुए खीसें निपोरी— हैं हैं ह!

चादी क्या मास्टर बाबू मरा तो जी कलपता है। गीता जी मे जो अरजुन जी न भगवान जी स कहा था कि जब अपने ही न रहगे तो तीन तिलाक का राजपाट लेके मैं क्या करूगा सो ही गत अपनी है मास्टर बाबू। कठी की कसम दिये तले बठा हू झूठ नही कहूगा। मुह म कौर नही दिया जाता। पर भगवान जी न कहा है कि करम करो अपना, मरना जीना सिसार का धधा ही है। बस यही सोचके (आह भरी) राधे राध!"

देखा पाचू अब भी चुप है खाया हुआ है। बोला—'आज बहुत उदास हो मास्टर बाबू। अरे मुनीर का गम न करो ज्यादा। आया था चला गया। देखो, परभू जी की लीला! मुझसे आठ आन का चावल खरीदा, मैंने उस ज्यादा तोलकर दिया। मेरी आदत गुपत दान करने की है मास्टर बाबू। पर सो भी उसके भाग म नही था। कौडी कौडी पर मोहर है भगवान जी न सच कहा है। लेकिन वो तुमने मास्टर बाबू चावल कहा स खरीदा था?

'दयाल बाबू के यहा से।

हा! मोनाई ने गम्भीर होकर एक पल के लिए सिर झुकाया। फिर पूछा—'क्या भाव दिया?

गए हुए की बात पूछ रहा है कम्बख्त! जले पर नमक छिडक रहा है। पाचू बेरुखी से बोला— क्या करोगे भाव पूछकर? तुम सब एक ही थैली के चटटे बटटे तो हो।

नही बाबू फरक है मोनाई जोर देकर बोला— जमीदार बाबू से दो पसे कम पर दूगा। तुम घर के आदमी हो, जितना कहो उठा कर दे दू।

पाचू खुश हुआ। उसे लगा जसे मोनाई न सचमुच ही उसके आगे चावल की बोरिया लाकर ढेर कर दी हो।

मोनाई अपनी धुन म कह जा रहा था—'य जमीदार बाबू अब हमस खार करन लग हैं। इ ह अब यह डर लगता है कि मोनाई अब आध का साझीदार बन गया है। अर, इ होने सरकार का यूनन बोट बुलवाया है

यहां। अपना धान सीधा सिरकार में ही बेचा। अढ़तिये को एक पैसा लिया दिया नहीं। और अब इस बाट में हैं कि यूनन वोट में दस रुपये मन के भाव से विकवाएंगे, जिससे मैं चौपट हो जाऊं। पर इन्हें यह पता नहीं है कि मैं भी केवट का बच्चा हूं। वो फांस मारूंगा कि जमीदार बाबू देखत ही रह जायंगे। हां ''

मोनाई ने दम्भ के साथ पगड़ी बदली और अन्दर के दरवाजे की तरफ मुंह करके आवाज लगाई—"अरे ग्याड़ा रे, जरा चिलम तो ले आ बेटा।"

पाचू के मन में फिर आशा जगी। तिकड़म और दांव पेच के अखाड़े में एकाध भी कुछ कर दिखाने की तबीयत हुई—"अरे, मैं जानता मोनाई। दयाल बाबू क्या खाके तुम्हारा मुकाबला करेंगे। और मुझे क्या मालूम नहीं है, इस वक्त तुम्हारी हैसियत उनसे ज्यादा है।'

मोनाई में मक्खन लगा। गदगद होकर पाचू के पैर छुए और बोला—"सब भगवान जी की दया है मास्टर बाबू। मोनाई केवट ने जब से लाठी ली तब से किसी बामन, साधू और गोमाता का बुरा नहीं चेता, मास्टर बाबू। सच कहता हूं तुमसे। फिर मेरा बुरा कौन चेत सकता है ?"

'ठीक है। ठीक कहते हो। पाचू जरा उत्साह में था—'बड़ा दया धर्म है तुम्हारे मन में। मैं क्या जानता नहीं हूं।

मोनाई का हुक्का लेकर ग्याड़ा आया। देखा मास्टर महाशय बैठे हैं। हड़बड़ाकर हुक्का रखा, और पाचू के पैर छुए।

शिक्षक का अभिमान जागा। रौब से पूछा—'क्यों रे, आज स्कूल नहीं आया तू ?"

ग्याड़ा सकपका गया। बाप बोला—"मैंने ही नहीं भेजा था इसे। आज दो दिन से इसकी मां जरा बीमार है। हें हें कुछ भगवान जी की दया होने वाली है घर में—हें हें।"

खुशामदाना तौर पर उल्लसित होकर पाचू बोला—"अच्छा कब ?'

'अभी तो दिन हैं। छठा महीना है। बाकी सिर भारी रहता है

आजकल उमरा—सो लड़के से बढ़कर मा की सेवा और कौन कर सकता है, मैंने सोचा।

यह मोनाई की तीसरी पत्नी है। प्याड़ा दूसरी का है। सौतली मा ठहरी बूढ़े की जवान बीवी। बेटे से डटकर सेवा कराती है।

मोनाई प्याड़ा की तरफ देखकर बोला— अरे, मा के पास जाकर बैठ। और वहीं बैठकर पढ़।

प्याड़ा सिर झुकाए चला गया। कश खींचते हुए मोनाई बोला—ये प्राणी एक बार वोए पास हो जाए बस! भगवान जी! अब तो तुम्हारा स्कूल बन्द ही हो गया समझो। आहा! तुमने भी क्या चमत्कार कर दिखाया मास्टर बाबू! गांव की सात पीढ़ी में तुम्हारे जैसा कोई नहीं हुआ। सत्त कहता हूं।

पाचू ने एक निःश्वास छोड़ी, बोला— हां पर अब दीमकें सारी डस्टें चाट डालती हैं।

राधे राधे! मेरी मानो तो कुछ कहूं।

पाचू चौंका। शायद अब बात बन जाए। उत्साहित होकर बोला— कहो कहो!

मेरे हाथ बेच डालो न लकड़ी का सामान। दीमकें चाट डालें उससे क्या? अकाल के बाद तुम्हें किसे यों ही वापनी पड़ेगी। यों स्कूल के दाम में पचीस-पचास मिल तो सकोगे।

बिल्ली के भागों छींका टूट रहा था पर अभी एक मंजिल और थी—आज का वादा। पाचू अब तो गंगा के किनारे आ ही गया था। प्यासा हरगिज नहीं लौटेगा— कहना तो ठीक हो। पर

पर मोनाई ने पर निकाल बोला— मैंने तो स्कूल के मन की बात कही थी बाकी मैं और नहीं दूंगा। मुझे गरज नहीं है। सत्त कहता हूं। मोनाई साथ कहकर हुक्का में तल्लीन हो गया।

पाचू का नशा उतरा। बात बनते-बनते बिगड़ न जाए। हड़बड़ाकर पूछ पड़ा— नहीं मुझे इनकार नहीं। लेकिन बात यह थी कि तुम तो

जानते ही हो। लूट मार का जमाना है, इसलिए घर में पैसा कौड़ी नहीं रखते। डाकखाने के बैंक में जमा है। और इस वक्त अब हाथ जरा तंगी में आ गया है। तुम तो समझते ही हो, यह स्कूल बन्द हो गया और ..."

मोनाई ने हुक्का गुनगुनाते हुए ? समझदारी के पूरे बोझ से गर्दन हिलाते हुए कहा— सब समझता हूं, मास्टर बाबू ! मोनाई केवट ने भी अंधेरे उजाले दिन देखे हैं। मैं चावल देने को भी तैयार हूं।"

पाचू ने देखा मोनाई ने नस पकड़ ली। बड़ी झेंप मालूम हुई। बात बनाने के लिए रौब जमाया—"हां, अभी तो ले ही लूंगा। पर यह रकम तुम उधार ही समझो। जो तुमसे फर्नीचर बेचकर पाऊंगा, उतनी रकम बैंक से लाकर खाते में जमा कर दूंगा।"

बात कहते कहते पाचू ने खुद ही महसूस किया कि वह बगैर जरूरत के सफाई दे रहा है। मोनाई ने एक बार गौर से पाचू के मुंह की तरफ देखा, फिर गर्दन झुकाकर हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। उसने थाह का अनुमान किया। अनुमान पक्का करने की गरज से बोला—"अच्छी बात है, तो फिर दो तीन दिन में कभी चलकर लकड़ी देख लूंगा। सौदा हो जाएगा।"

पाचू ने देखा, हाथ आए चावल फिर दूर खिसके जा रहे हैं। वह एकदम से अधीर हो उठा। मन का सत्य उबल पड़ा। घबराकर दीनता भरे स्वर में बोल उठा—"आज ही सौदा कर लो न मोनाई। घर में चावल की एक कनी भी नहीं है। पांच सेर की गठरी मुसलमान का मुर्दा छूकर बरबाद कर दी। मैं धर्म-संकट में पड़ा हूं।"

मोनाई चुप। हुक्का गुड़गुड़ कर रहा है। पाचू की आंखें भिखारी बनकर एकटक मोनाई के चेहरे पर ही अड़ी हुई हैं। अपनी आबरू मोनाई के हाथों समर्पित कर, वह उससे संरक्षण की भीख मांग रहा है। पाचू अनुभव कर रहा है वह गिर गया। सदा से पोषित उसका स्वाभिमान इस समय मिट्टी के खिलौने की तरह गिरकर चूर चूर हो गया। इतना महान त्याग करने के बाद भी अगर मोनाई ने ना कह दी तो ? नहीं-नहीं वह ऐसा न होने देगा। ऐसी नौबत आने पर वह मोनाई केवट के पैरों पर अपना

सिर झुका देगा। भूखे घर में चावल की गठरी के साथ प्रवेश करने के लिए वह आज हर तरह का अपमान सहने के लिए तयार है।

तभी मोनाई हुक्का सरकाते हुए बोला— मैं अभी ही तुम्हें दस-पांच सेर दिए देता हूं। इस वखत का काम चलने दो फिर पीछे हिसाब किताब कर ले-दे लिया जाएगा। कोई फिक्र मत करो। यह कहकर मोनाई उठा। अन्दर जाने जाते दरवाजे पर ही ठिठककर बोला—'इसकूल की कुंजी न हो, मुझे ही दे दो मास्टर बाबू। रातोरात बेंच निकलवानी होगी जिसमें तुम्हारी इज्जत पर कोई आंच न आने पाए।

मोनाई की इस आत्मीयता ने तो पांचू का हृदय जीत लिया। फौरन ही तालियों का गुच्छा निकालकर मोनाई को दे दिया— मेरा मन जो कागज-पत्तर और रजिस्टर वगैरह है उन्हें तुम मेहरबानी करके अपने सामने ही करीने से अलग रखवा देना। समझे!

पांचू के स्वर में अत्यधिक दीनता थी।

मोनाई तालियों का गुच्छा लेते हुए बोला— तुम निसाखातिर रहो। मैं अभी दस सेर चावल लाए देता हूं।

मोनाई अन्दर चला गया। वह खुश था भगवान जी ने बैठे-बैठे ही में पचास-साठ रुपये का फायदा करा दिया। दस सेर चावल दे के सारी बेंचें अपनी। फिर कौन देता है कौन लेता है? मास्टर बाबू की नजर तो उठेगी नहीं उसके सामने— भगवान जी तुम धन्य हो! राधे राधे!

और पांचू सोच रहा था—'भगवान बड़ा दयालु है। पांच सेर लिए दस सेर पाए। और भी आगे मिलेगा। दो मन तो मिल ही जाएगा कम से कम मोनाई देवता है। बड़े आड़े वक्त काम आया!

४

बड़ी किफायत के साथ, आधा चौथाई पेट खाने पर भी, [redacted] सेर चावल चार दिन में निबट गए। पाचू मोनाई से दस सेर लाया था। मोनाई ने अब तक शायद स्कूल का फर्नीचर औने पौने कर दिया होगा। पाचू ने सोचा—'चलकर मोनाई से हिसाब समझ लिया जाए। वैसे है तो नखरी काइयाँ, दस के दो टिकाएगा। पर जो कुछ भी इस वक्त मिल जाए उसे ही बड़ी रकम समझो। अड़तालीस बेंचें और उतनी ही डेस्कें हैं। कम से कम पचास तो देगा ही। न सही पचास चालीस ही दे। इतने में एक मन चावल आ जाएगा। एक महीना तो आनन्द से पार हो ही जाएगा। वैसे माल तो ज्यादा का है। दो मन न सही, डेढ़ मन चावल तो इतने फर्नीचर में मिलना ही चाहिए। यों तो आज कंट्रोल का ढिंढोरा भी पिट गया है। उसके हिसाब से तो उसे दस रुपये मन बेचना पड़ेगा। पर शायद इस सरकारी हुक्म में भी वह कोई पख लगा दे। पक्का चार सौ बीस है यह मोनाई। खैर! मैं उसके नकद रुपये से लूँगा। मोनाई कहता ही था—दो-एक रोज़ में यूनियन बोर्ड का चावल आने वाला होगा। तब तो चालीस रुपये में चार मन चावल मिलेंगे। ठाठ से चार पाँच महीनों तक मूछों पर ताव देकर डकार लेंगे। आगे फिर राम मालिक है। अरे हाँ, जिसने मुँह चीरा है वही खाने को भी देगा।

दूसरे ही क्षण पाचू को यह कहावत निस्सार जँचने लगी। इतने मर गए, और भूखा ही मरे। लोगों ने व्यर्थ ही ईश्वर को इतना दयालु समझ रक्खा है। ईश्वर कहाँ है? क्या वह घट घट व्यापी अंतर्यामी, अपनी आँखों से इन भूखों मरते हुए लाखों निर्दोष जीवों को नहीं देख पाता? अगर वो है तो उसने ही इन सबों के मुँह भी चीरे हैं लेकिन इन्हें खाने को नहीं देता!

× × ×

पाचू की आंखों के सामने जीवित कंकाल—मर्द, औरत, बच्चे अपने कमजोर तन की सारी स्फूर्ति को बटोरकर दौड़ते हुए चले जा रहे थे। उनकी गड्ढों में धंसी हुई आंखों में आज खुशी की चमक थी, सूखी हुई हड्डियों में आज उत्साह नजर आ रहा था। किसी के हाथ में फटे चिथड़े हैं कोई एलुमुनियम या पीतल तांबे के घिसे घिसाए बर्तन लिए हुए मारवाड़ी की दुकान की तरफ भागा जा रहा है। चारपाई के पाये हल के फाल मछली पकड़ने के जाल और काटे कन्ई और लुहारों के औजार—जिसके घर में जो कुछ भी बचा था उसे लिए हुए वह दौड़ा चला जा रहा था।

आज गांव में कंट्रोल का ढिंढोरा पिटा था। दुअन्नी चवन्नी भी आज अरसे बाद चावल खरीदने में समर्थ हुई है। अब अकाल के पांव उखड़े। सरकार में सुनवाई हो गई। सुना है कुछ दिनों बाद अनाज मुफ्त में बांटा जाएगा। अब फिर से अच्छे दिन बहुरेंगे। इस बार ईश्वर ने चाहा तो फसल पहले से भी अच्छी होगी। जब कटेगी तो सारा देश फिर से स्वर्ग बन जाएगा।

कंट्रोल का आर्डर मौत से लड़ती हुई इन जिंदा लाशों में फिर से ताजगी ले आया है। पाचू सोच रहा था—'हमारे देश के निवासी कितने सरल हृदय के हैं! उन्हें खुश करने के लिए सिर्फ बहाना ही काफी होता है। एक लंगोटी और मुट्ठी भर अन्न तक ही उन्हें स्वर्ग के सुखों की चाह है। उन्हें न मोटरें चाहिए और न महल। पाचू को याद आया, एक दिन दयाल बाबू ने स्कॉच व्हिस्की की एक दर्जन बोतलें मंगवाने के लिए एक आदमी को खास तौर पर कलकत्ते भेजा था। मगर अस्सी रुपये फी बोतल तक खर्च करने के लिए तैयार होने पर भी ब्लैक मार्केट में न मिली। दयाल बाबू कितने परेशान नजर आते थे! कितने दर्द के साथ कहा था—'देखिए मास्टर बाबू क्या जमाना आ लगा है! अस्सी रुपये खर्च करने पर भी स्कॉच नहीं मिल रही!

' दयाल जमींदार को शराब की एक बूंद तड़पा रही थी, और दयाल की प्रजा को चावल की एक कनी। कैसा विचित्र साम्य था! उसके

कुछ दिना के बाद जब कट्रोल से तीस रुपये पर स्कॉच मिलने की खबर दयाल बाबू को मिली थी तब वे कितने उत्साह म आए थे ! आज चावल पर कट्रोल हुआ है। प्रजा का उत्साह देखो। मोनाई का उत्साह देखो !"

मोनाई की दूकान के आगे भीड़ लगी हुई थी। कान पड़े बात न सुनाई देती थी। नाक पर चाँदी की कमानी का चश्मा चढ़ाए मोनाई एक एक चिथड़ गुण्डे की उपेक्षा के साथ देखते हुए उनकी परीक्षा म व्यस्त था। अज़ीम पास ही बैठा हुआ इस कबाड़खाने की प्रदर्शनी का हिसाब मोनाई के आदेशानुसार खाते पर टाकता जाता था।

मोनाई की दूकान से दस कदम दूर, बायें मोड़ पर एक पेड़ था, जिसकी पत्तियां इसान के पेट की आग को बुझाने के काम आ चुकी थीं, जिसकी कई डालें इसान की भूख से उलझ कर टूट चुकी थी, और जिसका नगा कंकाल भूखे बगाल का प्रतिनिधि बनकर मोनाई की दूकान के सामने गूंगे गवाह की तरह खड़ा था। पाचू उसके नीचे खड़ा खड़ा मोनाई की दूकान के सामने का तमाशा देखने लगा।

'दो कटोरे और एक धोती। ये धोती है? हिं ससुरी फोक्ट म भी महगी है। लिख ले, लिख ले, ६ पैसे भोलू के नाम। साला कट्रोल का भात खाएगा।' कटोरे बतनों और धोती-कपड़ा के ढेर पर फेंकते हुए मोनाई न अज़ीम से कहा।

अज़ीम की ॥ रखनेवाली कलम आगे बढ़ी। सिर झुकाए हुए, लिखते लिखते वह बोलता भी जाता था— 'भोलू—६ पैसे।"

भोलू नाम के नर कंकाल की कांपती हुई धीमी आवाज़ गिड़ गिड़ाई— 'पेट न भरेगा मोनाई। चार आने चार आने तो लिख लो। दस दिन के भूखे हैं।

मोनाई डपट पड़ा—"अबे तू भूखा है तो यहाँ कौन पेट भरके खाता है? तुम लोगों की दशा देख देख के सास तक तो समाती नहीं पेट मे। ६ पैसे कम हैं क? सालों का जितना ज़ादा दो उत्ता ही हाथ पसारेंगे।

भगवान जी ने गीता जी में कहा है कि संतोष से काम लो सो नहीं होना। ' ये अनमुनिया का कटोरा और थाली चार डबर पटन के नाम।"

बेचने वाले को सौदा करने का हक न था। खरीदनेवाला मनमाने दाम लगा रहा था। लोग जल्द से जल्द अपनी चीजें बेचकर चावल पाना चाहते थे। सत्तर अस्सी आदमी खड़े थे। मोनाई की दूकान में कपड़ों का ढेर था, टूटे पुराने बरतनों का ढेर था, लोहा-लंगड़, मछुआ के जाल, चारपाई के पाये वगैरा जमा हो रहे थे। चावल कहीं भी नहीं दिखाई देता था। मोनाई का करण बाबू भी वहां नहीं था। मोनाई बकता था, गालियां देता था, माल रखता था और अजीम से चिटठे में दाम टंकवाता चलता था। सबके नाम लिखकर बाद में पैसे वगैरह बांटे जाएंगे, यह सबसे कह दिया गया था।

हर शख्स जल्दी में था। हर शख्स यह चाहता था कि उसकी चीजें पहले खरीद ली जाएं। चिटठे पर अपना नाम और दाम टंक जाने के बाद हर आदमी अपने चावल पाने के अधिकार को सुरक्षित समझता था। भूख की बेचैनी जरा देर के लिए बुझ-सी जाती थी। चिटठे पर नाम लिख जाने के बाद लोग दूकान से हटकर आसपास ही धरती पर या तो लेट जाते थे या दो चार की टोली में बैठकर बातें मठारते थे। कोई आठ, कोई दस, कोई बारह दिनों से भूख के शिकंजे में अपने परिवार के साथ जकड़ा हुआ, पास आती हुई मृत्यु को भयानक, भयानकतर, भयानकतम रूप से देख देखकर, भय और चिंता के जड़ स्वरूप को अनुभव करते हुए शून्य से लड़ रहा था। पैरों तले दबी हुई चींटी की तरह, सत्ता के भार से दबा हुआ गुलाम इंसान बड़ी ही मुश्किल से जीवन का मोह तोड़कर अन्तिम क्षण की प्रतीक्षा में अपनी सारी मनोवृत्तियों को बड़ी लाचारी के साथ मृत्यु में एकाग्र कर रहा था। कंट्रोल की खबर पाते ही वह मृत्यु के पंजे से जान छुड़ाकर भाग निकला। जीने के लिए अगर प्राणी को एक पल भी और मिल जाए तो इससे बढ़कर खुशी की दूसरी बात ही क्या हो

सकता है ?

पड़ के सहारे टिककर खड़ा हुआ पाचू यह तमाशा देख रहा था। अपनेपन को इन तमाम लटती हुई जानो में लीन कर, एकात्म भाव से अपनी चेतना और बुद्धि को वह इस तसवीर में एकाग्र कर चुका था। हर आनी-जानी शह के साथ उसकी निगाह दौड़ती, दिमाग दौड़ता। शहर के राजनीतिक समाज में पनपा हुआ बगाली, दिमाग मजबूरी की जजीरो में गले गले तक जकड हुए, भूखे-नगे गुलाम (मगर इसान) की हालत पर गौर कर रहा था— इसे अहिंसा का आदर्श भी तो नही कह सकते। इस यागा का मोहत्याग भी नहीं कहा जा सकता। कुत्ते बिल्ली की मौत।" फिर सोचा— कुत्ते बिल्ली भी आसानी के साथ अपने पेट के हक से हटाए नही जा सकते। वे मरते मरते भी अपनी पूरी ताकत और आवाज के साथ मौत बनकर सामने आने वाले हर जुल्म से डटकर मोर्चा लेंगे। मगर हम तो भुनगो की मौत मर रहे हैं न आवाज, न जोर।"

पाचू सोच रहा था—'क्या दुनिया के किसी देश, किसी कौम का आदमी अपने लिए यह मौत पसद करेगा ? फिर क्यो नही उस अजाम का ख्याल आता। वह क्यो यह भूल जाता है कि जो अत्याचार मनुष्य अपनी सत्ता के जोम में किसी दूसरे पर करता है, वे ही उलटकर कभी उसके ऊपर भी हो सकते हैं ?"

पाचू तस्वीर को उलटकर देखने लगा। मोनाई की दूकान पर, समझो कि उसकी जगह पर भोलू, पटल, तिनकौडी या कोई भूख का सताया हुआ आदमी जबरदस्ती चढ़कर बैठ गया हो, और मोनाई को वह अपनी ही तरह दस बारह रोज तक भूखा रखने के बाद चावल की आस दिला दिलाकर ललचा रहा हो उस हालत में बकाल मात्र मोनाई किस तरह गिड़गिड़ाया, परेशान होगा—इसकी कल्पना करने से पाचू को एक तरह की खुशी हुई। उसकी इच्छा होने लगी कि एक बार भूखा रखनेवालो को भूखे रखकर उनका तमाशा देखा जाए।

दयाल बाबू राय भुवनमोहन सरकार मिस्टर जाडन, लेडी चटर्जी,

लाड़—पाचू की कल्पना हर एक बड़े आदमी की भूख से तड़पते हुए चित्र देख देखकर हिंसक आन द लूटने लगी। व्यक्तिगत सत्ता के लिए लड़ने वाले एक बार भूख से भी तो लड़कर देखें। दुनिया को राहत की नमन समझने का दावा रखनेवाले ये बने हुए मसीहा खुद अपने पेट से भी तो एक सवाल पूछकर देखें—क्या वे पेट की खाली बर्दाश्त कर सकेंगे? कोई कर सका है? तब फिर वे किसी दूसरे को क्या देना चाहते हैं क्या दे रहे हैं?

थाली के पानी में चाँद को छूकर बहते हुए बच्चे की तरह चमक को उभारती हुई खुशी की चमक पाचू के चेहरे पर छा गई। अपने सामने अपने ही बड़प्पन को होल दे देकर बजाते हुए अपनी ही आवाज को वह एक महान आत्मा की वाणी की तरह सुन रहा था।

उस वक्त पाचू मास्टर का पेट भरा हुआ था। मोनाई से बँधा का हिसाब किताब समझने के लिए आया था सो वह भूखमरा का हिसाब सामने आ गया। उसके आस-पास चारों तरफ टोलियों में जगह जगह फैलकर बैठा हुआ जन-समूह चावल की आस में संतोष गुण का स्पर्श पाकर बह रहा था। यों तो आजकल हर वक्त, हर रोज आदमी बहकता ही रहता है मगर आज अरसे के बाद जरा खुशी में बहका।

बीच बीच में चारों तरफ निगाह दौड़ाकर पाचू लोगों के चेहरों पर खुशी का अन्दाजा लगा रहा था। उसकी पीठ पीछे ही, पहले की तरह, केष्टो नाम भजने के हुए स्वर को अपनी पूरी ताकत लगा करके, पुराने जमाने की गुण भरी ही बुलन्द आवाज के स्पष्ट तक ऊंचा उठाने की कोशिश कर रहा था। कहावत थी कि केष्टो बोले तो मोर घाट तक आवाज जाए। अपनी पूरी आवाज के साथ बोलने की कोशिश में जल्दी ज े हाँपता हुआ केष्टो कह रहा था— उसने मेरी बहन को घर से निकाल दिया। कह दिया हमारे घर में तेरे लिए स्थान को नहीं है। बेटा, भाई के जा जब भगवान जनम दे जाए तो लौट आइयो। अरे पूत... भाई तू तो क्या तू समझा कोई नहीं? एं! धरम को मानता तो तू तो

उसका पति है—स्वामी ! तूने उसका हाथ पकड़कर जीवन मरन की गांठ बांधी। और जब विपता पड़ी तो वही हाथ पकड़कर उसे घर से बाहर निकाल दिया। ऐं ! इससे बढ़कर नीचता और क्या हो सकती है ? उस वखत, सच्ची माना निमाई, इत्ती घिरना हुई कि देखो, आदमी कित्ता नीचे गिर गया है ! मन म बड़ा बैराग उपजा, तुमारी कसम। इस ससार से चित्त फट गया मेरा। मगर, समझे, निमाई ? उत्ती बला अपना धरम करने से मैं भी नहीं चूका। चट से मैंने भी उसी दम कुमू नोनी की मा को हात पकड़कर घर से बाहर निकाल दिया। वो साला समझता होगा कि उसके निकाल देने से मेरी वहन का कोई ठिकाना न रहेगा। अरे, केप्टो नदी अपनी जान देके भी अपनी बहन को बचाएगा। मैंने गिन्नी से सफा कह दिया कि बिंदो अपने भाई के आई है, तू अपने भाइ के जा। चल निकल। मरा बटा समझता होगा कि वही अकेला अपनी गिन्नी का निकाल सकता है। अरे मैं उससे भी बढ़कर साढे सात हात का कलेजा रखता हू। केप्टो नदी अपनी आन का पक्का है—हाऽऽ ! '

पाच ने अनुभव किया कि अंतिम वाक्य कहते हुए केप्टा नदी न अपनी आवाज को खीच-खाचकर, किसी तरह अपनी बुलन्दी का फिर से नया रिकार्ड स्थापित कर ही दिया। वह सोचने लगा—' शम जब अपनी हद से गुज़रकर बेशर्मी बनती है तब उसकी चेतना से बचने के लिए आदमी अपनी असलियत का ज़ोर शोर से ढिंढोरा पीटकर उसे न्याययुक्त सिद्ध करता है। चेतना बेशर्मी का बाना छोड, न्याय और सत्य का अभिमान बनकर इसान को हीनभावना की नजरों स बचाती है। इस बात को वह अपने गाव के आदमियों म इधर बराबर नोट कर रहा है। हर आदमी जिसके शरीर म ज़रा भी ताकत है—और आबरूदार तो करीब-करीब सभी एक किस्म की झूठी अकड की आड मे दद का छिपाए हुए मन ही मन म मचल रहे हैं। खाने को मिलता नहीं। परिवार के पुरुष अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करते-करते, अपनी मजबूरियों का ध्यान करते करते, पागल हुए जा रहे हैं। आखो के सामने देख रहे हैं—बच्चो की हड्डिया दिन ब-

गिरफ्तारी हो जा रही है और मांस गुम्ता जाता है। पसलियों के उभार में पेट ग्वा धंसा जाता है। आंखें घनी अंधेरी कोठरी में टिमटिमाते हुए दिए की तरह गड्ढों में दिखाई देती हैं। हाथ-पैर सूखकर लकड़ी हो गए हैं। खाने की आस मरती जा रही है—और बच्चे भी। यह दफ्तर कौन नया याद होगा जिसकी मर्दानगी पर लानत न बरस जाती होगी। अपना और अपने आश्रितों का पेट न भर सकने की मजबूरी किसका कलेजा पकड़कर न मसोस देती होगी? वह अपने बच्चों का पेट नहीं भर सकता, अपनी पत्नी, बूढ़े मां बाप, आश्रित भाई-बहनों को खाना नहीं दे सकता वह खुद अपने को भी नहीं खिला सकता। और फिर भी वह जी रहा है। यही उसे खल रहा है।

जीवन की सबसे बड़ी असफलता का तमाशा खाकर इन्सान तिल मिला उठा है। ईश्वर से लेकर अपने तक, वह हर एक के प्रति विद्रोह का भाव रखता है। जीवन की टूटती हुई डोर और जीवन के मोह में बराबर खींचतान चल रही है। सुबह होती है हर रोज आदमी अपने खयालों में ताजगी लेकर उठता है कि आज खाना मिलेगा—कहीं से अचानक कुछ करिश्मा हो जाएगा और सबके सामने खाने की थालियां आ जाएंगी। जो कहीं ऐसा हो जाए तो चारों तरफ खुशी की लहर दौड़ जाए। गांव का चेहरा पलट जाए। मोनाई का मुंह इत्ता-सा होके रह जाए कि अरे, मेरा अब माल कौन खरीदेगा?

आदमी दिन भर अपने को आस दिला दिलाकर बहलाता रहता है। ज्यों-ज्यों दिन ढलता है, रात आती है उसकी उम्मीदों पर भी अंधेरा मंडराने लगता है। वह गम्भीर और फिर चिड़चिड़ा होने लगता है। मौत के आलम में तारों को भूखी निगाहों से देखते हुए किसी दर्द भरे की चीख बेसाख्ता कराह उठती है। अंधेरी रात में दूर-दूर तक चीखने और कराहने की आवाजें आती हैं। हिस्टीरिया के दौरे में रोते चीखते और इधर उधर भागते हुए इंसानों के साथ कुत्तों का शोर मौत की दहशत से लोगों का दिल हिला देता है। रात आंखों में कटता है और धीरे धीरे चमत्कार

की तरह आनेवाले रुपहली उजाले की शह पाकर सूनी शाखा पर चिड़िया चहचहा उठती है।

आस का टूटता हुआ देखकर आदमी चिड़चिड़ा रहा था। भूख बआमरा बेसहारा हो गई थी। भूख का ध्यान छोड़कर लोग किसी और तरफ अपना ध्यान लगाना चाहते थे, मगर उसके लिए भी कोई चारा न था। स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध शारीरिक बल के साथ-साथ टूटता जा रहा था। बहुत उत्तेजना होने पर एक दूसरे के शरीर से जोखा खसोटी कर के हाफ जाते थे। यह पस्ती भूख की पस्ती के साथ-साथ दिल की आग को दुबाला करके भड़काती थी। मन के किसी पर्दे में शारीरिक सुख का मोह होने पर भी अपनी पूरी चेतना के साथ, मनुष्य स्त्री पुरुष के शारीरिक योग से नफरत करने लगा था। कितने ही घरों से पत्नियां निकाली गई और कितनी ही पत्नियां अपने पतियों को छोड़कर चली गईं। औरतों और छोटे बच्चों से रिश्ते टूटने लगे। मां बाप, बहन भाई भी खलने लगे। एक दूसरे की सूरत देखते ही आंखों में खून उतर आता। हर आदमी यह सोचने लगा कि अगर दुनिया में वही अकेला होता तो कभी भूखा न मरता। आदमी आदमी को अपना जानी दुश्मन समझने लगा। पड़ोसी और नाते गोते के लोग तीन तीन पीढ़ियों की छोटी से छोटी बातों को याद कर एक-दूसरे से लड़ने के मौके खोजने लगे।

मध्यवर्गीय आबरूदार अपने दिल के गुबारों को आबरू की फटी चादर में बांधकर, गांव भर में उसे बिखेरते हुए चलते। इनकी दशा और भी बुरी थी। नंगे घूमने पर भातिपुरी धोती जोड़ा की बातें करना, बाबाराज के छत्तीस परगाना का चर्चा। हर एक आबरूदार के दादा या परदादा के यहां दयाल जमींदार का दादा या परदादा गुमाश्ता रह चुका था—भूख से तड़पते हुए पेट को बड़ी बड़ी बातों में बहलाकर अपने दर्द का दिन हो दिल में बसे रहने की हर कोशिश पानी की तरह बह जाती थी।

पांचू अपने ही घर में देखता है, पास पड़ोस में भी देखता है आदमी भूख से ज्यादा अपनी आबरू की रक्षा करने के लिए परेशान है। तरह-

तरह के उपाय सोचता है, और उसके सारे उपाय मनसूबों पर पानी फिर जाता है।

हारान भट्टाचार्य के घर में तीन दिन से फाके हो रहे थे। अपने घर के दरवाज़े बन्द रखने पर भी उसे बराबर यही शक बना रहा कि दुनिया वालों को उसके यहाँ अकाल आने की खबर लग गई है। यह चीज़ उसे बराबर परेशान करती रही। तीसरे दिन एक उपाय सूझा। घर से बाहर निकला और लोगों से बात निकाल निकालकर यह जाहिर किया कि उसे बदहज़मी हो गई है और वह वाइज्ये मोशाय के यहाँ चूरन लेने जा रहा है।

दिन बहुत खल रहे थे। परेश घोषाल ने एक दिन अचानक ही अपने छोटे भाई और विधवा बहन पर अनैतिक संबंध का दोषारोपण कर दोनों को घर से निकाल दिया।

कानाई घटक के बाप मर गए थे। आबरू की रक्षा के लिए श्राद्ध करना जरूरी था। कानाई ने दयाल के एक समृद्ध गुमाश्ते परान हालदार से सौदा तय किया, अपनी पत्नी को जबर्दस्ती वेश्या बनने पर मजबूर किया। और जब परान बगैर पैसा-कौड़ी दिए हुए ही जाने लगा तो वह गुस्से से पागल हो गया। दोनों की गाली-गलौज और चीख पुकार सुनकर मकान में आसपास के लोगों की भीड़ जमा हो गई। जिस आबरू को बचाने के लिए उसने अपने ही हाथों अपनी पत्नी की आबरू गंवाई थी, वह देखते देखते ही लुट गई। कानाई की भूखमरी पत्नी भीड़ से घिरी हुई अपनी लाज की लाश को या सहते हुए देख रही थी। कानाई घटक का धंधा देखकर जमादार का गुमाश्ता परान हालदार भी चीखकर भगना बना। कानाई आज पागल होकर घूमता है। पागलपन में वह किसानों मुरगान नगा पखाना गिन अपनी आबरू की शेखी बघारता है।

हर एक के घर की कहानी हर एक को मालूम है। फिर भी आबरू का झूठी शान का सहारा नहीं छोड़ा जाता।

अक्सर प्रतिदिन भर घरों की बहू बेटियाँ मजबूर किए जाने पर पैसा या शान के सामने में अपना भय और चिन्ताओं की उलझन में दम्बर

दो घड़ी गम गलत करने की नीयत से वेश्याएं हो चुकी हैं।

जातियां सिर्फ नाम लेने के लिए ही रह गई हैं। वर्ण भेद को पाई तक ने रभी नहीं पूछा। हिंदू मुसलमान का भेद मिट चुका है। सभी भूखे हैं सबकी एक सी ही हालत है। सब लोग दुनिया से परेशान नजर आते हुए भी दरअसल खुद अपने से ही परेशान हैं।

पाचू सोच रहा था, अगर उसके घर में भी कभी बहुत दिनों तक अकाल पड़ने की नौबत आई तो क्या रिश्ते आदर, अपने पराये का ममता मोह शील विनय—क्या यह सब कुछ उसके घर में टिक सकेंगे?'

इस प्रश्न ने पाचू को मन ही मन चौंका दिया, दहला दिया। मन में एक बार यह बात उठ जाने पर इससे बचना भी पाचू को मुश्किल मालूम हो रहा था। इस नग्न सत्य के तेज का वह वर्णित नहीं कर पाता था। वह अपने घर के हर आदमी को, दुनिया की रफ्तार देखते हुए आने वाले समय के तराजू पर तौलने लगा।

सबसे पहले उसका ध्यान शिबू की ओर ही गया। घर में जो कुछ भी बुराइयां आएंगी तो वह दाना के ही कारण। मां तो ऐसी दशा होने से पहले ही मर जाएगी—जरूर मर जाएगी। उसे मर ही जाना चाहिए। भावज को दादा वेश्या बनाने पर मजबूर कर सकते हैं—हालांकि बौदी ऐसी है नहीं। वह बड़ी ही दृढ़चरित्र की है। तुलसी के आसार या भी अच्छे नजर नहीं आ रहे। मंगला बतलाती थी कि वह काफी नंबर आठ के भाई से कुछ गड़बड़ कर आई है। और मंगला? नहीं, नहीं, न न

इस दिशा में कल्पना की ढील पाकर पाचू का मन एकदम से अस्थिर हो उठा। उसके सिर की नसें तन गई। दिमाग पर जरूरत से ज्यादा बोझ पड़ गया। मन की बेचैनी ने पागल-खूनी की तरह हिंसक रूप से उत्तेजित होकर उसे बुरी तरह से अस्थिर कर दिया। उसकी आंखों में खून उतर आया, मुट्ठियां तन गई, जबड़े भिंच गए—उसका सारा शरीर आतरिक उत्तेजना के वेग से कांप उठा। उसकी चेतना और विचार शक्ति कुछ

क्षणों के लिए लुप्त हो गई। तभी सहसा उसका ध्यान बाहर की एक घटना की तरफ बरबस खिंच गया। और वह बच गया।

उसके पास ही, थोड़ी दूर पर हगामा मचा हुआ था। तुलसी बोष्टम अपनी पत्नी की फटी हुई धोती खींच रहा था। और वह अपनी शक्ति भर चीख चीखकर रोती हुई उस हजार जगह से फटी हुई मली धोती को अपने तन से चिपकाए रखना चाहती थी।

तुलसी कहता था—"अपनी धोती दे दे। सोनाई से चावल लूगा।

उसकी पत्नी कहती थी कि तुम अपनी धोती क्यों नही बच देते ?

तुलसी का कहना था कि मैं मरद हूँ दस बार बाहर भीतर दौड धूप करूगा तो खाना मिल भी सकेगा। तू औरत जानी तेरा क्या दरवाजा बन्द करके कोठरी म पडी भी रह सकती है।

तमाशाइ दानो तरह के थ। तुलसी के पक्ष वाले ही ज्यादा थे। नजीरें पेश की जा रही थी—नदयो के घरा म औरत इस तरह नगी बठी है।

पुरुष शक्ति के आग अन्त म स्त्री को झुकना ही पडा। गहरी चोट खाकर अशक्त नागिन की तरह तुलसी की पत्नी अपनी लाचारगी पर फुफकार कर उठी। कुचला जान पर अह उत्तजित होकर उसके भूखे शरीर म फुर्ती ले आया था। आसुओं ने बहुत दिनो से आखा म आना छोड दिया था मगर लाज से बिना लत हुए आज उसका दिल पानी पानी होकर बह गया। जाते जाते कह गइ— औरतो की लाज भी बचकर खा लो! कै दिन पेट भर खाोगे ?

तिनकौडी अच्छे दिना म नम्बरी पियक्कडो म गिना जाता था। आज भी उसी रिन्दी फिलासफी म अपने दिल के दद को छिपाए रखना है। तुलसी की घरवाली के फिकरे पर उसने आखिरी चुटकी छोडी— लाज ही नही नम्बी, औरतें भी बिकेंगी। बाकी रहा पट— हे ऽ हे ऽ हे ऽ!

गले में बनावटी हँसी निकालकर तिनकौड़ी ने सचाई को मनहूसियत का जामा पहना दिया।

कोलाहल! गला घुटते हुए कमजोर मजबूर जंगली जानवरों का बेबस गुस्से में भरा हुआ करुण आर्तनाद!

अपने ख्यालों से चौंककर पाँचू ने मोनाई की दुकान की तरफ देखा। लोग आपे में न थे। दुकान पर चढ़े पड़ते थे। जोश में अपनों को भी कुचलते हुए बढ़ रहे थे। अपनी मर्मान्तक पीड़ा और क्रोध को जताने के लिए उन्हें अपनी हजारों बरस की भाषा में ऐसे दो अच्छर भी न मिले, आदिम युग के मनुष्य की तरह, अपने प्राकृतिक रूप में, व्यक्ति की पीड़ा समाज बनकर चीख उठी।

ठठरीनुमा पेड़ के नीचे बैठे हुए पाँचू के कानों से लेकर आत्मा तक, उस चीख की दिल पर आरा सा चलाती हुई गूँज से बिंध गई।

हजारों साल की अनुभवी संस्कृति के नीचे दबी हुई भाषा को मानव ने ढूँढ़ लिया—चारों तरफ से मोनाई को घेरकर गालियाँ और सख्त बातें सुनाई जाने लगीं।

दूर से कुछ भी समझ में नहीं आता था। पाँचू सोचने लगा ये माजरा क्या है? जान पड़ता है मोनाई ने कोई नया टारपीडो चलाया है। वह उठकर दुकान के पास गया। आसपास के दूसरे तमाम लोग भी दुकान की तरफ भागे।

मोनाई कहता था, 'चावल तो सरकार के पास है। उससे ले जाओ।'

लेकिन पैसों का होगा क्या? पैसे खाए नहीं जा सकते। उन्हें देख-देखकर अपना जी भले ही भर लो। सोना चाँदी हीरे जवाहरात—ये सब पेट भरे का ढकोसला है। भूखे के लिए इनका कोई मोल नहीं। लाखों अरबों का हीरा अगर खा लिया जाए तो वह जान का दुश्मन बन जाता है। जहर को आदमी ने कोहेनूर का रुतबा दिया है। मुर्दों के प्यार में

ही लोग एक कदम पीछे हट गए थे, मगर ठगे जाने की खीझ लोगों में मोनाई के रौब से भी ज्यादा तेज थी। भूखे भेड़िया की तरह लोग उसके ऊपर टूट पड़े। बुरी तरह से उसकी गत बनाने लगे। हर चीज फेंकनी शुरू कर दी। कुछ लोग उसके घर के दरवाजे तोड़ने लगे। अजीम अपनी जान बचाकर भाग निकला।

बदले के जोश में भीड़ मोनाई के घर के अन्दर भी जा घुसी। घर की हर चीज तोड़ी फोड़ी जाने लगी। मोनाई की पत्नी छाती कूट कूटकर लोगों को कोसने लगी। उसपर भी मार पड़ी। न्याड़ा पिटा। मोनाई पर तो लोगों ने थूका, उसके बाल नोचे उसे बुरी तरह से मारा। घर में लूट पाट मचा दी। जो चीज सामने आई उसीपर गुस्सा उतारा जाने लगा। कुछ लोग रसोईघर में घुस गए। तैयार रसोई को खाने के लिए आपस में भी चल गई। सारा अन्न इधर उधर बिखर गया। घर की एक एक कोठरी उलटकर रख दी गई। कुछ लोगों ने तहखाने का पता पा लिया। भय की सम्मिलित शक्ति ने दरवाजे तोड़ दिए।

गोदाम में बोरियों पर बोरियां चुनी हुई थी। सारा गांव महीनों खाए और अन्न न चुके—इतनी! उन्हें देखकर जनता खुशी से पागल हो उठी। चारों ओर कोलाहल और भयानक अट्टहास गूंज उठा।

मोनाई की पत्नी और न्याड़ा चीख चिल्ला रहे थे। मोनाई पिट पिटाकर, चुपचाप निर्विकार मुख से खड़ा खड़ा अपने घर की लूट पाट को देखता रहा। चावलों की बोरियां चीरी जा रही थीं। चावल गोदाम में बिखर रहा था। जनता हंस रही थी।

अचानक हंसी की गूंज में गोलियों की आवाज गूंज उठी। कई लोगों के लगी। लोगों ने देखा, दयाल के सिपाही गोलियां दाग रहे थे डंडे बरसा रहे थे।

खुशी मौत की चीखों कराहों में बदल गई।

अजीम दयाल जमींदार के लठैत और बन्दूकधारी सिपाहियों को लेकर लौटा था। वह बड़े जोश से सिपाहियों को लाशों पर डंडे और गोलियां

[illegible] की [illegible] कर रहा था।

सारा नगर [illegible] थे। [illegible] भाग गए। [illegible] मोनाई का घर [illegible] गया। [illegible] की [illegible] में मोनाई का घर [illegible] गया। मगर अभी आन्दोलन में [illegible] होगए।

मोनाई पकड़ लिया गया। [illegible] की [illegible] पर [illegible] लगी। और [illegible] होने लगा। [illegible] इधर उधर भागने लगी। [illegible]। जनता के हाथ में [illegible] वापस आकर फिर चला गया। [illegible]। [illegible] का धुआं आग। की [illegible] हो गया। भीड़ प्रणाम करता हुई [illegible] पैरों पर अपना [illegible] का बोझ डालकर घर से बाहर भागने लगी।

पांचू दूर एक कोने में खड़ा हुआ यह सारा काण्ड देख रहा था। जनता का भीषण विद्रोह भी देखा और उसका अमानुषिक दमन भी। कायरता और स्वार्थ ने उसे कायर बनाया था। मध्यवर्ग का कुलीन सद्गृहस्थ अपढ़ों पढ़ा लिखा हेडमास्टर भला इन छोटे लोगों का साथ कैसे दे सकता है? जब लोग न्याय के लिए लड़ रहे थे तब भी वह दुबका हुआ खड़ा रहा और जब लोगों पर अन्याय की मार पड़ने लगी तब भी वह यों ही दुबका रहा। हां, दिमागी जोर बराबर दिखाता रहा। जब लोग मोनाई के यहां लूट पाट मचा रहे थे तब पांचू जोश के साथ गुम था और जब उनपर लाठियां, गोलियां बरसने लगी तो वह जोश के साथ मोनाई अजीम और दयाल के साथियों का गला घोंटने की बात सोच सोचकर अपने मन को मसोसकर खड़ा रहा। वह बुद्धिमान आदमी है। उसके दिल में आबरू का डर है। अपने घरवालों से और खुद अपने से उसे प्यार है। बेचारा जनपक्ष का साथ कैसे दे सकता है? मोनाई से तो उसे चावल लेना है। जनपक्ष का साथ देने से उसे और उसके परिवार को भूखों मरना पड़ेगा। लिहाजा वह अपना स्वार्थ और आबरू संभाले हुए, दुबककर खड़ा रहा। हां तमाशा देखने के शौक में वह अब तक यहां खड़ा रहा,

यह क्या कुछ कम वीरता है? अपनी कायरता के प्रति अचेतन, पूंजीपतियों के अत्याचार और श्रमजीवी किसानों की दीन दशा के लिए उसके मन में ग्लानि और दुख की लहरें उठ रही थीं।

मोनाई अब परिस्थिति का राजा बन गया था। उसके गोदाम में, उसके आगन और दालान में खून से सनी हुई लाशें पड़ी थीं। उसका सारा घर अस्त-व्यस्त हो गया था, चीजें टूटी फूटी और लुटी हुई पड़ी थीं। उसके घर में कई जख्मी पड़े थे। खून बह रहा था। कइयों के जीव निकलने से पहले तड़प रहे थे, प्राण छोड़ने की पीड़ा कराह कराहकर दीवारों में भी दर्द पैदा कर रही थी।

अपने चारों ओर का वातावरण देखकर मोनाई मन ही मन कांप उठा। इन जख्मियों और मुर्दों को देख देखकर उसका दिल दहल रहा था। मन ही मन में वह प्रार्थी था— भगवान जी! मेरा कुछ भी दोष नहीं है। तुम तो घट घटवासी, सब कुछ देखनहार हो, अंतरयामी हो दीनदयाला!"

अजीम अपनी शेखी बघार रहा था कि किस तरह उसने दयाल जमींदार से जाकर मदद मांगी, और इन सिपाहियों को लेकर यहां आया।

दयाल के सिपाही अपनी बहादुरी की डींग हांककर मूछों पर ताव दे रहे थे। लाशों को गालियां दे रहे थे और मोनाई से अपनी बहादुरी के लिए इनाम मांग रहे थे। मोनाई ने चारों सिपाहियों को पांच-पांच रुपये दिए। सिपाही उसपर रौब जमाकर पांच-पांच और मांगने लगे। मोनाई अपने नुकसान की दुहाई देने लगा गांव वालों को, अपने घर में पड़े हुए जख्मियों को लाशों को गालियां देने लगा, गिड़गिड़ाने लगा— मगर उसे पांच पांच रुपये और देने ही पड़े।

मोनाई पांचू की तरफ देखकर कहने लगा—'देख लिया मास्टर बाबू यह है ऐमान का जमाना! हाम करते हाथ जल गए। मेरे मन में तो धरम उपजा कि लाओ चार रुपये का नुकसान ही सही इनके लिए गुड़ खरीद लूं बिचारे यहां से कटोरा का चावल नाके अपना पेट भर

तो मन म विचारे विचारे बहू और य ससरे एस पापी निकल कि उपकार का बदला मुझे या दिया।

पाचू चुपचाप खडा रहा।

अपनी पीठ सहलाते हुए मोनाई बोला—' धरम का जमाना नही रहा बाबू। सच कहता हू। साला ने एसी मार मारी है कि हड्डिया कडकडाय क धर दी। कमीन ससरे जमान भर क पापी—ससुर घर की औरता की इज्जत तक ता बचके खा गए। इत्ता पापाचार फलाया कि भगवान जी भी तिराहि तिराहि करने लगे। सच कहता हू। भला बताओ कित्ती नीचता है कि मेरी घरवाली बिचारी पर भी हाथ उठा दिया! दुरदसा कर डाली बिचारी अबला की। मेरे प्यादा को पीटा। राच्छस कही क!

क्या हुआ मोनाई?' दरवाजे स एक रौबदार आवाज आई।

मोताइ अजीम पाच और वे सब गोलीमार लठमार सिपाही चौंककर दरवाजे की ओर देखने लगे अदब स खडे हो गए। मोनाई हाथ जोडकर गिडगिडाने हुए आगे बढा। दयाल जमीदार आए थ।

मलमल का चुना हुआ कुरता कलाबत्तू किनार की बुनी हुई बारीक धोती गले म बिना शिकन पडा हुआ रेशमी दुपट्टा, बाइ कलाई म सोने की घडी दाना हाथो की उगलियो म चार नगीन जडी हुई अगूठिया दमक रही थी। दाहिने हाथ म हाथीदात की मूठवाली खुशनुमा छडी परा म पम्प शू बाना म इत्र की फुरहरी मुह म पान आखा म रात की पी हुई मद का खुमार साथ म चार हाली मुहाली—दयाल जमादार ने अपनी चरणरज से मोनाई कबट का घर पवित्र किया था। दालान, तहखान और आगन म पडी हुई लाशा और घर की टूटी फूटी चीजा का उन्हाने निरीक्षण किया। मोनाइ बराबर हाथ जाड हुए उनके पीछ पीछे घूमता और बीच बीच म रोकर कहता जाता— मैं ता लुट गया अनदाता!

दयाल जमीदार ने तहकीकात की। सारा हाल सुना। बदमाश गाव वाला का गालिया दीं और यह भी बताया कि दारोगा साहब का खबर भेज दी गई है। दारोगा के आन स पहले दयाल न मोनाई का सलाह दी,

कि तहखाने से लाशों को हटवाकर चावल के गोदाम में छिपा दिया जाए।

फौरन ही न्यायरत्न बाबू के लिए एक चौकी पर ऊंची गद्दी लगा दी गई। वे उसपर बैठ गए। दयाल का छतरीबरदार छतरी को बगल में दबाकर उनका पंखा झलने लगा। एक नौकर ने पान का डिब्बा पेश किया दूसरा उगालदान लेकर आगे बढ़ा। दयाल बाबू ने मुंह में दबी हुई गिलौरी उगालदान में थूकी, दो नये पान जमाए, चुटकी भर जर्दा खाया। नौकर ने रेशमी रूमाल पेश किया, दयाल बाबू ने हाथ पोंछ लिए। फिर पांचू मास्टर को हुजूर बख्शी अपने पास बुलाकर बिठाया, दो पान खिलाए और सख्त गर्मी की शिकायत करने लगे। पंखेवाले ने जोर से पंखा झलना शुरू किया।

दलाल जमींदार से आदर पाकर पांचू के दबे हुए बड़प्पन को बढ़ावा मिला। वह सोचने लगा कि एक लक्ष्मी का पुत्र है और दूसरा सरस्वती का पुत्र—दोनों एक ही आसन पर बैठने के योग्य हैं।

लक्ष्मी के पुत्र की गंगा जमुनी पनडुब्बी से केवड़े में बसाए गए पान के बीड़े खाकर सरस्वती के पुत्र ने अभिमान से मस्तक उठाकर अपने चारों ओर देखा। मोनाई दयाल जमींदार के चरणों के पास जमीन पर बैठा हुआ था। उसकी मुद्रा बड़ी ही दयनीय थी और वह जमींदार का हाथ जोड़ रहा था। पल भर के लिए बड़ी ही हिकारत के साथ पांचू की नजरें मोनाई पर ठहरी, फिर उसे अपनी चोरी की याद आ गई। मोनाई एसा नीच उसकी चोरी से स्कूल की बेंचें बचने के राज को जानता है। आबरू के भय ने पांडित्य के अभिमान को ताक पर रख दिया।

गद्दी पर बैठा हुआ पांचू सिहर उठा। नजरें फिरा लीं। सामने, धूप भरे आंगन में मरभुखों की लाशें जमीन को अपने खून का तर्पण देकर दयाल जमींदार की आंखों के सामने पड़ी थीं—उसकी आंखों के सामने भी थीं। वह दयाल जमींदार के साथ बैठा था।

पांचू का बदन कांप उठा। अपनी कमीज की बांहों को छूती हुई दयाल जमींदार के कुरते की चुनट उसे इतना बड़ा बंधन मालूम पड़ने

गयी कि वह उसका हुक्का भरने के लिए अधीर हो उठा। मगर [illegible] वह जानता था? दयाल जमींदार तो बड़े हैं, पूरी चोरी पर [illegible] और पांचू पैसा है चोरी के [illegible] में [illegible] में दुबक कर।

पाचू अब महसूस करने लगा कि उसका स्थान समाज में दयाल जमींदार के बराबर नहीं है। दयाल जमींदार को [illegible] हो पर इस चोरी पर [illegible] का सौभाग्य प्राप्त कर गया है।

पाचू की नजर मोनाई की तरफ गई। और उसने पाया कि उसका स्थान मोनाई के बराबर भी नहीं है। मोनाई दयाल पहलवान पर गरजता है लेकिन ऊंची जाति और नीच जाति की जबर्दस्त गांठ में बंधे होने के कारण मोनाई उसका आदर करने को बाध्य भी है। पाचू मोनाई के मखमल में लपेटे हुए चमरौधे जूतों से बहुत डरता है। उसमें चांदी का आभास लगता है। उसे जहरीले नश्तर की धार लगती है। उसे समस्त जीवन की धार लगती है और उसकी पुरातनता का अन्त हुआ होता है। फौरन ही घृणा उपजी। उसने सोचा—नफरत के साथ सोचा [illegible] था लेकिन वह मोनाई की तरह किसीके सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाता हुआ हरगिज नहीं बैठेगा।

अपनी चारित्रिक उच्चता से पाचू के अहं को सहारा मिला। उसने नजरें फिरा लीं। नहीं उसका स्थान मोनाई के बराबर हरगिज नहीं।

सामने आंगन में अधनंगी जख्मों से भरी हुई लाशों की ओर पाचू ने देखा, हठपूर्वक देखता रहा। इन्हें दयाल जमींदार के लिए आज आदर का होश नहीं। इनके ऊपर आज मोनाई का कोई एहसान नहीं। इन्हें भूख का होश नहीं अपना होश नहीं। ये लाशें उन मनुष्यों की हैं जो ईश्वर से मिला हुआ अपना अधिकार वापस पाने के लिए लड़ते-लड़ते मरे। इन वीरों से बढ़कर जग में कोई ऊंचा नहीं। इसलिए आज ये लाशें मोनाई से ऊंची हैं, दयाल जमींदार से ऊंची हैं, शाहों-सम्राटों से भी ऊंची हैं, दुनिया की हर चीज से ऊंची उठ गई है। इनके ऊपर आज किसीका जोर नहीं रहा है। ये आज आजाद हो गई हैं।

काश कि हक को पहचानने की समझ कुछ और पहले आ गई होती। यह ही नहीं, सारे देश को अगर यह समझ आ गई होती तो आज यह दुर्दशा भी न होती। गुलामी का तौक पहनकर मरना मानवता के नियम के विरुद्ध है। हम अगर प्राण नहीं ले सकते तो कोई हर्ज नहीं। लेकिन हममें प्राण देने की तो शक्ति है। और यह शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। प्राण लेने वाला उस चीज को सपने में भी नहीं जान पाता जिसको प्राण देनेवाला अनुभव करता है। प्राण देनेवाला एक अनुभव लेकर मरता है, जिससे उसे सतोष होता है। और प्राण हरनेवाला ? वह बहुत बड़ा कायर है। वह अपनी कायरता को बार बार हथाए करके छिपाता है इसलिए चिंता कभी उसका साथ नहीं छोड़ती। दिन रात एकाग्र होकर सिर्फ अपने खोये गौरव का ही ध्यान रहना—भला यह भी कोई जीवन है। एक क्षण के लिए भी मुक्ति नहीं, शांति नहीं, डर से घिरे हुए—हु ! यही के गुलाम !

एक ही नजर में दयाल बाबू पाचू को बहुत तुच्छ दिखने लगे। अपने बड़प्पन पर अभिमान हुआ। दयाल बाबू के तकिये पर कोहनी टेककर वह जरा अकड़कर बैठ गया।

पाचू फिर सोचने लगा, यह मिट्टी का माधो, सदा झूठी तारीफों की दुनिया में रहनेवाला, यह अपने का दुश्मन मुझसे हजार दर्जा नीचे है। विरासत में दौलत मिल जाने से कोई आदमी बड़ा नहीं हो सकता। बड़ा वह है जो अपने हक के लिए लड़ते लड़ते प्राण देने की हिम्मत रखे।

फिर पाचू ने अपने-आपमें महसूस किया कि वह प्राण देने की हिम्मत रखता है। "मेरा स्थान धूप में तपती हुई इन लाशों के बराबर है।"

पाचू फिर गौर से लाशों की तरफ देखने लगा। फिर उसे लगा कि नहीं, उसमें और इन लाशों में थोड़ा सा भेद है। इन लाशों में प्राण देने का विश्वास अगर समय पर आ गया होता—तो ? तो भी ये मरते ही मगर इतना भुगतकर नहीं ! ये आज ऐसी मौत मरते, जैसी कि जैसी कि मैं अपने लिए चाहता हूं।

फिर पाचू उन तमाम बड़े-बड़े नेताओं की श्मशान-यात्रा नगर

जलूसों की बात याद करने लगा जिन्हें या तो उसने आंखों से देखा था या पढ़ा सुना था। वह अपने लिए बड़ी आदरणीय मृत्यु की कल्पना करने लगा और उसीमें सो गया।

५

मोनाई के मंदिर के द्वारे घूरे पर मेला लगा था। चील और कौए आसमान पर कुत्ते और आदमियों की फौज जमीन पर थी और घूरे पर पड़ी हुई जूठी पत्तलों के लिए युद्ध चल रहा था।

मोनाई ने प्रेत भोज दिया था। दस दिन पहले उसके घर पर चौबीस हत्याएं हुई थीं। उन भूखे प्रेतों को शांत करने के लिए कंठी-धारी छाप भगत मोनाई ने हर एक के नाम पर ब्राह्मण जिमाए थे।

गांव के बड़े-बड़े निमाज परिवारों का कुनबा कुनबा तक जीमने आया था। नाते गांव के लोग आए थे, गोसाईं लोग भी आए थे। सत्तर अस्सी आदमियों का भोजन था।

मरभुखे सब थे लेकिन ब्राह्मण सब नहीं। मरभुखों और ब्राह्मणों में भेद है यह मोनाई ने भोज में न बताया। अकाल न होता तो कभी किसी को पता भी नहीं चलता कि केवटों के यहां ब्राह्मणों का भोजन करना शास्त्र सम्मत है। जब से भगवान रामचंद्र का चरणामृत केवटों ने पान किया है तब से ये पवित्र हो गए हैं। आस-पास आठ-आठ गांव के भूखे ब्राह्मण परिवार मोनाई केवट के मंदिर में भोजन करने जा रहे थे। और सभा आगे उन्हें तरकारी की दृष्टि से देखता थी। जो पहले से सबसे निराले मंदिर के दरवाजे पर खड़े थे। अन्दर से सब साथ दरवाजे पर सब हारकर जिन भोजन करने के दूसरे का ध्यान कर रहे थे। कन्या ने अन्दर से किवाड़

खाते हुए नही देखा था, लेकिन उन पछाड़ के लठैता की बडी-बडी मूछा, लाल लाल आखा, जबदस्त घुडकियो और लाठी की खटखट से किसीका सामने की तरफ जाने का साहस न होता था।

लडका की टोली जिसम पाच से लेकर दस-बारह बरस तक के लडके शामिल थे घूम फिरकर डगमगाते हुए परो से मदिर के दरवाजे के सामने जाते थे। नग धडग हाथ-पैर सूखे हुए, पेट आगे डगर डगर आखा से भोजपुरिये लठैता को देखकर अगूठे चूसते थ। पत्तला पर पत्तलें बाहर आ आकर पडती थीं। ऊपर आसमान पर चीलें मडराती थी। कौए झुड के झुड आ-आकर मदिर की मुडेरा पर बैठते और अपने दाव की घात म घूरे की तरफ देखते हुए काव काव करते थे। जमीन पर आदमिया और कुत्ता म बाजी लगी थी। चीलो की चोचें कभी-कभी जूठी पत्तला से चूक-कर भूखे हुए आदमियो की खोपडियो पर अपनी पूरी शक्ति के साथ पडती थी। कुत्तो के पजे और जबडे अपने हक के लिए जान लडा रहे थे। और भूखा मानव इन सबसे लडकर तथा स्वाथ के लिए अपने से भी लडकर, एक मुट्ठी जूठा अन्न पाने के लिए जी-जान से भिडा हुआ था।

सुनकर यह दृश्य देखने के लिए पाचू भी वहा आ पहुचा। परिवार के साथ आज छ रोज से पाचू भी भूखा है। मोनाई ने उस दिन उसके गले पर भी छुरी फेर दी थी। हिसाब मागने पर मोनाई ने साफ कह दिया—'मेरा तो पैसा डूब गया बाबू। सारी बिकी नहीं भई थी। जलाने की लकडी के भाव से भी खरीदने को कोई तैयार न हुआ। दस रुपये भी न निकले। इदे से मेरे दो सेर चावल तुमपर चढ गए लेकिन हम यह समझके गम खा लेगे कि चलो बाम्हन ठाकुर की भी थोडी बहुत सेवा हो गई।"

इस नये मखमली चमरौधे ने तो पाचू की खोपडी पिचका दी। पल भर तो वह चौंककर मोनाई के मुह की तरफ ही देखता रहा। चेहरे पर कोई शिकन तक नही, कोई तिकडम नही। वही भोला भाला तिलक छाप लगा हुआ चेहरा, होठो पर वही एकर रेडी दयनीय मुसकान और बात करने के ढग म वही दीनता, वही दृढता, सगा की तरह आमने सामने देखकर

बात करना पड़ा सभी ग्राट नहीं, कहीं न मजाक या जालसाजी की बू रहा।

पाचू स्तब्ध रह गया। सिपाही ने उसे चारों ओर से घेर लिया। आंखों में आंसू छलछलाने की धमकी देने लगे। लेकिन पाचू अपनी हार किसी के सामने दिखाना पसन्द नहीं करता और मोनाई को जवाब देकर भी क्या? तेजी से वह बाहर चला आया।

प्रेत भोज की बात पाचू के सामने ही दयाल जमींदार ने उठाई थी। दारोगा साहब भी वहीं बैठे थे। दो हजार नकद दारोगा साहब को, पांच हजार रुपये बाद पड़े में और प्रेत भोज का दंड सिर पर लेकर मोनाई को दयाल जमीदार के समाज और दारोगा साहब की सरकार से किसी तरह क्षमा मिल गई। रपट में दंगे का ब्योरा दर्ज हो गया। गवाहों में हेडमास्टर पाचू गोपाल मुखर्जी का नाम लिखा गया। और चलते समय मास्टर मोशाय के ऊपर मोनाई ने दो सेर चावलों का एहसान भी जमा किया था।

दूर बांस के पुल के पास बैठा हुआ पाचू मोनाई के मंदिर के सामने जूठी पत्तलों के लिए चील कौए और आदमी में होनेवाली लड़ाई को देख रहा था। पागलों की तरह हिंसक दृष्टि से हर एक को देखते हुए लोग लड़ रहे थे। चील की चोंच से एक बच्चे के सिर में घाव हो गया। वह वहीं गिर पड़ा। लोग उसे रौंदते हुए घूरे पर चढ़ दौड़े।

पाचू ने बैठे बैठे यह अनुमान लगा लिया कि बच्चा मर गया होगा। पास से देखने के लिए उठकर जाने की तबीयत न हुई। लेकिन वह सोचने लगा लड़के की चीख नहीं सुनाई दी। दूसरा विचार फौरन ही आया, आवाजों में अब दम ही कहां रहा है? जान छोड़ते हुए, अपने भरसक पूरे जोर के साथ चीखा होगा, लेकिन उसकी चीख में फर्लांग भर तक भी पहुंचने की शक्ति न रही होगी।

मौत पाचू के लिए अब बहुत आकर्षण नहीं रखती। आंखें कायदे से आदी हो गई हैं। रोज रोज से भूख की तकलीफ को भोगते हुए उसे अपने दिल को बेहद सख्त बनाना पड़ा है। पिछली बार दयाल जमींदार का आसरा था—आस बंधी हुई थी। फिर मोनाई से मिल गया। लेकिन इस

चार तो उसे कहीं से भी चावल पाने की आशा ही न थी। घर म दो चार मामूली से सोने चादी के गहने पड़े तो हैं लेकिन उन्हें बेचे किसके हाथ ? मानाइ के यहा जाओ तो चौथाई नाम भी न मिलेंगे। दयाल जमीदार से सौदा कर ही नहीं सकते, जो उठाकर दे दें उसे ही सर माथे पर चढाना पड़ता है। और जहा तक बस चलता है दयाल जमींदार कौड़ी को भी माहुर की तरह दाता से पकड़ते हैं। मधुपुर की हाट मे सराफा और पुलिस के सिपाहियो ने मिलकर एक नई तरकीब निकाल रखी है। जो गहने बचने आता है उसीको पुलिस चोर करार देती है। भरे बाजार म आबरू जाने के भय से लोगो को आधी रकम पुलिस को भेंट करनी पड़ती है, और आधी म दुकानदार खिलौनो और गलाइ निकाल लेता है। सास लेन पर भी रिश्वत और लूट देनी पड़ती है। घर म यह तय हुआ था कि जब भुखी बल बर्दाश्त से बाहर हो जाएगी तब एक दिन वे बचे-खुचे गहने बचकर खा लेंगे। मगर उनकी बिक्री से सिर्फ एक ही दिन खाया जा सकता है इसलिए मामला हर रोज़ दूसरे दिन पर टल जाता था। पार्वती मा कहती थीं— एक ही दिन का तो सहारा है लेकिन इस सहारे की आस म दिन गुजर जाते है।'

सहसा पाचू के पास से ही एक मादरजाद नगी औरत दौड़ती हुई पूर की तरफ चली गइ। सभ्यता के एवरेस्ट युग मे जन्म लेकर पाचू खुले आम दिन दहाड़े, ऐसी बशर्मी स भरी हुई घटना को देखने का आदी न था। पाचू ने देखा, उस औरत मे चील। कौआ, कुत्ता और आदमियो स ज्यादह जोश था। जब वह पूरे के पास पहुची तो सब अलग हो गए।

बीते हुए दिनो की चेतना, अनहोना घटनाए देखकर बार-बार चौंकती है मगर छिन भर के लिए ही। दस दिन पहले कट्रोल के भाव में मानाई स चावल पाने की आशा म बहुत-स लोगो न अपनी स्त्रियो के तन स फटे चिथडे तक उतारकर फेंक दिए थे। बाद म चावल भी न मिला और कपड़े भी चले गए।

पुरवा न उजड़ हुए घरो म रहना ही छोड़ दिया था। ˜ ˜ ।

मजबूर होकर चारदीवारी के अंदर बंद होकर बैठना पड़ा। वे घर से बाहर नहीं निकल सकती। किसीको दर्द सुनकर अपना गम गलत करने से ही वंचित कर दी गई है। कोठरी के अंदर बंद, उन चार मासूम दीवारों को निहारा करो—निहारा करो—और कोई चारा भी तो नहीं? भूख की उलझन के ऊपर लाज की यह कैद और भी जुल्म ढा रही थी। पिछले पांच छः रोज से जगह जगह घरों में औरतों के आपस में लड़ने झगड़ने की आवाजें दिन रात सुनाई देती हैं। अच्छी अच्छी औरतें एक दूसरे के लिए उन गालियों का प्रयोग करती हैं जिन्हें कभी धोखे से सुन लेने पर भी उनके गाल कानों तक लाल हो उठते थे। पांचू उन औरतों की बात सोचता था जो अपने घरों में अकेली ही बंद हैं। जहां दो चार हैं वे आपस में लड़ झगड़कर गाली गलौज करके किसी तरह अपना वक्त तो पूरा कर लेती हैं लेकिन जो अकेली बंद होंगी उन बेचारियों का तो वक्त भी न कटता होगा—वही दीवारें वही दरवाजे कोठरी की हर चीज वही। किसान के घर की छोटी सी दुनिया में यह एक कोठरी न जाने कितनी ही सुखद और दुःखद स्मृतियों से भरी हुई होगी। पांचू इसपर कल्पना करने लगा—नववधू बनकर घर की स्त्री ने शायद इसी कोठरी में अपने पति के साथ सुहागरात मनाई होगी अपने बच्चों को जन्म देकर मां बनने का सौभाग्य उसे शायद इसी कोठरी में प्राप्त हुआ था फिर अकाल के शुरू में इसी कोठरी से किसान के घर की 'बहुमूल्य' चीजें एक एक कर बिकने गई होंगी। आज वहां कोठरी लाज की मारी भूखी बेबस औरतों का दम मौत की तरह घोट रही होगी।

जूठन की खबर सुनकर यह औरत अगर लाज को कैद को तोड़कर बाहर चली आई तो उसने कुछ बुरा नहीं किया। हमारी आंख इसमें गुनाह क्या देखती है? गुलाम पुरुष अपनी गुलामी का पूरा बोझ स्त्रियों पर डालकर हल्का होना चाहता है—औरत की यह गुलामी पांचू को बुरी तरह से खलने लगी। उसे गुस्सा आ गया।

× × ×

मोनाईके मन्दिर से ब्राह्मण चेहरे पर जबदस्ती तप्ति का भाव लाद-कर निकल रहे थे। उनकी हालत, पाचू ने देखा और भी खराब थी। अपनी कई कई रोज़ की भूख का ब्राह्मणो ने आज पूरा-पूरा मोआवजा देन का मौका पाया था। लाभा न इस कदर बदनियत हाकर खान की कोशिश की थी कि वह भोजन ही उनके लिए जहर बन गया। मंदिर से उनरकर दस कदम चलते हो कमजोर आंतो पर अन्न का बोझ पडने के कारण बहुतो क पेट म जोर का दर्द होने लगा। कय्या का चक्कर आने लगा और बहुतों को कै हाने लगी।

पाचू की आंखा के सामने दो दृश्य थे। पूरे के पास नयानगंज मरे भूखों और जानवरो की लाशें, तथा दूसरी ओर इन पेट भरे हुए ब्राह्मणो का यह हाल। जगह जगह लोग पड़े जाते हैं उठने की ताव नहीं। जगह जगह लोग कै कर रहे ह। और सबसे अधिक वीभत्स दृश्य पाचू ने यह देखा कि एक की कै पर दूसरा भरभुखा उसे चाटने के लिए बड़ी आतुरता के साथ टूट पडा।

पाचू से यह देखा न गया। वह एकदम वहां स हट आया। उस दृश्य ने उसके मस्तिष्क को उत्तेजित कर दिया। आदमी को गुलाम बनानेवाले पहले सत्तावादी मानव ने क्या कभी यह सोचा था कि जिस चीज को वह बो रहा है उसकी जड़ें कितनी गहरी और कितनी दूर तक अपना अधिकार जमाएंगी! गुलामी किस हद तक मनुष्य को स्वामी बनाकर उसके अह का पोषण करती रहेगी और दूसरे को कब तक इस तरह मजबूर करती रहेगी कि किसीकी कै से उगली हुई मिलाजुल को खाने के लिए भी वह खुशी स तयार हो जाए?

भूख का दौरा बडी जोर के साथ पाचू को महसूस हुआ। साथ ही उबकाइयां भी आने लगीं। आतें उलटी उलटी पडती थी। पेट पकडकर वह वहीं बैठ गया और अपने मन को ज़बदस्ती उस दृश्य स हटा लेने की कोशिश करने लगा। घृणा स भी कहीं ज्यादा लज्जाजनक यह दृश्य था।

पाचू सोचने लगा, क्या कोई भी पेट भरा आदमी अपने लिए,

न्नि की कल्पना कर सकता है जब उसे इसी तरह निगोकी गिनाउन चाटने के लिए मजबूर होना पडेगा। हठ के साथ पाचू सोच रहा था— यह बात सोचना इस वक्त उसकी राय म सबसे जरूरी था—हर आदमी को, जो गुलाम है ऐसे न्नि देखने के लिए हर वक्त तयार रहना चाहिए। दुनिया म जब तक गुलामी रहेगी इन्सानियत इसी तरह ठुकराई जाएगी जिस तरह ईसा राम कृष्ण मुहम्मद, बुद्ध के अनुयायी उनके पर छू छू कर उनकी छातियो पर ठोकरें मार रहे हैं।

उस दृश्य के साथ उपजी हुई भूख और उस दृश्य को देखने के कारण खाली पेट जी मिचलाने से जो तकलीफ होती थी उससे बचने के लिए पाचू बच्चा के खेल की पूरी गभीरता के साथ अपनी बुद्धि से खेल रहा था।

एक चीज इधर पाचू को परेशान करने लगी है कि पाचू जिस बात को भुलाने की कोशिश करना है उसे वह भुला नही पाता बल्कि एक को भुलाने की कोशिश म सब एक समय याद आने लगती हैं। खेलते-खेलते मन कुम्हला जाता है।

एकाएक हटो बचो होने लगी। पाचू अपने खयालो स चौंका। अपने हाना महालिया के साथ दयाल जमीदार आ रहे थे।

अरे राम राम राम राम! ये बचारे सबके सब बीमार पड गए! मोनाई ने ऐसा क्या खिला दिया! कहा है मोनाई?

दयाल बाबू की दृष्टि घूरे के जमघट पर गई। दया उमडी।

मेरी प्रजा पर यह अत्याचार कि जूठन चटाई जा रही है! आखिर ठहरा तो केवट का बच्चा! नीच जाति! चार पस टेंट म करके चन्द्रमा को छूने चला है। कहा है? पकड के लाओ उसे।

मोनाइ हाथ जोडे तब तक मदिर से भागा हुआ चला आ रहा था। दयाल जमीदार ने एक बार सिर स पर तक देखकर नफरत के साथ कहा— इनकम टैक्स बहुत बचा लिया है शायद!

मोनाइ आतरिक भय क साथ कापते हुए और भी अधिक गिडगिडान लगा। भारी शरीर के साथ इतनी दूर तक दौडके आने की थकान और

हाफनी भी चढ़ी थी।

"यही तो अन्नदाता ! हें-हें ! अ अ आप बडे हैं ! हें, ह !"

"इन लोगों को क्या हो गया है ?" हाथीदांत की लकडी की नोक से बीमार ब्राह्मणों को दिखाते हुए दयाल जमीदार बोले।

अपराधी की तरह उन ब्राह्मणों को एक नजर देखते हुए, मोनाई हाथ जोडकर बोला—"मैंने तो बहुत चाहा था अन्नदाता पर ये लोग ज्यादा खाने ही चले गए। मैं निरदोस हू अन्नदाता ! और इन सब बेचारों का भी दोस नहीं ! सब भगवान जी की लीला है।"

मोनाई की बात काटकर दयाल जमीदार गरम हो गए।

अभी इतने बडे भगत नहीं हुए कि दयाल जमीदार को भागवत सुना सको। हमारा नाम सुना है न तुमने ?'

नाम की गाली सीधे मोनाई के दिल पर लगी और लाख सफाई दिखाते हुए भी उसके चेहरे पर डर की लकीरें खिंच गई। दयाल जमींदार के पैरों को दूर से छूकर नमस्कार करते हुए बडे संयत भाव से बोला—"आप मालिक हैं। हमारा जीवन मरन आपके हाथ में है। बाकी और क्या कहू नदाता ! मेरा भाग ही खोटा है। भगवानजी जानते हैं, होम करते हाथ जल गए।"

'इन लोगों की दवा दारू के लिए कौन दाम खर्च करेगा ?'

मोनाई इसपर बडा जोर से चौंका। दयाल जमींदार के चेहरे को एक बार देखकर जरा हकलाते हुए बोला—"द द-दवा-दारू ?

'इन सबको दवा दारू के लिए एक एक रुपया दो। बेचारे बीमार हो तुम्हारी वजह से और सारा दुख इन्हें ही भोगना पड़े ! याद रखना मोनाई, मेरी प्रजा को यदि कभी कष्ट दिया तो तुम्हें पल भर ही में तुम्हारे बाप की हैसियत पर पहुंचा दूंगा। दो इन सबको एक एक रुपया।

बड़ी सख्ती से अपने चेहरे को निर्विकार रखते हुए मोनाई तनकर खड़ा रहा। दयाल जमीदार ने दोबारा हुक्म करते हो इशारे से अजीम को घर की तरफ दौड़ा दिया।

धूर की तरफ जरा बढ़ते हुए दयाल जमींदार ने साहूकार मोनाई केवट को दूसरी पटखनी दी।

मेरी भूखी प्रजा को जठन खिला खिलाकर तुम तुच्छ बनाना चाहते हो ? धर्म कर्म लोप कर देने का इरादा है क्या ? दुष्ट नीच अधम, मगर मुझसे तो बच सकते थे। मैं अपनी प्रजा को कम से कम इस तरह जूठन तो न चाटने देता ! गाँव के हर एक आदमी का सर सेर भर चावल मेरी तरफ से बाँट दो। आज शाम तक यह काम हो जाना चाहिए समझे !

हुक्म देकर दयाल जमींदार ने अपने पानदरदार की तरफ देखा। फौरन ही चाँदी की नगर जमुनी डिबिया पेश की गई। पान खाकर दयाल बाबू मुड़े। पुल के पास पाँचू बैठा था। दयाल की नजर पड़ी।

कहिए मास्टर बाबू ! कहकर दयाल उसकी तरफ दो कदम आगे बढ़े।

छः दिन का भूखा पाँचू यह निश्चय किए बैठा था कि अब न तो वह दयाल से ही किसी तरह का सम्बन्ध रखेगा और न मोनाई से। ये सब स्वार्थी हैं नीच हैं पेट भरे मक्कार हैं। अगर इनको अपने पैसे का घमंड है तो हमको भी अपनी मुफलिसी पर नाज है।

पाँचू बच्चे की तरह मुँह फुलाए बैठा था। दयाल ने मोनाई को सबके सामने घसीटा उसे बड़ा गुस्सा हुआ। कोई दयाल को भी इसी तरह दगा के रगड़ दे तो मजा आ जाए। जी में आया ग्याल से पूछे कि तुमने ही अपनी प्रजा को कौन सा निहाल कर दिया जो या अकड़ते हो। शरम भी नहीं आती कमबख्त को ! मरघट जैसे गाँव में छैला बनकर घूम रहा है।

तभी दयाल की आवाज़ कानों में पड़ी नज़रें मिलीं और मिलते ही सारा विद्रोह गायब ! होठों पर मुस्कराहट आँखों में दीनता वही तपाक से उठकर अदब करने की आदत—गाहक को देखते ही जैसे लड़ाई पहले के दुकानदार अपनी पटट कवायद शुरू कर देते थे। पाँचू यह सब नहीं करना चाहता था। मगर अपने-आपपर उसका जोर नहीं। लाख अनिच्छा होने पर भी नजरें मिलते ही पाँचू मदारी के तमाशे की तरह इशारे से

बधा हुआ नाचने लगा। यो हिफाजत के साथ अपने शीशमहल म रखे हुए स्वाभिमान को हर पल बवड की ठेस से बचाता हुआ, (साथ ही साथ उसका परिचय देने की दबी धमकी भी देता हुआ) वह दयाल बाबू से मुह-देखी बरतन लगा।

'यो ही देखन चला आया य सब।"

'अजी कुछ पूछिए मा " काजीजो के दुबलेपन की अदा लिए हुए दयाल जमीदार सुनकर बोले—"देखा आपने ? इन चोर बाजार वालो न कसी लूट मचा रखी है—और वो, दिन-दहाडे ! गवरमेंट क पिटठू हैं साहब ! अग्रेज भी कोइ मामूली खोपडी नहीं है बाबू ! क्या पोलीसी भिडाई है कि आप तो सस्ते दामो पर अढतिय स नाज ले गए और पबलिक का कोई खयाल ही नहीं किया। एक तरफ तो इन बनिया को आन्मी के खून का चस्का लगने का मौका देते हैं और फिर जब पबलिक चिल्लाती है तो कट्रोल आडर लगाते हैं। समझा मजाक आपने ? माल तो इन मोनाइ जसा के गोदामो म है, कट्रोल किसपर करोगे !"

कहते हुए दयाल बाबू की आखो मे सयमद और चालाकी यों चमक आ गई। चेहरे पर रौब दुबाला होकर झलका। तब विजेता की दृष्टि से एक बार पाचू को देखकर उन्होने अपने पानबरदार की तरफ जरा हाथ बढाया। पल की देर न लगी, पान हाजिर जर्दा हाजिर, हाथ पोछने के लिए रेशमी रूमाल हाजिर। इशारे की जरूरत न थी खानदानी रईस के नौकर मास्टर बाबू का अदब करने के लिए झुके।

छ दिन के भूखे मास्टर बाबू के सामने खाने के नाम पर पान पेश हुए थे। कुछ भी सही। जी तो चाहता था कि डिब्बे के सारे पान बकरी की तरह चबाते ही चले जाए मगर आबरू के कायदे आड़े आते थे। के वडे म वसाए दो पान मुह म रखकर पाचू ने बड़े जोश के साथ उन्ह चबाना शुरू किया।

दयाल बाबू कहते चले— अजी साहब इसीको नाम है ब्रिटिश पालीसी। हिन्दुस्तान का गला हिन्दुस्तानी से ही कटवा रहे हैं। बाद म

कह देंगे हम तो अपनी हिटलरी मुसीबत म मुि तला थ। बगाल म हिंदुस्तानी मिनिस्टरी, हिंदुस्तानी कारोबार, हिंदुस्तानी अफसर— फिर जब आप खुद ही अपन भाइया को भूखा मार रहे हैं तो इसम हमारा क्या दोष ? आप लोग स्वराज्य के काबिल नही। चलिए साहब साप भी मर गया और लाठी भी न टटी। और आप गुलाम के गुलाम बने रहे।"

पान की गिलौरियो को दयाल बाबू ने एक गाल स दूसर की तरफ फेरा।

पाचू अपन मुह के पान अब तक खत्म कर चुका था। भूख भडक गई थी।

दयाल बाबू बोले— असल बात तो यह है कि हमम एका नही। एकता होती तो आज हिंदुस्तान की यह दशा न होती।

पाचू दयाल बाबू के मुह की तरफ देख रहा था। उनके रोबील चहरे को देख देखकर उसकी भूख और भी बढ रही थी। वह बराबर सोच रहा था, दयाल घर स खाना खाकर आया होगा। क्या-क्या खाया होगा ? चरपरे मसालो की सुगध कहीं से उडकर उसकी नाक म बसन लगी। पाचू को पहले तो अच्छा लगा, फिर तबीयत घबराने लगी। गुस्सा चमा। महा स्वार्थी और निकम्मा एकता की दुहाई दे रहा है। जरा जोश आ गया जबान अपन-आप खुल गई—

'एकता की दुहाई देना भी आजकल का एक फशन है। चिल्लाते सब हैं, लेकिन कोई उस सही तरीके स महसूस नहीं करता।'

कहन-कहन पाचू के चेहरे पर सच्चाई की तमक आ गई। वह अनुभव करने लगा जस उसका बोझ हल्का हो गया हो। इसम उस सन्तोष हुआ।

दयाल उमाकर यह सुनकर चौंक पडे। पाचू के चहर को गौर स दखन लग।

पाचू का हौसला और बढा। वह कहता चला गया—'देश की

गुलामी तभी दूर हो सकती है जब हमारे भद्र लोग अपने मूर्खतापूर्ण स्वार्थ और झूठे अभिमान को छोड़कर बुद्धि से काम लें। गुलामी के बोझ से झुकी हुई ज़िन्दगी को भद्रवर्ग अपनी खानदानी मानी हैसियत और अपनी नागरता की उपलब्धियों के सहारे खड़ा करके कागज़ के कुम्भकरण-सा अकड़ जाता है। यह कहकर हम अंग्रेज़ों की बराबरी करना चाहते हैं कि भारतवर्ष में एकता नहीं है। अगर किसी स्वाधीन देश का कोई पुरुष यह सवाल करे तो ठीक है, लेकिन हम किससे यह सवाल करते हैं? क्या हम भारतवर्ष में शामिल नहीं? तब फिर वह कमज़ोरी, जो हम सबमें बतलाते हैं—क्या वह खुद हमारे में नहीं है? अपनी कमज़ोरी को दूर किए बिना हम पड़ोसी की ओर उंगली उठाने के हकदार नहीं। हरगिज़ नहीं।

पाँचू यह सब कह तो गया, इसकी उसे खुशी थी, मगर दयाल का डर भी साथ-साथ लगा रहा। बुरा मान गए होंगे। वह डरे में! मगर बुरा तो मान ही गए होंगे। पर अब तो एक बार तीर कमान से निकल ही चुका है। जब सत्यानाश बस भले सत्यानाश! कोई फाँसी चढ़ा तो नहीं देंगे दयाल जमादार। और उनमें किसी तरह के सामर्थ्य की आशा नहीं। तब फिर पाँचू दयाल बाबू से क्या दबे? मगर दबता तो है ही। बात कहते हुए इसीलिए वह अंदर ही अंदर खिसका जा रहा था। अपने रौब की सतह को एक-सा रखने के लिए पाँचू अपने स्वाभाविक तरीके से न बोलकर इस तरह से दयाल बाबू के सामने बोल रहा था, जैसे क्लास रूम में लेक्चर पढ़ा रहा हो—और वह भी इन्स्पेक्टर के सामने। कह चुकने के बाद एक-दम से नज़रें आमने सामने हो… पर वह घबरा उठा। उस घबराहट को छिपाने के लिए वह खखारते हुए दूसरी तरफ मुँह घुमाकर थूकने लगा। इससे मुँह का बासीपन कुछ हल्का हुआ।

कलेक्टर और जॉन साहब तक पहुँचनेवाला आदमी, विद्वान, फिर नवरत्न केसर शास्त्री का वंश—दयाल बाबू पर भी पाँचू का रौब था। इसके अलावा अपने [illegible] दयाल

गो गोरे फिर जरा उग्र सेंप भी मालूम हुई। कुछ जवाब न सूझता था, खिसयाने से खड़े सोचते रहे। बीच में नौकर के हाथ से पान लेते हुए बात सुनते सुनते डिबिया भी ले ली। पान मुंह में रख लिए मगर डिबिया वाला की रो में उन्हीं के पास रही। जब पाचू ने अपनी बात खत्म की तो दयाल बाबू ने बात का नया स्टार्ट देने के लिए चौक कर पहले तो अपने दाहिने हाथ में पनडिब्बी को महसूस किया फिर डिबिया गोल बसना हटाकर पाचू के आगे पान पेश किए।

पान खाली पेट में नगन थे। पाचू नहीं खाना चाहता था। दयाल जमींदार अपनापन दिखाते हुए जोर देकर मस्तानी आवाज़ में कहने लगे— अरे खाओ जी ! हमको तुम्हारी ये भगतजाजी ज्यादा जमती नहीं उस्ताद !"

होठों के किनारों पर मुस्कराहट और खुमार भरी आंखों में शिकायत दरसाकर दयाल बाबू चुप। पाचू पिघल गया। घमंड दिमाग में बिजली की बारीक लकीर की तरह कौंध गया। भूख के फीके चेहरे पर दर्प और खुशी की चमक आ गई। पाचू ने मुस्कराकर डिबिया से पान निकाले और कहा— लिला तो रहे हैं। मगर याद रखिए शौक लग जाएगा तो आप ही के यहां आकर दिन भर पान खाया करूंगा। आजकल ईश्वर की दया से बेकारी के महकमे में तो हूं ही दिन भर।'

पाचू दयाल बाबू को 'तुम' कहकर पुकारना चाहता था। लाख चाहने पर भी जीभ न लौटी। फिर भी दयाल जमींदार पर अपनापन और हक जताकर पाचू ने बराबरी का दरजा तो पक्का कर ही लिया। अब वह दयाल बाबू से 'तुम' की बेतकल्लुफी तक रिश्ता बांधकर मोनाई का अपना प्रभाव दिखलाना चाहता था।

मोनाई कुछ दूर पर जरा अकेला सा खड़ा था। बराबरी का दरजा लाख समरथवान हो जाने पर भी उसे हासिल नहीं। एक तो भगवान जी ने ही उसे छोटा बनाके धरती पर भेजा है दूसरे वह पढ़ा लिखा नहीं। पर इन दोनों बातों में भी मुख्य बात वेपढ़ लिखे रह जाने की आती है।

जमाना 'गुडइमानी डैमपूर' का है। गाव म और भी कितने ब्राह्मणो के लडके पड है, उन्हे कोई टके सेर भी नही पूछता और एक पात्र है जिसके वास्ते हम सड भए गांव म कलक्टर जम वर वड अग्रेज आत हैं। वड वड जमीन्दार, दयाल जमीदार ऐसे ऐस लोग, पात्र को हमन्दुस मे मिलाए रखा हैं। ये विद्या का परताप है।

न्याय को आनिम फाजिल बनाकर मोनाई अपनी इस कमी का पूरा करना चाहता था। दिन रात उसकी पढाई के पीछे दीवाना। जब से गाव म स्कूल खुला है, गरीव न्याय का लटटू इतवार के दिन भी ताक म नहीं उतर पाता। सुवह जब उठो तव स लकर रात मे जब तक सा न जाओ बराबर पन्न रहो, पढाई की ही बातें सोचते रहो। जिस तरह मोनाई सुवह से रात तक अपना रोजगार करता रहता है रोजगार की ही बातें सोचता रहता है उसी तरह वह अपने लडके को भी वमठ देखना चाहता है। जब वह न्याय की उमर का था, तभी से उसने काम की फिक्र सभाली थी इसलिए वह न्याय का भी उस काविल समझता है। जब गाव के अच्छे दिन थे, सुवह गोविन्द मास्टर दो घटे घर आकर पढाते थ। उनके बाद स्कूल जाता था। साझ को स्कूल से लौटकर आते ही, हाथ मुह धोकर, जरा पानी मिलाव क बाद, फिर अपनी किताब लेकर जोर जोर से घोखने वैठ जाता था। जहा आवाज गिरी कि मोनाई ने डाटा। थोडी देर बाद मानाइ मास्टर आकर डपट जात थे। मानाई ने उन्हें इस मतलव से रखा था कि वह न्याय का स्कूल की सारी किताबें रटा रटाकर याद करा दें, जिससे न्याय इम्तहान म फस्ट आया करे मोनाई सोचता था भगवान जी का दिया बहुत है, न्याय पढ लिखकर एक बार विलायत पास करके आवे तो बडा सरकारी अफसर बन जाएगा। फिर सभी बडे बड लोगो म मेरी रसाई हो जाएगी। करोडा बना लूगा।

मोनाई केवट की यह सबसे बडी इच्छा थी कि मरने से पहले वह एक बहुत बडी जमींदारी खरीद ले, कलकत्ता के बड बडे वैपारियो म उसकी साख पुज जाए, कलकत्ते म ऊची ऊची बिल्डिंगें बन जाए और एक करोड

की पुड़िया मुट्ठी में हो। वह अब र भी यह सब ना पूरी कर गया पा अगर मरर म पैन हुआ होता। गांव में पना होता—और फिर मरट म पर म पना होता—यह सबसे बड़ा अभिलाष था जिसमें मान फिर मरकर पर भी मोताई मुश्त नहीं हो सकता था। परम्परा म जिस जगह पर दबता चला आया है वहां ऊपर उठा के लिए उस गहरा चाहिए। ऐसा लाग हो जाए मगर कुमीना के बखारे पर पच स भी पर पन ? हाँ उस हीन भावना के गहरे खड्ड में गिर जाना पड़ना है। अपना कबड्डा लिया हुआ तब छोटे के लिए मोताई बड़ा सबर बन्दय बना सरिन उसमें सबसे अपना मन ही बदल गया, कोई खास फायदा न पहुँचा। गांव में एक मन्दिर भी बनवा दिया। उसके बाद भी गरीब से गरीब बामन-कायथ के द्वार पर जाकर उस जमीन पर ही बठना नसीब हुआ। लिहाज और सरकारी अफसर की जान पूछ जाती है इसलिए मानाद न्याय की पहचान के प्रति गलत था।

इस वक्त दयाल जमींदार ने उस गहरी पटखनी दी थी। पिन भा मेरी, पट भी मेरी वाला हिसाब कर लिया था। आप ही परेस भाग का हड भी मेरे सिर पर लाद और अब एक एक रुपया भी दो। य न्याव करने आए हैं साले। और ऊपर से गांव भर म एक एक सेर चावल बांटा। जसे बाप का माल हो, उठा के दे दिया। हा भई बाप का माल तो है ही उसको जमींदारी म रहते हैं। वह इस जगह का राजा है। जो चाहे कर सकता है।

सब मिलाकर दयाल जमींदार के बारह म-सात सौ की चपट पड़ गई। अब तक तो इन्हें मौका नहीं मिला था, उस दिन की वारदात म ज रा सा रस्ता पाय गए हैं, सो धुर्रे उड़ाय के धर देंगे। गांव के आधे पट्ट अब मेरे नाम पर हैं, यह साले को खलता है। भगवान जी ने मुझे दिए सो भोगता [redacted]। इस साले को जलन क्या होती है ? किसीकी बन्ती आखा स नहीं देख सकते ये बड़े लोग। ससुर एकता एकता चिल्लाते हैं। अपने गरीब भाइयों का तो गला काटके रख देते हैं सुराज का क्या

अचार पडेगा ? अरे, यह लोग भी क दिन और ये अत्याचार कर सकेंगे ? इनका भी तो अन्त आवेगा किसी दिन । भगवान जी सबका न्याय करते है। उनकी लीला हो गई तो किसी दिन दयाल की सारी जमींदारी मैं गरीबूगा और इसीकी हवेली म जाके रहूगा। कर ले, आज इसका जमाना है।

मोनाई ने एक दबी उसास भरी कमर पर दाना हाथ टेककर जरा तन गया। घर की तरफ देखने लगा—अजीमा नही आया अभी तक। पटक दू रुपया ससुरे के आगे इज्जत बचे। मगर कमर तोड डाली साले ने। और अब तो जमराज डयोढी सूघ गया है, जो थाने तक चढ बठा तो मुझे जेहल करा क ही मानेगा—कफन तक लूट के खा जाएगा मरा। मगर पुलिस म ही देना था मुझे, तो उस दिन दारोगा जी क सामने मेरा गुलाम दबो-ढको क्या करवा दिया ? जरा सी सिकस्त म तो मेरे ऊपर साढे साती चढ जाती। तब फिर चाल क्या है इसकी ? दयाल जमींदार बेफजूल मे हमदर्दी वाल जीव नही। कुछ समझ म नही आता। बाकी य पक्की मानो, कही ऐसे म छुरी भोकेगा मुझे जहा पानी भी न मिले। भगवान जी, इत्ती सेवा करता हू तुम्हारी। फिर भी तुम्हारे भगत की छाती पर दुश्मन सवार हो जाए ? कहा गए गज के फन्द छुडानेवाले ? मेरी बेर इत्ती देर क्या लगाई ? अजीमा साला कहा मर गया कम्बखत ! य दयाल ससुरा अभी मेरी इज्जत टके सेर बचने लगेगा। वे देखो, फिर कमका सा मा !

बाप का जमाना भूल गया है शायद !" दयाल जमीदार की आवाज काना म आई—छेदामोंग ! हरामजादा का अक्कल म भाता भाक देखो। बोला शाला के जे दयाल तोमार बाबार प्रजा नेई जे तीन घाटा तक दर वाजे पर खडा रहेगा।'

एक सेकड क लिए मोनाइ की आखें मिच गइ। जिन्दगी भर की आबरू गई जा एक पड एडपटा ! ह भगवान-परमूनाथ ! अजीमा साला आया ! 'वो आ गया राजा बहादर !"

मोनाई ने संतोष की एक गहरी सांस ली और छन्नासिंह से कतरा कर हाथ जोड़े हुए जमींदार की ओर बढ़ा। वह हांफ गया था। कहने लगा—'मेरी इत्ती मजाल कि आपको खड़ा रखूं? भगवानजी ने यह दिन तो दिखाया कि सरकार की गालियां सुनने को मिलीं। अब भरोसा भया कि हुजूर ने मुझे अपनी सरनागत में ले लिया है। मालिक जब गालियां दें तो समझो कि दास का अहोभाग है।"

दयाल जमींदार के चेहरे पर सारे भाव तन गए थे। गर्दन में भी तनाव आ गया था। पान चबाते हुए जबड़े चल रहे थे। पानों की धड़ी पर होंठों की दर्प भरी मुस्कान दब दबकर धनक मार रही थी। बायें हाथ में हाथीदांत की छड़ी के सहारे कमर जरा झुकी हुई थी और दाहिने हाथ में अंगूठियों के नगीने दमक रहे थे। मोनाई की तरफ से मुंह फिराकर दयाल जमींदार जरा ऊंचे आसमान को घेरकर फैली हुई बैसाख की धूप को देख रहे थे।

मोनाई उनके चरण छूने को आगे बढ़ा। दयाल जमींदार ने पैर खिसका लिए। दयाल जमींदार मन ही मन फूल उठे। आ गया ठिकाने पर। चौपट करके फेंक दूंगा साले को। इसके गोदाम में दो हजार बोरे से कम न होंगे। काट पीटकर भी डेढ़ एक लाख बचा लेगा पट्ठा। कहां-कहां से छिपाकर धान इकट्ठा किया है इसने! मुझे रत्ती भर भी खबर न लगने पाई, बड़ा काइयां है।'

मोनाई की खुशामद दयाल के दिमाग को अपने हथकंडे दिखाने के लिए उकसा रही थी। मोनाई की बातें कानों में पड़कर दयाल के खयालों की सतह को छूकर निकल जाती थीं। 'पुलिस में दे दूंगा तो मेरे पल्ले कुछ न पड़ेगा। पुलिस वाले सब हड़प कर जाएंगे। मिलिटरी वाले दो हजार बोरों के लिए पांच सौ इससे क्यों न झड़प लूं? बुरा क्या है? अगर अभी मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूं तो कौड़ी का भी न रह जाएगा और जेल में चक्की पीसनी पड़ेगी सो अलग! या पांच ही सौ बोरे तो देने पड़ेंगे मुझे। फिर भी डेढ़ एक हजार बोरे के करीब बच रहेंगे साले के पास। लाख

लगी थी जनाब को। मुझसे दयाल जमींदार से, टक्कर लेने के लिए वह मेरी प्रजा को भूखा मार मारकर अपनी ताकत दिखाना चाहता था। ले बच्चू अब देख ले कि कौन शक्तिशाली है। सारा गांव आखें खोल कर देख रहा है कि अपनी प्रजा पर अत्याचार करनेवाले दुष्ट को दयाल जमींदार कितना कठोर दण्ड देते हैं! देख ले प्रजा जमींदार अब भी अपनी प्रजा का कितना पालन कर सकता है? नमकहराम है साले सब के सब!

जिनके लिए खुद दयाल जमींदार इतना कष्ट उठाकर यहां पधारे, जिनके एक बड़े भारी शत्रु को उन्होंने चुटकियों में परास्त कर दिखाया, जूठन चाटनेवालों को अन्न और रोगियों को दवा दिलाई क्या कुछ न कर दिखाया दयाल जमींदार ने! लेकिन जिसके लिए उन्होंने यह सब कुछ किया उसी महामूर्ख जनता पर कोई भी असर पड़ता नहीं दीखता। किसी ने उनकी जय जयकार भी नहीं बोली? उनके उस हलवाले प्रशासक ने भी नहीं! कम्बख्त अब तो इधर देख भी नहीं रहा। घूरे की जूठन खाने में जुटा हुआ है। कमीने है सबके सब! और नालायक! आज तो मुझे प्रणाम भी करने नहीं आए। हरामखोर!'

दयाल जमींदार की आखों के सामने सबसे पहले मोनाई का मंदिर आता था। फिर वे पेट भरे मरभुखे मरीज, जिजमानों की दया के टुकड़ों पर पलनेवाले भिखारी ब्राह्मण—जो उनसे और सबसे जाति में उच्च होने के कारण पूज्य थे मगर शक्ति में कितने नगण्य कितने हीन! 'और उन घूरे चाटनेवाले कंगालों में बड़े बड़े दिग्गज ब्राह्मण भी तो दिखाई पड़ रहे हैं। ये अपने दिबू भट्टाचार्य का पोता—क्या भला सा नाम है—खैर होगा, जाने दो। कितने नाम याद रहें, और वह भी इन पापियों के? सच पूछो तो ब्राह्मणों ने ही भारतवर्ष का सत्यानाश किया है।' दयाल बाबू जोश में आकर सोचने लगे— 'जब से ये गिरे हिंदू धर्म का लोप हो गया। जब हमारे पूज्य ही गिर गए तो अनिय बेचारे अकेले कहां तक अपने देश की सेवा करते रहेंगे? फिर भी, क्षत्रियों ने देश के लिए क्या क्या

नहीं किया ? भगवान रामचन्द्र, श्रीकृष्ण, बुद्ध महावीर ऐसे बड़े-बड़े अवतार, और भीम, अर्जुन, राणा प्रताप, वीर शिवाजी से लेकर पृथ्वी राज चौहान तक सब महापुरुष क्षत्रिय ही थे, जो शब्दवेधी बाण तक चला सकते थे। जमनों ने वेद चुरा लिए हमारे, नहीं तो आज इस पृथ्वी पर क्षत्रियों का ही चक्रवर्ती साम्राज्य होता। पर आपस की फूट खा गई। नहीं तो आज हमारे भारतवर्ष में अंग्रेज़ भला राज कर सकते थे ? बनियों भी कभी राजा हो सकते हैं ? मगर अब कलियुग में तो हो ही रहे हैं। देखो, गांधी जैसा महात्मा बनियों में जन्म लेता है। शास्त्रों ने ठीक ही लिखा है घोर कलियुग आ गया, चारों चरण रख दिए। तभी तो हिन्दू धर्म की यह दुर्दशा हो रही है। ऊंची जात की मर्यादा लोप होती जा रही है। कुलीनों की लाज का यह हाल है कि घूरे की जूठन लोग गुल छाम चाटते हैं। हाय रे हिन्दू धर्म ! कितना पतन हो गया है हमारे भारतवर्ष का !"

दयाल जमादार सहसा महसूस करने लगे कि एक उनको छोड़कर सारा भारतवर्ष, सारी दुनिया रसातल की ओर चली जा रही है। पतन के गढ्ढे की ओर आगे मुड़कर बढ़ती हुई महामूढ़ मानवता के प्रति उनके हृदय में अपार करुणा का श्रोत फूट पड़ा। दयाल जमींदार सारे संसार के कल्याण की चिन्ता करने लगे। पतितों के उद्धार की प्रबल आकांक्षा उनके मन में उत्पन्न हुई। सोचने लगे, बड़े काम करने से अपना भी बड़ा नाम होगा और हिन्दू धर्म का, देश का उद्धार भी हो जाएगा। फिर सोचा, कौन-सा बड़ा काम किया जाए। मंदिर धर्मशाला बनवाने से अब नाम नहीं होता। ये साले कोरी चमार केवट भी मंदिर बनवाने लगे हैं अब तो।

बड़े होने का कोई उपाय नहीं सूझ पड़ता था। दयाल जमींदार का जी कुछ कुछ खट्टा होने लगा। सोचने लगे, मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी

यर्वान पर दी। मुझे कुछ काम करना चाहिए। बस कर तो रहा हूँ य—अभी अभी ही भूखों को अन्न खिलवाया गोलियाँ का ग्रास खिलवा दी इस चिलचिलाती हुई धूप म खड़ा-खड़ा अपने गाव का सवा कर रहा हूँ। दुनिया के सामने एक महान आदर्श उपस्थित कर दिया है मैंन। अगर अखबारों म छप जाए तो सारी दुनिया जान लगी कि श्री दयाल चान्द विश्वास देश के महान जमीन्दारों म से हैं। और जो नाम होन लग तो बस सीधे पोलोटिक्स म नेता बन जाऊगा। इस बार चुनाव हो तो उसम भी खड़ा हो जाऊगा। हिन्दू महासभा क टिकट पर खड़ा हो जाऊगा। कांग्रेस के टिकट पर भी खड़ा हो सकता हू मगर उसम जल जाना पड़ता है। हिन्दू महासभा ही ठीक है। नाम का नाम होगा और परम पवित्र सनातन धर्म की रक्षा भी होती रहेगी। बस यही ठीक है। अब जीवन म जरा आगे बढ़ना चाहिए। इतिहास म नाम आना चाहिए। मास्टर बाबू के जरिये यह काम हो सकता है। बड़े काम का है यह लड़का। इसस अपनी प्रशसा के लेख लिखवाकर छपवा दूगा। मैं क्या यही मास्टरवा छपा देगा। हीले बहाने से दस-बीस पचास इसकी जेब म डाल दिया करूगा। बस फिर तो यह अपनी सारी अग्रेजी की नालिज मेरे ऊपर खत्म कर देगा। बड़ा विद्वान आदमी है यह पाचू भी। मगर है पट्ठा घमडी। खर! कोई बुरी बात नही। विद्या पर तो गव होना ही चाहिए। लक्ष्मी और सरस्वती—यही तो गव करने लायक है। मेरे पास धनबल है इसके पास बुद्धिबल है। यह मुझे अखबारो मे प्रसिद्ध कर देगा मैं इसको और इसके परिवार को इस अकाल स मुक्त कर दूगा।

दयाल जमीदार के मन म नई आशा, नया उत्साह जागा। उन्होंने पाचू की तरफ देखा।

पाचू सिर झुकाए किसी गहरे खयाल म डूबा हुआ था।

पान चबाते हुए पाचू दयाल जमीन्दार से बराबरी की कल्पना अवश्य

कर रहा था, किन्तु उसका भूखा पेट व्यग्य बनकर मन म निरतर चुभता रहा।

इधर जब कभी वह दयाल या मोनाई के सामने आता था तो लाख सतक रहने पर भी उसे अपनी लघुता का भास होन लगता था। व्यव हार की दुनिया ने धीरे धीरे उसे यह महसूस करा दिया कि विद्या और बुद्धि के बल पर आदमी अपने बडप्पन की लाख नही पुजा सकता। साख पुजाने के लिए पसा चाहिए। पैसा सबसे बडी शक्ति है। दूसरे ही क्षण पाचू अपने इन विचारो को हीन मानकर उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखता था। यह सोचकर उसे बडा बल मिलता था कि दुनिया म सदा से ही बुद्धि का धन से भी ऊचा स्थान मिला है। वह सोचता कि अगर बाल्मीकि न होन तो राजा रामचद्र का कौन जानता? रवीन्द्रनाथ यदि कवि न होन तो प्रिंस द्वारकानाथ टैगोर के नाती के रूप म उन्हें कौन पूजता? वह खुद अगर पत्र लिखा न होता तो दयाल क्या उसकी इस तरह लल्लो पत्तो करता?

लेकिन यह सब होने हुए भी वह दयाल के आगे कितना शक्ति-हीन, कितना नगण्य है!

समुद्र की लहरो की तरह ऊचे-नीचे विचार आगे बढते और फिर पीछे हट जाते थे। वह सोचने लगता कि शिक्षित निधन न होकर अगर वह मूख धनी होता तो सुखी रहता। सभ्य समाज म मूख धनी का स्थान शिक्षित निधन से अधिक सुरक्षित होता है। वह और उसके विद्वान पिता अपने परिवार के साथ गाव के किसी भी दूसरे गवार की तरह ही भूखा मर रहे हैं, जबकि दयाल जमीदार तोद पर हाथ फेरकर गुलछर्रे उडाता है। दयाल, मोनाई शक्तिमान हैं—केवल इसीलिए कि उनके पास पैसा है।

मन के अधेरे म पाचू डूबने लगा। दम घुटने लगा। एक आह गले म अटकती हुई बाहर निकली और फिर वैसे ही दबा दी गई। पाचू का सिर झुका हुआ था, हथेली से ठुड्डी पकडे हुए बाया हाथ कमर पर टिका हुआ, दाहिना पर एक कदम पीछे और बाया आगे जमाकर वह इतनी देर

में गड़ा हुआ था। मजबूरी की इस दम घोटनेवाली भावना से शरीर अस्थिर हो उठा। हाथ ठुड्डी से हटकर नीचे आ गया दोनों हाथ कमर में पीछे जाकर बंध गए और दोनों पांव बराबर आ गए। वह अनमना हो गया।

चील, कौआ और कुत्ता के सामूहिक शोर के प्रति उसके कान सजग हुए। पाचू ने सिर उठाकर सामने देखा—मोनाई अर्थात एक तरफ दयाल जमींदार अपने हाली मवालियों के साथ दूसरी तरफ इन दोनों के बीच से गुजरकर पाचू की नजरें मोनाई के मन्दिर तक पड़ रही थीं। पाचू ने देखा मन्दिर के दरवाजे पर पछाही लठैत अब पहरा नहीं दे रहे थे। मन्दिर के सामने पड़े हुए ब्राह्मणों पर आंखें फिसलती थीं, मगर वह पहले घूरे को ही देखना चाहता था। वहां भी भीड़ इस वक्त तक तितर बितर हो चुकी थी, इक्का दुक्का आदमी चील, कौआ और कुत्तों के जमघट में एक शक्तिहीन शत्रु बनकर घूर को घूरता हुआ दिखाई दे रहा था।

पाचू को यह दृश्य अच्छा न लगा। घूरा इस वक्त उसे मरघट की तरह मनहूस लग रहा था। पहले आदमियों का मेला लगा हुआ था। लोग पर लोग टूट रहे थे। चील कौए और कुत्तों से घमासान लड़ाई छिड़ी हुई थी। आदमी तगड़ा पड़ रहा था। उस दृश्य में कितना जीवन था, कितनी क्रियाशीलता थी! और अब? वह मैदान छोड़कर चला गया है। क्या, बात क्या है? घूरे पर की जठन भी अभी खत्म नहीं हुई। कुछ देर पहले झुंड के झुंड आदमी पेट के लिए आपस में जितना लड़ रहे थे, उतना वे अपना पेट भर नहीं सके थे। तब फिर वे चले क्यों गए?

तुरत ही पाचू को मोनाई के घर की गोलियों और लाठियों की याद आ गई। सारी बात उसके दिमाग में साफ झलक उठी। आदमी भूख की तकलीफ सहते सहते टूट जरूर गया है परन्तु इतने दिनों तक भूख के साथ पीड़ा के सहवास ने उसे एक तरह से इसका आदी भी बना दिया है। अन्न पाने की झूठी आशा लिए हुए भूख से लड़कर दिन गुजारते हुए भी वह

जीवित है परन्तु गोलियों और लाठियों से लड़ने जाकर उसे तुरन्त ही अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ता। आदमी जीवन से प्यार करता है, मौत से, जहाँ तक बन पड़ता है वह दूर ही रहना चाहता है।

मौत के ठेकेदार जमींदार दयाल विश्वास को सामने देखकर भूख टूट गए थे। उनके पैर टूट जाने के लिए सामूहिक रूप से अपने आप उठ पड़े थे। अब चीलों और कौओं के समान शत्रु रह गए थे। इनका शोर और काँव-काँव हवा के ज़र्रे-ज़र्रे में भर गया था। कान उस शोर के इस कदर आदी हो चुके थे कि ध्यान दिए बगैर वे आवाजें अब खलती नहीं थीं—एक तरह से सुनाई ही नहीं देती थीं।

एक बार पहले भी जब इस हंगामे से आदमियों की चीख चिल्लाहट और कराह कमहोने-हान मिटने लगी थी, तब पाचू के कानों ने जागकर उस कमी को महसूस किया था, उसकी आँखें फौरन ही उठ गई थीं। लोगों के हटकर चले जाने पर भी उसका ध्यान गया था। मगर उस वक्त दयाल जमींदार बड़े जोरों के साथ मोनाई के धुर्रे उड़ा रहे थे। पाचू की दिलचस्पी उस वक्त उसमें ही थी। उन भूखे के मनवालों का नजर-अन्दाज करके, वह दयाल जमींदार के रौब में मोनाई पर अपनी विजय का अनुभव करने में फँसा हुआ था। बाद में वह नशा धीरे-धीरे उतर चला। वह फिर सिर झुकाकर सोचने लगा था कि इन हारनेवाले और हरानेवाले दो पूँजीशाहों के सामने उसकी हस्ती ही क्या है? चाहने पर पल भर में दयाल जमींदार उसका भी पानी इसी तरह खड़े-खड़े उतार सकता है। चाहने पर मोनाई भी उसे मखमल में लपेटकर दस मार सकता है। और पाचू चाहने पर भी इन दोनों में से किसी को कुछ भी नहीं कह सकता, क्योंकि वह कायर है। गाँव के कमतरीन इंसान भी पाचू से अच्छे हैं। वे अब दयाल या मोनाई की सलामतें खुशामदें तो नहीं करते।

कोल्हू के बैल की तरह हीनता के चक्कर में घूमता हुआ पाचू अपने अपाहिजपन से खीझ उठा। लेकिन इस हार, शर्म और बेचैनी से भागकर वह जा ही कहाँ सकता है? अपने अंदर से वह इस गतिरोध को क्योंकर

दूर करे ? उसके दिमाग की ऊपरी सतह म अनेका उसड उसडे स विचार तालाब के साफ पानी के अन्दर तेजी स आती-जाती कतराती हुई मछलियो की तरह झलकत तो थे मगर चेतन बुद्धि की पकड म वे नही आ रहे थ। पाचू विचार शून्य सिर झुकाए खडा था।

दयाल जमीदार पाचू स अपनी पब्लिसिटी करान का निश्चय कर उसकी ओर देखने लगे। उन्होने सोचा किसी गहरे ख्याल म डूबा हुआ है।

उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करते हुए दयाल जमीन्दार बोले—'देख लिया मास्टर, ये है अपने देशभाई। लाखों चूसकर इक्यावन रुपय की गुठली थूक रहे हैं जैसे देश पर बडा भारी एहसान कर रह हो।

कहते हुए दयाल ने रुपयो को पर से ठुकरा दिया। तश म आकर बोला—'चार पैस कमाकर नवाबजादा हो गया है साला। वो दिन भूल गया जब घर म खाने के भी लाले पडे हुए थे।

मोनाई सिर झुकाए हाथ जोडे, चुपचाप खडा था। दयाल कहते गए— एक तो सडा हुआ अन्न खिलाकर इतने ब्राह्मणो को मौत के मुह म डाल दिया और अब इक्यावन रुपये देकर धनश्यामदास बिडला बनना चाहता है, कमीना! इससे पूछो भला इक्यावन रुपल्ली म डाक्टर क्या अपने हाड-मास से जिलाएगा इतने मरीजो को ?

मोनाई ने देखा, देवता सतुष्ट नही हुए। वह पहले से ही जानता था। विनयपूर्वक बोला— मेरे पास रुपय होते तो अपनी जान तक देने से न चूकता। बामन ठाकुर की सेवा मे अगर तन की चमडी भी अरपन कर दू तो भी उरिन नही हो सकता। राजा बहादर तो जानते ही है कि उस दिन की वारदात मे जो दो चार पसे बाल बच्चो क लिए कमाए थे सो भी भगवान जी ने ले लिए। दुक्खम सुक्खम किसी तरह '

दुक्खम सुक्खम! हि! ' दयाल ने मुह बनाया फिर आवाज म तेजी लाए—"और वे हजारो बार जो तुम्हारे तहखाने म चुन हुए हैं ?"

मोनाई इसका जवाब देन के लिए तैयार था। फौरन बोला—"वो आपके है मालिक। आपके राज म जो कुछ भी है वो सब हुजूर का

ही है।"

यह कहकर मोनाई न एक दबी निसास छोडी जो दयाल जमीदार तक को सुनाई दी।

दयाल तमककर बोले—'देख लिया न मास्टर इस कमीन को। एहसान मानना तो दूर उलटे ताने कसता है। साला मरी प्रजा को भूखा मार मारकर अपनी तिजोरी भरता रहा। गाव म गोलिया चलानी पडी इस इस कमीन क कारण। दारोगाजी की नजरो से इसका गादाम बचाया मैंने, नही तो आज जल म चक्की पीसता होता। इसके अपराधो की सीमा है भला? बादशाही होती ता साले की खाल खिचवाकर चील गिद्धो का खिला दता। धन के लोभ म इस कमीने ने बेचारे निर्दोष ब्राह्मणा पर यह अत्याचार किया। मेरा तो कलेजा फटा जाता है अपने दशवासियो की य दुर्दशा देख देखकर। छेदासिंग, तोड दो इसका गोदाम।'

मोनाई की वनिया-बुद्धि जाग उठी, चाल सूझी। बिना घबराए बिना झिझके, बडी शान्ति के साथ उसने तुरन्त ही हाथ जोडकर कहा—'इत्ती तकलीफ काहे को करते हैं मालिक? चार मजदूरे मेरे साथ कीजिए। आप जहा कहें तहा बोरे धरवाय दू। इस बारदात के बाद मैं तो आप घबराय उठा हू। सत्त कहता हू। उस दिन आपने तो इस दास के लिए बडी कोसिस कर दानी, मुल पुलुस वालों की निगाह आप समझ कि बडी परपरकीट हाती हैं। तब स तीन बार दरोगाजी का आदमी आय चुका है मेरे पास। दस हजार मागता है नहीं ता तलासी लेवेगा।"

दयाल जमीन्दार चक्कर म आ गए। एक नया दुश्मन, उससे भी अधिक शक्तिशाली मोनाई के गादाम पर दात गडाए बठा है। रौब नम पडा, उत्सुक होकर पूछा—' फिर?"

दिल ही दिल म मोनाई की बाछें खिल गइ, मगर चेहर की एक शिकन तक न बदली। उसी तरह स उसन जवाब दिया— रुपय ता मेरे पास हैं नही राजा बहादर। औ' पुलुस की नजरो म आयक फस तो गया ही हू। मिरहुचक्कर है हमारा—पिरालब्ध फिर गई है, जौन है तौन।

कहलाय दिया कि बाबा, जबरजस्त का ठेंगा सिर पर, उठाय ले जाओ।'

कहकर मोनाई ने टूटकर एक आह भरी।

दयाल जमींदार का दिल बैठ रहा था। चेहरे की अकड़ के ऊपर खिसियानपन की एक पर्त चढ़ गई। मोनाई की नज़रों से छिपा न रहा। एक झलक दयाल के चेहरे को देखकर फिर अपनी बात जारी कर दी—'आपके चरनों की सौगन्ध खाय के कहता हूं हजूर कि मेरा तो चित्त टूट गया है इस काम से। कहां तक नुकसान सहूं ? मैं तो अपने बाल-बच्चों को लेके कलकत्ते चला जाऊंगा। भगवानजी का ही भरोसा है अब तो।'

यह कहकर मोनाई ने फिर ज़ोरदार निसांस छोड़ी। एक बार दयाल को मास्टर बाबू का देखकर फिर अज़ीम की ओर देखते हुए उससे कहने लगा—"अज़ीमा, बेटा ज़रा छेदासिंह के साथ जायके गुदाम की ताली सौंप दे। जब दारोगा जी का आदमी आवै तो हुजूर के पास भेज देना। मैं उरिन हो गया।'

दयाल जमींदार मन ही मन उबल तो बेहद रहे थे मगर पुलिस का दारोगा उनके लिए भी भारी पड रहा था। उन्हें मोनाई की इस बात पर यकीन तो कतई नहीं आ रहा था लेकिन यह ज़रूर समझते थे कि दारोगा को रिश्वत देकर मोनाई उन्हें परेशान कर सकता है। इसके साथ ही वह य भी नहीं चाहते थे कि मोनाई की धमकी भरी चाल के आगे उनका सिर झुक जाए। दिमाग इस गुत्थी में अटका हुआ था। उनका रियासती मिजाज पुलिस, दारोगा और मोनाई जैसे तुच्छ कीड़ों से हार मानना हरगिज़ नहीं बर्दाश्त कर सकता था। अचानक उपाय सूझा। उन्होंने तय किया कि गांव में चावल ज़रूर ही बटवाना चाहिए। पब्लिक की भलाई का बहाना लेकर दारोगा क्या, गवनर तक को नीचा दिखाया जा सकता है।

दयाल ज़मींदार ने हुक्म दिया—'छेदासिंग ! ले आओ चाभी। रोज़ सवेरे और शाम दीन-दुखियों को चावल बांटो। गांव में ढिंढोरा पिटवा दो कि आज शाम को अपने स्कूल के बरामदे में सब लोग चावल लेने के लिए इकट्ठा हो जाएं।

फिर मोनाई की तरफ देखकर बड़े रूखे स्वर में दयाल ने कहा—"दारोगा का आदमी आए तो कह देना कि मैंने दारोगाजी को बुलवाया है। समझ लूंगा।"

कहकर दयाल जमींदार फौरन ही चल दिए।

"आओ मास्टर।" दयाल के कहते ही पांचू चुपचाप उसके साथ हो लिया।

पांचू को साथ लेकर दयाल अपने घर की तरफ चले। मोनाई हाथ मलता रह गया।

६

कोठी पर पहुंचते ही दीवानजी ने जमींदार को सूचना दी कि यूनीयन बोर्ड के सेक्रेटरी मिस्टर दास आए हुए हैं और उन्हें गेस्ट हाउस में ठहराया गया है।

यह खबर सुनकर दयाल बेहद खुश हुए। पांचू से कहने लगे—"अगर दारोगा वाली बात सच भी है तब भी मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। गांव में यूनियन बोर्ड खुल जाएगा तब अगर चाहूं तो मोनाई का सारा स्टाक जब्त करवाकर उसी दारोगा बेटे की निगरानी में अपने यहां उठवा मंगाऊं। सरकारी गोदाम मेरे यहां ही रहेगा। सेक्रेटरी और एस० डी० ओ० को कुछ ले-देकर दारोगा साले को ऐसा अंगूठा दिखाऊं कि वो भी जिंदगी भर याद करे। और मोनाई को तो मैं तबाह करके ही दम लूंगा। कमीना मुझे पुलिस का डर दिखाता था! समझ लूंगा उसकी पुलिस"

इसके बाद दयाल जमींदार ने पुलिस और ब्रिटिश राज की मां-बहन

के साथ गहरा रिश्ता जोड़ते हुए पराई हुकूमत पर अपना गुस्सा जाहिर किया।

पाँचू तब यह सोचने लगा कि हुकूमत के हामी भी हुकूमत को कितनी बुरी नजर से देखते हैं। और उसे आश्चर्य हुआ कि फिर भी दयाल और उसके वर्ग के लोग दुनिया पर अपनी हुकूमत कायम रखना चाहते हैं। आदमी जिस चीज से नफरत करता है उसीको चाहता भी है—मनुष्य के स्वभाव में यह विरोधाभास क्या?

दयाल जमींदार पाँचू को आज अपने शीश महल में ले चले। शीश महल की शोहरत दूर दूर तक फैली हुई थी। पड़ोस के एक दूसरे जमींदार, गौरीपुरी के नवाब साहब को नीचा दिखाने के लिए ही दयाल ने यह शीश महल बनवाया था। पुश्तैनी हवेली का मेहमानखाना बहुत खस्ता हो गया था। उसकी मरम्मत कराने का इरादा करते करते लाग डाँट के फेर में, नये सिरे से तिमंजिली इमारत बनवा डाली। गौरीपुर के नवाब ने अंग्रेजी ढंग का मेहमानखाना बनवाया था। शहर से बिजली का कनेक्शन तक दौड़ा मँगाया। दयाल जमींदार ने तब खास कलकत्ते से इंजीनियर बुलाए। गौरीपुर के नवाब ने सिर्फ बिजली ही लगवाई थी इन्होंने टेलीफोन भी मँगवा लिया। थैलियों के मुँह खोल दिए। पहली मंजिल पर नई कचहरी बनी, गुमाश्तों को बरसों की मसनद गद्दी छोड़कर कुर्सी मेज पर बैठने की आदत डालनी पड़ी। दीवानजी का कमरा अलग बना। जमींदार की कचहरी में सिंहासननुमा कुर्सी एक बड़े और मोटे कालीन पर सामने रक्खी गई, कुलीन और सम्मानित सदस्यों के लिए सिंहासन के दोनों तरफ सोफा सेट रक्खे गए। बिजली की रोशनी और पंखों की तो भरमार थी। पहली मंजिल पर एक तरफ दयाल जमींदार की लायब्रेरी थी, और दूसरी तरफ मेहमानों के लिए कमरे। सबसे ऊपर शीशमहल बनवाया गया था। शीशमहल देखा बहुत कम लोगों ने था मगर तारीफ बहुतों ने सुनी थी।

पाँचू पहली मंजिल तक से परिचित था। लायब्रेरी में वह दयाल के

लडके को पढाया करता था। मेहमानो के कमरे भी उसने देखे थे और उनकी सजावट से वह प्रभावित भी हुआ था। शीशमहल देखने की इच्छा तो बहुत दिनो से थी, परन्तु खुद कहकर देखना उसे पसन्द नहीं था। आज दयाल जमींदार के संग वह शीशमहल वाली मंजिल पर गया।

बडे हॉल म घुसने ही दाहिनी तरफ एक बनावटी झरना और उसके साथ ही लगा हुआ फव्वारा था। झरने से लगी हुई दीवार पर, शीशे मे जंगल और झरने का दृश्य अंकित किया गया था। बनावटी झरने म जगह जगह रंगीन बल्ब फिट किए गए थे। दीवारें शीशो पर बनी हुई रंगीन तस्वीरो से मढी हुई थी। बीच-बीच मे कद्द आदम आईने लगे हुए थे। पेंट की हुई छत थी जिसमे बिजली के झाड फानूस लटके हुए थे। कीमती फारसी कालीनो से हाल का संगमरमरी फर्श सजाया गया था। आधे हॉल को घेरे हुए दो फुट ऊंचा गद्दा पडा था, जिसपर रेशम की चादनी बिछी हुई थी। रेडियोग्राम, पियानो हारमोनियम, तबला, सितार वीणा, वायलिन एक ओर सजाकर रखे हुए थे। शराब के लिए दो कीमती मेजें दोनो तरफ रखी हुई थीं। दरवाजो पर रेशमी परदे पडे थे। हॉल के चारो कोनो मे शीशम के खूबसूरत स्टण्डो पर विभिन्न मुद्राओ म नग्न नारी मूर्तियां रखी हुई थी। हर दरवाजे के दोनो तरफ खूबसूरत स्टूलो पर गंगा-जमनी गमला म विलायती फूल शोभा बढ़ा रहे थे। हर दो तकियो के बाद गद्दे के नीचे पीतल के बड बडे उगालदान भी रखे हुए थे। उसके बाद रास्ते के लिए थोडी सी जगह छोडकर हाल के दोनो तरफ दीवारो से सटाकर दो बडे बड खूबसूरत शो-केस रखे हुए थे, जिनमे दयाल और उनके कुछ पुरखो द्वारा अन्य जमींदारो नवाबो और अंग्रेज दोस्तो से पाए हुए उपहार सजाकर रखे गए थे। उनम ज्यादातर चादी और सोने के खिलौने, मूर्तियां, सागर व मीना के सेट वगैरह थे। उन उपहारो मे एक बर्मा के बने हुए भगवान बुद्ध भी थे जिन्ह दयाल जमींदार के एक नामी गिरामी नवाब दोस्त ने भेंट किया था। दयाल जमींदार के परदादा को मीर जाफर ने खिताब, खिलअत व सनद दी थी, सो भी शो केस की सजावट बढा रही थी। बडे बडे अंग्रेज

अप्सरा से पाए गए उपहारों में अट्ठानवे फीसदी उनकी दस्तखती तस्वीरें थीं, दो-तीन मेम साहबाओं की भी थीं। पिछले कलेक्टर की मेम ने अपनी तस्वीर पर 'टु डियर दयाल' लिख दिया था।

सामने हाथी दांत के नक्काशी किए हुए अठपहलू फ्रेम में एक कीमती घड़ी थी।

दयाल जमींदार ने बड़े उत्साह और अभिमान के साथ पाचू को हर चीज दिखाई और कहा— "इस कमरे की रीयल ब्यूटी तो शाम को देखना मास्टर! और इसके बाद वह जो अंदर का 'रायल कमरा' है न, उसे भी दिखाऊंगा तुम्हें! देखकर तुम भी कहोगे कि हां किसी रईस का विलास भवन देखा।"

फिर उन्होंने हाल की हिंदुस्तानी सजावट का खास तौर पर जिक्र करते हुए बतलाया— "इसमें एक पालीसी है। कोई अंग्रेज चाहे वह लाट साहब का नाती भी क्यों न हो, मेरे शीशमहल में आएगा तो उसे हिंदुस्तानी ढंग से ही बैठना पड़ेगा। बुलिया जानबूझकर ही नहीं रखवाई है मैंने। हिंदुस्तानी नाच गाना की महफिलें करवाता हूं कि बेटा लुक अवर नेशनल आर्ट।"

इसके बाद दयाल जमींदार ने यह कहकर पाचू की इज्जत अफजाई की कि आयन्दा किसी महफिल में वह उसे जरूर बुलाएंगे। फिर नौकर को बुलाकर भरनेवाली टंकी में पानी चढ़ाने का हुक्म दिया। झाड़ और फानूसों से गिलाफ उतरवाए। आज मास्टर बाबू की खातिरदारी में शीशमहल को रौशन किया जाएगा।

पाचू को इस समय दयाल जमींदार की दोस्ती और अपने शीशमहल देखने के सौभाग्य से गर्व नहीं हो रहा था। उसे गुस्सा आ रहा था कि दयाल के पास इतना ऐश्वर्य क्यों है। उसे दयाल से नफरत हो रही थी। इसीलिए वह शुरू में ज्यादातर चुप रहा। बोलने का काम खुद दयाल जमींदार कर रहे थे। हर बात में वह अपना ही शाहनामा बखान रहे थे। पूरी बतकल्लुफी बरतते हुए पाचू अकड़कर मसनद पर लेटा रहा। शरबत

आया, शरबत पिया—जैसे वह उसका हक हो। पनडब्बे से पान निकाल कर खाता रहा।

सुनते सुनते और मन ही मन विद्रोह करते हुए पाचू थक गया। आखिर विद्रोह फूटा और बीच बीच में खुद उसने भी लनतरानियां सुनानी शुरू की। वह दयाल जमींदार को पछाड़ना चाहता था। उसने यह प्रकट किया कि जैसे उसे रईसों से इन आराइशों और महफिलों की सदा से आदत रही है। अमेरिकन प्रिंसिपल मि० जाइन का प्रिय शिष्य होने के नाते उसे विलायती समाज में दुनिया देखने के हजारों मौके मिले हैं। विलायती मद और औरतों को प्यार और मुहब्बत में जी खोलकर आजादी बरतना अच्छा लगता है।

ऐश्वर्य का भूखा बुद्धिजीवी पाचू धनाधीश होने के कारण 'बड़े आदमी' कहे जानेवाले दयाल जमींदार पर अपने बड़प्पन का सिक्का जमाने का प्रयत्न कर रहा था। अपनी विलासिता और रोमांस की झूठी कहानियों से उसने दयाल जमींदार पर अपना रंग जमा दिया।

दयाल जमींदार को कलकत्ते की कुछ विलायती कसबियों का हाल तो जरूर मालूम था मगर अंग्रेजी सोसाइटी का घुल मिलकर लुत्फ उठाना उन्हें कभी भी नसीब न हुआ था। हर साहब को उन्होंने दावत दी थी, लेकिन किसी साहब ने उन्हें कभी पूछा तक नहीं—अपनी तस्वीर में 'डियर दयाल' लिखनेवाली पिछले कलेक्टर की मेम साहब ने भी नहीं। दयाल जमींदार पाचू के विलायती अनुभवों में रस लेने लगे। खोद खोद कर पते की बातें पूछते थे। पाचू की उड़न छू लनतरानियां उन्हें होठ काटने और रह रहकर ठंडी गर्म सांसें छोड़ने पर मजबूर कर रही थीं।

दयाल जमींदार के विलास भवन में बैठकर अपने देशी विलायती रोमांसों की मनगढ़न्त कहानियों से खुद पाचू को तकलीफ महसूस होने लगी। उसका चित्त चंचल हो उठा। दयाल के प्रति निरर्थक क्रोध और घृणा के थपेड़े स्वयं उसके मन पर ही तमाचे मारने लगे। तभी सोनाई के आने की खबर मिली। दयाल जमींदार ने

बुला लिया। मोनाई आकर तरह-तरह से सलाम-गुलामी करने लगा।

पांचू को बहुत गुस्सा आ गया। यह मोनाई आत्मसम्मान का भाव खोकर इन लोगों के सामने इस तरह गिड़गिड़ाया क्यों करता है? जात-परजात में सबसे अच्छी हैसियत रखता है। इस बन्दर नगर के परा-तने सारा गांव दबा रखा है। जिन्हें पीढ़ियों से खानदानी जमींदार और रईस, दस पन्द्रह हजार असामियों, किसानों के स्वामी और अन्नदाता श्रीमान दयाल बाबू विश्वास की परंपरागत प्रतिष्ठा को भी अपनी बढ़ती हुई शक्ति से बार बार झटके देनेवाला, दुनिया की नजरों में मीर और नाचीज यह मोनाई अपनी लाखों की दौलत लेकर भी दयाल जमींदार के सामने घुटने क्यों टेक देता है? यह दयाल का गुलाम क्यों बन जाता है? क्यों? क्यों?

मोनाई की पराजय में पांचू इस समय अपनी पराजय देख रहा था। अपनी निर्धनता के कारण वह दयाल से हार गया था और वह चाहता था कि दयाल जमींदार जीत न पाए। खीझकर वह सोचने लगा: मोनाई तो दौलतमंद है, फिर वह क्यों दबता है? दयाल को ये मुंहतोड़ तुर्की-बतुर्की क्यों नहीं सुनाता? कायर कहीं का।

पांचू को अपनी कायरता भी झांकने लगी। उसके आभास मात्र से ही वह विचलित हो उठा। वह इन दोनों के आगे कायर हो जाता था। इस ग्लानि से बचने के लिए वह ज़रा अकड़कर मसनद पर लेट गया और लेटे-लेटे ही पनडिब्बी की ओर हाथ बढ़ाया। पान खत्म हो चुके थे। फौरन ही उसने दयाल के नौकर को आवाज़ दी। दयाल जमींदार ने पूछा—"क्या चाहिए मास्टर?"

'कुछ नहीं। इस डिबिया के वैधव्य को देखकर ज़रा दया आ गई।' पांचू ने मोनाई के सामने दयाल जमींदार से मज़ाक करके अभिमान का बोध किया।

हो हो हो! करके दयाल हंस पड़े। फिर मज़ाक का जवाब दिया— यह विधवा नहीं सदा सुहागिन है मास्टर। दिन में सैकड़ों आने

जान रहने हैं।"

यह कहकर दयाल आप ही अपने मजाक का मजा लूटते हुए हंस पड़े।

पाचू ने भी सुर में सुर मिला दिया, कहने लगा—"इसीलिए तो और भी दया आती है। जिस दीपक के पास सैकड़ों पतंगे आते हों, वह यदि किसी समय पतंगविहीन हो जाए तो उसे कितनी पीड़ा होनी होगी।

अरे, पान ले आओ।"

नौकर सामने खड़ा था। लगे हाथ पांच ने उसे भी हुक्म दे डाला, और इस तरह हुक्म देनेवाले का एक मौका दयाल से झटककर उस बहुत मुग्ध हुआ।

मोनाई अपनी अरजी के फैसले का इन्तजार कर रहा था। घुटनों में सिर झुकाए हाथ बांधे बैठा था। यहां की बातों पर उसका ज़रा भी ध्यान न था।

छेदासिंह अपने मालिक का हुक्म पाकर दूसरे लठैतों के साथ मोनाई के गोदाम का मालिक बन बैठा था। बोरे उठवाकर उसने गोदाम से बाहर फिंकवा दिए। उन्हें देखकर आसपास फिरते हुए भूखे जन हिंसक आह्लाद और जोश से झपटकर समीप आए। बोरे यों फेंके जा रहे थे जैसे ठाकुर की मूर्तियां मंदिर से बाहर फेंकी जा रही हों। लोगों को सहसा विश्वास नहीं हो रहा था। मोनाई के गोदामों में हजारों बोरे देखकर वही अविश्वासमय आह्लाद उमड़ आया जैसा कि उन्हें ब्रह्मभोज और जूठन को देखकर हुआ था। परन्तु उनके पांव ठिठककर रह गए। चावलों के इन बोरों में शहीदों का खून झलक रहा था। और वे खूनी ही इन बोरों को बाहर फेंक रहे थे।

मूंछों पर ताव देकर डपटता हुआ छेदासिंह एक तरफ तो अपने लठैतों को बोरे निकालने का हुक्म देता और दूसरी तरफ मोनाई की सात जान-लेनेवाली पीढ़ियों के साथ अपने क्षत्रिय रक्त का मौखिक रूप में मिश्रण भी करता जाता था।

बारह रुपल्ली का नौकर, मगर ज़मींदार का सिपाही ठाकुर छेदासिंह

मोनाई जसे लखपती के मुँह पर लात जमा सकता था। जमीदार का सिपाही होने के नाते उसे प्रजा के जान माल और आबरू पर सर्वाधिकार प्राप्त थे। छेदासिंह ने अपने साथ के पच्चीस लठैतों को चार चार बोरे इनाम में बाँट दिए। दस बोरे चावल उसने अपने लिए रिजर्व किए, जिनमें से पाँच बोरे अपने जूतों के बल पर उसने मोनाई के हाथ तत्काल बेचे भी और रुपये भी नकद वसूल किए। जूते मार मारकर मोनाई का पानी उतार दिया। फिर बाकी पाँचों बोरे उठवाकर स्कूल में भिजवा दिए। इसके बाद उजड़े हुए गाँव में ढिंढोरा पीट दिया गया। जिंदा लाशों में फिर से जीवन दमकने लगा।

मोनाई एक ही दिन की लूट में ठंडा पड़ गया था। चावल की लूट से भी ज्यादा उसे जूतों की मार खाने का गम था। एक बार हाथ उठ जाने के बाद छेदासिंह अब उसे जब चाहेगा पीट लेगा और मोनाई से यह रोज रोज की मार हरगिज बर्दाश्त न हो सकेगी। इसीलिए दयाल के सिपाही के जूतों से बचने के लिए उसे मजबूर होकर फिर दयाल की ही शरण में आना पड़ा था। स्वार्थ ने उसे मजबूर कर दिया था। उसने बिना किसी शर्त के दयाल जमींदार के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए मोनाई बोला— आप तारें तो तर जाऊँ, और मारना चाहें तो हुजूर के चरन कमल में दास का सिर हाजिर है। बाकी अन्नदाता अब छिमा कर दीजिए। आप माई बाप हैं जो बड़े मजूर करेंगे उसे सिर माथे पर धरौंगा सरकार। मुल मेरे पेट पर लात न मार राजा बहादुर—मेरे रुजगार की रच्छा कर लें।

मोनाई की इसी पराजय से प्रसन्न होकर दयाल बाबू पाँचू मास्टर से मजाक करते हुए अपनी खुशी जाहिर कर रहे थे। अपनी शक्ति के माहात्म्य बखानते हुए उन्होंने यूनियन बोर्ड के सेक्रेटरी के आगमन की सूचना मोनाई को दे दी थी। एक नौकर को भेज भी चुके थे कि सेक्रेटरी साहब अगर गुस्ल वगैरह से छुट्टी पा चुके हों तो उन्हें ऊपर बुला लाए।

मिस्टर दास तशरीफ लाए। साँवला रंग निहायत दुबले लंबा कद,

रेशमी सूट पहने सुनहरी कमानियों का अठपहलू शीशा वाला चश्मा लगाए, हाथ में ५५५ सिगरेट का टिन लिए हुए, और होठों में एक सिगरेट दबाकर मिस्टर दास ने जमींदार दयाल विश्वास, हेडमास्टर पाचू गोपाल और व्यापारी मोनाई बोष्टम को अपने प्रथम दर्शन से कृतार्थ किया।

दयाल जमींदार लपाक के साथ उठकर खड़े हो गए। कुर्मी के गुलाम मोनाई ने खड़े होकर कमानी की तरह अपने को झुकाकर अदब से हाथ जोड़े। पाचू भी उठकर बैठ गया। मगर खड़ा नहीं हुआ।

मिस्टर दास पहली ही झलक में पाचू को फूटी आंखों न सुहाए। मिस्टर दास पतलून की क्रीज की नजाकत के साथ संभालते हुए मसनद के सहारे बैठे। सफर की तकलीफ-आराम पर दो सवाल जवाब हुए। फिर दयाल ने मिस्टर दास का हेडमास्टर पाचू गोपाल से परिचय कराया। बड़ी तारीफ की। पाचू ने अपनी तरफ से बनावटी शिष्टाचार दिखाया। उसे मिस्टर दास का बन-बनकर बोलना फूटी आंखों नहीं सुहा रहा था।

मिस्टर दास का नजर अदब से हाथ बांधे और सिर झुकाकर खड़े हुए मोनाई की तरफ भी गई। मिस्टर दास को अपनी तरफ मिलाने की गरज से दयाल ने टूटी फूटी अंग्रेजी में मोनाई का चिट्ठा खोलना शुरू किया। 'ड्यामफून, रास्कल आदि नामों से बंगाली-अंग्रेजी में मोनाई को याद करते हुए दयाल जमींदार ने हंस हंसकर मिस्टर दास से कहा— 'आपके आने की खुशी में अपने गांव का यह सबसे उम्दा तोहफा आपको प्रेजेंट करता हूं।' इसके ऊपर हंसी हुई। पाचू हंसने के खिलाफ था, लेकिन मुस्कराने पर मजबूर हुआ।

मोनाई के लिए दयाल जमींदार का मिस्टर दास से हंस-हंसकर अंग्रेजी में बातें करना असह्य हो उठा। बड़ी घबराहट के साथ वह सोच रहा था— भगवानजी ही जानें, कौन-सी घात साध रहे हैं ये लोग। ये बार-बार मुस्कराय मुस्कराय के हमारी तरफ इसारेबाजी कर रहे हैं, इसका कौन फल मिलै तौन कम है। एक ससुर जमराज और दूसरा जमदूत— मेरे घर को खेत बनाय के चर जावगे—जरूर चर जावेंगे।"

इन सभी कांपती उसास लेकर मोनाई मन ही मन में टूट गया। उसे पूरा पूरा यकीन हो गया था कि—'ये राहु केतू दोनों मिलकर हमें आज जीता न छोड़ेंगे। राम जाने, कौन साइत बिगड़ गई रही उस दिन। दाम लेके चावल दे देना तो परजा के जैकार मनाती। न तो गोली चलती न जमादार गुदाम देखते। हजार पांच सौ नफा कमाने के फेर में अब ये जनम भर की कमाई लुटी जाती है। भगवानजी ऐसा कौन-सा पाप किया था मैंने ?

मोनाई सतर्क होकर अपने को टटोलने लगा। किसी पाप के कारण ही उसकी यह दुर्दशा हुई है इसका उसे डर था। पाप का ध्यान आते ही फौरन उसके प्रायश्चित्त का संकल्प कर उस दर्शनी हुंडी को दिखाकर भगवान से सौदा पटाने की सूझी।

"मुल बिना पाप जाने परासचित कौन सा किया जाय ? बस जब से कण्ठी ली अपनी जान में तो कौनो पाप किया नहीं मैंने। चींटी को चारा देता हूं गौ भी हैं मंदिर में ठाकुर जी और गौमाता की सेवा होती है। पुजारी जी को इसी हेत रखा है। पुजारी जी को तनखाह देता हूं परब तिउहार के दिन जैसी सरधा है वैसा दान पुन भी करता ही हूं—इस तरह बाह्मन की सेवा भी कर देता हूं। तब कौन-सा पाप मुझसे भया है नाथ ? सबेरे चार बजे माला भी जपता हूं तुम्हारे नाम की। मुल परसों लेट हुइ गया रहा साढ़े चार बजे आंख खुली थी। मुल इससे क्या जिस दिन गोली चली रही उस दिन तो सारी रात जागरन करके माला जपता रहा था। हां सूतक में जपी रही। गिन्नी ने मना भी किया था कि सूतक में कंठी न छूना। मुल परता का ऐसा भय था कि कंठी हाथ से न छूटी। बस यही पाप भया इसीसे भगवानजी का कोप मुझपर भया है। मुल भगवान जी कीड़े को क्या मारते हो ? छिमा करो नाथ। और जो आदमी मर रहे उनका भी किरिया करम अब तो कराय दीना। बरमभोज भी हुइ गया। और चलो, जो रहा सहा परासचित था सो भगवान जी जमींदार बाबू के रूप में हमसे पूरा कराय दीना। देखो क्या माया है भगवान

जी की। जित्ती वेला जमीदार बाबू ने छेदासिंह को अडर दिया कि गाव-भर म चावल बाट देवो, उत्ती वेला तो मेरी छाती म मानौ गाली दग गई रही। मुल अब ध्यान आया कि उस दिन द्वार से सैकडा भूखे लौट गए रहे। जरा से स्वारथ के फेर म हमरी मत अधी हुइ गई रही। वमे इसे स्वारथ क्या मान ? रुजगार धधा तो करम है। भगवान जी भी कहत हैं कि करम करो अपना। गाव वाले भूखे तो जरूर रहे मुल साधू भिखारी थोड रहे। हा, साधू भिखारी द्वार से भूखा लौटना तो सचमुच बडा पाप लगता। इसम क्या ? य तो दुकनदारी ठहरी सौदा पटा तो दिया नाही तो जे राघे। उल्टे वही लोग सब हमारे ऊपर अन्याय करने लगे। क्या भगवान जी ने नहा देखा होगा कि मोनाई बोष्टम निरदोष है ? औ मान लेओ कि मायामोह मे पड ससारी जीव हे कोई अपराध अनजाने मे बन पडा होय, तो भगवान जी ने उसके परासचित म ये डड दै दीना—जून खाए, गालिया सुनीं लूटे गए—क्या क्या दुगत नही भई ? बहुत डड हुइ चुका नाथ। ह दीनदयाल, अब छिमा करो। देखो हमारा चावल ही आज भूखा को बाटा जा रहा है। दुनिया समझे कि दयाल जमीदार न अन्नदान दिया मुल ह दीनानाथ, तुम तो अन्तरजामी घट घट ब्यापी हो—तुम तो सब जानते हो। मैं ससारी कीडा जरूर हौं, पर पर तुम्हारा भगत हौं। तुम्हारी सरनम दिन रात पडा रहता हौं। इन पापियों से मेरा गला छुडाओ दीनबधू ! हे दीनानाथ, नाथो के नाथ इस पापी को नाथो। कालिया नाग से कुछ कम नही है ये दयाल। इस ससर के काटे का मतर नहा है। बडे-बडे हतियाचार किए हैं इसन। इसके जुलुम से धिरथी धरतीय उठी हैं, य अकाल पड रहा है। जिस गाव का राजा पापी है, उसम तो जरूर ही अकाल पडेगा—वद सासतर तक म यही बात लिखी गई है। सारे बगाल म इसके ऐसे पापी जमीन्दार भरे पडे हैं। ये सब साले गौरमिण्ट स मिल गए हैं। इन्ही सबो ने रुपिया दै दै के गाधी महातमा और नेता लोगन को जेल म बद करवाय दीना है। पुलुस से गालिया चलवाय के अन्दोलन दबवाया इन लोगो ने। अभी मरे यहा भी इसी राकुस दयाल के आद-

मिया ने गोलिया चलाइ। मैंने तो किसीपर एक हाथ भी नही उठाया। उल्टे मैं ही मार खाता रहा भगवान जी जानते हैं। य सब बडे लाग बम अपना ही स्वारथ चाहते हैं। गरीब की बस्ती तो देख ही नही सकत। अरे इनका भी सतियानास हो जाएगा। आने दो जरा सुभाष बाबू की फौज ले क। वो इनको कालेपानी भेजगे और इनकी सरकार का भी। सब गरीब लोग ही तब सेठ-साहूकार और जमीदार बनाए जाएगे। अरे एक बार सुराज हुइ जान देओ तब हम गरीबा के दिन भी बहुरेंगे।'

मोनाई के लिए इस तरह निराश्रित होकर हाथ बाधे बैठा रहना असह्य हो रहा था। डेढ घटा हो गया किसीने इसकी तरफ आख उठाकर भी न देखा। मोनाई की जान सूली पर लटकी हुई थी उसका रोजगार धधा, चाल कुचाल, सब दयाल जमीदार के फमले पर ही निभर करता है। मगर दयाल जमीदार पाचू मास्टर और मिस्टर दास के साथ हसी-मजाक म मगन थे। शबत और फलो का नाश्ता हुआ दम पर दम और सिगरेटें चलती रही हा हा, ही ही होती रही—वक्त यो ही बीतता रहा।

शीशमहल जगमगा उठा। इन लोगो ने तब जाना कि बाहर अधेरा हो चुका है।

कमरे भर मे रग ही रग दिखाई देने लगे। काच पर बनी हुई, बडी बडी तस्वीरों के पीछे बल्ब जगमगा उठे। झाड फानूसो म जोत जग गई। बीच बीच म लगे हुए बडे बड आईनो से विस्तार पाकर शीशो से मढा हुआ हाल एक विशाल शीशमहल का भ्रम कराने लगा।

मेहराबदार और जगह जगह से घुमाकर पतली सीढिया पर से उछलता हुआ सतरगी पानी का झरना बह रहा था। गहरे बजनी रग के निहायत छोटे छोटे बल्बा से पहाड हरी रोशनी के दरख्त और पीले लाल फूल रोशन थे। सतरगी पानी का झरना उभरकर नजरा म आता था। नीचे रगीन फव्वारा! रग बिरगी रोशनिया को अपनाकर पानी की बूदें ऊपर की ओर उछल रही थी। झरने के पीछे शीशे पर बना हुआ जगल और पहाडो का दृश्य (निमिष मात्र के लिए) प्रकृति का भ्रम उत्प न करता

था। पेड़ों से झांकते हुए चन्द्रमा और तारा भरी रात में, दरख्त की एक शाख पर फूलों का हिंडोला डाले हुए एक नग्न सुन्दरी झूल रही है। एक तस्वीर, 'नूरजहां की सुहागरात' बनी थी। जहांगीर के रंगमहल के दरवाज़े की चौखट पर एक पैर रक्खे, लाज की मूर्ति नूरजहां, बारीक घूंघट में अपने मुखड़े पर बरसते हुए नूर को ढांप लेने की कोशिश में ठिठकी हुई खड़ी है, और शाहंशाह जहांगीर आग्रहपूर्वक उसका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ रहा है। एक दूसरी तस्वीर, 'विश्वामित्र मेनका'—तूफानी रात में राजर्षि की कुटिया में आश्रय पाकर छद्मरूपा मेनका बेसुध होकर सो रही है। राजर्षि विश्वामित्र उसे गर्म वस्त्र उढ़ाने के लिए आए हैं, आंधियों से अस्तव्यस्त वसन में धूप छांव-सी झलकती हुई अपराजिता नारी ने महातपस्वी के नेत्रों को बांध लिया है। 'स्वर्ग यही है'—इस चित्र में अनेक अर्द्धनग्न और प्रायः नग्न रूपसियों से घिरा हुआ शाहज़ादा बैठा है। नृत्य हो रहा है, दासी शराब का पात्र लिए खड़ी है, दो दासियां पंखा झल रही हैं और शाहज़ादे की बाहों में जकड़ी हुई दो मदमाती रमणियां उसे रिझा रही हैं। इनके अलावा उमर खय्याम और साकी, गोपी चीरहरण मुगल हरम का स्नानागृह, वसन्त, नारी का निमन्त्रण—संयोग के शृंगार के मांसल चित्रों से मन की वासनाएं स्थूल होने लगीं। उनका वेग और भार हृदय में व्यग्रता उत्पन्न करने लगा।

पांचू, मिस्टर दास, मोनाई सब एकाएक शीशमहल के जगमगा उठने पर चौंककर देखने लगे। सबको चकित करनेवाले अपने वैभव को दयाल ज़मींदार ने भी चारों ओर नज़र घुमाकर देखा और उनका चेहरा खुशी और दर्प से चमक उठा।

नज़रें बंध गईं, खयाल बंध गए—नग्न सुन्दरियों से सेवित अलिफ लैला के शाहज़ादे की भांति पांचू इस समय शीशमहल के विलासितापूर्ण वातावरण से घिरा हुआ था। उत्तेजना मन को अस्थिर करने लगी। अशान्त होकर उसने सोचा—'यह ऐश्वर्य दरअसल हमारे जीवन में है कहां? वह स्वप्न हम साधारण जनों के जीवन में साकार हो कब हो सकता

है ? विलासिता का यह आडम्बर पाप का काम है इंसान के दिमाग की विकृति का भद्दा प्रदर्शन है।

दयाल बाबू अपने ऐश्वर्य चमत्कार को दिखाकर अब पारा चढ़ाने लगे। मोनाई का इंसाफ करने के लिए बढ़े। जबान के तीरों से उसका रोम रोम बींध डाला। फिर नौकर को बुलाकर छत पर सामान लगाने का हुक्म दिया।

पाचू के मनोभाव दयाल जमींदार के विरुद्ध जा रहे थे।

मिस्टर दास दयाल के शीशमहल के जादू से बंधे हुए मुंह और आंखें फाड़ फाड़कर तस्वीरें देख रहे थे।

मोनाई जमींदार के पैर पकड़कर गिड़गिड़ा रहा था। अपना अपराध स्वीकार कर वह दयाल जमींदार से दंड की भीख माग रहा था। वह जानता था कि दयाल जमींदार लम्बी रिश्वत लिए बिना हरगिज न मानेंगे। इसलिए खुद अपनी तरफ से ही बात निकालकर उसने दयाल को बतलाया कि शास्त्र के अनुसार बिना दंड प्रायश्चित किए उसकी गति नहीं और वह हर तरह से सेवा में हाजिर है।

पांच सौ से बढ़ते बढ़ते हजार बोरों पर 'दंड' पूरा हुआ। बीच बीच में मोनाई ने दस हजार बार मालिक के चरणों की सौगंध खाकर भगवान और ईमान की दुहाई पीटी। सेक्रेटरी साहब को नजराने में दो सौ बोरे देना तय हुआ। मोनाई सब कुछ खुशी और उत्साह के साथ स्वीकार करता चला गया। वह सोचता था कि सब कुछ लुट जाने से तो भागते भूत की लंगोटी ही भली है। अपनी चापलूसी और खुशामद से उसने जमींदार और यूनियन बोर्ड के सेक्रेटरी को खुश कर लिया।

पाचू अकेला पड़ गया था। उसका कहीं भी जिक्र न था। उसकी तरफ किसीका भी ध्यान न था। यूनियन बोर्ड का यह कुरूप अर्द्धशिक्षित और घमंडी सक्रेटरी भी उससे बड़ा है—पाचू इस तरह से सोचता था और यह उसे खल रहा था। यह हार ब्राह्मण कुलोत्पन्न विद्वान पाचू मुखर्जी के हृदय को करुणार्द्र कर रही थी।

मोनाई अपनी बात पर कलई चढाते हुए, सेक्रेटरी साहब के सामने अपने अन्नदाता दयाल की तारीफो के पुल बाध रहा था—"ऐसा वैभव सारे बगाल मे किसी जमीदार का नही है। मालिक के सामने खास अगरेज कन्ट्रिर तक किस तरह अपना टोप उतारकर गोटमनी करता है, शहर के बडे-बडे हाकिम हुक्काम और रईस लोग मोहनपुर के महाराज का अतुल ऐश्वय देखकर किस तरह चकित होते है, किस तरह राजा इद्र की अप्स राए मोहनपुर के महाराज के इस शीशमहल म नाचन आती है ' वगरह लन्तरानिया चवन्नी भर सच म बारह आने झूठ मोनाई झाडता चला गया।

दयाल बहुत सन्तुष्ट होकर पूण गम्भीरता के साथ सुन रहे थे। मिस्टर दास मोनाई के मुह की तरफ देख रहे थे। लहर म आकर उन्होने मोनाई स गाव के 'नमक' का हाल पूछा।

मोनाई पहले तो सकुचाया फिर बनावटी मुस्कुराहट के साथ बोला—"सरकार राजा के घर म भला मोतिया का काल होता है। मालिक का इसारा हुइ जाय तौ आज ही भिजवाय दू।'

मालिक ने इशारा कर दिया।

मौका साधकर मोनाई ने अब अपना तीर छोडा, कहने लगा—सारा रुजगार-बपार चौपट हो गया है। जो कहीं गाव म यूनन बोट खुल गया तो मेर मिट्टी के मोल बिकने की नौबत आय जाएगी, अन्नदाता।' इसके बाद उसने अज किया कि गाव मे उसके चावलो का सदावत बटना बन्द हो जाए। वह यूनियन बोड का सारा चावल खरीदने को तयार है। सरकार दस रुपये के भाव से बेचेगी, वह बारह रुपये पर खरीदने को तयार है।

दयाल और दास की नजरें मिली। दयाल को उज्र न था। दाम पन्द्रह के भाव पर बेचने को राजी हुए। मोनाई ने जाहिर किया कि वह लुट चुका है। वरना पन्द्रह भी खुशी खुशी दे देता। दास पन्द्रह से नीचे न हुए। मोनाई न उस समय विशेष आग्रह न किया। दोना सरकारा की सलाम तिया और जजकारिया मनात हुए रात म अजीमा के साथ 'दो भिजवान

का वायदा करके वह चला गया।

मोनाई के जाने के बाद बातों का दौर बदला, यार लोग फिर रंगीनी में बहने लगे। शीशमहल की विलासिता दिलों पर छाने लगी।

हॉल के बाईं ओर बाहर पड़ती छत थी। नकली संगमरमर और संगमूसा का फर्श था, जिसपर अभी ही पानी छिड़का गया था। किनारे किनारे फूलों के गमले रक्खे हुए थे। मुंडेरों पर सफेद पत्थर की कूंडियों में फूल खिल रहे थे। छत पर चार छोटी आरामकुर्सियां रक्खी हुई थीं शराब का इंतजाम था।

जेठ की धुली चांदनी थी। दूर तक दिखाई पड़नेवाले खेतों के ऊपर पांचू एक अजीब किस्म की मनहूसियत महसूस कर रहा था। छत पर आने के बाद उसका मन और भी गिर गया।

शराब उसने जिंदगी में कभी चखी न थी। मगर दयाल के सामने वह अपने को पक्का शराबी सिद्ध कर चुका था। लाख हीले हवाले किए मगर पकड़े जाने पर चोर के लिए सजा से छुटकारा पाने की कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती। कड़वे घूंट को पी जाने के बाद नशे की उत्तेजना पांचू के अनुभवों में शामिल हुई। हारकर उसने अपने बारे में अच्छा-बुरा कुछ भी सोचना बन्द कर दिया। थके हुए मनुष्य की तरह निश्चेष्ट होकर नशे की चढ़ती हुई तरंगों में वह बहने लगा।

विलायती रोमांसों की बातें फिर शुरू हुईं। दयाल ने पांचू को किस्से सुनाने के लिए कहा। इच्छा और अनिच्छा की विपरीत धाराओं में फंसकर अनिश्चित गति से बहता हुआ पांचू बातचीत में भाग लेने लगा। उसकी इच्छा वहां से उठकर भाग जाने की होती थी मगर वह ऐसा न कर सका। वह अपने स्वभाव की असलियत से दूर जा रहा था।

शराब के साथ कुछ मुंह चलाने के लिए भी सामान आया। खाने की चीजें देखकर पांचू की आंखों में चमक आ गई। पांचू का हाथ बढ़ा लेकिन तुरंत ही उसके दिमाग में सारे परिवार की भूख सिमट आई। उसका हाथ रुक गया। मानसिक उलझन दूनी हो गई। एकाएक वह कुर्सी छोड़कर

उठ खड़ा हुआ। दास और दयाल के पूछने पर जवाब दिया—"यों ही टहलने को जी चाहता है।"

"अरे बैठो भी। यह भी कोई टहलने का वक्त है?" दयाल ज़मींदार ने पाचू का हाथ पकड़कर बैठा दिया।

मशीन के पुर्जे की तरह पाचू बैठ गया। कुछ क्षणों के लिए उसका मन उलझा। मगर भूख परेशान कर रही थी। भूखे परिवार के खयाल को ज़मींदार की दारू की आड़ में छिपाकर उसका हाथ मेज़ की तरफ बढ़ा। पाचू खाने लगा। हर निवाला खाकर वह दिल की आवाज़ को दबा रहा था। गुनाह को भूलने के लिए वह गुनाह करके अपने साथ न्याय कर रहा था। उसने यह सुन रखा था कि गम गलत करने के लिए शराब नायाब चीज़ है। पाचू इसके लिए भी कोशिश कर रहा था।

"दास बहुत ज़ोर-ज़ोर से बोलता है—बड़ी शेखी बघारता है।" दयाल ज़मींदार पर उसका असर कम करने की गरज़ से पाचू ने बातों को नया रुख दिया। अंग्रेज़ी सरकार के ज़ुल्म—बयालीस के विद्रोह से लेकर अकाल तक—वह जोश के साथ सुनता चला गया। सरकारी नौकरों को खास तौर पर लपेट में लिया, स्वार्थी, डाकू, रिश्वतखोर, राक्षस, देशद्रोही—जो कुछ भी नशे की धुन में ज़बान पर आया, कहता चला गया।

अंग्रेज़ सरकार और उसके नौकरों को गालियाँ सुनाने में दयाल ज़मींदार पीछे न रहे। यूनियन बोर्ड के सेक्रेटरी मिस्टर दास भी देश-प्रेम के नशे में बहने लगे। फिर उन्हें अपने ऊपर दया उमड़ी—"हम भी क्या करें? जब चारों तरफ लूट देखते हैं तो हमारी तबीयत भी ललचा उठती है। रिश्वत में साझा बटाने की गरज़ से हमसे बड़े अफसरान हमें दबाते हैं। उनके लिए भी हम लूट खसोट करनी पड़ती है। आजकल दिल्ली से माल आ रहा है। ये व्यापारी लोग थैलियाँ ले-लेकर हमारे पास आते हैं। फिर बताइए हम क्या करें? हम कोई ऋषि मुनी तो हैं नहीं मास्टर बाबू! ये तो जब तक सोशलिज़्म नहीं आएगा, देश की यही दशा रहेगी।

"आने दो सोशलिज़्म को!" पीकर दयाल ज़मींदार मेज़ पर खाली

गिलास रखते हुए दहाड़े—'साशलिज़म वाण्टेड! लाओ साशलिज़म।'

नौकर आ गया समझा सरकार कुछ माग रहे हैं।

दयालजू मीदार अपनी ही धुन म कहत गए— मास्टर, तुम हमारी पर प परशसा म अच्छा अच्छा लेख लिखो। तस्वीरें छपाओ हमारी। सब अखबारा म। समजा? एँ? क्या हम काबिल नही हैं? है न! देखा, हमस बडा ज़मीदार कौन? काई नइ। हम हम अपनी प्रजा को चावल बटवाया, दवा बटवाया और, और अब सोशलिज़म बटवाऊगा। ज़रूर बटवाऊगा।"

दास और पाचू दयाल के नशे को देखन लगे। बात सोशलिज़म स फिर शराब पर आई औरता पर आई जवानी पर आई और देखते देखत ही ज़बाना पर पलग बिछने लगे। शराब की तज़ी ने वातावरण म गर्मी पदा कर दी।

दयाल बोले— माऽऽस्टर, चाऽर चाऽर अ अ औरतें समझे? दा बोतल ह्विस्की पीके बट नेऽहर नऽहर डाउन। क्या समजे? आ!!!?

फिर गिलास टेबल पर रखते हुए वऽनावन को आवाज दी। यह दयाल का पाचवा पग था मिस्टर दास छठा खतम कर रहे थ और पाचू न अभी सब पहन गुनाह स ही छुटकारा नही पाया था। दयाल ज़मीदार न मिस्टर दास के गिलास पर नज़र डाली तीन चौथाई खाली हुआ था। दयाल बाल—'अबे पी जा। पी जा। दयू आज कितना पीता है तू!'

सिगरट का आखिरी कश खीच उस फेंककर धीरे धीरे धुआ छोड़त हुए मुस्कराकर मिस्टर दास न कहा— डाण्ट वरी सनी, मैं टू बाटल्स तक नामल रहता हू।

दयाल ज़मीदार हस फिर हसते हुए बाले—'अबे हा हा पराय धन पर गुलछर्रे उडाने हैं। पिए जा पिए जा जा साल क। मरा फ्लि भी तरी ब्रिटिश गवरमैंट स कम न ी है। वऽनावन! भर जा साल का गिलास। साल का हिड माऽऽम वाऽ नइ ह्टिज़ मास्टस कट्रोल वाइन ध्यार

ह्विस्की—पिलाकर इसकी सरकार को गालियां सुनाऊंगा।'

दयाल बड़ी जोर से ठहाका मारकर हंस पड़े। फिर उमड़े—' पिया बट्टा ! व दावन साहब का मूं में बोतल का मूं लागा देखा। पिया शाला।'

दयाल जमीं पर खुद उठ आए, व दावन के हाथ से बोतल झटककर मिस्टर दास की तरफ बढ़े—' शाला, तुमको खूब पिलाऊंगा। नई नई ! शाला बोलता, दो बाटल पी जाता। हामको धमकी देता ! ऐं ? पाश्शी रपट्टी का नौकर शाला—दुश्मन का कुत्ता ! शाला शमजता, दयाल विश्वास दो बोतल ह्विस्की नहीं पिला शकता। हरामजादा, हाम तुमको दस बोतल पिलाएगा। शाला, जाके बोलना अपनी गवरमेंट को कि इंडियन जमादार का दिल क्या है ! '

दयाल जमींदार एक हाथ से मिस्टर दास का कंधा पकड़कर उन्हें कुर्सी से दबाते हुए उनके मुंह में बोतल ठूसने की कोशिश करते हुए लल कारने लगे।

मिस्टर दास आफत में फंस गए थे। अपने दोनों हाथों से दयाल को दूर हटाने की कोशिश कर रहे थे। बीच बीच में दो दो, चार चार शब्द फूट जाया करते थे—' ये क्या मिस्टर विश्वास ? देखिए, देखिए। सच्ची का मजाक अच्छी नहीं होती। आप बहुत पी गए। आप मेरी बेइज्जती कर रहे हैं। मैं बहुत खा रहा हूं वरना '

दुबले पतले मिस्टर दास कुर्सी पर ही बैठे बैठे हाथ पैर पटक रहे थे। गुस्से के मारे गले में आवाज अटकती थी। गुलामी की जमीन पर पनपनेवाली अफसरी की वू लाजवती के पौधे की तरह मुरझा गई थी।

नशे में उभरनेवाली दयाल की उद्दण्डता पांचू पर भी असर कर रही थी। वह बेहद घबरा रहा था। वह सोचता था—"अगर मेरे साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया तो मैं घूसा मारूंगा। ऐसी जोर से मारूंगा कि याद करेगा। नहीं जरूर मारूंगा, फिर चाहे कुछ भी हो जाए। ये दास साला कायर है। बैठा-बैठा मक्कर रहा है यह नहीं होता कि धक्का दे। मरने का कायर का। लेकिन यह ठीक नहीं। इसके बाद दयाल मेरे ऊपर टूट पड़ेगा।

नशे म आदमी का क्या भरोसा ? इसे रोकना चाहिए।"

दो-तीन बार पाचू ने अपने विचार की पुष्टि की और फिर हठात् उठकर दयाल को मिस्टर दास से अलग किया—"य क्या कर रह हैं दयाल बाबू ? '

दयाल ने एक बार घूमकर गौर से पाचू का देखा। पाचू घबराया। दयाल बोले—' पिला रहा हू। तुम भी पियो। इसको साल गवरमेंट क नौकर को भी पिलाओ। पी साल।"

पाचू बेहद घबरा उठा था, और साथ ही उसे क्रोध भी आ रहा था दयाल को घसीटकर अलग करते हुए वह बोला—"मगर आप कर क्या रहे हैं ? अपने मेहमान के साथ ऐसा बर्ताव किया जाता है ! '

मिस्टर दास को सहारा मिला। दिल का दद उभड आया— देख लीजिए, देख लीजिए, मिस्टर मुखर्जी ! ये कितना अत्याचार कर रह है मुझपर ? ऐसे ही अत्याचारी जमीदारो के कारण ही तो हमारा देश गुलाम बना है और ऊपर से गुलाम कहता है गुलाम मुझको !

मिस्टर दास फूट फूटकर रोने लगे रोते रोत कहा— मैं आत्महत्या कर लूगा। य गुलामी का जीवन मुझे भार है। '

पाचू बुरी तरह से घिर गया था। दो दो शराबी दोना ही अपने अपन रग मे गाढे होते चले जाते हैं—क स क्नसे छटकारा मिलेगा ? कही कुछ हो गया तो ?

पाचू अस्थिर हो उठा।

व दावन मूर्ति की तरह चुपचाप खडा था। उसका सिर झुका हुआ था। अदब से हाथ बाधे खडा था। उसे मालिक और उनके दोस्ता की किसी जा बेजा हरकत को देखने का अधिकार नही उससे यह उम्मीद की जाती है कि ऐसे ऐसे मौका पर वह मालिक और उनके दोस्ता की किसी भी अच्छी या बुरी बात का नही सुन रहा। वह शून्य रहा। वह शून्य है नौकर और कुछ भी नही।

पाचू न घबराकर व दावन की तरफ देखा। उसकी झुकी गदन और

निर्विकार मुद्रा देखकर वह झुंझला उठा, कहा—'देखते क्या नहीं साहब को। सभालो उन्हें।'

दयाल जमींदार अब तक अपनी कुर्सी पर बैठ चुके थे। दास के रोने और पाचू के डाटने में उनका पारा एक डिगरी नीचे उतर चुका था। पाचू को घबराया हुआ देखकर बोले—'कुछ फिकर मत करो मास्टर। जरा चढ़ गई है दास बाबू को।'

मिस्टर दास गर्म होकर बोले—'मुझे नहीं आपको चढ़ गई है मिस्टर बिस्वास। आपने एटीकेट का—आपको इस तरह से मेरा अपमान '

दास का गला फिर भर आया। आसू उमड़ पड़े।

दयाल सभले। उन्हें खयाल हो आया कि वे आनन्द मनाने बैठे हैं। दास को समझाने लगे, दार्शनिक मूड में आकर कहने लगे—'चार दिन की जिंदगी में किसीसे लड़ना झगड़ना नहीं चाहिए। खाओ पियो मौज करो—यही जीवन की बहार है। कल तुम कहा होगे, और हम कहा होंगे। आओ पिए।'

फिर से महफिल आबाद हो गई। दास और दयाल दोनों ही नशे में एक दूसरे के बहक जाने पर हसने लगे। एक दूसरे में बेहद घुल मिल गए। वृन्दावन को खाली गिलास भरने का हुक्म हुआ। हुक्म की चाभी पर चलनेवाला पुतला वृन्दावन अपना काम करने लगा।

पाचू को डर लगा कि दयाल इस बार कहीं बोतल लेकर उसके सिर पर न धमक जाए। उसका पहला गिलास भी अभी तक आधे से ज्यादा खाली नहीं हुआ था। जिंदगी में पहली मर्तबा उसने शराबियों को इतने निकट से देखा था। वह मन ही मन घबरा रहा था।

वृन्दावन दयाल के गिलास में ढाल चुकने के बाद अब दास के गिलास को हाथ में उठा चुका था। इससे पहले कि वह पाचू की तरफ बढ़े पाचू ने अपना आधा भरा हुआ गिलास हाथ में उठा लिया और गिलास की तरफ देखते हुए कहने लगा—'काश कि आदमी का खून भी इस शराब की तरह सुनहला होता तब उसकी भी कीमत कम से कम उतनी तो लगती

ही जितनी कि शराब की है।

दयाल और दास पर इसका प्रभाव पड़ा। दोनों पाचू की ओर देखने लगे। अपने विद्रोह हो में यश का लाभ उठाते हुए मन्कील शराब का और में पाचू बतलाकर जिसने रहा था— इस गिलास में जितनी कीमत का पानी भरा है उससे दस आदमियों का पेट भर सकता है। मरभुखों की मौत ही इस गिलास में सुनहरा पानी में नशा बनकर हम लोगों को खुश कर रही है। आइए हम हजारों की मौत का एक जाम पिए।

कहकर झटके से साथ पाचू गिलास को होठों तक लाया। शराब ने होठों को छुआ। पाचू ने गिलास रख दिया।

नाटक सफल हो गया। दयाल और दास दोनों ही पाचू के वाक्य चमत्कार से पूरी तरह प्रभावित हो गए। बन्दावन इससे बेअसर अपना काम करता रहा—गिलासों में सोडा डालने के बाद हाथ बांधकर सिर झुकाकर खड़ा रहा। पाचू के कहने के साथ ही दयाल और दास ने भी अपने गिलासों को उठाकर हजारों की मौत के जाम पिए।

हजारों की मौत का जाम इस वाक्य ने दयाल और दास के भावुक हृदयों को कविता की तरह स्पर्श किया था। शराब से भरे गिलासों के सामने मरभुखों की बात पहले उन्हें खटका देनेवाली सिद्ध हुई थी। उन्हें शराब में गुनाह दिखाई देने लगा था जो वह न देखना चाहते थे। लेकिन जैसे ही पाचू ने नाटकीय ढंग से मरभुखों की मौत पर एक जाम पीने को कहा उनके दिलों की बाछें खिल गईं। यह भी कर सकते थे। कठोर सत्य घोंट का घूट बनकर हलक के नीचे उतर गया। सहानुभूति नशा बनकर दिमाग पर सवार हो गई।

दास बताने लगे कि जहां जहां वह गए उन्होंने किस तरह हजारों नंग भूखों की महादुर्दशा को अपनी इन्हीं आंखों से देखा। किस तरह उनके दिल में अपने देश की गुलामी के लिए दर्द उमड़ा, अन्न से भरे हुए सरकारी गोदामों को देखकर किस तरह उनकी इच्छा होती थी कि वह उन गोदामों को खाली करवाकर गरीबों को बटवा दें— 'हाय हमारा प्यारा भारतवर्ष!

हमारा बंग देश। क्या दुर्दशा हो गई हमारी। जिस पवित्र भूमि पर दूध-घी की नदियां यहा करती थी, वहीं अब अन्न के एक-एक दाने के लिए लोग मोहताज है?"

मिस्टर दास ने देश के दुख से अति द्रवित होकर फिर शराब का एक घूट पिया।

दयाल जमीदार ने ठंडी सांस छोड़ी। कहने लगे—'मास्टर सच कहता हूं बार बार मेरी इच्छा होती है कि अपना सब कुछ इन गरीबों को बांट दूं। हाय हाय, कितना कष्ट है इन बेचारों को।

कुछ देर के लिए सब मौन हो गए। दयाल और दास की बातों से पांचू ने उनमें मानवता की एक झलक देखी। वह सोचने लगा—'इसानियत ऐसे लोगों के दिल में भी अपनी जगह रखती है। लेकिन, फिर भी ये लोग इतने कठोर क्योंकर हो जाते हैं? इन्हें अपना पाप दिखलाई क्या नहीं पड़ता? क्यों स्वार्थी हो जाते हैं?'

यह सोचते हुए खुद को झटका—'उसने भी तो पाप किया है। घर भर भूखा है और वह यहां बैठा हुआ रंगरेलियां मना रहा है, खा रहा है, पी रहा है।

अपने से बचने के लिए पांचू को कहीं भी ठिकाना न था। अपनी ही नजरों में वह खुद इतना गिर गया था कि दूसरों के गुनाहों की तरफ आंख उठाकर देखने की भी हिम्मत नहीं होती थी। शराब के लिए नफरत थी गुनाह के लिए नफरत थी, और गुनाह के खयाल से बचने के लिए दिल में बेहद बेचैनी भी थी। जब कोई बचाव न सूझा तो ईश्वर की शरण में पहुंचा—"मैं क्या करूं? ईश्वर ने ही मुझे इस कदर कमजोर बनाया है। और फिर अगर मैंने गुनाह किया तो वह मेरा गुनाह नहीं।'

इस खयाल से भी पांचू को चैन मिला। छटपटाहट ज्यादा महसूस की। झटके के साथ बुद्धि से संबंध टूट गया। तेजी से हाथ बढ़ाकर उसने गिलास उठाया और आंखें मींचकर एक घूंट निगल गया। जल्दबाजी की वजह से एक घूंट में ज्यादा पी गया, गले में फंदा पड़ा खांसी पैदा हुई,

आंखों में जलन और सिर की नसों में ज्यादा उत्तेजना हुई।

दम तोड़कर पाचू ने अपना सिर कुर्सी से टिका लिया। उसे जरा भी चैन न था।

घड़ी के घण्टे बजने लगे। नशे में झटके के साथ सिर उठाकर पाचू ने देखा। घड़ी कमरे के अंदर थी, सामने से दिखाई भी नहीं देती थी। कान लग गए—एक, दो, तीन, चार, सात, आठ, नौ घण्टे बजने बंद हो गए।

नशे में पाचू चौंका। फिर खयाल जमा—'नौ बजे हैं। बड़ी रात हो गई। अब उठना चाहिए। मगर मन मुंह चुराता था—'कैसे जाऊं?'

मिस्टर दास अपने ढंग से केदारा गा रहे थे और दयाल जमींदार जी खोलकर दाद दे रहे थे।

'बेवकूफ कहीं के।' पाचू ने मन ही मन में कहा और आसमान की ओर देखने लगा।

जेठ की फीकी चांदनी थी। धूल भरे आकाश में तारे पाचू को बड़े फीके लग रहे थे। 'आधा चंद्रमा अच्छा नहीं लगता, खूबसूरती मारी जाती है। चंद्रमा या तो पतला, नुकीला अच्छा लगता है या फिर पूनो की रात का। ये तो बड़ा भद्दा लगता है—एकदम मनहूस। कितनी निष्प्राण चांदनी है। कितनी मनहूसियत फैली हुई है चारों तरफ! दम घुटता है!' खयालों के साथ ही उसका मन भी उखड़ गया।

'मैं अब चलूंगा दयाल बाबू। बड़ी देर हो गई है।" कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

मिस्टर दास और बाबू में बहस छिड़ गई थी। मिस्टर दास अपने गीत को केदारा राग में गाया हुआ मानते थे और दयाल जमींदार उसे बागेसरी समझकर सराह रहे थे। मिस्टर दास ने एतराज उठाया। बहस छिड़ गई। केदारा के उदाहरण देने के नेक इरादे से दयाल बाबू गाते गाते अपने गले के मुताबिक भीमपलास की ओर मुड़ गए। दास ने उसके मालकोस होने का फतवा दे दिया। दयाल बिगड़ पड़े।

केदारा भीमपलास, और मालकोस के इस झगड़े के बीच में पाचू उठ खड़ा हुआ था—'मैं चलूंगा अब'

दयाल और दास, दोनों ने ही चौंककर पाचू की तरफ देखा। दयाल के कुछ कहने से पहले ही एक नौकर आ गया। अदब के साथ उसने बतलाया कि सोनाई ने दो औरतें भिजवाई हैं।

दास का चेहरा दमक उठा। बनाव होकर वह दयाल जमीदार और उस नौकर की ओर देखने लगा।

दयाल ने हुक्म दिया—'भेज दो।"

औरतों के साथ अज़ीम दरवाजे के पीछे ही खड़ा रहा। फौरन ही आगे बढ़कर सलाम किया। लाज से सिकुड़ती हुई, घूघट से मुंह ढाके दोनों स्त्रियों ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

पाचू ने देखा, दोनों औरतें धुली हुई उजली धोतियां पहनकर आई हैं। अरसे से गांव में औरत मर्द, किसीके तन पर उजला कपड़ा नहीं दिखाई देता था। ये उजली, नई धोतियां पाचू की आंखों के लिए नुमाइशी चीज़ हो गई थीं।

दोनों नौकर और अज़ीमा बाहर चले गए।

दयाल जमींदार गर्माए— हटा घूघट। हाथी की सूड़ें निकाल रखी है।'

औरतों के हाथ कांपकर अपना घूघट हटाने लगे। पाचू ने कौतूहल से देखा—बढ़ई मुनीर की विधवा और और कालीराय की पत्नी।

कालीराय उसका बचपन का घनिष्ठ मित्र था। तीन महीने हुए वह गांव से भाग गया था। पाचू कालीराय की पत्नी को खूब जानता है। उसे बौदी कहता है। कालीराय के पिता यहीं हैं।

'बौदी यहां?' पाचू की आंखों के आगे सितारे घूम गए।

दयाल जमादार ने उठकर दोनों के सिर का कपड़ा खींचकर नीचे गिरा दिया।

पाचू ने अपना सिर झुका लिया था।

दयाल जमींदार दोनों को देखकर खुश हुए— मोनाई ने अच्छा काम किया है।' मुनीर की बेवा की ठोडी उठाकर उसके गल म चुटकी लेते हुए बोले—'किसकी औरत है तू?'

सवाल के साथ ही पाचू की नजरें उठ गइ। कालीराय की पत्नी की आखें भी सकपकाकर उठी। उसकी आखें अचानक पाचू की उठती हुई आखों से मिल गइ। उस काठ मार गया। चेहरा जद पड गया और वह आखें उलटाकर गिर पडी।

पाचू तेजी से कमरा छोडकर बाहर चला आया। उसके लिए जीवन असह्य हो उठा था। वो' दो स वो दो तक—घर तक—तुलसी मगला

उसे होश नहीं था कि वह क्या कर रहा है किधर जा रहा है। आखों म आसू छलछलाए हुए तमतमाया हुआ चेहरा और परा के साथ आधिया बह रही थी। शीशमहल पार किया झरने के पास स गुजरकर दरवाजे के बाहर आया और नान शू य सा नीचे उतरने लगा। तेजी क साथ लट पटाते हुए परा की खटाखट आवाज सीढियो पर सुनाई देती थी।

व दावन पाचू की यह दशा देखकर समझा कि बहुत पी गए हैं। उस गिरने से बचाने के लिए वह झपटकर आया। उसने दोना हाथो स पाचू को थाम लिया। पाचू निश्चेष्ट सा उसके ऊपर लुढक पडा। उसकी आख बद हो गइ। व दावन ने सभाला—'छोटे ठाकुर! छोट ठाकुर!'

पाचू ने आखें खोली, व दावन को देखा। व दावन बोला—'घर पहुचा आऊ छोटे ठाकुर?'

पाचू की शम पर करारा तमाचा पडा। वह बडी तेजी के साथ सभला, सीधा खडा हो गया और सिर झुकाकर बोला—'नहीं व दावन मैं ठीक हू।'

वन्दावन के सामने भी पाच की निगाह झुकी। पाचू के अ तर म लज्जा-जनित पीडा अब पहाड बन गइ थी। अपनी अतिशय हीन भावना पर वह कठोर अनुशासन क र रहा था। वह पत्थर बन रहा था।

वृन्दावन न पाचू क पर छुए और हाथ जोडकर बोला— छोटे

ठाकुर ! बगला की पचायत म इसा का कौन काम ? अब तक तो नही, मुल आज आपको हिया देख के समुझ पडा कि कलजुग आय गया। जब पहाड डोल गए, तब धरती कस बचेगी ?—असी लीला भगवान की !' कहते हुए वृन्दावन ने एक निसास छोडी और हाथ हिलाकर, सिर लटकाए हुए एक सीढी ऊपर चढ गया।

पाचू ने अपना सिर उठाया और तान लिया। वृन्दावन की तरफ दखकर बोला— तुम मुझसे बडे हो वृन्दावन। मुझे क्षमा कर दो।

वृन्दावन ने घूमकर पाचू को देखा। वह तेजी के साथ नीचे उतर रहा था।

सारा ससार मुझसे बडा है। हर शख्स मुझसे बडा है। दुनिया की हर चीज मुझसे बडी है। मुझे किसीको भी छोटा समझने का अधिकार नही—कोई नीच नही, कोई बुरा नही। सारी बुराइया मुझम हैं। मैं सबसे बुरा हू। मैं ही बुरा हू।'

राह न पाकर हँस आखो से बरस पडा। दोनो गालो पर धीर धीर आसू बह रहे थे और पाचू सिर झुकाए हुए, दयाल जमीदार की हवेली क बाहर गाव म जा रहा था।

हठ के साथ पाचू अपने अह को छुरिया भोक रहा था। हुक्म की चाभी पर चलनेवाला बेजान पुतला, गुलामो का गुलाम, वृन्दावन इस समय उसकी नजरो म बहुत ऊचा उठ गया था—गुरु-सा महान लग रहा था।

अकाल पडने से पहले पाचू की महत्त्वाकाक्षाए सयत भाव धारण किए हुए थी। बिना किसी प्रकार के मानसिक द्वन्द्व क उसका जीवन सधा हुआ और सीधा चल रहा था। अकाल म उसने अपनी आर्थिक परवशता और उसमे उत्पन्न जीवन की कठिनाइयो का अनुभव किया। कुलीनता, आदर्श उच्च शिक्षा और स्वाभिमान के सहारे वह अपनी आर्थिक हीनता से लोहा लेकर अपने को ऊचा उठाए रखने का प्रयत्न करता था, और यहा असफल होकर वह अस्थिर हो उठा था। और एक बार आत्मविश्वास खो

बढ़ने के बाद उसे अपने मन की थाह न मिली। वह सदैव अंतर्द्वंद्व की गहराइयों में डूबता उतराता रहा। समाज में अपने स्थान के लिए वह आवश्यकता से अधिक व्यग्र रहने लगा। व्यग्रता ने बुद्धि का संयम खोया, और बड़प्पन की चाह ने ही उसे दयाल जमींदार का मुसाहिब बनाकर आज अपनी ही नज़रों में बेहद गिरा दिया। मन की इसी गिरी हुई हालत में पाचू ने खुद को दुनिया का कमतरीन इंसान स्वीकार किया। इस अप्रिय बात को स्वीकार करने के कारण उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह चली।

आंसुओं में गुबार निकल आने के बाद, धीरे धीरे बुद्धि संयत हुई। वह सोचने लगा—'लेकिन बड़प्पन की चाह किसमें नहीं होती ?'

सवाल खुद ही जवाब भी बन गया—'तब फिर किसीके बड़प्पन को दबाकर उसपर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का अधिकार भी किसी को नहीं। हर मनुष्य स्वभाव से ही बड़ा है। इसलिए हर मनुष्य समान है एक सा है—एक है।

'फिर यह छोटे बड़े का भेदभाव जो हर तरफ दुनिया में दिखाई देता है ?

यह उसी बुराई का परिणाम है, जिसने मुझे गिराया है।

पाचू ने अपने पतन में संसार के पतन का कारण देखा—'खुदी के लिए सारी दुनिया तबाह हुई जा रही है।' पाचू ने सोचना शुरू किया—'लेकिन यह खुदी है क्या ? और क्या है ? अपने अस्तित्व की चेतना को मनुष्य सर्वव्यापी और सामूहिक रूप में क्यों नहीं देखता ? मैं अपने को सारी दुनिया से अलग रखकर क्या देखता [illegible] ' दुनिया से अलग रहकर मैं अपनी असलियत का अनुभव ही क्योंकर कर सकता [illegible] ? सम्मिलित रूप में समाज की प्रत्येक क्रिया प्रतिक्रिया का प्रभाव मुझपर पड़ता है और मुझे चेतन बनाता है। मैं अपने हर अच्छे और बुरे काम का निर्णय समाज के तराज़ू पर ही करता हूं। मैं ही नहीं हर एक आदमी यही करता है। अपने हर काम में मनुष्य को दुनिया के रुख वरुख की ही फिक्र रहती है

फिर वह अलग कैसे हो जाता है? क्यों हो जाता है?

प्रश्नों की लड़ी पूरी हुई, परन्तु उत्तर उसे नहीं मिला। पाचू का सिर ऊपर उठा, मानो अपना मार्ग खोजने का प्रयत्न कर रहा हो। लेकिन सामने जो कुछ था उसे देखकर वह चौंक उठा। चांदनी में दूर तक— सामने, आसमान लाल हो रहा है। क्या? लपटें उठ रही हैं। आग! कहां लगी?

पाचू का कौतूहल भय के साथ-साथ बढ़ा। वह तेज कदम बढ़ाने लगा— क्या भूख और महामारी ही काफी नहीं थी जो प्रकृति को भी जुल्म ढाने की ज़रूरत महसूस हुई? भयंकर आग है!

पाचू और तेजी के साथ आगे बढ़ने लगा।

मोनाई की दूकान दिखाई देने लगी। शोर और हंसी सुनाई देने लगी। आग की नाचती हुई लपटों से घिरा हुआ मकान दीखने लगा—'स्कूल के पास है... नहीं, स्कूल में ही आग लगी है'—पाचू के दिल की धड़कन बढ़ गई। उसने मोनाई की दूकान की तरफ देखा। दूकान सूनी पड़ी थी। वह दौड़ने लगा।

आदमी चारों ओर, घेरे में उछल-कूद और शोर मचा रहे थे। स्कूल में आग लगी थी। हवा में गर्मी भरी हुई थी। अट्टहास, गाना, शोर सब मिलकर कानों में भयंकर रूप से समा रहा था।

दिन ढले, शाम को छेदासिंह ठेले पर बोरे लदवाकर स्कूल में लाया था। अपने और अपने साथियों के लिए जो बोरे उसने मोनाई से ज़बर-दस्ती वसूल किए थे, वे भी स्कूल के ही एक कमरे में लाकर रखे गए थे। बांटे जाने वाले चावल के बोरे बाहर रखे गए। अपने लठैत साथियों की मदद से छेदासिंह ने गांव में चावल बांटना शुरू किया। उसमें भी जितनी बन पड़ी काट-फांस की। फिर भी चावल सबको मिल रहा था। खुशी सबके दिलों में नाच रही थी।

अन्न का देवता आज मानव पर प्रसन्न हुआ था। जिसके पीछे पैसा टका गया, गहना कपड़ा गया, घर का तार-तार बिक गया, आबरू गई,

लाज गई धरम ईमान गया मा बाप, बहिन भाई स्त्री और बच्चे तक बिछुड़ गए— जान देकर भी जिस अन्न के देवता को मानव संतुष्ट न कर सका था वही आज छेदासिंह की गाड़ियों के साथ लुट रहा था। जीवन का भिखारी इंसान आज आखिरकार जीवन के सहारे को पा ही गया। वह खुशी के मारे पागल हो उठा। हंसी आंसू चीख पुकार गाने नाचने गले मिलने और धौल धप्पा करने के रूप में खुशी बहुत दिनों बाद आज इंसान के दिल की गहराइयों से निकलकर वातावरण पर छा जाने के लिए वेग के साथ बढ़ रही थी। आज मोहनपुर गांव में अन्न का त्योहार था। लोग नाच रहे थे चक्कर खाकर गिर पड़ते थे चावल बिखर जाता था लोग बीन-बीनकर छीन छीनकर खा रहे थे मुट्ठी भर भरकर चावल मुंह में रखते थे— हंसी फूटी पड़ती थी।

अजीम गुस्से में उबला पड़ता था। जिस तरह आज छेदासिंह ने उसके मालिक और गुरु मोनाई की तथा उसकी बेइज्जती की थी उसका बदला लेने के लिए उसके दिल में तनाव हो रहा था। छेदासिंह और उसके साथियों की यह शान और खुशी उससे न पची। अंधेरा होते ही पोखर के पीछे से जाकर उसने स्कूल के कमरे में आग लगा दी जिसमें छेदासिंह और उसके साथियों ने लूट के हिस्सों के बोरों को लाकर रखा था। आग जगह जगह से लगाई गई और देखते ही देखते आसमान में लपटें उठने लगीं।

चारों ओर आग-आग का शोर मच गया। छेदासिंह और उसके साथी घबराकर बरामदे से बाहर भागे। चावल पाने की आस में घेरे हुई भीड़ छेदासिंह के हटते ही चावल के बोरों पर टूट पड़ी। उन्हें आग की चिन्ता नहीं थी। पेट की आग को बुझाने के लिए वे चावल के बोरों से जमे रहे थे।

आग की लपटों को देखकर नाच शुरू हुआ। उनके लिए यह एक खासा तमाशा बन गया। किसी को सूझ गया इस आग में चावल पकना चाहिए। चारों ओर पकवान पकाइए का शोर मच गया।

बहुत स लोग इधर उधर से टूटे फूट मटके, नादें वगरह लान के लिए लपके। पोखर से पानी भरकर लान लगे। शक्ति से अधिक वह काम कर रहे थे। इस समय कमज़ोरी और थकावट के लिए कहीं भी, ज़रा सी भी, गुंजाइश न थी।

आग की लपटें ऊंची उठ रही थी। सामने छेदासिंह और उसके साथी हतप्रभ और अवाक खड़े थे। परिस्थिति उनके रौब और दबदबे और बस क बाहर थी व चू तक करने की हिम्मत नहीं कर सकते थे।

आग के आसपास टूटी फूटी नादों और मटकों मे पानी भरकर चावल छोड़ा जा रहा था। लोग सोचते थे, पक जाएगा। कुछ यों ही फकी मार रहे थे। कच्चे चावल पेट म चुभन थे मरोड होती थी, चीख पुकार होती, कोई गिरता था, कोई पेट पकड़कर मसलता था, कोई खुशी से नाचता था, कोई थककर चूर हो गया था।

लपटों की लाल रोशनी में काली, खुरदरी झिल्लियों स मढ़े हुए हड्डियों के ढांचे खुशिया मना रहे थे। सिर और चेहरे की हड्डियों के हर उभर नुमा हिस्से, गहरे गड्ढों म धमी हुई आखें दातों की कतार, दाढ़ी और सिरों के बाल ज़्यादातर उड़े हुए—जगह जगह उगे हुए उनके गुच्छे, कंधों की उठी हुई हड्डिया, पसलियों म पेट की खोह, कमर म लिपटे हुए फटे चिथड़ों म चमकती हुई कूल्हे की हड्डिया, घुटनों की उठी हुई हड्डिया—लपटों की रोशनी म सिर्फ हड्डिया ही हड्डिया चमकती थी। अपना ही रक्त मास खा खाकर मानव देहधारी जीवन अनैतिकता और अन्याय के खिलाफ जेहाद बोल रहा था।

सूखी टांगें, धंसा पेट, अस्सी बरस के बूढ़ों की तरह झुर्रिया लटकी हुई गालों के गुब्बुल्ले नोक की हद तक अवड़ा के भीतर धंस हुए हंसने पर दांत उस रोशनी म तलवार की धार की तरह चमकते थे—चार-पांच स लेकर दस बारह बरस तक के बच्चे, नौजवान, जवान, अधेड़ बूढ़े, खाज गर्मी वगैरह चर्म रोगों से सड़े हुए शरीर वाले छोटे-बड़े, ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, हिंदू मुसलमान—मानव—जीवित क

मेला लगा था। लपटों की पार्श्वभूमि में भूख का त्यौहार मनाया जा रहा था। जन समूह आनंद से परिपूर्ण था। उन्हें तन्मन्दन का होश नहीं था। अन्न को जीतकर उन्हें भूख का ध्यान नहीं रहा भूख को जीतकर उन्हें अपना ध्यान नहीं रहा। बहुत बड़ी कीमत चुकाकर मानव जीवन आज अपना त्यौहार मना रहा था। वह मुक्त था—भय से चिन्ता से, भूख प्यास मान-अपमान से, बुद्धि से ज्ञान से, चेतना से।

आबरूदार (जिन्होंने सरकारी तौर पर अपने घरों में अकाल होने की घोषणा नहीं की थी मगर जिनके घरों का हाल कलकत्ते और तमाम हिन्दुस्तान के अखबारों में रोज छपता था) जरा दूर जगह जगह टोलियों में खड़े देख रहे थे। मौका पाकर चावल भी चुरा लाते थे।

अजीम बदला लेकर जीत गया था। मगर जब उसने मोनाई से अपने इस महान कृत्य का बखान किया तो उसने इस पटवारा। उसकी चाल के अनुसार यह सब चावल जनता को ही मिलता और छन्नासिंह हाथ मसलकर रह जाता। मगर छलक जानेवाले दूध पर पछताना मोनाई का स्वभाव नहीं। दोनों एक कोने में खड़े हुए सामने का दृश्य देख रहे थे।

अजीम बोला— क्या नजारा है ! भूत जैसा भयावना !'

मोनाई बाप्टम सामने देखते हुए, चेहरा निर्विकार रखकर अति गम्भीर भाव से बोला—' ये भूत नहीं है अजीमा ये है वर्तमान—परसच्छ वर्तमान—भूत से भी ज्यादा भयंकर। ये भूख मेरे गोदाम का एक दाना भी नहीं छोड़ेगी। आज की जागी हुई भूख बरसों नहीं बुझेगी। गोलियाँ और लाठियाँ भी इसे नहीं रोक सकतीं।

मोनाई की इस बात से अपने सामने वाले दृश्य की गम्भीरता का अनुभव करते हुए अजीम ने विनित स्वर में पूछा—' तो चाचा फिर ?'

अजीम के कंधे पर हाथ रखकर, आवाज दबाकर मोनाई कहने लगा—'बेटा अपने बाप से जाकर कह दे तुरन्त फुरत आठ नावों का बन्दोबस्त कर दे। दुइ घंटे में सब सराजाम हुई जाए—समझे ? और देख तू लौट के

था, तब तक मैं घर पहुँचता हूँ। दुई सौ रुई अटी म बाध के जग छदामिह के पास लपक जाना। पिछली बार ता पचास म निपट गया था, मुल अबकी दर मामला और है। जहा तक बन बसती म पटाना—आगे फिर राम मालिक हैं। बीस आदमी लाना। पचास वाले छाड के बाकी गलारात आज ही लदाए देता हूँ।"

अजीम न पूछा —"कहा ल जाओगे चाचा ?"

"अभी तो दवीपुर की हाट जाऊगा। औ' हुआ से जो जुगुत बढ गई तो कलकत्ते तक निकल जाऊगा। सुना है माल सैकडे पर टकार ल रहा है आजकल।"

अजीम चिन्ता प्रकट करत हुए बोला— सुना है आजकल दरिया-पुलुस बहुत बढ गइ है चाचा।'

मोनाई न निश्चिन्त स्वर मे उत्तर दिया— 'अरे बटा बडे-बडे पानी दख चुका हूँ। वे दरिया पुलुस भी देख लेऊगा। और यों तो, इसी बला हारे जुआरी का दाव है मेरा।'

'पर चाचा हारे जुआरी के दाव से कस चलेगा ? खारा न साथ, खुदा न करे, तुम पकड लिए गए तो यहा का क्या होगा ?"

मोनाई मुस्कराया अजीम के कधे पर प्यार से हाथ रखकर बोला— 'मेरी चिन्ता न कर बेटा। मोनाई केवट किसीकी पकडाई म आनवाला जीव नही। हा बोर भले ही पकडे जाए तो मुल सो कुछ नही भगवान जा ने चाहा तो सब कुसल होएगी। वैस इधर का इतरजाम भी म्स कर चला हूँ।

अजीम को लेकर मोनाई अपन घर की ओर मुडा— यूनन बोट क मिस्तरी साहब आए हैं। जमींदार साहब के यहा भेंट भई तो मैंन पानी चढ़ाया। तुम्हारी वो दानों औरत भी काम करगी। अभी पन्द्रा पर अडे थ, मुल माइत कल मान भी जाए। मैं बारह की बात कह आया हूँ। तीस हजार रुपया गिनी का द जाऊगा। पौन पन्द्रा तक जाके पटाना। फिर भी न मानें तो रुपिया पटक के माल उठाय लाना। दूसरी खेप म जो

हजार वोरे भी जब निकाल आओगा तब जाके घाटा पूरा होवगा। क्या समझे। बडा जखम कीना है जमीन्दार ससरे न भी। य साला भी मर हायों '

मोनाई की बाह झिंझोडकर अजीम ने धीरे स कहा—'चाचा छाट ठाकुर।

पोखर के किनारे खडा हुआ पाचू अपन सामन के दश्य म खो गया था। वह टकटकी बाधकर अपने स्कूल स निकलती हुई लपटा को दख रहा था।

पाचू का सपना जल रहा था। लपटें उसके दिल से उठ रही थी। राम दुलाल खूटा और गाव क दूसरे बडे बूढ़ा के विरोध से तनकर उसन इसी जमीन पर दूले वाग्दियो क लडको को पढाना शुरू किया था। इसी जमीन पर वह बड बडे जमींदारो साहूकारो रईसा अफसरो और कलेक्टर तक को ला चुका था। बच्चा का शोरगुल खेल कूद दर्जों म बठकर पढना दर्जों म बच्चा को पढात हुए मानाई और गोविन्द मास्टर गणेश—जिस दिन गणश मरा वही पाचू के स्कल आने का भी आखिरी दिन था। उसी दिन मुनीर मरा था। उसी दिन मोनाई से बचो का सौदा किया था। उसी दिन, जीवन म पहली बार पाचू न आत्मविश्वास खोया था। उसी दिन जनता के पवित्र दान से खरीदी हुई बेंचा को अपने स्वाथ के लिए बचकर पाचू का अभिमानी मस्तक सत्ता क लिए झुक गया था। स्कूल की इमारत के साथ-साथ पाचू की पुरानी स्मृतिया पाचू का गौरव पाचू का कलक भी जल रहा था।

आग स उसकी टकटकी बध गई थी पत्थर की मूर्ति की तरह वह खडा हुआ था— मेरा पाप जल रहा है। मरा अहकार जल रहा है।'

लाज के बधन तोडकर स्त्रिया का दल आया। चावला पर लाज विहीना स्त्रिया क धाव स आन दमग्न पुरुष-दल चौंका। स्त्रिया अनावत दशा म वाहर चली आइ—पागलपन की अवस्था म भी पुरुष-समाज यह देखकर चीख उठा। पुरुषा को क्रोध आया। वे स्त्रियो पर गालिया की

बौछार करते हुए टूट पड़े। स्त्रियाँ भी पीछे नहीं हटीं। उन्हें भी खाने का हक है, उन्हें भी जीने का हक है। पुरुष इस हद तक स्त्री को अपनी दासी बनाकर नहीं दबा सकता।

पाचू उन्हें देखकर सोच रहा था—"हम सबको समान अधिकार स्वीकार करना ही होगा। जब तक एक भी स्त्री दासी रहेगी उसके गर्भ से दास ही उत्पन्न होंगे। दासता जीवन को मृत्यु की जड़ता से बाँध देती है। यह अकाल हमारी दासता का परिणाम है। यह अकाल मनुष्य की दासता का परिणाम है।

अपने पेट की आग को बुझाने के लिए पुरुषों ने स्त्रियों के तन के कपड़े बेच दिए उनका तन भी बेच दिया—फिर नारी की कौन-सी लाज मिट जाने के भय से पुरुष इस समय त्रस्त है?

दो पुरुष एक स्त्री को पीछे ढकेल रहे थे। उस स्त्री ने उनमें से एक के हाथ को क्रोध से चबा लिया। उसका मांस उखड़ आया। पुरुष ज़ोर से चीखकर गिर पड़ा।

पाचू ने आँखें मीच लीं। फिर उसके मन में हुआ कि इन्हें बचाया जाए, किन्तु पास जाने का साहस न हुआ।

पाचू घर लौट चला।

वह सोच रहा था—"मनुष्य यहाँ तक गिर गया है! फिर बर्बर युग में आज में अंतर ही क्या रहा? तो क्या मानव की आज तक की प्रगति, उसकी सभ्यता, ज्ञान, विज्ञान सब गलत हैं?"

पाचू की बुद्धि इसे स्वीकार करने के लिए तैयार न थी।

"इस पतन का कारण," उसने आगे सोचा—"व्यक्ति का अहं है जो दूसरे को गिराकर प्रसन्न होना चाहता है। दूसरे को अपना गुलाम बनाकर पाशविक शक्ति के बल पर अपनी सत्ता चाहता है। जहाँ तक यह वृत्ति रहेगी, जब तक दुनिया में एक भी गुलाम रहेगा, दुनिया में यही अशान्ति बनी रहेगी। मुक्त होने के लिए मनुष्य को अपने इस जंगली संस्कार का बीज नाश करना होगा। सभ्य बनने के अनेकों प्रयोगों में समाज का

ग्य करते हुए, व्यक्ति हर बार अनजाने तौर पर अपने को ही महत्त्व देता चला गया। बौद्धिक और दार्शनिक रूप से भी उसने समाज को सदा अपना चेला बनाकर ही आगे बढ़ाया। उन्हें अपना साथी बनाकर साथ-साथ आगे नहीं बढ़ा। व्यक्ति समाज का नेता नहीं साथी बनकर ही ठीक तरह से चल सकता है। मानव और मानवता को तभी एक रूप में देखा जा सकता है। सच पूछो तो इन दो नाम देकर अलग अलग देखना ही भ्रम है। एक ही चीज के दो नाम हैं— व्यक्ति और समाज—मानव और मानवता।

विचारों की गति से ही पाचू के पैर भी आगे बढ़ रहे थे।

७

इधर कई दिनों से गिद्ध मकड़ों की संख्या में आसमान पर मंडराया करते हैं। वे बड़े निडर हो गए हैं। चलते फिरते आदमियों को छोड़कर पड़े हुए हर ज़िंदा और मुर्दा आदमी को वह अपना आहार मानते हैं। गाय, बैल आदमी औरतें बच्चे बात की बात में गिद्धों सियारों और कुत्तों द्वारा ठठरियों में परिवर्तित कर दिए जाते हैं। गांव में जगह जगह ठठरियां और अधखाई सड़ती हुई लाशें दिखाई देती हैं।

स्कूल की होली जलाकर चावलों से खेल चुकने के बाद गांव तबाही की अंतिम दशा को पहुंच चुका था। भूख के साथ ही साथ हैज़ा और मलेरिया का भी ज़ोर हुआ। पर के पर साफ होने लगे।

मोनाई उसी रात माल लदवाकर बाहर चला गया। अज़ीम ने मोनाई के आदेशानुसार यूनियन बोर्ड के सेक्रेटरी से हज़ार बोरे खरीद लिए और उन्हें लेकर वह खुद ही सेठ बन बैठा। उसने अपनी नावें चलानी शुरू कर दीं।

बढ़ई नूरुद्दीन मुनीर की बीबी को लेकर कलकत्ते गया है। मुनीर की

दोनों निस्सहाय लड़कियाँ माँ-बाप से बिछड़कर बेहाल हो गई। पड़ोस के दीनू ने उन्हें अपने घर में शरण दी। दया की भावना अब भी कभी-कभी जाग पड़ती थी। दीनू के घर में कोई नहीं रहता था। उसकी पत्नी अपने बच्चों को लेकर मके चली गई थी। बाद में खबर आई कि वह बच्चों को छोड़कर गोरों की पलटन में अपना तन बेचने लगी है। दीनू को इससे गहरा धक्का लगा। बीवी बच्चे खोकर भूख का मारा दीनू चाँद और रुकिया को अपना वात्सल्य प्रेम देकर जी बहलाने लगा।

खाने को दीनू के पास कुछ था नहीं। चाँद और रुकिया की भूख देख कर वह तड़प उठता था। भूख के कारण रोती हुई बच्चियों को अपने पास सुलाकर रोते रोते वह रात बिता देता था। दीनू खुद घर से निकलता था, न बच्चियों को ही कहीं जाने देता था। धीरे धीरे उसने बोलना छोड़ दिया। आठों पहर वह गुम होकर बैठा रहता और लुटे हुए घर को निहारा करता। एक दिन वह बड़ी देर तक चूल्हे की ओर देखता रहा। देखते देखते उसे विचार आया कि जिस दिन से चूल्हे में आग जलनी बन्द हो गई है उसी दिन से घर की यह दुर्दशा हुई है। इसलिए अगर चूल्हा फिर से जल जाए तो उसके घर की रौनक भी फिर से लौट आएगी। दीनू को सहसा यह विश्वास हो गया कि चूल्हा जलते ही उसकी पत्नी घर लौट आएगी बच्चे आ जाएंगे, अकाल खत्म हो जाएगा और फिर से अमन चैन का राज हो जाएगा।

इस विचार ने दीनू को स्फूर्ति दी। उसकी आँखें चमक उठीं। वह तेजी से उठा। अपनी झोपड़ी के टूटे हुए छप्पर से बाँस निकालने लगा। उसे बड़ी मेहनत करनी पड़ी। बाँस खींचते हुए उसका हाथ कट गया, खून निकलने लगा, लेकिन उसे इसकी परवाह न थी। फटे बाँस को उसने पैर से दाब दाबकर तोड़ा। छोटी छोटी खपाचियाँ बनाईं। हाथ का जख्म और बढ़ने लगा। उसे इसका ध्यान भी नहीं था। चाँद और रुकिया आश्चर्य से उसे देख रही थीं। खपाचियाँ बनाकर दीनू ने चूल्हे में रखी और लपकता हुआ बाहर गया। अरसे बाद दीनू घर से बाहर निकला था। अजीम का

घर पास था। उसके दरवाजे पर हुक्के-पानी के लिए कोने में आग रखी थी। दीनू चोर की तरह से कौड़ा उठाकर भागा। अप्रत्याशित स्फूर्ति के साथ दीनू काम कर रहा था। कौड़े की आग चूल्हे में डाल दी। घास और रुकिया से कहा — फूंको। बहुत दिनों बाद आज खाना बनना था। यथाशक्ति वे चूल्हे की आग को फूंकने लगी। लड़कियां कमजोर पड़ती थीं। दीनू उनकी गर्दन पकड़कर मुंह भी फुंकवाता था और लड़कियों को भी मजबूर करता था। दोनों लड़कियां डर गई थीं।

आग की ज्वालाओं से लपट निकली। दीनू खुश होकर नाचता हुआ किलकारियां मारने लगा। लड़कियां आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा। लगा। सहसा दीनू ने सोचा कि जब चूल्हे में आग होती थी तब कुछ पकता था और जब पकता था तभी घर में रौनक होती थी। पर क्या? उसने घर में चारों ओर नजर दौड़ाई। कुछ भी न था। लेकिन कुछ न कुछ तो जरूर ही पकना चाहिए, वरना घर की रौनक नहीं लौटेगी। दीनू अधीर होने लगा। लपट जरा धीमी होने लगी थी। दीनू की व्याकुलता बढ़ने लगी। वह चारों ओर देखने लगा। सहसा उसने सोचा— ये लड़कियां किस दिन काम आएंगी? इन्हें पकाओ—पकाओ तो घर की रौनक लौटेगी पकाओ।' चमकती हुई आंखों से चांद को देखते हुए सहसा बड़े जोर से उसकी गर्दन पकड़ी और जोर के साथ चूल्हे में उसका मुंह घुसा दिया। चांद चीख पड़ी। रुकिया जोर जोर से चीखने लगी। दीनू दोनों हाथों से दृढ़तापूर्वक चांद का मुंह चूल्हे की आग में जलाता ही रहा। उसे अपने घर की रौनक चाहिए थी। घर की रौनक आए बगैर अकाल नहीं जाएगा। वह अकाल से छुटकारा चाहता है। वह सुख और शान्ति चाहता है।

अजीम रुकिया की बचाओ बचाओ गुहार सुनकर दौड़ा आया। दीनू को चांद का मुंह आग में झुलसाते हुए देख वह एक क्षण के लिए सिहर कर स्तम्भित हो गया। फिर तेजी से लपककर दीनू को घसीटकर अलग किया। चांद के प्राण निकल चुके थे। चेहरा जलकर अत्यन्त विकृत हो

चुवा था। चर्बी और मास मज्जा के लोथड़े चमक उठे थे। दीनू गौर से देखने लगा। वह समझ नही सका कि यह क्या हो गया है।

गाव म पागलो की सख्या बढ रही थी।

गाव दिन ब दिन सूना होता जा रहा था। छोटे बच्चे या बूढे औरत मद ही गाव म अधिक दिखाई देते थे। या अब उनकी सख्या भी कम होती जा रही थी। जवान बहू बेटिया बिकने लगी थी। अजीम और नूरुद्दीन न यह व्यापार शुरू कर दिया था। मोनाई से लाग डाट चल रही थी।

मोनाई जब गाव लौटकर आया तो उसने देखा कि उसका अति विश्वस्त दाहिना हाथ शिष्य और सहकारी अजीम उस तीस हजार रुपये का धक्का पहुचाकर सेठ बन चुका था। मोनाई ने अपनी पत्नी को बेहद पीटा मगर अजीम से उसका वस न चल सकता था। पिटे मारकर वह चुप बैठा रहा। माल लपाकर जो रकम वह कमाकर लाया था उसे ही जमीन म गाडकर वह अपनी बुरी ग्रह-दशा पर आह भरकर भविष्य के लिए चिंतन करन लगा। व्यापारी मोनाई नुकसान पर आसू नही बहाता, नुकसान से नफा कमान की सोचना है।

उसने सुना, अजीम और नूरुद्दीन गाव की जवान औरतो का खरीद कर बाहर बच रहे है। बडा नफा कमा रहे हैं। मोनाई के मुह म पानी भर आया।

नूरुद्दीन मुनीर की बीवी को लेकर कलकत्ता गया था। बडे-बडे तजर्बे लेकर लौटा है। नूरुद्दीन ने कलकत्ते की सडको पर हजारो अकाल पीडितो को भीख मागते सडते और मरते देखा था। उसने अपने गाव के भी कुछ लोगो को उन अकाल-पीडितो की भीड म देखकर पहचाना था। उसने दो दो, चार रुपय म जवान औरतो को बिकते हुए देखा था। रिक्शा वालो को फौजी पलटनिया को बुला बुलाकर चकला म ले जाते हुए देखा था। अगूठे म बडा घुघरू अटकाकर रिक्शा के हैंडिल को ठोकते हुए वे लोग पलटनिया को देखकर ठुनठुन बाबू, 'ठुनठुन साहब' चिल्लाने लगते

थे। यह कलकत्ते में बसने के लिए सांकेतिक निमंत्रण था। ऊँचे ऊँचे मकानों, मोटरों, ट्रामों और बसों से भरी हुई धारावाहिक महाविलास नगरी की चकाचौंध देखकर उसकी इच्छा भी बलवान हुई। उसने चकले वालों से, दलालों की रिश्ता वालों से जान-पहचान बढ़ाई। बाजार की जाँचना शुरू किया। उसे पता लगा कि कई बड़े बड़े सेठों ने सस्ते दामों में औरतें खरीदकर चकले आबाद किए हैं। गुंडों को इस धंधे में साझीदार बनाया है। लिए हुए गोरों और पलटनियों की जेबें खाली करवाकर यह इस धंधे से भी दो पैसे कमा लेते हैं। नूरुद्दीन को लालच लगा। मुनीर की बीवी को सोनागाछी की एक वेश्या के यहाँ बेचकर उसने भी चकले की दलाली शुरू की। अच्छे पैसे बनने लगे। खूब सिनेमा देखा, मौजें उड़ाईं। अकाल पीड़ितों की दुर्दशा देखकर उसका दिल कभी-कभी पसीज भी उठता था। चकले की बहुत-सी लड़कियाँ बीमार होकर बेकार हो चुकी थीं। चकले की चौधराइन से नूरुद्दीन का सौदा तय हुआ था कि अगर वह नई लड़कियाँ ला दे तो वह चकले में साझीदार भी बन सकता है।

नूरुद्दीन गाँव आया। उसकी टेंट में पाँच सौ रुपये थे। अजीम मानाई का धोखा देकर सेठ बन चुका था। अजीम से मुलाकात हुई। कलकत्ते के हाल चाल बयान किए। नूरुद्दीन ने अपने आने का आशय बताया।

इस काम में मुनाफे की कल्पना करके अजीम के मुँह में पानी भर आया। उसने नूरुद्दीन की ठोड़ी पकड़ी— चार रुपये औरत पर तय करो उस्ताद। दो तुम्हारे दो हमारे। हम रुपये के बजाय चावल देंगे। गाहक चावल देखकर फौरन जाल में आयेगा। और रुपये तुम चाहे लाख दिखाओ कोई तुम्हें पूछेगा भी नहीं।

नूरुद्दीन की समझ में बात आ गई। उसने मंजूर कर लिया।

नूरुद्दीन ने गाँव में खबर फैलाई कि कलकत्ते में एक सेठ ने धरमशाला खोली है जहाँ गरीब औरतों की परवरिश होती है। उन्हें खाने और पहनने को दिया जाता है दीन धरम के उपदेश दिए जाते हैं। नूरुद्दीन ने यह भी बतलाया कि जिसके घर की औरतें धरमशाले में भेजी जाती हैं, उसको

कलकत्ते व गठ की तरफ म चावल भी मिलता है।

धरमशाला की हवा चली। आसपास के चार-पांच गावों तक म धरमशाला की धूम मच गई। दो मुट्ठी चावल के लिए औरतें बची जान लगी। दुखिया को धरमशाला म दीन धरम के उपदेश सुनने के लिए भरती नहीं किया जाता था। धरमशाला का रहस्य मालूम हो गया। पर औरतों की अस्मत जाए तो जाए—नान को मिले। वह बटिया का वेश्या बनने दो। आबरू जाती है तो जान दो। पेट से बढ़कर दुनिया म कोई चीज नहीं। बचा! बचा!!

नूरुद्दीन और अजीम का रोजगार चल निकला।

पहली बार नूरुद्दीन अपने साथ बारह औरतें लेकर कलकत्ता गया। मोनाई से अजीम की यह बढोतरी न देखी गई। औरतों के इस नये धंधे म आमदनी अच्छी है। मोनाई ने जाच-पड़ताल की हिसाब फैलाकर देखा, अजीम और नूरुद्दीन को सेर भर चावल म चार औरतें पड़ती है। चावल अगर अस्सी रुपये मन भी बेचा जाए तब भी औरतों के व्यापार म कम से कम उससे दुगना नफा है।

मोनाई का लालच सनाने लगा। मगर मन पटकारता था। अपने गाव की भले घर की बहू बेटियों स कसब कराना बड़ा पाप है। मगर फिर मोनाई ने सोचा— यो भी भूखी मर रही हैं बिचारी। बस कम से कम खाने पहनने का तो मिलेगा। वो सुखी होंगी और चार पैसे मुफ्त भी मिल जाएंगे। भगवान जी ने अगर इस नये ब्योपार में अच्छे पैसे बनवा दिए तो आगे चलकर एक अनाथालय और आसरम भी खुलवाय दूगा। यही तो धरम की महिमा है। ससारी जीउ मोह माया म पड़के अगर पाप भी कर बैठे तो परायचित करके पुन्न की नैया म भवसागर के पार उतर जाए। अहा, धन्न हो भगवान जी। तुम्हारी लीला अपरमपार है। एक ओर तो अर्जुन को उपदेस दीना कि अर्जुन मोह-माया म मत पड। और दूसरी ओर राजपाट के लिए उससे जुद्ध भी करवा दीना। वाह वाह, ऐसा न्याव भगवान जी के सिवाय और कौन कर सकता है! धरम और करम, दोनों और

पारी जमा कर लिया। सुन न तो दूध का दरजा छीन लिया और न पानी का। जागी जनियों के लिए धर्म का मारग दिखाया और कर्म की महिमा दिखाने के लिए खुद आप अर्जुन के सारथी बन गए। धन्य हो प्रभुनाथ! बड़े दयालु हो।

हुक्का छोड़कर हाथ जोड़, मोनाई आत्म की शोभा आँखों से नीर बहने लगा। गद्गद होकर मोनाई भगवान जी की प्रार्थना करने लगा—हे दीनानाथ! हमारे भी सारथी बन जाओ! इसी बखत अपनी महिमा दिखाओ! मैं तुच्छ हूँ तो क्या भया, हूँ तो तुम्हारा भगत ही। परतच्छ दरसन दो प्रभुनाथ! नाथ! अब संसार में पाप की हद हुई गई है। अजीमा गहरी दगा दे गया साला! वेद पुरानों में झूठ थोड़े लिखा है कि कलियुग में नाग और मलेच्छ दोनों एक समान हैं। मैंने बड़ी गलती की कि अजीमा का विश्वास किया। बड़े-बूढ़े कहते थे कि बेटा, मसजिद से निमाज की अवाज भी सुनाई पड़ जाय तो चट से कानों में उँगली ठूँस लो। इनका दीन मजब उलटा है। इनके धरम का भरोसा ही नहीं है। ठीक कहते रहे बड़े लोग। हम पूरब में पूजा करते हैं, ये पच्छिम में निमाज पढ़ते हैं। हमारे धरम में तो भगवान जी का भगत बिचारा मेरा जैसा भोला भाला होता है जो छल-कपट का नाम भी नहीं जानता, हर एक पर सीधे मन से बिसवास कर लेता है। माँगता तो दस पाँच हजार की जमानत है, देके इसकी आढ़त खुलवाय देता। मैंने इसे बेटे की तरह प्यार किया और अंत में यों दगा दे गया! मलेच्छ! अरे भगवान जी ने चाहा तो मैं भी चारों खाने गिराय दूँगा। बेटा जी को भी मालूम नहीं है कि गुरु एक गुर सदा अपने पास जादा ही रखता है।

मोनाई की छोटी छोटी आँखें दर्प से चमक उठीं। उसने फिर हुक्का गुड़गुड़ाना शुरू किया।

दयाल, पुलिस, सरकारी अफसर या किसी कुलीन हिन्दू से मार खा जाने में मोनाई अपनी शर्म नहीं समझता था। मगर अजीम एक तो मुसलमान, दूसरे गरीब मल्लाह का बेटा, तीसरे उसका नौकर और किसी हद तक

शिष्य भी था, अजीम से मार खाकर मोनाई को किसी करवट चैन नहीं मिल रहा था। अलावा इसके, अजीम को औरतों के व्यापार में फलते फूलते देखकर उसकी जलन और भी बढ़ गई थी। अजीम को परास्त करने के लिए मोनाई ने धर्म की शरण ली।

वह दयाल की शरण में गया—'हिंदू धरम डूब रहा है राजा बहादुर! आपके राज में मुसलमान लोग हमारे घर की बहू बेटियों को फुसलाए लिए जा रहे हैं।'

गो-ब्राह्मण प्रतिपालक क्षत्रिय जमींदार का वंशज तैश खा गया। मोनाई पानी चढ़ाने लगा—'कलजुग में गाँववालों की तो मत मारी गई है। धरम अधरम नहीं देखते, सबको अपने पेट की हाय पड़ी है। अजीमा और नूरद्दीन धरमशाला के नाम पर औरतें खरीद रहे हैं।'

मोनाई एक प्रस्ताव लेकर गया था। सरस्वतीपुर दयाल जमींदार के इलाके में है। वहाँ गोरी पलटन की छावनी बन रही है। एक अनाथालय वहीं पर संस्थापित कर दी जाय। पलटन पास रहेगी तो किसी का रिआब नहीं पड़ेगा। औरतों की रक्षा होती रहेगी और हिंदू धरम भी बच जाएगा। इस धरम-कारज के लिए मोनाई पाँच सौ एक रुपये का दान देने को भी तैयार है। बस राजा बहादुर पीठ पर हाथ धर दें तो बाकी इंतजाम मोनाई आप कर लेगा।

टेंट में पाँच सौ एक खोलकर भगवद्भक्त मोनाई ने गो-ब्राह्मण प्रति-पालक, धर्मावतार धर्ममूर्ति श्री दयाल चाँद विश्वास के चरण कमलों में सादर सविनय अर्पित करके प्रणाम किया। दयाल जमींदार ने हिंदू धर्म की रक्षा के लिए मोनाई को आश्वासन दिया।

श्री सनातन धर्म अनाथालय के निमित्त मोनाई ने सात गाँवों में फेरे लगाने शुरू किए। बड़े जोर शोर के साथ अपना काम शुरू किया। साथ ही साथ उसको इस बात का भी डर लगा रहता था कि घाव खाकर अजीमा कभी चुप नहीं बैठा रहेगा। बंगाल में मुसलिम लीग का सुराज है कोई अचरज नहीं जो कोई सरकारी दाँव चल जाए तब? उसने फिर तौर

था। मुझे भगवान जी जानते हैं ये मैंने दुश्मनायगी के सबब से नहीं कराया।

सुनकर अज़ीम फिर उठा जरा जोश आया। ताने के साथ बोला—'तो क्या प्यार जताने के लिए कराया था ?

चट से आसमान की तरफ आँखें उठाकर मोनाई ने जवाब दिया—भगवान जी जानते हैं प्यार के कारन ही ये चाल चली।

अपने कंधे पर से मोनाई का हाथ झटककर अज़ीम सख्ती के साथ बोला— 'प्यार तो तुम अपने सगे बेटे से नहीं करते मुझसे क्या करोगे ? सुना नूरू काका ने हमसे प्यार जताया है हि !

मोनाई डपट पड़ा— इत्ते बरस तुम्हें तोते की तरह से पढ़ाया मुला अक्किल जरा भी नहीं आई। दूर की सूझती ही नहीं ?

फिर नूरुद्दीन की तरफ देखकर कहने लगा— नूरुद्दीन तुम्हें जो अपनी चाल सुनाऊं तो कहोगे कि हां काका दूर की कौड़ी लाते हैं। ये अभी क्या जाने ब्योपार की चाल ! ये तो गधा है। घर चल रहे हो ?'

कहकर मोनाई चलने लगा। नूरुद्दीन और अज़ीम भी चुपचाप चलने लगे। मोनाई इस वक्त उनपर छा गया था।

मोनाई धीरे धीरे बोलता हुआ चलने लगा— जब हम लौटकर घर आए तो गिन्नी ने तुम्हारा सब हाल बताया। सच मानना मेरा कलेजा दुइ हाथ का हुइ गया। मैंने हँस के तुम्हारी काकी से कहा कि लौंडा हुसियार हुइ चला है। बेटा रुजगार का गुर यही है कि मौका पड़े तो सगे बाप को भी न छोड़े। मुला एक बात कहूँ बेटा अपने बचपने में तुम जरा चूक गए नहीं तो और लम्बा दाव मारते ! '

मोनाई हँसा। फिर कहने लगा— मैं तुम्हारी जगह होता तो जानते हो क्या करता ?

अज़ीम और नरुद्दीन दोनों मोनाई की ओर देखने लगे।

मोनाई बोला— बेटा तुमने दाव तो सीख लिया मुला अभी सफाई नहीं आई। अरे पगले काकी का पता भी न लगने देता कि कोरे तू निकाल

ले गया है। उन्हें घाघे में ही रखना। पहले कुछ बोरे बचकर आठ-दस हजार रुपये उनके हाथ में धरना, और फिर उनसे कहना कि बारी फलाने फलाने गांव में यूनन बाट वाले इसी भाव पर दुई हजार बोरे और निकाल रहे हैं। कारा पंन होने से बड़ा भारी नुकसान हुई रहा है। यह कहकर जो एक ठंडी सास और छोड़ देता तो बेटा, तेरी बाकी अपने गहने उतार कर तेरे आगे धर देती।

मोनाई का जादू चढ़ गया। अजीम और नूरुद्दीन मोनाई को बाता के टोने में बंधे हुए चल रहे थे। अजीम मन ही मन अपनी गलती महसूस कर रहा था। मोनाई कहता गया— अरे औरतवानी नफे का नाम सुनते ही पानी हुई जाती। वो आठ-दस हजार रुपे भी तुम्हीं को दे देती और ऊपर से अपने गहने तक उतार देती। मैं तुम्हारी जगह पर होता तो एक तीर में दो सिकार करता। रुजगार में सबर से काम ले और ठंडे मगज से चाल सोचे। वो बपारी क्या जो एक तीर से दुई सिकार न कर सके।'

मोनाई काका के उपदेशों को ध्यान और श्रद्धा के साथ सुनने की आदत अजीम को सदा से रही है। मोनाई के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न होते ही अजीम का अपराधी मन आत्मग्लानि से पीड़ा पाने लगा। वह सिर झुकाकर चल रहा था। नूरुद्दीन और अजीम दोनों मंत्रमुग्ध से चुपचाप चले जा रहे थे।

मोनाई ने जरा नजर उठाकर दोनों की तरफ देखा। देखा, दोनों ही उसकी बातों को तलवार से काट चुके हैं। होठों की मुस्कराहट को दबाकर मोनाई ने आगे बात बढ़ाई— 'अब तुम्हारी दूसरी गलती तुम्हें बताव?

अजीम खिसियाना सा हो गया था। शर्म के मारे उसका सिर नहीं उठ रहा था। नूरुद्दीन मोनाई की तरफ देखने लगा। मोनाई जरा हंसकर नूरुद्दीन से बोला—'इसीको कहते हैं लड़क-बुद्धी! देखो अब सिर नहीं उठ रहा इनका! अरे बेटा, अपनी एक चाल चली तो दुस्मन की दो चालें सोच लो। तुम ये कैसे भूल गए कि मोनाई काका बपारी आदमी हैं, मेरी चाल पर वो भी कोई चाल जरूर चलेंगे। तुमने उधर तो ध्यान दिया

रही थोर गूम स साथ दूर की चीजें मारने के लिए आगे दूसरे घर। जग तुम गिरा धन स गूम गिरे। अविरम गिरा रमाकर रखवार करने क ध साइड।

नाता का फिर हाथ गया। तूफान भी निगाह की धुना म था गया।

मोनाई फिर जरा आगे न हुआ। बोला— जब मैंने न देखा था था। चार स हमला आई। उधर पार गया कर दूं मुझ तुम्हारे बारे में गुस्सा जरूर रहा। मुझ जब देखा कि सीधा बड़ा बच्चा यानी गया रहा है तो करीब मानो मुझे दया आई। फिर म समझा मगर म दौड़ा कि आधी दिया म ही पकड़कर तड़पा जमानी कर रहा है। इस जरा लिहाज देना चाहिए। नहीं तो आज पकड़कर किसी बाहर वाले स करारी मान खाएगा मेरा नाम डूब जाएगा। इसीलिए म सब चाल चलता रही।

अपने शिकारों पर मोनाई ने फिर नजर डाली। बातों की गाड़ी और आगे बढ़ी। मोनाई ने अब आखिरी वार किया— तुम अपने मन म सोचते होगे कि काका काई चाल चल रहे हैं। बेटा, अगर मुझे तुम लोगों स चाल ही चलनी होती तो हम अपने तुम्हें या टोक कर न बुलाता। सुनसान रात तुम दोनों जवान मुझे अपना दुश्मन समझने वाले जरा-सी देर म मेरी गर्दन मरोड़कर मेरी लहास फेंक देते तो कौन जानता ? तुम क्या य समझते हो कि मैं बिना सोचे समझे ही तुम्हारे पीछे चला आया ?

अजीम और नूरुद्दीन दोनों चौंके। उन्हें एक नया डर पैदा हुआ। तभी मोनाई अजीम के कंधे पर हाथ रखकर बड़े प्यार के साथ बोला— 'बेटा मेरे मन म कपट होता तो दूसरी चाल चलता। इस दम तुम्हारा पीछा करके तुमसे बातें करने म मेरा बड़ा गहरा मतलब है। तू तो जानता ही है मैं सदा एक तीर म दुइ सिकार करता हू। दयाल जमींदार स मिलकर तुम्हें सिच्छा भी दे दी और अपने तुम्हारे फंदे के लिए एक चाल भी चल गया।

अजीम और नूरुद्दीन की वाक्शक्ति लुप्त हो गई थी। आधा रास्ता तय हो गया बोलने का काम सिर्फ मोनाई ही करता रहा।

सहसा मोनाई धीरे धीरे बड़े गम्भीर स्वर में कहने लगा—'नवाब साहब को हिंदू मुसलमान के झगड़े के लिए उकसाया ?'

अजीम और नूरुद्दीन एकदम से सहम गए। अजीम की जबान लड़खड़ाकर आप ही आप रुक गई— न न नहीं काका, झगड़ा

बात काटकर मोनाई बोला—'अरे बेवकूफो ठीक तो किया। डरते क्यों हो? अरे यही तो मैं चाहता था। हिंदू मुसलमान का झगड़ा डालो इसीमें हमारा तुम्हारा फायदा है।'

नूरुद्दीन बत्तीसी सफाई दिखाते हुए बोला— नहीं काका ऐसी बात भला हम कर सकते हैं।'

मोनाई फौरन ही तानामेज लहजे में कह उठा— नहीं! तुम लोग तो बस घास छील सकते हो—गधे कहीं के। अरे मैं कहता हूं कि नवाब साहब और दयाल के बीच में हिंदू मुसलमान का झगड़ा डालो। ये लोग जब लड़ेंगे तभी हम लोगों का फायदा होगा। जब तक ये बड़े बड़े जमींदार और राजा लोग हमारी खोपड़ी पर सवार रहेंगे तब तक हम कुछ नहीं मिलेगा। क्या भाई नूरुद्दीन, कुछ झूठ कहता हूं मैं ?'

अजीम मोनाई की इस बात का हजम नहीं कर पा रहा था। उसे मोनाई की सूझ बूझ पर गहरा विश्वास था। और वही विश्वास इस समय उस मोनाई के प्रति अविश्वास उत्पन्न कर रहा था। वह चकित और भयभीत था। मोनाई को उसके और नवाब साहब के मिलने का कारण मालूम है—एक तरह मालूम ही है। वह भांप गया है। दयाल को अगर इसने पहले ही सचेत कर दिया तो उलटी आफत आएगी। दयाल नवाब साहब से ज्यादा अमीर है। जरा-सी लाग डाट होते ही उसने लाखों खर्च करके शीशमहल तैयार करा डाला। इस बार भी वह नवाब साहब को पछाड़ सकता है। मगर मोनाई को यही करना था तो इस वक्त इस तरह यहां आकर वह मेल मिलाप करने की कोशिश क्या करता? फिर दयाल और नवाब साहब के बीच में हिंदू मुसलमान का झगड़ा डालने की बात भी खुद ही कर रहा है। चाहता क्या है आखिर?

अजीम और नूरद्दीन दोनों मिलकर भी मोनाइ से पार नहीं पा सकते। दोनों खास तौर पर अजीम तो बहुत घबराया हुआ था। वह कुछ सोच ही नहीं पाता था। नूरद्दीन अपने को सभालकर बोला— बात तो चोक्स है काका बाकी ये नहीं समझ मे आता कि हिंदू मुसलमान का झगड़ा क्या डाला जाए ? '

मोनाइ ने फौरन ही गम्भीर स्वर मे उत्तर दिया— इसमे एक गहरी चाल है। पहले तो तुम यह समझो कि हिंदू मुसलमान का झगड़ा क्या होता है ? इसलिए न कि दोनों अपने अपने धर्म को बड़ा समझते हैं। और जब छुटाई बड़ाई का फैसला नहीं हुइ पाता तो दोनों अपनी ताकत अजमाते हैं। है कि नहीं ? कहो हा ?

नूरद्दीन ने सिर हिलाकर कहा— हा ये तो सही है।'

'बस तो इसका तातपरज ये भया कि लड़ाई धरम की नहीं होती घमड की होती है। क्या समझे ? अरे धरम तो भगवान जी का मारग है चाहे उन्हे खुदा जी कह लो चाहे भगवान जी कह लो। उसमे कुछ भी फरक नहीं पड़ता। फरक तो छुटाई बड़ाई का है सो घमड के कारन है। अब तुम्ही लोग हो, क्या गए नवाब साहब के पास ? इसीलिए न कि तुम्हारा उनका दीन मज़ब एक है और तुम्हे ये बात मालूम रही कि दयाल और नवाब साहब की आपस मे खटकती है। दयाल ने तुम्हें नीचा दिखाया नवाब साहब की आड लेके तुम उन्हे नीचा दिखाना चाहते थे। यही आ गई घमड की बात कि नहीं ?

'नहिन काका' नूरद्दीन बोला—' हम इसलिए उनके यहा नहीं गए थे। हम तो

बात काटकर मोनाइ बोला—' बेटा दाइ के आगे पेट छिपाना बेफजूल है।

अजीम और नूरद्दीन भी यही अनुभव कर रहे थे। एक क्षण के लिए रुककर मोनाई ने फिर बात का सूत्र उठाया— और सच्चा पूछो तो बेटा न तो तुम्हारा और नवाब साहब का धरम एक है न मेरा और

दयाल जमीदार का। असली धरम तो हमारा-तुम्हारा एक है। हमारे लिए दयाल और नवाब दोनों ही समर विधर्मी हैं। अरे, कलजुग में धरम काहे का? स्वारथ का। और स्वारथ हमारा-तुम्हारा एक है। हमारा स्वारथ इसी में है कि ये बड़े लोग आपस में जूझें और हम मिलकर नफा उठाएं। है कि नहीं? अब दयाल या तो नवाब और जमीदार में पुरानी अनबन है मुल इस समै इन्ह लड़ाने के लिए कोई परतच्छ कारण नहीं रहा। तुम नवाब साहब के हिरदे में धरम की आग सुलगा आए। चलो, हमारा काम बन गया। बाकी हम तुम जो इस आग में अपने घमंड के कारन पड़े तो गहूँ के साथ घुन की तरह हम भी पिस जाएंगे। घमंड, भया, पेट भरे पर होता है। हम-तुम तो धन के भूखे हैं काहे का घमंड करेंगे? और जो इसपर भी घमंड करेंगे तो नासमझी में अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी मार लेंगे। क्या अजीमा बालो न चुप क्यों हो?'

अजीम के लिए अब कोई मार्ग न था। सिर झुकाकर बोला—'मैं तुमसे बाहर थोड़ी हूं काका।

मोनाई की बाछें खिलीं, अजीम की पीठ पर हाथ रखकर बोला—'ये तो मैं जानता हूं बेटा। क्या तय कर आए हो?'

अजीम का सिर अभी भी नहीं उठ रहा था सिर झुकाए हुए ही उसने जवाब दिया—'दयाल की कोठी पर हमला होगा।'

'कब?'

'कल कलकत्ते जाएगा आदमी लाने।'

मोनाई बहुत गम्भीर होकर सारी बात पर गौर करने लगा—'हूं, कुछ पता झटके?'

'पांच सौ!' अजीम कहना नहीं चाहता था मगर जबान पर मोनाई का असर था।

मोनाई बोला—'उहूं! हमला दयाल की हवेली पर नहीं, सरसुली पुर में जहां मैंने औरतें रखी हैं वहां होना चाहिए। पूछा क्यों?'

अजीम मोनाई के मुह की तरफ देखने लगा। उसकी [illegible] मिट

गइ थी।

मोनाई बोला—'अगर दयाल की हवेली पर हमला भया तब इन दोनों की तो ठन जाएगी बाकी हमारे लिए एक तीर से दो सिकार न होंगे। सुनो औरतों के धंधे में हम तीनों का साझा रहेगा। जायाल में कुछ फायदा नहीं पलटनिये ससुर शराब पी के अपनी मनमानी करते हैं। मेरी चार औरतें मर चुकी। ठेकेदार अपना कमीसन सिर चीरकर ले लेता है। औरतों की खिलाई पिलाई का खर्चा अलग देना पड़ता है। मैं ये चाहता हूं कि नूरू कलकत्ते में ही सबका ठिकान लगा आवे। उसीमें नफा है। इसलिए नूरू जिस दिन गुड ले के आवगा मैं ठेकेदार को कुछ ले देकर मोटर का इंतजाम कर रखूगा। जहां औरतें लादके रवाना करा कि खाली घरों में गुंडों से हल्ला मचवाय देंगे। क्या समझे ?

अजीम ने सवाल किया— ये तो ठीक है मगर हम इसमें हिंदू मुसलमान की बात कहां आई ?

आगे आती है। मोनाइ बोला—'सुनो इसमें एकसाथ कई चाल चलनी पड़ेंगी। नवाब साहब के रुप से जो गुंडे लाओ तो उन्हें ये समझाना कि वे दयाल जमीदार के आदमी हैं। क्या समझे नूरू ?

क्यों काका ? नूरुद्दीन ने समझने की गरज से सवाल पूछा।

इसमें चाल ये है कि पलटनिये जब औरतें नहीं पाएंगे तो भड़केंगे। गुंडों को देख वे समझेंगे इन्हीने औरत उड़ा दी है। गोरी पलटन का जो जड़ल है उसीको मैं बाद में ये पट्टी पढ़ाऊंगा कि छावनी के ठेकेदार ने दयाल के साथ मिलकर औरतें उड़ाई हैं। सबूत देगा कि ठेकेदार की मोटर ही औरतों को ले गई रही। इस तरह एक तो ठेकेदार का छावनी से पत्ता कटेगा दूसरे जब गुंडे गिरिफ्तार होंगे तो वे यही बतावगे कि हम दयाल जमीदार के आदमी हैं। इस तरह गोरों की गवाही दयाल के खिलाफ होगी। सरकार में दयाल जमीदार की बदनामी हुई जायगी। दयाल का पच्छ कमजोर होगा। इधर तो यों साधूगा उधर दयाल को ये पट्टी पढ़ाऊंगा कि औरतें नवाब साहब ने उड़वाई हैं। आपके असामियों की औरतों को

मुसलमान बनाने का आपसे बदला ले रहे हैं। मैं कहूंगा कि औरतें भूना की महजिद में छिपाई गई हैं। दयाल का गुस्सा दिला के उसके लठैत उधर भिजवाऊंगा, क्या समझे? और अजीमा नवाब साहब को भड़कावे। य कहेगा कि दयाल आज रात महजिद तुड़वाने वाले हैं। उनके लठैत पहले ही महजिद में छिपाए रखना। क्या समझे अजीमा? महजिद पर दोनों पार्टियों के लठैत खून खराबा करेंगे तब अपने आप पुलिस और बारंट तक पहुंचेगी। पलटन के जड़ैल भी दयाल के खिलाफ अपना आर्डर लिखेंगे ...न दोनों तरफ से गच्चे में आवेगा। क्या समझे? दयाल के ऊपर ज्यादा ...ाव पड़ना चाहिए। काहे से कि हम लोग इसी गांव में रहते हैं। उसके ऊपर ...तीआरन पड़े कि उसका ध्यान किसी दूसरी बात की तरफ पड़ ही नहीं। ...भी हम लोग निसाचित हुई के अपना रुजगार कर सकेंगे। बल्के मैं तो दयाल को यहां तक पट्टी पढ़ाऊंगा कि मुसलिम लीग का सुराज है नवाब साहब को वहीं से मदद मिल रही है। बलबस्ते जाय के आप भी हिंदू सभा का अंदोलन कीजिए। अरे बेटा दयाल अगर यहां रहा तो वह मुसलमान होने के कारन तुम लोगों पर सक करेगा। और हत्याचार करेगा। मैं तुम लोगों पर जरा भी आंच नहीं आने देना चाहता। तुम लोग तो मेरे लड़के के समान हो।

अजीम और नूरुद्दीन पर मोनाई की बातों का जबरदस्त प्रभाव पड़ा। अजीम ने गदगद भाव से फौरन ही मोनाई के पैर पकड़ लिए। आंखों में आंसू भरकर बोला— बाबा, मैंने तुम्हारे साथ बड़ी नालायकी की है। मैं बड़ा पापी हूं।

मोनाई ने फौरन ही अजीम को उठाकर अपने कलेजे से लगा लिया। और बोला — बेटा भगवान ही जानते हैं मैंने जरा भी बुरा नहीं माना। अरे भाई नासमझी के कारन लड़के कभी ऊटपटांग कर बैठते हैं। मां बाप भी जो ऐसी ही नासमझी करके बुरा मान जाएं तो फिर ये संसार चले कैसे? क्या नूरू मैं झूठ कह रहा हूं बेटा?

नूरुद्दीन सिर झुकाकर बोला— ठीक है बाबा, मगर इतना तो मैं भी

जरूर कहूंगा कि तुम्हारे जसा धर्मात्मा इस दुनिया म होना बडा कठिन है। तुमको गलत समझके हमने बडी भूल की।

फौरन अपने कान पकडकर आकाश की ओर देखते हुए मानाई बोला—'नही बेटा ऐसी बात मत कहो। मरा घमड बन्गा। जो कुछ करते ह सब भगवान जी करत ह। मरी क्या सकती है। अरे भगवान जी न चाहा तो य दयाल और नवाब और ये जित बड बड जमीदार राज महाराज है—य सब एक दिन मिटटी म मिल जाएग। और इनका मिटटी म मिल जाना ही अच्छा है। ये बडे आदमी सब राच्छस है राच्छस। इनक अत्तियाचारा स पिरथी तिराह तिराह पुकार रही है बेटा! देख लो लडाइया हुइ रही है। बम, तोपें और मारकाट मच रही है। हमारे इन सुरग जस गावा की आज य दसा हुइ गई है। बस अब पाप को हद हुइ गई है। इनका नास करने क लिए भगवान जी जरूर अवतार धारन करग। गीता जी म भगवान जी ने कहा है कि परतराना साधू नाम और विनासा होवेगा दुप्ट नाम? सो जरूर होवेगा बेटा! तुम्हार कुरान जी म जरूर यही बात लिखी होगी क्योकि बेटा, धरम मजब तो सब भगवान जी के बोल ह सबम एक ही बात लिखी है। अब तो हम गरीबो का सुराज होवेगा क्योकि गरीब ही भगवान जी क सच्चे भगत होत हैं। मैं तो बेटा भगवान जी क उपदेस पर चलता हू। तुम लोग मेरे प्यार हो य लोग मेरे दुसमन हैं। इनका महार करूगा तुम्हारा उद्धार करूगा। अब य सब चाल जो भगवान जी की दया स बठ गइ तो ठेकेदार दयाल और नवाब उलट जावगे। फिर ठेका भी मैं ही लूगा। क्या समझ? ठकेदारी दूकानदारी और य औरतो का काम? य औरतो का काम भी बड धरम का है नूरू! अन्न स बढकर कोइ धरम नही। इज्जत आवरू सब इसके पीछे है। और बेसियाए जो पापिन होती तो भगवान जी इन्ह बनात क्यो? पट भरने क लिए भगवान जी न य सब करम बनाए है। कोई करम करो मुल भगवान जी का नाम लेत रहो फिर कोइ पाप नही है। क्यासमझ? जब मैंने गुरु जी की कठी ली तब य ग्यान की गूढ बातें समझ म आई। बस इसीलिए बेटा य सब

धधा फैलाके अपना करम करता हू और आगे भी कुछ दिनो तक करूगा। तुम सब लोग हुसियार हो। जहा तुम लोगो ने मिलकर काम काज सभाल लिया तो गाडा और उसकी मा को अजीमा के हाथो म सुपुर्द करके फिर मैं स यास ले लूगा। क्या समझे ?"

अजीम खुशामद करता हुआ बोला— नहीं काका अभी तुम्हारी कुछ उमिर थोडी हुई है।

'नही बटा, फिर तो मैं स यास लै लूगा। करम स धरम म जाऊगा। कुछ कह लो, य करम का मारग है बडा कठिन। बडे मायामोह करने पडत हैं इसम। (आह भरकर) भगवान जी, तुम्ही हो तुम्हीं हो!'

हृदय स एक डकार आई। भक्तिभाव न स्थूल रूप धारण कर लिया। पेट पर हाथ फेरते हुए मोनाई बोला—"ससुर खट्टी डकार आय रही है। तुम्हारी काकी ने मीठा भात और गूदा बनाए थी आज। जबरदस्ती करके जादा खिलाय दिया। भगवान जी भगवान जी!'

मोहनपुर गाव की सीमा निकट आ गई थी। तीनो अपनी एक बहुत बडी उलझन को सुलझाकर हल्के हो चुके थ और अब किसी नई बात की खोज म थे। चादनी रात थी, इसपर ध्यान गया। अपना गाव आ गया था, इसपर ध्यान गया। फसल तैयार हो चली थी, इसपर भी ध्यान गया।

अजीम बोला—"फसल अच्छी रही है काका। बाकी काई काटन वाला नही इस साल।"

दम कदम आगे रास्त म पाच छ ककाल पडे थ। जानवर मास चाट चुके थे। मोनाई उन्ह देखकर बोला—'फसल काटनेवाले तो य पडे हैं, भया।"

मोनाई ने बहुत गभीर होकर कहा था। तीनो मौन हो गए। व ठठ रियो के करीब आ पहुचे थ। चमकते हुए दातो की पक्तिया आखो के गड्ढे, पसलियो के पिंजर गाय पैरो की हड्डिया—मनुष्य का अप्रत्यक्ष रूप प्रत्यक्ष देखकर तीनों के पर ठिठक गए। उन अस्थि-पजरो की आड म सत्य

न मानो भागते हुए चोरों का पकड़ लिया। वे सहम गए। यह तो नई बात नहीं आँखें बरस से य ठठरियाँ देखने की अभ्यस्त हो गई थी, जगह जगह दिखाई पड जाती हैं। जब तक लाशें जलाने-दफनाने की शक्ति रही लोगों ने उनकी सद्गति कर दी। लेकिन अब तो लोगों से अपने प्राणों का बोझ ही नहीं उठाया जा सकता फिर लाशें कौन उठाए!

गाँव म जगह जगह ठठरियाँ बिखरी पडी हैं। हड्डियों के टुकड़े और सिरों की गेंद कुत्तों का मनोरंजन बन गए हैं। टूटे, उजड़े हुए मिट्टी के घर खडी फसल और ठठरियों की संख्या में मोहनपुर का वैभव निहित था। सैकड़ों तपस्वियों की जीवन ज्वाला से तपी हुई भूमि को धुंधली चांदनी की शीतलता और प्रकाश से शांति मिल रही थी। धुंधली चांदनी के प्रकाश म ठठरियाँ रहस्यमयी सी लगती थीं।

तीनों देखते रह पहले मोनाई बोला—फसलें खडी करनेवाले तो ये पडे हैं भैया फिर काटने कौन आएगा? एक दिन ये भी हमारी-तुम्हारी तरह थे। इनके साथ हमने हाट रुजगार किया है हँस बोल उठ बैठ है। इनके साथ लडाई झगडा भी किया है होली दीवाली और ईद भी मनाई है। आज पहचान म भी नहीं आते कि कौन-कौन हैं? भगवान जी इन्होंने ऐसा कौन सा पाप किया रहा जो ऐसी मौत पाई? और हमने ऐसा कौन सा पाप किया रहा जो ये दिन देखना पडा।

मानाई की आँखों म आँसू छलछला उठे।

अज़ीम बच्चों की तरह अपने सामने के दृश्य म खो गया था।

नूरुद्दीन को अपनी भूखी माँ की याद आ रही थी जिसे उसने भूख के जोम म गला घोटकर मार डाला था। कभी मुनीर की याद आ रही थी। मुनीर की बीवी की याद आ रही थी जिसे उसने पीट पीटकर तन फरोश बनाया था। उस मुनीर की मासूम बच्चियों की याद आ रही थी। अज़ीम से उसने चाँद के चबूतरे म जलाए जाने का हाल सुना था रज़िया की मौत की खबर सुनी थी। मुजस्सिम गुनाह बनकर बेशर्मी के साथ अपने को महसूस कर रहा था। उसे अपनों की याद आ रही थी।

अपनी कोमल भावनाओं पर संयम करते हुए मौनाइ विचारक बना। बोला—"मेरी जिन्दगी तो इन मरनेवालों की रही बेटा। ये सदा दुनिया के काम आए। और मरने पर भी काम आ रहे हैं। हम सिच्छा दे रहे हैं—इस माटी का क्या मोह, मूरख? हंस अकेला जाई उड़ा, माटी ससुरी को कोई पहचानेगा भी नहीं। बस करम किया रह जावेगा। करम कर प्रानी, अपना करम किए जा।"

अज़ीम और नूरुद्दीन दोनों चुपचाप खड़े थे। एक क्षण रुककर मौनाई बोला—"एक बार कलकत्ते के इस्पताल में गया था मैं। वहां इन ढांचों देखे थे हमने। डागदरी के लड़के इनसे पढ़ते हैं।"

नूरुद्दीन—कलकत्ते का अनुभवी—फौरन बोल उठा—'अरे मेडिकल कालिज में सारी पढ़ाई इन्हींपर होती है। मैंने अपनी आंखों से देखा है। और मसमरीजम—जादू वालों की दुकानों में मैंने बहुत-से देखे हैं। इनसे अब मुझे डर नहीं लगता, काका।"

अज़ीम भी फौरन अकड़कर बोला—"डर वर क्या, मैं तो भूतों की मसजिद में रात भर सोया हूं। मुझे इनसे ज़रा भी डर नहीं लगता।"

मौनाइ शांत स्वर में कहने लगा—'इनसे काहे को डरना बेटा? ये तो जिन्दगी भर आप ही दूसरों से डरते रहे। डरते डरते मर गए बिचारे। मेरी ये इच्छा हो रही है अज़ीमा, कि इन बिचारों की सदगति करा दी जाय। जब तक जिए दूसरों के काम आए, और मर जाने पर भी दूसरों के काम आवें यही मैं चाहता हूं। न जाने कितने लड़के इनसे सिच्छा पाएंगे, न जाने किस किसके वसीकरन मन्त्र इनपर सिद्ध किए जाएंगे। पुन्न का पुन्न है। नूरू कलकत्ते तो जा ही रहे हो बेटा, भाव पूछते आना इनका। क्या समझे?'

नूरुद्दीन और अज़ीम चमक उठे। बड़े उत्साह के साथ अज़ीम बोला—'वाह काका कमाल की बात सोची है तुमने। हमारा तो खयाल भी नहीं पहुंच सकता था। क्या नूरू?

नूरुद्दीन तो मौनाइ का भक्त हो गया था। गद्गद होकर बोला

"अरे भाई, य काका की खोपडी है। ये जमाने भर के तजरबकार की निगाहे हैं, जो मिट्टी म भी सोना ढढ लेती हैं। मैं कल ही कलकत्ते जाऊगा काका। य तुमने बडी दूर की सोची है। मगर ल कस जाएगे काका?'

मोनाई बोला—'ये फिक्र तुम्हारी नही, हमारी है। हम कर लग इसका इतरजाम। और सुनो बेटा! आओ, चलते आओ। मैं य कह रहा था नूरू कि अब कुछ साझे सौदे की बात भी हुइ जाय। रुजगार-ब्योपार म हिसाब कौडी का और बक्सीस लाख की। क्या समझे?'

नूरुद्दीन जरा कुछ लापरवाही दिखाने का स्वाग करते हुए नीम रजा मदी से सिर हिलाकर बोला—'हा, ये तो एक तरह स ठीक है काका! मगर

इसकी तरफ ध्यान न देते हुए मोनाई कहने लगा—'नबाब साहब स जो पान सौ की रकम तुम्ह मुझे के लिए मिली है उसम तुम जो बचा लो वह तुम्हारा है। उसम अजीमा का हिस्सा नही रहगा।

मोनाई मूछ खुजलाने के बहाने जरा रुका और तिरछी नजर स अजीम को देखा। अजीम चुप रहा। मोनाई ने आगे बात बढाई—'यही नहा आगे भी जो तुमको हजार पान सौ मिल जाए, सो भी तुम्हारा।'

नूरुद्दीन जरा बनकर बात काटते हुए बोला—'नही काका अजीमा का भी हक है।'

मोनाई तड से बोल उठा—दखो बटा बुरा न मानना नूरू! अजीमा का क्या हक है और क्या नही इसका न्याव हमार सामन करन जोग तुम नही हो। तुम अजीमा क दोस्त हो, इसलिए मेरा धरम है कि तुम्हारा भी भला चेतू। बाकी दखो बुरा मानन की बात नही है। अजीमा क भले और हक की बात जो मैं सोचूगा, वो दूसरा कोई नही सोच सकता। क्यासमझे? अजीमा मरे दोस्त का बेटा, मरा सागिरद है। भगवान जी जानत हैं इस और याडा को मैंने कभी अलग करक नही माना। इसलिए मैं जो कहता हू वह सुनो। नवाब साहब क यस म अजीमा को मैं कोई हक नही दता। औरता के मामल म छ छ आन तुम दोना के, चार आन मर। इन टट

रिया के मामले भी यही फसला रहगा। ठठरियो म जो मेरी चवन्नी रहगी उसम से एक आना मैं अजीमा को दूगा एक आना पुन के खात म और दो आने मेरे। क्या समझे ?"

"ठीक है काका। हमको खुसी है।' नूरद्दीन सतुष्ट होकर बोला।

मानाई फिर कहने लगा—' अच्छा, अब रही दूकान, सो उसम अजीमा की चार आने की पत्ती रहेगी। और छावनी का ठका जा लूगा, उसम दो आने तुम्हारे, चार आने अजीमा के और दस आने मरे। देखो भाई, मैं कुछ अन्याय तो नही कर रहा हू ? तुम्ह कुछ सक सुभा होए तो अभी मर मुह पर ही कह दो। मैं बुरा नही मानूगा। बाकी पंट म न रखना। क्या समझे नूरू ?'

नूरद्दीन बाछें खिलाता हुआ हाथ जोडकर बोला—"नही काका, अल्ला कसम मैं तो बहुत खुश हू। तुम्हारे फसले म कभी गैर इसाफी नही हो सकती। सच कहता ▌ अजीमा आज स मैं तो काका का गुलाम हो गया हू, अपनी कसम।

'और अजीमा !' मानाई बोला—' जो हुइ गया उसे भूल जाओ। भगवान जी जानत है मेरे मन म तुम्हारी तरफ स जरा भी मल नही है।

मोनाई का घर दिखाई पडने लगा।

अजीम बेहद शर्मिंदा हो रहा था। बडी दीनतापूवक सिर झुकाकर बोला— मेरे मन म अब कुछ नही है काका। उस दम न जाने मरे सिर पर कौन-सा भूत सवार हो गया था। अल्लाह गवाह है मरी रूह बडी तकलीफ पा रही है इस दम।

तू तो सिडी है। मानाई न हसकर अजीम के गाल पर एक हल्की सी चपत लगा दी। वह अपने घर के दरवाजे क सामन था। कहन लगा—' चल आओ अपनी काकी स मिलत चलो। नूरद्दीन बुरा न मानना बेटा अब इस दम तो मैं अजीमा को अपन साथ लिए जा रहा हू। बहुत दिनों बाद—तुम तो समझत हो हा बेटा !'

"हा, हा, काका, मुझ खुशी है। अच्छा तो मैं चलता हू। सवेरे मिलूगा।"

नूरुद्दीन बोला।

"अच्छी बात है सबेरे जरूर आना। बस फौरन से पेस्तर अब काम पर जुट जाना है। क्या समझे? अच्छा बेटा जीते रहो भगवान जी तुम्हें बनाए रखें' कहकर मोनाई अपने घर की कुंडी खटखटाने लगा।

मोनाई का प्रेमपात्र बनकर अज़ीम ज़रा बड़प्पन का भाव लेकर नूरुद्दीन से बोला— सबेरे मिलूँगा, नूरू। अच्छा सलाम भाई।'

मोनाई की पत्नी ने दरवाज़ा खोला। अज़ीम को पति के साथ देख कर ज़रा चौंकी। अज़ीम के प्रति उसकी घृणा चेहरे पर झलक गई। उसके ही कारण बूढ़े पति की बड़ी लाड़ली पत्नी को पति के हाथों मार खानी पड़ी थी और उसे तीस हज़ार रुपया का गम सहना पड़ा था।

काकी से तीस हज़ार रुपये ले जाने के बाद अज़ीम आज पहली बार सामने आया था। उसकी आँखें इस वक्त झुक रही थीं।

मोनाई ने परिस्थिति को दोनों तरफ से सँभाल लिया। अज़ीम के प्रति उसकी काकी के प्रेम का बखान करना शुरू किया। बहुत याद करती रही है। काकी के हाथ का मीठा भात खाने का इसरार किया। अज़ीम की नादानी कोई बड़ा गुनाह नहीं बच्चे कर ही जाया करते हैं। मरने से पहले वह अज़ीम को कुछ न कुछ अवश्य ही दे जाता सो उसका हक था। फिर अज़ीम को बतलाया कि वह दयाल को मुसीबत में डालने के बाद छेदीसिंह को मिलाकर उसके गोदाम में चोरी करवाने वाला है। उसमें भी अज़ीम का साझा रहेगा। चोरी करके रातोंरात नावें लदवानी होंगी।

उसने यह भी बतलाया कि चोरी पाप नहीं है। दयाल की हरामज़दगी का जवाब है। अज़ीम को आगाह किया कि नूरुद्दीन को इन सब बातों की हवा भी न पहुँचने पाए। इसके बाद मोनाई ने अज़ीम और नूरुद्दीन की दोस्ती को भी नापसंद किया— उसका-तुम्हारा कौन साथ? वह उचक्का है तुम सराफ हो बपारी हो। काम निकाल लेना दूसरी बात है मुदा नरगों का साथ करने से बपारी की साख उठ जाती है। क्या समझे!

अज़ीम को उसने फिर से शीशे में उतार लिया। नया उत्साह देकर

उसे विदा किया। मोनाई की पत्नी को अज़ीम पर विश्वास नहीं रहा था। उसके प्रति वह अपना क्रोध नहीं मिटा सकती।

मोनाई ने समझाया—'तू तो निरी पगली है। अरे, जो इस दम मिलता नहीं तो मैं ठंडा पड़ जाता। ये लोग नवाब साहब के पक्ष पर गुंडागिरी करानेवाले रहे। हिंदू मुसलमान वाली चालें मेरे साथ भी चल रहे थे। दयाल का क्या है वह आदमी है, मगर मैं तो भिखारी हो जाता। अब इसको दम पट्टी दे के साध लिया है। और वो चाल चली है कि सदा के लिए खटका ही मिट जायगा। दयाल ने जो इसे इसे हत्तिया-चार मेरे ऊपर किए हैं सो अब वह उसकी सज़ा पा जायगा। जब वो फंस जायगा तब नूरू और अज़ीमा को भी अलग अलग फांस के मिट्टी में मिला दूंगा। जो नुकसान सहा है उसे ब्याज समेत वसूल कर लूंगा। भगवान जी सदा सहाय रहें कलकत्ते में महल चुनवाऊंगा। क्या समझती हो तुम! और तुम्हें तो गहना से लाद दूंगा, मेरी लाडो। मोटर में बिठाय के कलकत्ते की सैर कराऊंगा तुम्हें। जरा इधर एक नजर देख ला मेरी तरफ। ऐ तुम्हें मेरी कसम!"

बूढ़े मोनाई की तीसरी पत्नी कनखियों से उसकी तरफ देखकर मुस्करा दी।

तीसरी पत्नी का कौतूहल बड़े बड़े सवाल करता था जिसके आधार पर मोनाई के नये-नये सपने बनते थे— बस गांव में यह आखिरी बाजी जीत लेने के बाद गांव का काला मुंह करके कलकत्ते चला जाऊंगा। वहां रोजगार फैलाऊंगा। हम तुम सेठ सेठानी बनेंगे। नौकर चाकर रहेंगे, मोटर रहेगी कलकत्ते में बड़े बड़े बड़े गाड़े जाएंगे भगवान जी ने चाहा तो एक बार कलकत्ते के बड़े-बड़े धन्ना-सेठों में अपनी साख पुजवाय लऊंगा। तुम समझती क्या हो, मेरी रानी! अरे, तुम्हें तो मैं सोने में मढ़वाय के अपनी तिजोरी में बिठाय दूंगा मेरी मैना!

चांदनी रात की रोमानी फिज़ा मरभुखों, मुर्दों के इस गांव में सब तरफ से मायूस होकर मोनाई के आंगन में खिलखिला रही थी।

बाहर, चारों दिशाओं से कुत्तों के भौंकने की और सियारों की मनहूस आवाजें आ रही थीं। कहीं से हिस्टीरिया में चीखते हुए किसी इंसान का दर्द रात के सन्नाटे को चीरता हुआ हवा में कपकपी पैदा कर देता था। वर्ना या मुर्दों की बस्ती में तनखसोट खूंखार जानवर ही अपनी आवाज कर रहे थे।

मौत की आखिरी घड़ियों में जब कि इंसान शांति से दम तोड़ना चाहता है कुत्ते और सियार उसे इस तरह मरने की मुहलत नहीं देते। जान निकलने के पहले ही कुत्तों के पैने दांत शरीर को चीड़ फाड़ शुरू कर देते हैं। दम के दम में आदमी लाश और लाश से ठठरी में बदल जाता है।

बेनी कांपते और डगमगाते पैरों से चला आ रहा था। उसके हाथ में एक गंडासा है। उसकी नजर एक लाश को खाते हुए कुत्तों के झुंड पर पड़ती है। कुत्तों को इस तरह पेट भरते हुए देखकर वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। उसे कुत्तों पर गुस्सा आया। घर जाते जाते वह लौट पड़ा। न तो कमजोर पर काबू में थे और न दिमाग ही। कहानी जोश से उसके पैरों में आंधियां और भूचाल बंध गए थे। गंडासा लिए हुए बेनी कुत्तों के मजमे पर झपटा। भरपूर हाथ पड़ा। एक का सिर साफ कट गया। दो-तीन जख्मी हुए और बाकी तमाम कुत्ते चिल्लाते हुए भाग गए।

अरसे से कुत्तों को इंसान को मारने की आदत पड़ गई थी, उनसे मार खाने की नहीं। कुत्ते फिर झपटे। एक की गर्दन पर पूरा वार पड़ा, पर बेनी अपने ही जोश में मुंह के बल लाश पर गिरा। किसी आदमी की अधखाई लाश थी। होंठों पर बदबू मांस का एक लोथड़ा ने बेनी का नया जायका महसूस कराया। वह अभी ठीक तरह से इस नये अनुभव की पहचान भी नहीं पाया था कि कुत्ते ने उसकी टांग पर हमला बोल दिया। बेनी बड़े जोर से चीख उठा। उसकी चीख में जो शक्ति अपना परिचय दे रही थी उसने उसे उठने का मौका न दिया। दोनों हाथ टेककर उसने उठने की कोशिश की। पर हाथ उस अधखाई लाश में अन्दर तक धुस गया। हाथों में छीछड़े छीछड़े भर गए, लेकिन बेनी को इसकी

खबर न थी, कोई परवाह न थी। गडासा उठाकर उसने पीछे उलटकर फेंका। कुत्ते भागे। बेनी लडखडाता हुआ उठा। उसकी आधा से खून बरस रहा था। उसका हाथ खून और छीछडा से सना हुआ था। उसके होठो पर आदमी का खून लिपटा हुआ था।

बेनी किसी तरह अपने घर की तरफ चला।

बेनी का घर अभी भी बाकी था। घर पर छप्पर न था, न मढी, मगर चार दीवारें तो बाकी थीं। घर के दरवाजे और बास बल्लिया निकालकर वह बहुत पहले बेच चुका था फिर भी उस घर के लिए उसे प्यार था। लोगो ने घरो मे रहना छोड दिया था मगर बेनी ने न छोडा। अपनी नव विवाहिता पत्नी के साथ वह वही रहा।

अकाल शुरू होने के दो महीने पहले बेनी का विवाह हुआ था। वह अपनी पत्नी के सौंदर्य पर मुग्ध था। उसकी पत्नी भी जी जान से उसे चाहती थी। गाव भर मे बेनी बसी बजाने मे अपना सानी नही रखता था। नवोढा को इसपर अभिमान था। ब्याह की मेंहदी का रग भी फीका नही पडा था कि दुनिया का रग बदल गया। गाव उजडने लगा। मृत्यु की विभीषिका सारे गाव को निगलने लगी। शरीर की शक्ति क्रमश क्षीण होने लगी। एक दूसरे के प्रति अपने प्रगाढ प्रेम से अकाल पीडित नव-दम्पती ने जीवन के लिए एक नई प्रेरणा प्राप्त की। ससार से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर वे दोनो सबसे दूर अपने घर मे ही रहने लगे। एक क्षण के लिए भी एक दूसरे से अलग न होते थे। लेकिन आज चार रोज से बेनी की पत्नी का बोल बन्द हो गया था। हड्डियो के ढाचे मे एक धुकधुकी-सी चला करती है जिसे देख देखकर बेनी की कल्पना बढती जाती है। कल तो उसकी पत्नी ने आखें भी नही खोली। पत्नी के बिछोह की कल्पना बेनी का जी नही देती। कल से वह घर से भागा भागा फिर रहा है। घर आता है तो पत्नी की मृत्यु को निकट आते देखकर भय से पागल होने लगता है। बाहर की दुनिया उसे और भी डरावनी नजर आने लगती है।

पत्नी को मरने और कुत्तों द्वारा खाए जाने से बचाए। फौरन ही उसका
इस भी सूख गया। इसके टुकड़े टुकड़े करके इस कलेजे में छिपा लिया
जाए, बस यह बच जाएगी। और इसे दम नहीं पाएगी, कुत्ते न्म गा नहीं
गर्वेंगे। यह ख्याल धनी को स्फूर्ति और प्रसन्नता देने लगा। वह तेजी से
उठा। उसने अपना गंडासा लिया। साँस उसकी पत्नी की छाती में बड़ी
धीमी चल रही थी। धनी ने सोचा जल्दी करना चाहिए। मरने से पहले
ही इस काटकर कलेजे में रख लूँ, नहीं तो यह मर जाएगी।

गंडासे का पूरा वार गर्दन पर पड़ा। अपने अंधाधुंध जाने में यह लाश
को बराबर काटता हो गया। यहाँ तक कि थककर गिर पड़ा। मास के
टुकड़े उसकी मुट्ठी में आए। धनी ने धीरे से हाथ उठाकर उन्हें देखा।
आत्मा में फिर नई चमक आई। थोड़ी देर पहले बाहर कुत्तों को मारने वक्त
मास के छीछड़े उसके हाथों से लगे थे। उस एक नया अनुभव मिला था।
अपने हाथ में पत्नी के शरीर के टुकड़े देखकर धनी को नया उत्साह
आया। वह अपने हाथ को मुँह के करीब लाता गया। आत्मा की चमक
बराबर बढ़ रही थी। धनी ने उन टुकड़ों को अपने मुँह में भर लिया और
चबाने लगा।

भूख का पागल इंसान अपने को मारकर भी जीवन की भूल भुलैया
में भटकने की इच्छा करता था। भूख से लड़ते-लड़ते वह क्रमश: भूख,
पीड़ा, शरीर, बुद्धि और मृत्यु की चेतना से परे जाकर जीवन से लड़ रहा
था। मनुष्य का यह संघर्ष स्वयं उसके लिए अर्थहीन हो चला था। ...
से भरे हुए कृत्य निरंतर बढ़ते चले जा रहे थे।

मानाई के मंदिर में पुजारी जी रहते हैं। उनके चार बच्चे हैं, [illegible]
बहिन है, पत्नी है और ब्राह्मण देवता अपने बड़े परिवार ... भूख
से लड़ रहे हैं।

ब्रह्मभोज के बाद में मोनाई ने मंदिर के भाग ...
भाग नहीं लिया। मोनाई तो उसी रात बाहर ...
तीसरे रोज मानाई की पत्नी ने तीस हजार रुपये ...

जब पुजारी जी गए तो उसने सारा गालियां भगवान को सुनाई, दबी, दबना और वामन ठाकुर का जी भर कोसा और फटी धोती दान से भी "कार कर लिया। भगवान भूख मरने लगे। उनके पुजारी का परिवार भी भूखा मरने लगा। पहले अपने बरतन भांडे बेच फिर ठाकुर जी की पूजा के बरतन बच गिए। पीतल के ठाकुरों का कुनबा भी दुकानदार के घर पहुंच गया। मन्दिर म बचन लायक अब कोई सामान न था। घर में सात प्राणी, पत्थर के राधा कृष्ण और मंदिर की गाय तथा उसका बछड़ा भूख से छटपटाकर दिन और रातें गुजार रहे थे। मोनाई आ भी गया मगर भोग का इतजाम फिर भी न हुआ। मोनाई अजीम और अनाथालय के चक्कर म पड़ गया। पुजारी एक बार उसके पास जाकर गिड़गिड़ाया। मोनाई ने प्रस्ताव किया—'औरतों को अनाथाल म भज दो। और भगवान को भोग की क्या जरूरत है। वो तो भाव के भूखे हैं। उनके लाखों भगत यो रोज ही इस तरह भूखे मर रहे हैं। वे भला भोजन करेंगे!'

सबकी भूख सहन हो जाती थी मगर अपने चारों बच्चों और गाय के बछड़े को भूख से तड़पता देखकर पुजारी त्रस्त हो उठता था। दिन पर दिन बच्चे सूखते जाते थे। गाय के दूसरे बच्चों की तरह उसके बच्चे भी दिन पर दिन मौत के निवाले बनते चले जा रहे थे। हारकर एक दिन उसने मोनाई के प्रस्ताव को स्वीकार करना चाहा। अपनी बहिन और पत्नी को मोनाई के अनाथालय म भेजकर चार मुट्ठी चावल पाने की इच्छा की। उस दिन पति पत्नी म भयकर कहा सुनी हुई। पुजारी हठ करके मोनाई के आदमियों को लाने गया। लौटकर देखा, कोठरी म दो नगी लाशें टगी थी। पुजारी की पत्नी तथा बहिन ने अनाथालय के भय से अपने तन की फटी धोतियां उतारकर फांसी लगा ली थी। अबोध बच्चे आश्चर्य से यह तमाशा देख रहे थे।

पुजारी ने लौटकर इस दृश्य को देखा। जीने की समस्या हल होने के बजाय और भी उलझ गई। पत्नी और बहिन को खोकर पुजारी पश्चाताप

की अग्नि में जलने लगा। बच्चों का बचाव [illegible] दुर्भिक्ष [illegible] में पीड़ित रहने लगा। समस्या कहीं भी [illegible] नहीं [illegible] थी और बच्चे दिन पर दिन मृत्यु के निकट पहुँचते जा रहे थे। [illegible] का पुजारी बच्चों को भख में मिलाकर [illegible] देता था, और [illegible] के कारण उसकी पीड़ा प्रतिपल प्रतिक्षण दुगना होती जा रही थी।

पुजारी त्रस्त हो उठा। एक दिन उसे विचार आया, प्राण बचाने के लिए हत्या करना पाप नहीं। विचार की [illegible] [illegible] उसे मस्तिष्क को उलझाने लगी। उसकी नज़र [illegible] पड़ी और उसके बछड़े पर गई। युगों से बंधे मन का, [illegible] और [illegible] की चेतना का पुजारी की भूख झटका देकर तोड़ देना चाहती थी। [illegible] के मोह को वह भूख की तलवार से काट देना चाहता था [illegible] भी कुछ कम प्रबल न थे। पत्नी और बहिन की मृत्यु, [illegible] गोमाता का स्थान और उसके पूजा करने के [illegible] इंसान को बुरी तरह जकड़ रखा था। [illegible] भी चैन न मिलता था। पुजारी हार हार जाता था। [illegible] बार-बार थपेड़े खाकर तड़प उठा। राधा-कृष्ण की मूर्ति के सामने [illegible] होकर वह अपने को एकाग्र करना चाहता था, [illegible] को अपने मन से निकाल देना चाहता था—"तुम बताओ, भगवान क्या यह पाप है? बच्चे फिर खाएंगे क्या?"

गोपाल चुप थे। उनका मुस्कराता हुआ [illegible] था।

पुजारी खीझ उठा—"तुम पत्थर के हो। [illegible] मार भी तो नहीं [illegible] सकते। किसी काम के नहीं किसी [illegible]।"

भगवान का पुजारी अपना सम्बन्ध [illegible] के लिए भगवान से ही विद्रोह करना चाहता था। वह अपने [illegible] कर रहा था। हत्या के लिए वह अपने विचारों का समर्थन चाहता था—[illegible] था, जो उसे स्वयं अपने से ही मिल रहा था।

विद्रोह की भावना प्रतिपल ज़ोर पकड़ रही थी, क्योंकि [illegible]

घटना एक पल के लिए भी लुप्त नहीं हो रहा था। दिन भर इसी संघर्ष में बीत गया। क्षण में गऊ वाले दालान की तरफ बढ़ता, फिर बाहर चला जाता। कभी बच्चों को जोर से छाती से चिपटा लेता फिर गुस्सा चढ़ता। कभी भगवान की कोठरी में चला जाता, हाथ जोड़ता प्रार्थना करता रोता गिड़गिड़ाता और फिर गालियां देने लगता और आंगन में आकर टहलने लगता। सारा दिन चक्कर काटते बीता। पुजारी के ब्राह्मणत्व और हिंदुत्व के संस्कारों ने हार न मानी न मानी। उसका क्रोध बढ़ता गया। ठाकुर की कोठरी में जाकर उसने पहले तो भगवान के चरणों में अपना सिर फोड़ना शुरू किया और फिर भगवान को खींचकर पीटना शुरू किया।

इस बार उसने जबर्दस्त विद्रोह किया। अटूट हठ के साथ वह गाय के दालान में गया। भूख से दुबली गाय रस्सी से बंधी बैठी थी। भूख से बिलबिलाता हुआ बेजान बछड़ा आंखें बंद किए हुए पड़ा था। कुट्टी काटने का गंडासा ताक पर रखा था। पुजारी गाय की तरफ गया। उधर से हिम्मत टूटी। फिर बछड़े की तरफ आया। बछड़े की तरफ जाते उसे अपने बच्चों का ध्यान आया। पुजारी का हठ फिर टूटने लगा। लेकिन वह नहीं चाहता था कि उसका हठ टूट जाए उसके बच्चे भूखे मर जाएं। उसने तेजी के साथ गंडासा उतारा, बछड़े को खोलने की हिम्मत फिर भी न हुई। उसने गाय की रस्सी को खोला और उसे घसीटने लगा। गाय रंभाती हुई उठी। गाय बराबर रंभाने लगी। वह दयनीय आंखों से पुजारी को देख रही थी। शारीरिक कमजोरी मन की निर्बलता और हठ पुजारी को तोड़े डाल रहा था। और इसी हार पर विजय पाने के लिए वह जबर्दस्ती गाय को घसीटता हुआ मन्दिर के बाहर ले चला। मंदिर में गो वध करने की हिम्मत उसे नहीं हो रही थी।

उन्माद में पुजारी गाय को घसीटता हुआ ले जा रहा था। गाय कमजोर थी। मृत्यु का भय जानवर के दिल को दबोचकर उसके पैरों को और भी कमजोर बना रहा था। किसी तरह दस कदम चलकर गाय ने आगे

स्वयं प्रायश्चित्त न करूंगा तो ईश्वर दंड देकर मुझसे प्रायश्चित्त कराएगे।'

संस्कारी, आत्माभिमानी ब्राह्मण को दंड भयानक और साथ ही अपमानजनक प्रतीत हो रहा था। पेट के लिए उसकी पत्नी और बहिन को वेश्या बनाने का प्रस्ताव ही उन दोनों के आत्मघात का कारण बना। ब्राह्मण पुजारी का रोम रोम इस महादंड की भयंकर ज्वाला में जल रहा था। प्रायश्चित्त करना ही उचित है। किंतु अपने बच्चों को गंडासे से वह कैसे मार सकेगा? गाय की हत्या का दृश्य उसे कायर बना रहा था। और वह कायर नहीं बनना चाहता था।

सहसा उसका ध्यान कनेर की झाड़ी की तरफ गया। ठाकुर के पूजा के लिए मंदिर के बाहर कुछ फूलों के झाड़ लगा रखे थे। इधर अरसे से देखभाल छूट जाने के कारण क्यारियां सूख चुकी थीं। कनेर को देखते ही सहसा पुजारी को ध्यान आया कि इसकी जड़ों में विष होता है। विष द्वारा अपने बच्चों तथा अपने आपको मारना उसे सरल प्रतीत हुआ। पुजारी प्रसन्न हुआ। उसने भगवान को धन्यवाद दिया। उसमें नया उत्साह पैदा हुआ। गंडासे से वह कनेर की छोटी-सी झाड़ी को काटकर उनकी जड़ें खोदने लगा। हाथों की शक्ति जवाब देने लगी थी परंतु प्रायश्चित्त का उत्साह उसे बल दे रहा था। उसने सारी जड़ें बटोर लीं। क्यारियों की सूखी हुई टहनियां भी बटोरकर वह मंदिर में गया। गंडासा बाहर ही पड़ा रहा।

चूल्हा बहुत दिनों से ठंडा पड़ा था। पेड़ की टहनियां पुजारी ने चूल्हे में रख दीं। ताक से दियासलाई की पेटी उतारी। आठ-दस तीलियां अभी भी बची थीं। पुजारी ने चूल्हा सुलगाया। मिट्टी का छोटा सा घड़ा पानी से आधा भरा था। पुजारी ने उसे चूल्हे पर रख दिया। जड़ें उसमें डालकर पुजारी अति शांत भाव से पकते हुए काढ़े की तरफ देखने लगा। सूखी टहनियां जल्दी-जल्दी जल रही थीं। पुजारी चूल्हे में बराबर नई टहनियां झोंकता जाता था।

काढ़ा पककर तैयार हो गया। पुजारी पहले से भी अधिक शांत हो गया। उसकी दृढ़ता और भी बढ़ गई थी। उसने घड़ा उठाया। ठाकुर जी

की कोठरी की तरफ बढ़ा। ठाकुर जी के सामने घड़ा रखकर उसने हाथ जोड़—'गोपाल, बहुत दिनों से तुम्हारा भोग नहीं लगाया मैंने। आज सब दिन की कसर पूरी हो जाएगी।'

उसने राधा-कृष्ण के चरणों पर वह घड़ा रख दिया और उनके होठों पर थोड़ा सा जहर लगा दिया।

फिर बच्चों को जगाकर लाया। सबसे छोटे को गोद में उठाया। खाने पीने के नाम पर कोई चीज आज उन्हें बहुत दिनों के बाद मिल रही थी। बच्चे बहुत खुश हो रहे थे बेताब हो रहे थे।

बाप का दिल फिर डगमगाने लगा। पुजारी ने अपने को साधा। घड़े पर ढके हुए मिट्टी के सकोरे में मकर का काढ़ा भरकर अपनी गोद में बैठे हुए बच्चे को उसने अपने हाथ से जहर पिलाना शुरू किया। बच्चा बड़े सन्तोष से जहर पी रहा था। बाप की आंखों में आंसू छलछला आए। पेट-भर चारों बच्चों ने जहर पिया। काढ़ा खत्म होने लगा। वह खुद अपने लिए भी तो चाहता था। उसका अपना भी स्वार्थ था। उसने जबरदस्ती बच्चों को पीने से रोक दिया।

इतने में छोटा बच्चा पेट पकड़कर रोने लगा। जहर धीरे धीरे सब बच्चों पर असर कर रहा था। बाप चुपचाप देखता रहा। बेटे उसकी आंखों के आगे मर रहे थे। वे सदा के लिए सो गए। पुजारी भी सदा के लिए सो जाना चाहता था। पुजारी ने घड़े का मुंह तोड़ा जिससे पीने में आसानी हो। टूटा घड़ा हाथ में उठ आया। भगवान के चरणों में प्रणाम कर पीना ही चाहता था कि गाय का बछड़ा कांपती हुई आवाज में रंभा उठा।

पुजारी ठिठक गया। उसे चिन्ता होने लगी। तड़प-तड़पकर मरेगा बिचारा। काढ़ा बहुत थोड़ा है, नहीं तो उसे भी पिला देता। फिर उसे ध्यान आया। अपने स्वार्थ के लिए एक निरीह प्राणी को कष्ट देना बहुत बड़ा पाप है। जिसकी मां को मारकर वह इस समय प्रायश्चित्त करने बैठा है उसको इस तरह संसार में सिसक सिसककर मरने के लिए छोड़ जाने का क्या अधिकार है। अपने बच्चों के लिए उसे चिन्ता थी। क्या वह बच्चा

नहीं है ?

स्वार्थ और परमार्थ का संघर्ष पुजारी को अपार कष्ट दे रहा था। वह मरना चाहता था। उसे मरने की प्रबल इच्छा थी। जहर इस समय उसके लिए अमृत था। जीवन विष से भी अधिक बुरा था। वह जीवन नहीं चाहता। पत्नी बहिन अपने बच्चों और गऊ का हत्यारा ब्राह्मण पुजारी ज़िन्दा नहीं रहना चाहता।

गाय का बछड़ा अपनी कांपती हुई आवाज में रंभा रहा था।

स्वार्थ और परमार्थ में घोर संघर्ष चला। पुजारी कठोर बना— 'इस बच्चे को सिसक सिसककर मरने के लिए छोड़ने का मुझे क्या अधिकार है ? पाप मैंने किया है। सिसक सिसककर जियूं तो मैं ! इतने दिन जियूं कि मेरा जीवन पहाड़ बन जाए ? मेरे ऐसे हत्यारे के लिए यही सबसे बड़ा प्रायश्चित्त होगा !'

गाय के बछड़े को कष्टमय जीवन से मुक्त करने के लिए पुजारी आगे बढ़ा।

पुजारी ने अपना प्रायश्चित्त पूरा किया। परन्तु पत्नी और बहिन का आत्मघात, गठरियां बच्चों की लाश और गाय के बछड़े का तड़पना पुजारी के प्रायश्चित्त को उन्माद से न बचा सका। अपने आपसे भयभीत होकर, चीखकर वह भागा—बेतहाशा भागा।

८

बनके की सवारियों में अच्छी तरह सुना भी न पाए थे कि गिद्धों के झुंड ने जान पर धावा बोल दिया। गिद्ध और पांडू को अपनी जान के लिए दौड़कर अलग होना पड़ा।

आज घर म मौत का पहला दिन था। सवेरे शिबू की गोदवाली मुर्दा दम लडकी चुनी ने भूख की तडप मे आखिरी जोर लगाकर मा की छाती पर मुह मारा। उसीमे दाती बैठ गई। मा की छाती से दूध के बजाय खून निकल आया और चुनी का दम निकल गया।

पन्द्रह रोज से घर मे भूख का राज था। सबसे छोटी बहन कनक को छ रोज से जूडी आ गई थी। चुनी की मौत देखकर वह रोते रोते बेहोश हो गई थी।

चिर प्रत्याशित मृत्यु इस घर से भी अपना हक लेने के लिए आ पहुची थी।

शिबू और पाचू चुनी को दफनाने के लिए गए। लौटकर आए तब तक कनक का उठाने की बारी आ गई थी।

शिबू आज सवेरे से गम्भीर हो गया है। चुन्नी मरी घर म सभीकी आखें पिघलने लगी। बाबा तो जनम के कठोर हैं, मगर शिबू अपने जीवन म पहली ही बार आज मौन हुआ है और आखें खुश्क रही हैं।

रास्ते भर शिबू पाचू चुप रहे। बच्ची की लाश को अपने हाथो म लिए हुए शिबू मृत्यु को अति निकट से अनुभव कर रहा था।

बचपन से उसकी इच्छाओ की बल सदा सहारा लेकर बढी है। अपनी अकमण्यता की पालकी दूसरो के कधो पर रखकर उसका दप आगे बढना चाहता था। हठ से वह अपने दप की रक्षा करता था। उम्र बढती गई बुद्धि न बढी। ब्राह्मणत्व कुलीनता पिता और छोटे भाई की प्रतिष्ठा का सहारा लेकर वह बडा बन नहीं सकता इसे वह अच्छी तरह समझ गया। जुआ खेलकर या लीडर बनकर एक ही दाव म प्रतिष्ठा को जीत लेने की कोशिश म वह बराबर लगा रहा, मगर कामयाबी हासिल न हुई। हठ चिढ म बदलती थी चिढ गुस्से का रूप लेती थी और गुस्सा उसे उच्छृखल बनाता था। उच्छृखलता के आचरण म वह अपनी लघुता को ढक लेना चाहता था। स्वय अपने से भी वह अपनी लघुता को छिपा लेना चाहता ... बन गया था।

अकाल ने पर्दा फाश कर दिया। अकाल उसकी इच्छा के खिलाफ था। हठ, चिढ़, गुस्सा और उच्छृंखलता कुछ भी काम न आ सकी। बच्ची की मृत्यु ने आज उसे पूरी तौर से हरा दिया था। अधिकाधिक कठोर बनकर शिबू अपनी इस पराजय को भी जीत रहा था। वह पत्थर हो गया था।

बच्ची को दफ्नाकर शिबू और पाचू घर लौटे। दोनों भाई मौन थे। घर के पास आए, रोने की आवाज़ें सुनाई दीं। अन्दर गए देखा कनक की लाश पड़ी थी। पाचू हिल गया। शिबू वैसा ही कठोर बना रहा।

पार्वती माँ सबसे ज्यादा रो रही थीं, उनका रोना देखकर आँखों में आँसू आते थे।

सास ससुर—बड़ों की मौजूदगी में अपनी बच्ची के लिए रोना कुलीनों के अदब के खिलाफ माना जाता है। शिबू की बहू अपनी बच्ची से बिछड़ने का दर्द भी ननद की मौत पर उड़ेल देना चाहती थी। मगर खिसोम खुल कर रोने की शक्ति नहीं थी। शारीरिक कमज़ोरी और क्रमशः निकट आते हुए अपने अन्त का भय आँसुओं को दबोच लेता था।

पास-पड़ोसी कोई नहीं आया। आबरू के ध्वस्त किले में कुलीनता मौत से छिपकर बैठ रही थी।

टिकटी के लिए चार बाँस नहीं जुड़ते थे। बेबसी पर शर्म को कुर्बान कर फटी झोली में कनक की लाश को डाल दोनों भाई उसे फूँकने ले चले।

बोझ सँभाले न सँभलता था। दोनों भाई उजड़ी हुई आबादी से परे जाकर एक टूटे और उजड़े हुए घर से थोड़ा सा फूस और दो बाँस पाकर किसी तरह कनक को जलाने की सोच रहे थे। इतनी लकड़ियों में लाश का जलना असम्भव था। लेकिन असम्भव को सम्भव बनाने की बेबसी से भरी हुई ज़िद से अपनी बहन की अन्तिम धार्मिक प्रेतक्रिया करना चाहते थे। दो चार लग्गे लकड़ियाँ और बटार मिल गई।

गिद्ध आसमान में मँडरा रहे थे। शिबू चिथड़े से ढकी हुई लाश के पास खड़ा था और पाचू उन दस-पाँच लकड़ियों से चिता बनाने का प्रयत्न कर रहा था।

आबरूदारों का बुरा हाल था। आबरू नाम की कोई चीज़ इस वक्त तक उनके साथ नहीं रह गई थी। उनकी बहू बेटियां भी खुले आम धर्मशालाओं और अनाथालयों में भेजी जाने लगी थीं। हरएक हरएक के घर का राज़ अच्छी तरह से जानता था, फिर भी आबरू शब्द की रक्षा ज़बान से बराबर की जा रही थी। हरएक के घर में ही एक आध दो मौतें भी हो चुकी थीं। श्राद्धादि प्रेत कर्म करना हरएक के लिए असम्भव हो चुका था इसलिए जो घर में मर जाता उसके लिए यह कह दिया जाता कि वह परदेस गया है। परदेस और धर्मशाले का मतलब हरएक आबरूदार जानता था। अपनी औरतों बेटियों को अज़ीम और मोनाई के हाथों बचकर जो चावल पाते थे उसे वे सौ रुपये मन के हिसाब से खरीदा हुआ बताते। आबरू जाए तो जाए मगर आबरू का ख़याल दिल से न जाता था। मन्दिर के सामने ही कटी हुई गाय को देखकर आबरूदार हिन्दू धर्म की याद करने लगा। मोनाई के साथ साथ मन्दिर के अन्दर जाकर पुजारी के सारा कच्चा और गाय के बछड़े को मरा हुआ देखा। सबके मुंह से निकले हुए नीले झाग देखकर लोगों ने घटना को समझ लिया। हर आबरूदार को यह मौत बहुत अच्छी लगी। ज़हर खाकर आबरू बचा लेना लोगों का महान आदर्श का सार जचा। उनकी निगाह में ज़हर की इज़्ज़त बढ़ गई। गाहुत्या का तज़किरा दबने लगा था। ज़हर की ख़्वाहिश हरएक को होने लगी थी।

आज मृत्यु में अधिक आत्मीयता हो जाने के कारण पांचू विचलित हो उठा था। मृत्यु पर वह झुंझला रहा था। क्या इस देश में एक भी आदमी ज़िन्दा न बचेगा? क्या पृथ्वी से मनुष्य जाति ही उठ जाएगी! आज गांवों में है, कल शहरों में मौत फैलेगी। एक दिन सारा देश मानव विहीन हो जाएगा।

पांचू की कल्पना क्रमशः सजीव होने लगी। उजड़ हुए गांव, उजड़े हुए नगर उजड़ी हुई दुनिया उसकी कल्पना के रंगों में भरी जाने लगी। थाउज़ेन्स लोग, जो कि अमीर कहलाते हैं बच जाएंगे। मगर वे भी कब तक

बचे रहेंगे? जब अन्न पैदा करनेवाला ही न बचेगा तो खानेवाला क्या खाकर जीवित रहेगा? रुपया, सोना चांदी और जवाहरात को क्या खाकर जीवित रहेगा? रुपया, सोना चांदी और जवाहरात को क्या खाता से बचाया जा सकेगा। मोटरों और ऊंचे-ऊंचे महलों न क्या पेट का कभी न भरनेवाला गड्ढा भर पाएगा? नहीं। वे भी एक दिन मरेंगे। उन्हें भी एक दिन मरना ही होगा। बड़े समाज का अपने स्वार्थ के लिए मारकर छोटा समाज भी जीवित नहीं रह सकता। स्वार्थ की व्यक्तिगत सत्ता ही गलत है। हर आदमी स्वार्थी होना चाहता है। लेकिन असलियत यह है कि वह अपने स्वार्थ को पहचानता नहीं। व्यक्ति का स्वार्थ समाज का ही स्वार्थ है। जब समाज ही न रहेगा तो व्यक्ति कैसे जीवित बचेगा?

पांचू की कल्पना अपने गांव से लेकर कलकत्ते तक के विनाश का दृश्य देख रही थी। और कलकत्ते तक ही नहीं उसकी कल्पना सारे विश्व को मानव शून्य देख रही थी। वह बम, तोपें, टैंक हवाई जहाज, बड़ी बड़ी राजधानियां ऊंचे ऊंचे महल मोटरें ट्रेनें, रेडियो टेलीफोन और मान विज्ञान की सब चीजें मानव की असफलता का चिह्न बनकर बाप रह जाएंगी धरा में कुत्ते लोटेंगे। दुनिया में जानवर ही बच जाएंगे। आदमियों की ठठरियां ही उनकी याद दिलाने के लिए बच रहेंगी।

मानव का एकमात्र प्रतिनिधि बनकर अपने कल्पना लोक में घूमता हुआ पांचू दुनिया को इसी तरह से देख रहा था। घर की दो मौतों ने उसके विचारों की गति और भी तीव्र कर दी थी। उसे एक एक करके सब मौतें देखनी होंगी, यह बात वह अपने ऊपर बड़ा संयम करके सोच रहा था मां, बाबा, भाई, पत्नी, भावज तुलसी, दीनू परेश—दुनिया की हर चीज वह इसी तरह से भी भरकर देखने लगा, जैसे अब व सदा के लिए उसकी आंखों से ओझल हो जाएगी।

शिबू को सवेरे से इतना गंभीर और मौन देखकर पांचू का दिल घबरा रहा था। वह जानता है कि उसके भाई का हृदय बड़ा कोमल है। शिबू की बड़ी से बड़ी ज्यादतियों के बावजूद भी वह उसे बहुत

करता था। शिबू हमेशा जरूरत से ज्यादा बोलना, शेखी बघारता, चीखता चिल्लाना, और जल्दी ही हमला या रो पड़ना था आदी था। पाच उस रूप में शिबू को देखने का आदी था। शिबू की यह गभीरता उसे उसके स्वभाव के विपरीत लग रही थी। उसे डर था दादा के दिल को जबदस्त चोट पहुची है। कहीं कुछ हो न जाए।

परन्तु आज घर के दो प्राणी कम कर गई। दीनू और परेश भी किसी वक्त जा सकते हैं। उन दोनों के हाथ पैरों में सूजन आ गई थी। बौदी (शिबू की बहू) पहले से ही दुबली थी अब तो कंकाल मात्र ही रह गई थी। मगला कितनी फीकी पड़ गई है बेचारी! परन्तु उसकी बड़ी-बड़ी मद भरी आखों में अब भी चमक है। आज भी उसके होठों पर मुस्कराहट बार बार आती है बल्कि पहले से ज्यादा आती है। पाच ने अक्सर गौर किया है मगला आजकल जबदस्ती हसने और हसाने की कोशिश भी करती है। बौदी की मुस्कराहट बड़ी डरावनी होती है। दातों की पक्तिया खुलते ही अपनी निकरालता का परिचय देती हैं। तुलसी बिलकुल नहीं हसती। उसका ध्यान उड़ा उड़ा सा रहता है। वह ज्यादातर चलती फिरती भी नहीं बैठी रहती है या लेटी रहती है। कमजोरी के बावजूद भी वह करवटें ज्यादा बदलती है।

मा आजकल जरूरत से ज्यादा चिड़चिड़ी हो गई हैं मगर यह चिड़चिड़ापन निहायत ऊपरी है। उस चिड़चिड़ेपन के बीच उनकी गभीरता छिपी हुई है। सवेरे से शाम तक वही सबसे ज्यादा बोलती, चिल्लाती और चलती फिरती हैं। बिना बात की आड़ लेकर घर के सब लोगों पर चीखा चिल्लाया करती हैं सबको गालिया दिया करती हैं—'मरो, मरो' किया करती हैं।

पाच को मा का यह स्वभाव भी बड़ा अस्वाभाविक-सा लगता था। आज सवेरे चुन्नी की मौत पर उन्होंने बड़ा तूफान मचाया। जब बड़ी बहू की छाती में ही चुन्नी की दाती बैठ गई थी, और छाती से खून निकलने लगा था, बड़ी बहू चीखकर आखें उलटने लगी थी। मा ने

एकदम स सबको गालिया देना शुरू कर दिया। एक सिरे से सबको 'मरा, मरो' कर डाला, लेकिन उस बीच म मगला से उन्होंने पानी मगाया, तुलसी को बुलाकर भावज को पकडने के लिए कहा जबदस्ती चुनी के जबडा म अगूठे डालकर उसका मुह खोला और उसकी लाश को कूडे की तरह आगन मे पटककर घर मे सबको चौंका दिया। झटके के साथ सभल-कर बडी बहू भी उधर देखने लगी। पाचू निश्चयपूवक जानता है कि उसकी मा पागल नही हुई है। उस अमानुषिक-सा लगनेवाली कठोरता म मा की बुद्धि बहुत गहरे जाकर काम कर रही है। घर मे अपने वाली मत्यु को तुच्छ करके, घर भर के दिलो मे समाए हुए मौत के डर को झटका देने के लिए वह बहुत कठोर हो गई थी। मा के इस कृत्य ने इस समय बडी बहू को मरने से बचा लिया था, हरएक के जीवन म कुछ दिन और बढा दिए थे।

पाचू गौर कर रहा था, जब दोनो भाई चुनी को दफनाकर घर लौटे तब घर के बाहर तक रोने की आवाजें आ रही थी। सबसे ऊची और सबस ज्यादा ददनाक मा की आवाज थी। कनक की मौत पर मा का इस तरह से रोना और रुलाना भी पाचू को बडा ही अस्वाभाविक सा लगा था। जब व लोग घर पहुचे तो एक बार वह दद नये जोश के साथ बढा। पाचू भी रो पडा, मगर शिबू नहीं रोया था। कनक की लाश को झोली म डालकर बाहर ले जाने से पहले मा ने पाचू को एक ओर बुलाया और गभीर आवाज म कहा—"रास्ते मे अपने दादा का ध्यान रखना, बेटा।' पाचू को ताज्जुब हुआ था। मा की आवाज मे जरा कपकपी न थी। पाचू ने ताज्जुब के साथ इसे महसूस किया था और उसे इससे बल मिला था। आप धय धरकर मा को धैय देने की इच्छा उसके मन मे सहज ही जाग्रत् हुई। वह मा को धैय बधाने लगा। मा न उत्तर दिया—"धरती माता अपना धीरज आप ही धरती हैं, बेटा। छिन छिन टूट रही हैं, पर दुनिया अब तक बची भी उन्हीके कारन है। तू मेरी फिकर मत कर। मैं टूट जाऊगी, पर हारूगी नहीं।'

इसके बाद से वह मां को एक अलग रूप में देखने लगा था। पहले पिता की महत्वाकांक्षा का शिकार उसके पूर्वजों की धरती पर तलवार से हुआ था। उसी जीवन का उपार्जन कर बच्चों को शिक्षा दी है। वह धरती के रूप में आती थी। मां को देखता था—धरती जिस प्रकार प्रति क्षण अपना पेट सब कुछ सहती है परन्तु उसके अन्दर ज्वाला भरी है। लेकिन लोग सोचता है, इस तरह से मां और धरती कितने दिन जी सकेगी? क्या वह लोग सोचता कभी भी इन अत्याचारों का अन्त करेगा?

पांडु का पुत्र उन्माद फिर जाग उठी—'आदमी से नाता दुनिया अपना ही टांगा पर खड़ा अपने महान वंश का ध्वंस कर, नाश करेगी। उस अपने दूसरे बच्चों का ख्याल भी तो है। आदमी का बुद्धि का विनाश की अनगिनत निशानियां भी एक दिन खंडहर होकर मिट्टी में मिल जाएंगी, धरती फिर टीलों, जंगलों और हरियाली में ढक जाएगी। मानव के दिन का अस्तित्व मिट हो जाने के बाद धरती फिर अपने दूसरे बेटों—पशुओं और पक्षियों के लिए जीवनदायिनी और सुखद बन जाएगी।"

इस विचार से पांडे के अहम् को बल मिला। फौरन ही शिबू की याद आ गई।

कनक को गिद्धों के हवाले छोड़ आने के बाद थोड़ी दूर आगे चलकर शिबू और पांडे दोनों की अलग अलग रास्तों पर चलने लगे थे। शिबू घर की ओर चलने के बजाय ब्राह्मण पाड़े के उत्तर की ओर चल दिया। वहां शिबू की मित्र मंडली के तीन सदस्य रहते हैं। शिबू को उधर जाते देख पांडे कुछ न बोला। सोचा—'अच्छा है वहां जाकर उसका यह मौन टूटेगा। दिल का गम कुछ कम होगा। पांडे घर की ओर चला आया। घर में दोनों बहुओं और तुलसी से घिरी हुई मां बुखार से तपते हुए परेश को गोदी में लिटाकर सबको अपने पांच बेटों की मौत के बारे में अपनी आपबीती सुना रही थी। और उस वर्णन में घबराहट में की गई अपनी बेवकूफियों का जिक्र करते हुए वे हंसती जाती थी। उस हंसी के पीछे

पाचू ने देखा, बड़ी असह्य थकान छिपी हुई थी। मां के चेहरे पर चमकते हुए तेज में भी उस थकान को छिपा सकने की शक्ति नहीं थी। पाचू को इस अनुभव से पीड़ा हुई। परन्तु उसने धर्म बतानेवाले मां के कठोर संयम को ग्रहण करने का प्रयत्न किया। वह बाबा की कोठरी में चला गया।

बाबा की चारपाई के पायताने का छुआ। कोठरी में काफी उजाला नहीं था। चारों तरफ टांडों पर किताबों के बस्ते मद्धिम से दिखाई देते थे। बाबा की चारपाई पर सामने के दरवाजे से हल्का हल्का प्रकाश आता था। एक गौरवर्ण अस्थि पंजर आधे बन्द किए पड़ा था। दाढ़ी और सिर के बढ़े हुए अस्तव्यस्त बाल मुख को घेरी खड़े रह थे। बाबा पर दम निश्चेष्ट से पड़े थे। पायताने किसी को महसूस करके बाबा बेचैन हुए। पाचू ने देखा बाबा सुनने के लिए तैयार हैं। पाचू फौरन ही बढ़कर, उनका एक पैर अपनी जांघ पर रखकर मलते हुए कहने लगा—"कब इसका अंत आएगा, बाबा ?"

आवाज में गहराई लिए हुए निर्विकार और शांत रहकर बाबा ने उत्तर दिया—'जब इस अंत में से आदि का फिर उदय होगा। बदलते हुए युग के झकोले तो लगेंगे ही पाचू। अपने बड़े समाज को जगाने के लिए यदि मनुष्यों का यह छोटा-सा समाज तपस्या करता है तो करने दो। परंतु इस तपस्या को कामना रहित और निरुद्देश्य न बनाओ। उद्देश्य-रहित की हुई तपस्या संसार में घृणा उत्पन्न करती। घृणा मत उत्पन्न करो पाचू! कामना करो कि तुम्हारी बनि मानव में प्रेम की भावना उत्पन्न करे।'

बाबा का यह उत्तर उसके लिए संतोषजनक न था। उलझकर वह बोला—'घृणा निरर्थक और निरुद्देश्य नहीं है बाबा। वह मानव की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है।'

बाबा की दाढ़ी मूछों में हंसी आई। बोले—"घृणा की गति है कहां? विनाश ही में न? तुम्हारा यह अकाल क्या है? मनुष्य की घृणा ही न?

यह महायुद्ध क्या है ? कौन सा आदर्श है इसमें ? सत्य एक असत्य के साथ संधि करके दूसरे असत्य का सर्वनाश करने के लिए युद्ध कर रहा है। मनुष्य इस राजनीति के चक्कर अर्द्धसत्य का पोषण करता है। अर्द्धसत्य अज्ञान का कारण है। ज्ञान प्रेम का मूल्य है। और प्रेम की गति है निर्माण तक—निर्माता तक।

हथेली से ठोड़ी को पकड़े हुए पांचू कोठरी की छत की तरफ देख रहा था। अंधेरा उसकी आंखों में जम गया था। धीरे धीरे आंखों की ज्योति ने उस अंधकार को वश में किया और छत की कड़ियां दिखाई पड़ने लगीं।

अपनी खिड़की के बाहर छिटकी हुई चांदनी और तारों को पांचू देख रहा था। मंगला उसकी छाती में मुंह छिपाकर सो गई थी। वह आज बहुत थक गई थी। आज उसकी हंसी भी सहम गई थी।

सिर को टेके हुए पांचू का दाहिना हाथ थकान महसूस कर रहा था। लेकिन मंगला के जाग उठने के भय से वह जरा भी न हिला डुला, चुपचाप खिड़की के बाहर छिटकी हुई चांदनी और आसमान के तारों को वह देखता रहा। अपनी छाती से चिपकी हुई मंगला के स्पर्श को वह अपनी थकान से अधिक मूल्यवान समझता था। वह यह महसूस करता था कि मंगला दिन पर दिन कमजोर होती जा रही है। उसे यह डर था कि यह स्पर्श सुख न जाने कब सपना हो जाए।

सहसा चीख सुनाई दी। मंगला चौंककर जाग पड़ी। पांचू उठकर बैठ गया। बौदी क्यों चीखी ? दादा के कमरे के किवाड़ भी जोर से खुले। पीछे से दादा की आवाज भी आई— साली चरका देकर भाग गई। घरवाले जैसे तुझे बचा ही तो लेंगे। हारामजादी तू मेरी वस्तु है। यू आर माइ थिंग साली!

दिन भर के बाद दादा की आवाज सुनी थी। मंगला और पांचू दोनों सहमकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। पांचू उठकर तेजी से नीचे की ओर चला। पीछे-पीछे मंगला भी चली। आंगन में शिबू अपनी पत्नी को

नगा करके उसपर बलात्कार करने पर तुला हुआ था।

बाबा तक अपनी कोठरी से बाहर आ गए थ। मा, तुलसी दीनू, परेश पाचू और मगला सक्त म खड रह गए।

शिबू की बहू अपनी शक्ति भर लड रही थी। सारे घर के सामने—सास ससुर, ननद, दवर, देवरानी और अपने छोटे छोटे बच्चो के सामन नारी की लाज लुटी जा रही थी। और लाज का लुटेरा था स्वय उसकी लाज का रक्षक—उसका पति।

शिबू का अपनी पत्नी के प्रति बेहद गुस्सा था। उसके पास सीधा तक था कि पत्नी पति की मिल्कियत है और इसीलिए कुदरतन उसे सर्वाधिकार प्राप्त है। बच्चा अपने खिलौने को जसे जी चाहे खेले उसे तोड भी डाले—इसमे खिलौने का शिकायत क्यो हो? पाचू की जिद ठीक इसी किस्म की थी।

दिन भर मृत्यु की विभीपिका ने उसे मन ही मन बहुत तडपाया था। मृत्यु का भय पत्थर की शिला बनकर उसके कलेजे पर रखा था। वह दिल ही दिल मे दद से घुट रहा था। उसे उसमे बचने का कोई माग नही मिलता था।

रात आई पत्नी कमरे मे आई। भय का जीतने की भावना क्रमश शिबू को उत्तेजित करने लगी। अपनी पत्नी के भूखे सूखे शरीर और टूटे हुए मन पर वह बलात्कार करने लगा। पत्नी को जितनी ही पीडा होती थी, शिबू का आनन्द उतना ही बढता था। शिबू की पत्नी के लिए पति के अत्याचार असह्य हो उठे।

आज सवेरे ही घर म दो मौत हुई थी। अपनी बच्ची मरी थी, दोनो बच्चे भी अब-तब हो रहे थे। नाद की मौत का गम था। और सबसे ऊपर अपनी शारीरिक निबलता के कारण बडी बहू बिलकुल टूट गई थी। उस-पर शिबू का यह हिंसक उन्माद! सहनशीलता की सीमा से परे इस अमानुपिक अत्याचार से घबराकर बडी बहू जोर से चीख उठी। प्राणा के भय से उसम उस समय बेहद बल आ गया था।

अपनी पत्नी के सहसा या चीख पड़ने से शिबू चौंक पड़ा। वह ज़रा अलग हटा। मौका पाकर अपने प्राण बचाने के लिए बड़ी बहू फुर्ती से दरवाज़े खोलकर नीचे भागी। पहले तो शिबू सहम गया बाद में अपनी असफलता पर भयंकर क्रोध जागा। वह दबनेवाला नहीं है। वह किसीसे भी नहीं डरता। वह अपनी इच्छा जरूर पूरी करेगा। उसकी पत्नी उसकी मिल्कियत है। अपनी मर्जी के मुताबिक वह उसका उपभोग कर सकता है। यह विचार शिबू को क्रोध में पागल बनाकर अपनी पत्नी के पीछे पीछे नीचे दौड़ा ले गया। घर भर की परवाह न करके वह अपना अधिकार और बड़प्पन सिद्ध करना चाहता था। शिबू अपनी पत्नी को काबू में लाकर उसपर बलात्कार करने लगा। पाचू और मगला ने अपने मुह फिरा लिए। तुलसी मा की नजरें बचाकर चुपके से उधर देख लेती थी।

मा ने अपने मन को तुरत ही सभाल लिया। वह आगे बढ़ी और जबरदस्ती शिबू को पीछे ढकेलने लगी। मा को आगे बढ़ते देख पाचू की चेतना लौटी। झूठी लाज छोड़कर भावज को इस राक्षसी अत्याचार से बचाने के लिए वह आगे बढ़ा। मा ने बेटे को घसीटते हुए कहा— 'पापी, मा बाप की तो शर्म कर।'

शिबू तैश खा रहा था। पाचू उसे कसकर पीछे से पकड़े हुए था अपने को पाचू के हाथों से छुड़ाने का प्रयत्न करते हुए वह गरजकर मा से बोला—

'यह बाबा को सिखाओ जाकर। उनको अब वखत भी है शरम करने का। छोड़ो मुझे।'

शिबू के इस उत्तर से अपनी चिर शक्ति आशका के साथ साक्षात्कार कर मा का मन अदर ही अदर लज्जा और पीड़ा लिए हुए ज़मीन में तीर छुरी की तरह गड़ गया। मा ने तुरन्त अपने मन को समार लिया और शिबू को दोनों हाथों से ढकेलते हुए पाचू से चिल्लाकर कहा—"घर से बाहर निकाल दो इस चाडाल को। यह हत्यारा मेरे पाप की सतान है। मेरे पाप का फल है।" उनकी आखों में आसू आ गए थे, उनकी आवाज़ उखड़ गई थी।

बाबा के तन की आख बन्द थी, परतु मन की आखें अपने चरित्र की सबसे बड़ी दुर्बलता को आज आमने सामने देख रही थी। स्त्री विषय में बाबा के असयम और अधैर्य ने उनके हरएक बच्चे को गलत तरीके से काम की चेतना दी। पाण्डित्य के दीपक के नीचे इस तरह सदा अधकार बना रहा। इस समय उन्हें ऐसे अनेक दृश्य याद आ रहे थे जब कि उनकी लापरवाही ने उनकी अबोध सतानो के मस्तिष्क को विकृत करने में सबसे अधिक सहायता पहुचाई थी। मा और बाप, दोनो ही अपनी कमजोरियों से हारकर अपने बच्चो के शत्रु बन गए।

बाबा चरित्रवान थे। जीवन में कभी किसी दूसरी स्त्री की ओर उन्होने आख उठाकर भी न देखा था। पत्नी को वह पति की कामेच्छा तृप्त करने का साधन मानते थे। और इस नाते वह पत्नी को सदा पति की मिल्कियत ही समझते रहे। पार्वती मा में भी स्वाभिमान की मात्रा कम न थी। दोनो ने एक-दूसरे से अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए सधि सी कर ली थी। पति के इच्छा करते ही वह अपना शरीर समर्पित कर देती और इसके मूल्य में वह अपने हठ पूरे किया करती थी।

बाबा शहर के कालेज में सस्कृत के प्रोफेसर थे। पार्वती मा को शहर अच्छा नही लगता था। वह गाव में ही रहती थी। बाबा हर शनिश्चर की शाम को घर आया करते थे। पार्वती मा ने पाच बच्चो को खोकर शिवू को पाया था। वह उसे एक पल के लिए भी अपनी आखों से ओझल न होने देती थी। उनके लाड प्यार ने ही शिवू को जिद्दी और चिड़चिड़ा बनाया था। बाबा हर बार इस बड़े दुख के साथ अनुभव करते थे और पार्वती मा से शिवू को पढ़ाने लिखाने और समझदार बनाने की बात मौके मौके पर निकाला करते थे। शिवू की किसी भी कमजोरी के बारे में किसी का कुछ भी कहना पार्वती मा को बहुत अखरता था। वे चिढ़कर कहती—'बचपन में सभी के लड़के जिद्दी होते हैं। रही पढ़ने की बात, सो वक्त आने पर सब आप सीख लेगा। अभी उसकी उमर ही क्या है। क्या पढ़े बिना काम नही चलता ? और धन तो जो किस्मत में होना है सो बिना

पढे भी मिल जाता है। पढ लिख के नौकरी करने से ही सबके महल नही चुना करते।

बाबा चेतावनी देते, कहते—'तुम बडी भूल कर रही हो। बच्चे को एक उम्र से ज्यादा अगर बच्चे की तरह ही रखोगी तो उसकी गैर जिम्मेदारियो का सारा दोष भी तुम्हारे जिम्मे आएगा। पढाना सिर्फ नौकरी कराने के लिए ही जरूरी नही है। विद्या से चरित्र का विकास होता है।'

पार्वती मा पर बाबा की इन बातो का कभी भी कोई अच्छा असर नही पडा। वे और चिढ जाती। और बाबा शनिश्चर की रात खराब करना नही चाहते थे।

बाबा ज्ञानी और चतुर थे। परतु अपनी इस कमजोरी के प्रति वह सदा अधकार मे रहे। धर्मपत्नी के साथ सभोग करने को उन्होने कभी व्यभिचार नही समझा और इसी नासमझी मे वे अपनी धर्मपत्नी को सन्तान के लिए अपनी वेश्या बनाकर उसके साथ व्यभिचार करते हुए गृहस्थ धर्म का पालन करते रहे।

अधे हो जाने के बाद जब कोई काम न रह गया तब उनकी कामवृत्ति और भी जोरो मे उमडी। पार्वती मा इस ओर से सचेत रहते हुए भी पति के हाथो का खिलौना बनकर रह गइ। शिबू की बात ने आज बाबा और पार्वती मा, दोनो की ही आखें खोल दी। मगर अब इससे लाभ ही क्या?

पार्वती मा मर जाना चाहती थी। अपने ऊपर का सारा क्रोध वे रो रोकर शिबू पर उतार रही थी—'घर से निकाल दो इस चाडाल को। मेरी आखो के सामने से हटा दो इसे।

बौदी और तुलसी को पार्वती मा अपनी कोठरी मे ले गइ और अदर से दरवाजा बद कर दिया।

शिबू के डर से मगला भी अपने कमरे मे चली गई थी। शिबू आपे से बाहर होकर चीख रहा था। अपनी परवशता पर बिगडकर वह हर एक को गालिया दे रहा था। और गालिया देकर वह आप ही घर से

बाहर जाने लगा। पाचू सामने खड़ा था। जाने में पहले पाचू को मा और बहन की गालियां देते हुए उसने उस बस-बसवर दो तमाचे मारे और घर से बाहर चला गया।

पाचू मार खाकर भी चुपचाप सहता रहा। उसके मन ने आज बड़ी करारी मार खाई थी। अकाल की समस्त घटनाएं और यातनाएं आज की इस घटना के सामने तुच्छ हो गई थी। बाहर की घटनाओं से पीड़ा पाने पर उसका मन घर में शांति पाया करता था। परन्तु आज के बाद उसके घर से भी शांति चली गई थी। आज की घटना के बाद वह विच्छिन्न हो उठा था। शिबू के लिए कुछ भी असभव न था। बेनी ने अपनी बहू का खून कर डाला। गाय तक का वध किया जा चुका था। हथियार पाने पर शिबू भी अपने सारे घर का वध कर सकता है। शिबू घर में आग लगा सकता है। उससे कुछ भी बईद नहीं। लेकिन क्या पाचू उन सब दृश्यों को अपनी आखों से देख सकेगा—क्या पाचू अपने परिवार को नष्ट होते देख सकेगा?

पाचू घर से भाग जाना चाहता था। वह फिर सोचता, मेरे जाने के बाद घर को दादा के अत्याचारों से बचाने के लिए कोई भी नहीं बचा है। यह विचार मन में बार-बार उठकर भी पाचू का हौसला न बढ़ा सका। घर पर रहना अपना कर्तव्य समझकर भी वह घर से भाग जाना चाहता था—' मैं कोई बुरी बात अपनी आखों से होते न देखूगा। मेरे बाद भले ही कुछ भी हो जाए। आखों से न देख सकूगा तो दुःख भी न होगा।

कर्तव्य से विमुख होकर पाचू कायरता की ओर बढ़ रहा था और अपनी इस कायरता को वह बहानों में छिपा लेना चाहता था—' मैं अगर यहां रहूं, तब भी कुछ नहीं हो सकता। खूंखार पागल का कौन रोक सकता है? कहा बाहर जाऊगा। कलकत्ते कलकत्ते कहीं चला जाऊगा। कोई नौकरी ढूढ़ूगा। मिल गई तो घरवालों की भी कुछ रक्षा हो जाएगी।'

पाचू ने भागने का निश्चय कर लिया। और इस निश्चय के साथ ही साथ उसके मन में एक भीषण द्वन्द्व छिड़ गया। यह घर, मा, बाबा, मगला,

सभी एकसाथ उससे छूट रहे थे। शिबू, बौदी, तुलसी मा भतीजा का ध्यान मुख्य रूप से उसके मन म नही था। मा की याद पीड़ा देनेवाली थी। बाबा से उसका सम्ब ध पिता पुत्र से अधिक गुरु शिष्य का रहा। उसकी परोक्ष बौद्धिक समस्या के साथ बाबा का घनिष्ठ सम्ब ध था। लेकिन इस के साथ ही साथ उसके भीतरी मन म कहीं यह विचार भी मौजूद था कि बाबा अब केवल कुछ ही दिनों के मेहमान हैं। मा बाप से सबका सम्बन्ध एक दिन छूटता ही है। उसके चले जाने से बाबा और मा को बड़ा कष्ट होगा यह विचार भी पाचू को बड़ा व्यग्र कर रहा था। सबसे अधिक उसे मगला की याद आ रही थी। उसकी ओर से वह बहुत चिंतित था। उसका क्या होगा ? मगला म उसके चित्त की सारी वत्तिया एकाग्र हो गई थी। एक बार उसकी इच्छा हुई कि वह मगला को भी अपने साथ लेता चले। विचार ने उसे एक क्षण के लिए स्फूर्ति भी दी परन्तु फौरन ही उसके मन म डर समाया, मगला उसे जाने से रोक लेगी। मा और दोनों को छोड़कर मगला कभी भी न जाएगी। घर म रहने के लिए पाचू बिलकुल तयार न था। सारे ससार से भागकर उसे घर म शाति मिलती थी और अब उस घर ही महान अशाति का केन्द्र स्थल दिखाई देता था। घर के प्रति उसकी विरक्ति इस समय इतनी बढ़ गई थी कि पाचू घर छोड़ने के विचार को अपनी आत्मा का आदेश मानता था। उसे विश्वास था कि इसीम उसका कल्याण होगा। मगला का आकषण उसे अपनी ओर खींचते हुए भी निरस्त हो चला था।

पाचू के पर धीरे धीरे दरवाजे की तरफ बढ़ने गए। उसकी इच्छा हुई कि जाने स पहले वह एक बार मगला को देख लेना। पाचू लौटा। अपने कमर की सीढ़िया तक पहुचकर पर फिर ठिठक गए—मगला कहीं न जाग रही हो।

चोर की तरह पाचू दबे परो स नीचे उतर आया। मा की कोठरी का दरवाजा बन्द था। बाबा अपनी चारपाई पर बठे हुए थे। घुटनो म उनका मुह छिपा हुआ था। दूर ही से—मन ही मन—पाचू ने प्रणाम किया।

स्मृति म हरएक को सामने लाकर उसने मेरे मन से सबसे विदा ली। आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी।

पाचू का निश्चय डगमगाने लगा। फौरन ही पाचू सतर्क हो गया। वह घर के दरवाजे की तरफ चला। चौखट लांघते ही पैर ठिठके। इस घर में वह अब शायद लौटकर न आएगा। कदम घर से बाहर पड़ा। घर उसकी आंखों के सामने था। दुमंजिले पर उसके कमरे की खिड़की खुली हुई थी।

पाचू का ध्यान उड़कर अपने कमरे की तरफ चला गया। थोड़ी देर पहले तक वह इसी कमरे में पड़ा हुआ चांदनी रात और तारों को देख रहा था। मंगला उसकी छाती में मुंह छिपाकर बाहें डाले सो रही थी। कितना सुख था उस स्पर्श में! और उस सुख का ध्यान आते ही फौरन बड़ी बहू की चीख और बाद का सारा कांड उसके मन को दहलाने लगा। मंगला कहीं खिड़की में देख न रही हो। पाचू और ज्यादा डरा। फौरन ही सामने से हटकर घर की दीवाल के किनारे किनारे से जल्दी जल्दी कतराता हुआ वह आगे बढ़ा।

घर धीरे धीरे दूर होता चला जा रहा था। चांदनी रात के प्रकाश में घर धुंधला होते होते मिट गया। पेड़ों की आड़ आ गई, गांव की हद आ गई। पाचू रुक गया। वह अपनी जन्मभूमि को छोड़ रहा था। छोड़ने से पहले एक बार आंखें भरकर वह अपने गांव को देख रहा था—वह अपना सारा जीवन देख रहा था। इन्हीं खेतों में वह खेला कूदा है। बड़ा हुआ है। अनेक सुख-दुःख के नाते इसी भूमि पर उसके साथ जुड़े हैं। मोहनपुर उसकी जन्मभूमि, कर्मभूमि, समरभूमि रही है। अकाल के इन दिनों की सारी अनिश्चयता को लिए हुए भी उसके जीवन की एक निश्चित गति साथ भी रही है। घर गांव छूटने के साथ ही साथ पाचू का उस निश्चित जीवन के साथ भी नाता टूट रहा है। सारे संसार में घूमकर वह इस गांव में लौटता था, यहां उसका घर था। जन्म के साथ बंधा हुआ उसका आकर्षण केन्द्र नष्ट हो रहा है। सबेरे जब मां को पता लगेगा,

करेगी, सारा घर सुनेगा ?

चुम्बक शक्ति का यह आखिरी खिंचाव था। अपनी निर्बलता को परास्त करने के लिए पाचू फिर आगे बढा। मगर वह जाएगा कहा ? कही भी ! घर नही जाऊगा। 'आखो म आसू भरकर जिद के साथ उसने अपनी सारी समस्याओ का अतिम निर्णय दिया।

पाचू ने पीछे मुडकर भी नही देखा। आखो से आसू बह रहे थे और वह आगे बढ रहा था। हठ के कठिन पाश म अपनी समस्त कोमल वृत्तियो को जकडकर वह आगे बढा जा रहा था। अशाति के उद्वेग से हृदय उमडा चला आ रहा था, सिर म भारीपन के साथ बुद्धि की अगति थी आखें आसुओ से भरी हुई थी। अपने आसपास की किसी भी वस्तु का ध्यान उसे नही था। पथहीन लक्ष्यहीन पाचू चलता ही जा रहा था, मानो चलने का कही अत नही है।

रोने की आवाज कही दूर से कानो म आई। चेतना फिर भूमि पाकर लौटी। पाचू ने सिर उठाया, ध्यान स्थिर हुआ। पाचू ने अनुभव किया कि रोने की आवाज दूर नही, बिलकुल उसके पास ही है।

बाइ तरफ खडहर म कोई पडा हुआ दिखाई दिया। रोने की आवाज किसी बहुत छोटे बच्चे की-सी थी। पाचू को वह आवाज अपनी तरफ खीचने लगी। ध्यान स्थिर हो चुका था, बुद्धि फिर काम करने लगी थी। पाचू ने अपनी इच्छा का समर्थन किया। वह उस ओर बढा। ताजा पैदा हुआ बच्चा मा की एक टाग पर चढकर पडा हाथ पैर पटक रहा था और रो रहा था।

पाचू के लिए जीवन म यह एक नया अनुभव था। एक क्षण के लिए वह हतबुद्धि होकर खडा रहा फिर सकोच उत्पन्न हुआ। नग्न नारी सामने निश्चेष्ट पडी थी। बच्चा उसकी नगी टाग पर पडा कमजोर आवाज म रोता हुआ धीरे धीरे हाथ-पैर पटक रहा था। नाल की लबी डोरी मा के शरीर स जुडी हुई थी।

पाचू को बडी लज्जा मालूम हुई। घूमकर वह लौटने लगा, लेकिन पर

आगे न बढे। इस असहायावस्था मे एक सद्य जात शिशु और मा को छोड़कर आगे बढ जाने के विचार पर उसकी आत्मा जोर से धिक्कारने लगी। मगर साहस न होता था, मन ही मन लज्जा से वह गडा जा रहा था।

सहसा शिशु को बचाने की प्रेरणा इतनी प्रबल हो उठी थी कि पाचू का भय और सकोच टिक न सका। पाचू दृढ होकर उस ओर घूमा। वह चुका। नारी म जीवन का कोई चिह्न नहीं मालूम होता था। अपने सदेह को मिटाने के लिए पाचू स्त्री के खुले मुह और नाक के पास हाथ ले गया। सास नही चल रही थी। साहस करके पाचू ने स्त्री की छाती के बीच हाथ रखे—धडकन भी नहीं थी। स्वय उसका हृदय इतनी जोर से धडक रहा था कि तबीयत होती थी, उठकर भाग जाए। मगर वह उठ न सका। स्त्री के शरीर म गर्मी से अनुमान किया, स्त्री को मरे हुए अधिक से अधिक दस पन्द्रह मिनट हुए होगे। फौरन ही उसका ध्यान शिशु की ओर गया। लडका था, अत्यत दुबल गभ के मल से सना हुआ, नाल जुडी हुई।

पाचू के हाथ-पैर फूल रहे थे। उसकी समझ म नही आ रहा था कि वह बच्चे को कैसे बचाए उसकी नाल कैसे अलग करे? कभी देखा नहीं, अनुभव नही—घर से निकलते ही वह मानव जीवन की सबसे बडी गार्हस्थिक उलझन मे पड गया था। इतना उसने जरूर सुन रखा था कि नाल काटी जाती है। वह कैसे काटेगा? आसपास म नजर बेकार ही घूम गई। टूटा उजडा हुआ घर था। बच्चे को बचाने की तीव्र इच्छा और घबराहट के साथ साथ अपनी असहायावस्था और अनुभवहीनता पर उसे बडी जोर से झुझलाहट आ रही थी। मृत शरीर के साथ बच्चे का सम्बन्ध अधिक देर तक नही रहना चाहिए उसके मन मे यह बात बार-बार अपने आप ही उपज रही थी। जी कडा करके पाचू न दोनो हाथो से खीचकर नाल बीच से तोड दी। बच्चा मा के शरीर से अलग हो गया। आधी लटकती हुई नाल समेत उसने बच्चे को हाथो मे उठा लिया। कमजोर बच्चा रोते रोते हाफ रहा था।

पाचू के सामने एक नई समस्या थी बच्चा बचेगा कैसे? इसका कोई

उत्तर उसके पास न था। साग से जरा हटकर, बच्चे को गोद में लिए हुए पांचू टूटी हुई दीवार के सहारे बैठ गया। वह थककर चूर हो गया था। दस रोज से भूखा था, आज सबेरे थोड़ा सा साग का शाक उबला हुआ था, फिर भी रोज शाम में भी कुछ मेहनत करनी पड़ती थी, फिर उमर का तकाजा। थककर आया और अब यह श्रम! दीवार से सिर टिकाकर पांचू ने आंखें बंद कर लीं। उसे बड़ी शांति मिल रही थी। गोद में बच्चा हाथ-पैर पटक रहा था। तन और मन से अत्यधिक थका हुआ होने पर भी पांचू इस समय सुख और शांति का अनुभव कर रहा था। अपने अन्दर वह एक स्निग्ध सी ताजगी महसूस कर रहा था।

पांचू ने आंखें खोलीं। बच्चे का क्या होगा? इसे हवा लगती होगी। पांचू ने अपनी कमीज उतारकर उसे उढ़ा दी। कितना कमजोर है? यह बचेगा? मगर बच जाए। कुछ भी हो इसको बचाना चाहिए। इसे दूध मिलना चाहिए। पाएगा कहां से हतभागा? अरे अकाल में जन्म लिया है। लोग मर रहे हैं और यह सृष्टि पर मृत्यु को देखने आया है। मां मर गई बेचारे की।

पांचू का ध्यान उस स्त्री की ओर गया। बहुत दुबली नहीं थी। जान पड़ता है, कुछ रोज पहले तक इसे खाने को मिलता रहा है। कपड़ा भी बदन पर है। इस घर की नहीं मालूम होती। सूरत शक्ल से भले घर की ही जान पड़ती है। किसके घर की होगी? यहां कैसे आई होगी? सारा इतिहास इसकी मृत्यु के साथ ही लुप्त हो गया है।

कल्पना उधर से भटककर लौट आई। पिछली रात की चांदनी के उजाले में पांचू ने देखा, बच्चा गोरा है। दुबला पतला बहुत है कहीं मर न जाए। रो रहा है भूखा होगा। लेकिन भूख तो समस्या है।

एक सर्द आह पांचू के दिल से निकली। दस रोज से भूख की पीड़ा को सहते हुए उसे उसकी आदत पड़ गई है। एक तरह से भूख अब उसे सताती नहीं। हां, शरीर की कमजोरी और भूख की याद बेहद सताया करती है। बच्चे की भूख का खयाल कर उसे पीड़ा हुई। मगर कोई चारा

न था। बच्चे पर ही उसने अपना सारा ध्यान केंद्रित कर दिया। बच्चा रो रहा था। पाचू धीरे धीरे अपनी टांगें हिलाने लगा। जरा देर बाद बच्चा चुप हो गया। पाचू को शक हुआ, फौरन ही बच्चे की नाक के पास हाथ ले गया। बारीक सांस की हवा उसने अपनी हथेली पर महसूस की। उसे राहत हुई—"किसी तरह यह बच्चा बच जाए! अगर मैं यहां न आता तो? शायद इसकी जान बचाने के लिए ही मैं इधर से आ निकला। शायद इसकी जान बचाने के लिए ही मेरे घर में वह फसाद हुआ और मुझे घर छोड़ना पड़ा।

यह खयाल पाचू को बड़ा अटपटा सा मालूम हुआ मगर उसके साथ ही साथ यह घटना, यह एक नया और विचित्र अनुभव भी उसे एक बड़ा चमत्कार-सा मालूम पड़ रहा था।

उसके खयाल एक नये दायरे में घूमने लगे। एक नये दृष्टिकोण से वह तमाम बातों को देखने लगा। मनुष्य के जीवन में घटनाओं का चक्र किस तरह से चलता है? एक के बाद एक घटना इस तरह से आ जाती है, जैसे वह पहले ही से निश्चित की गई हो। यह सब है क्या? क्या जो कुछ भी होता है, वह अपने आप होता है अकस्मात् होता है? क्या जीवन घटना मात्र ही है? कभी ये घटनाएं हमारे जीवन में उखड़ी हुई सी आती हैं। उनकी विशृंखलता के कारण तर्क की सीधी गति में बाधा पड़ती है। परन्तु यहीं तक क्या जीवन की घटनाओं का अंत हो जाता है? क्या यह घटना नहीं कि अकाल बंगाल में ही फला हुआ है। सदा का रोगग्रस्त और प्रखर बुद्धि वाला यह प्रांत ही क्यों सबसे सारी पीड़ाओं और यातनाओं को भोगता है? यों तो सारा देश ही महान संकट और विपत्ति काल से गुजर रहा है फिर भी बंगाल के ऊपर यह कांटों का ताज और क्यों रख दिया गया। क्या कारण है इसका? क्या यह महायुद्ध घटना मात्र है?

यह प्रश्न पाचू के तर्क की शक्ति के निकट आ गया था। महायुद्ध के कारणों को बुद्धि जानती है। अपने बौद्धिक क्षेत्र में आकर उसे एक तरह का सुख मिला। बच्चे की तरफ देखा, उसकी नाक पर हथेली रखकर सांस

की गति मालूम की। प्यार भरी आशा से वह बच्चे की ओर देखने लगा।

यह बच्चा जी जाए! कामनापूर्ण नजरों से बच्चे की ओर देखते हुए उसे सहसा यह विश्वास होने लगा कि बच्चा जी जाएगा। अपने इस विश्वास के लिए वह मन में तर्क खोजने लगा। पाचू ने सोचा— 'गर्भ से ही यह बच्चा अकाल की यातनाओं को सहने की कठोरता लेकर पैदा हुआ है।"

इस तर्क के आधार पर पाचू सोचने लगा— 'मां के मर जाने के बाद भी यह बच्चा जीवित रहा, क्या यह घटना जीवन के सत्य को सिद्ध नहीं करती ?

इस विचार की पृष्ठभूमि में अकाल का चलचित्र उसे दीख रहा था। विचार उसी दिशा में आगे बढ़—"लाखों आदमी मर जाने पर भी बंगाल आज जीवित है। क्या इससे जीवन अजेय सिद्ध नहीं होता ?

सवाल में ही जवाब के तौर पर जोरदार 'हां' की ध्वनि छिपी थी—जो निःस्पृह नहीं थी। उसमें खुशी की गूंज थी। बंगाल के जीवन को वह अपने जीवित बचे रहने में देख रहा था। इसीलिए समर्थन करने के लिए इस प्रश्न के साथ ही पीड़ा व्यग्र होकर आंखों में छलछला उठी। उसका एक हाथ बच्चे के सिर के नीचे और उसकी टांगों पर रखा था। जैसे आंखें छलछलाईं, वैसे ही हाथों में झटका आया—हाथों ने बच्चे को पेट के पास घसीट लिया।

बच्चा जाग पड़ा, रोने लगा। पाचू का ध्यान बंटा। वह रोते हुए बच्चे की तरफ चौंककर देखने लगा। वह झुंझला गया। उसे अपनी पीड़ा और अपने रोने में इस समय सुख मिल रहा था, दूसरे का रोना अखरा। मगर गलती चूंकि अपनी थी, इसलिए झुंझलाहट घूमकर अपनी गलती से ही उलझने लगी। गलती क्या है, यह समझ में नहीं आती थी। उलझन बढ़ाते हुए गुस्सा बना। गुस्सा बुद्धि में सेंध लगाकर फिर राजनीति के क्षेत्र में कूद पड़ा। तर्कों के साथ वह सोचने लगा—'अपनी सेना के साथ सुभाष बाबू के आने पर बंगाल कहीं उनके साथ मिल न जाए, इसलिए बंगाल को पहले से ही तबाह कर दिया गया। यह अकाल भारत को गुलाम बनाए

रखने की राजनीति है।"

पाचू जोश में आ गया। बच्चे के रोने पर ध्यान गया, जोश के साथ उसपर तरस आ गया। प्यार उमड़ा। उसने फिर टाँगें हिलानी शुरू की और बड़े प्यार के साथ धीरे धीरे बच्चे को थपथपाने लगा। बच्चा क्रमश सिसकियाँ भरते भरते फिर चुप हो गया—"छोटी छोटी आँखें मीचे पड़ा है। कैसा प्यारा है! बच्चे कैसे प्यारे लगते हैं! बच्चा किसीका भी हो, सबपर प्यार आता है।' पाचू को फौरन ही खयाल आया—'बच्चा ही तो बड़ा होकर आदमी होता है। आदमी होते ही भेदभाव शुरू हो जाते हैं—क्रोध, घृणा, हिंसा!"

एक से पाचू को ध्यान आया, कल शाम ही बाबा ने कहा था—उद्देश्य रहित की हुई यह तपस्या संसार में घृणा उत्पन्न करेगी। घृणा मत उत्पन्न करो पाचू! कामना करो कि तुम्हारी बलि मानव में प्रेम की भावना उत्पन्न करे।'

कल शाम को पाचू को यह उत्तर सतोषजनक न लगा था। इस समय उसके विचार चूंकि उसी दिशा में बहने लगे थे इसलिए बाबा का प्रवचन तुरत ही ध्यान में आ गया। इस रूप में अपने विचारों का समर्थन पाकर वह पुलकित हो गया। बच्चे की ओर देखने लगा, बच्चा सो रहा था। प्रेम की भावना इस समय प्रबल थी। बच्चा बहोत्त ही प्यारा लगा। सहसा विचार आया—"यह प्यार कहाँ से आया? इतनी ही देर में मुझे इससे ममता क्या हो गई। मैंने इसे बचाया इसीलिए न? मैंने एक जीवन को बचाया। ठीक ठीक, यों कहा जाए, कि जीवन के प्रति मेरे प्रेम ने जीवन को बचा लिया—सच!

पाचू बहुत खुश हुआ—'तब फिर मैं इस अपनी करतूत क्या मानूँ?" इस खुशी ने दिमाग को हल्का सा नशा दिया। वह सोचने लगा—'जीवन आप अपने को बचाता है। अनेक रूपों में, और अनेक स्वभावों में एक ही जीवन रमता है।

पाचू भी रमने लगा। वह सोच रहा था—'अपने अस्तित्व को हर

शरीर में सिद्ध करके वह अपनी सगठित एकता का परिचय देता है। यही समाज है।'

ये पढ़े सुने तो सदा के थे, मगर गुनने आज बैठे। गुनने बैठे तो उनको अपना बना लिया। गुणों के तराजू पर पाचू गोपाल अपने वाक्यों को वेदवाक्यों से तोलने लगे। दोनों पलड़े कांटा नाक सधे हुए जब। जो बड़े-बड़े बह गए, वही हम भी बह रहे हैं।

बुद्धि का गुब्बारा फूलने लगा—"इकाई की चेतना मनुष्य को भ्रमवश एक ही शरीर एक ही रूप की सीमा में देखने लगी। परन्तु ज्यों ज्यों सत्याग्रह द्वारा मनुष्य अनुभव प्राप्त करता गया, उसने अपने को इस भ्रम से मुक्त कर कुटुम्ब और समाज की स्थापना की। इकाई की चेतना ने तब सामूहिक रूप तो धारण कर लिया, मगर वह तब भी मानव समाज के बड़े-बड़े भागों में अलग अलग बटी रही। अज्ञान में सत्य का आलोक छिपाए ये बड़े-बड़े समाज आगे बढ़े। अनेको स्थूल दृष्टि सुगम भेदभावों के कारण मनुष्य मनुष्य को अपरिचित लगा। अपरिचय से भय और भय से हिंसा। हिंसा मनुष्य के अन्दर अज्ञान से उत्पन्न है

पाचू इस बात के प्रति चेत न था कि वह सोच रहा है। उसके विचार उतने ऊंचे जा रहे हैं, इसकी उसको खुशी थी इस खुशी की चेतना से उत्साह पाकर उसकी विचारधारा दिमाग की ऊपरी सतह पर बहती ही चली जा रही थी— हिंसा अज्ञान का नाश करने के हेतु उत्पन्न हुई सत्प्रेरणा की ही प्रतिक्रिया है। निर्माण द्वारा सत्य को प्राप्त करने के लिए यह ज्ञान की अति तीक्ष्ण वृत्ति अपनी ओर से चेतना विमुख होने के कारण ही हिंसा बन जाती है। हिंसा में भी उसका अलक्षित उद्देश्य अपनी इकाई को ही सिद्ध करना होता है। स्थूल अज्ञान को काट डालने की चेतना तो ठीक है गलत सिर्फ इतना ही है कि हिंसा द्वारा वह केवल अपनी (व्यक्तिगत) इकाई को सत्य सिद्ध करने का भ्रमपूर्ण प्रयास करता है। उपचेतन में उसे इस भ्रम का ज्ञान अवश्य रहता है क्योंकि हिंसा की भावना उत्पन्न होने से मनुष्य को कभी आनंद प्राप्त नहीं होता। 'खयाल

आया, खुद भी चौंके—'हां, ये बात है ? मैंने इतनी बढ़िया बात सोच ली !"

पाचू अपने आपको महापुरुषों के रूप में अनुभव कर रहा था। संसार को बचानेवाला मसीहा, संसार को जगानेवाला पैगम्बर और संसार को आलोक देनेवाला अवतार एक अनजान बच्चे को बचाकर, दीवार के सहारे बैठा हुआ लोक-कल्याण के लिए चिंतन कर रहा है। घमंड था तो यहां तक, मगर बहुत दबा हुआ। इसकी बहुत हल्की सी चेतना से बुद्धि सँवरकर अपने विचारों को अपूर्व शांति के रूप में अनुभव करने लगी। और उसी अपूर्व शांति की छाया में अवतार—पैगम्बर—मसीहा ने बच्चे की ओर प्यार भरी नज़रों से देखा। बच्चा उसे इतना प्यारा लगा कि उसे जगाकर खेलने की इच्छा हुई। अवतार' एक अनजान बच्चे को खिलाकर प्यार जताकर उस मानव शिशु का महत्त्व बढ़ाना चाहता था। फौरन ही भूख का ध्यान आया। जागेगा तो रोने लगेगा। अपनी भूख का ध्यान भी आया। 'अवतार' भी दस रोज से भूखा रहने को मजबूर है। अवतार के साथ मजबूरी का खयाल कुछ जमता नहीं। गुस्सा आ गया। अकाल लानेवाले राक्षसों के ऊपर क्रोध 'अवतार' को ही आ रहा था, मगर बुद्धि और तर्क पाचू के ही थे। पाचू तब होकर सोच रहा था—हमारी आज़ादी की न्यायपूर्वक मांग के एवज़ में हमें अकाल दिया जाता है ? सन् '४२ का दमन दिया जाता है ? सन् '४२ का भारत-दमन सामूहिक रूप से विश्व की मानवता का शिरोच्छेदन करने का एक अति अमानुषिक प्रयास था। मनुष्य की सहज उठी हुई स्वतंत्रता की प्रेरणा को बर्बरतापूर्वक कुचलकर उसके मन में सत्य और जीवन के प्रति अनास्था उत्पन्न करने का राक्षसी कृत्य था वह दमन। इतना नहीं सोचता मनुष्य कि जो अत्याचार वह दूसरों पर करता है वही उलटकर यदि उसके ऊपर किए जाए तो ?"

दुनिया उसके सामने कितनी नादान है, इतनी-सी बात भी नहीं समझता ! नादानों की लिस्ट में बड़े-बड़े नाम अतर्चेतन में थे मुसो-

लिनी, चर्चिल, तोजो, रूजवेल्ट, स्टालिन—ये दुनिया के सूत्रधार कितने अहमक हैं जो हेडमास्टर पाचू गोपाल मुखर्जी से सबक नहीं लेते। इस खयाल की वजह से खुशी थी, साथ ही साथ अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों को खयाल के बहाने अंग्रेजों पर लाग कर उन्हें अकाल-पीड़ित देखकर, खुशी हुई। खयाल की आड में यह खयाली तसवीर इतनी तेज और तीखी थी कि उसने गुजरते गुजरते में अपनी आड को भी काट लिया। असलियत खुल गई। हिंसा की जिस वृत्ति का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करते हुए कुछ देर पहले उसने अपने को समझाया था इस वक्त वह खुद ही उस चक्कर में पड गया। खुशी का गुब्बारा फूलते फूलते फट गया। खुद अपने आपके सामने ही बडी झेंप मालूम पडने लगी। 'अवतार' का भूत उडन छू हो गया। उसे बडी तकलीफ होने लगी— समझते हुए भी फिर वही भूल कर बैठा। ... अहं ने अपने मार खा जाने का कारण बुद्धि की गैर जिम्मेदारी में देखना चाहा नतीजा उलटा ही हुआ। अपनी परेशानी के जवाब में उसे खयाल आया— मैं जो कुछ सोचता हूँ, सही मानता हूँ उसे करता नहीं।

बच्चा हिला ... रोने लगा। पाचू का ध्यान उचटा। बच्चे को उठाकर अपने सीने से लगा लिया— 'इसे बचाना चाहिए। इस वक्त इसकी फिक्र करना ही मेरा सबसे बडा काम है।

पाचू उठ खडा हुआ। रोते हुए बच्चे को कंधे से चिपकाकर आ आ करके चुप कराने लगा। बच्चे का गम स्पर्श उसके हृदय का कण्ठाद्र करने लगा। प्रेम ने उसके बाह्यान्तर को रोमांचित कर लिया। मन अपनी असीम-सी लगने वाली सीमाओं के साथ शान्तिमय हो गया। इतना गहरा संताप, अहम् रहित चेतना की यह शांति, अन्तर के गम्भीर छोर से उभर होकर कुछ पल के लिए उसे आत्म विस्मृति और आनन्द की लहर में बहा ले गई।

पाचू इस नवीन अनुभव के प्रति चेतन हुआ। अपूर्व अनुभव था कितना आनंद था। चेतना उत्पन्न होने से वह आनन्द सत्य न रहकर उसकी छाया

मात्र रह गया। कुछ भी हो, पाचू का मन इस समय छक गया था। अकाल की सारी पीडाओं की थकावट और चिंताओं का बोझ उतर गया था। वह बहुत निर्मल, शांत और हल्का अनुभव कर रहा था। बच्चे की पीठ पर हाथ फेरते हुए प्रसन्न होकर उसने सोचा—'यह अनुभव मुझे इस बच्चे से मिला है। और मेरा यह अनुभव भी इस बच्चे की ही तरह अंकुर-मात्र है। दोनों साथ साथ बढ़ेंगे। मैं इसे इसी रूप में देखूगा। मेरा ध्यान बराबर जमा रहेगा, फिर कभी गलती न होगी।

बच्चे को कंधे से चिपकाकर पाचू टहलने लगा। एक गुदगुदी-सी अनुभव करते हुए उसने सोचा—"इसका नाम? नाम क्या रखूं इसका? कैसा नाम रखूं? इसकी जाति क्या है?'

पाचू ने उसकी माता की तरफ देखा। वह धरती की तरह शांत पड़ी थी। पाचू ने आगे सोचा— इसकी जाति भला क्या हो सकती है? इसकी मां कौन है? अपने को इसकी मां कहनेवाला जीव तो चला गया। आदमी का बेटा है मैं इसे आदमी ही कहूंगा। यह जाति, वर्ण वगैरह से परे है। यह सब तो है मगर अब इसके पालने की फिक्र करनी चाहिए। कहां ले जाऊं इसे?

रास्ता सूझता नहीं। मन अकुलाया। घर की याद आई, मंगला की याद आई। वह इसे पालेगी।

मन में संकोच हुआ— 'जिसे छोड़कर चला आया, उस घर में क्या लौटकर जाऊं? इस खयाल से जो पीड़ा हुई, उसे दूर करने के लिए संतोष आया। खयाल आया— 'मुझे अब यह बड़ा घर मिल गया है। सारी दुनिया मेरा घर है।'

पैगम्बरपन से बचने के लिए फिर हल्का सा झटका खाया— यह सब होते हुए भी आदमी के लिए एक घर तो चाहिए ही। और क्या मेरे घरवाले इस दुनिया से अलग हैं? फिर उन्हें क्या छोड़ दूं? मगर वहां तो आप ही बुरा हाल है, इस बच्चे की परवरिश क्या होगी। सब लोग सोचेंगे, मंगला कहेगी, यह क्या नई बला ले आए?'

पांडू नहीं चाहता था कि उसके आदमी को क्या समझा जाए। उसे तसल्ली हुई। मगर, फिर सोचा—"ममता ऐसा नहीं सोचेगी। उसका हृदय बड़ा कोमल है। स्त्री का हृदय बड़ा कोमल होता है, उसमें माँ की ममता सहज ही उत्पन्न होती है। ममता के अन्दर सोई हुई माँ इसे अपनी छाती से लगा लेगी।

ममता की याद आई। उसे दुःख हुआ। ममता के प्रति फिर नया आकर्षण जागा। घर लौट चलने की इच्छा हुई। वह सोचने लगा— घर से भाग आना मेरी कायरता थी। मैं अपने कर्तव्य से भाग आया। हाँ और नहीं तो क्या? मैंने अकाल से लड़ने की कोशिश ही कहाँ की। फिर तकलीफ ही सहता रहा। अपने लिए माँगने में शर्म आती थी। शर्म क्यों आती थी? आदमी खाने के डर से? मगर यह तो फिजूल है। भूख सब की बात नहीं, सबको लगती है। मैं सबकी भूख के लिए माँगूँगा। सबकी भूख में मेरी भूख भी तो शामिल है। मेरा घर और ये आदमी भी तो शामिल हैं।'

पांडू के मन में नई आस्था जागी—'हाँ मैं लड़ूँगा। मोनाई से दयाल से—उन सब लोगों से जिनके पास सबकी भूख के साधन छीनकर जमा हैं।'

दिमाग में गुस्से की हल्की लहर-सी उठी। उसके विरोध में फिर फौरन ही ख्याल आया— 'उनका अपराध नहीं। सारे अत्याचार नासमझी की वजह से करते हैं। और यह नासमझी युगों से हमारे साथ है। क्या मुझमें नहीं है? किसमें नहीं है? लेकिन यह नासमझी दूर कैसे हो? जिस पाशविक शक्ति के बल पर मानव-समाज का सत्तावादी वर्ग इस नासमझी का पोषण कर रहा है, क्या उसके आगे सिर झुका देना ठीक होगा? क्या यह सत्य के प्रति अन्याय न होगा? अवश्य होगा? इस अन्याय की जड़ उखाड़ फेंकना ही हमारा धर्म है। यही सत्य है।'

अन्न मनुष्य के खाने के लिए है। अन्न की कीमत पैसा नहीं मनुष्य की भूख है। व्यक्ति का स्वार्थ समाज की भूख को नहीं खा सकता। मनुष्य

क जन्म सिद्ध अधिकारों का अपहरण नहीं कर सकता।

पाचू सपने में एक नई स्फूर्ति का अनुभव करने लगा। खोया हुआ भविष्य और अकमण्य वतमान जीवन की नई आशा और विश्वास से शक्तिशील हुआ।

उसने सोचा— हम लडेंगे। हम धान के हर गोदाम पर कब्जा करेंगे। हम जिएंगे।"

लेकिन इससे अत्याचार और बढ़ेंगे घृणा उत्पन्न होगी। और न लडने से? क्या घृणा उत्पन्न नहीं होगी? आत्मपीडा पहुंचाकर तो शर्तिया होगी। सत्ता की बलिवेदी पर लाखों नर नारियों का जो यह अमानुषिक बलिदान हुआ है उसका परिणाम दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है। घृणा एक ओर सत्य की आड लेकर लडेगी दूसरी ओर स्वार्थ की। सत्य स्वार्थ पर विजय पाएगा परंतु घृणा साथ रहेगी। विजय लिप्सा प्रतिक्रियावश पाशविक बनेगी। और आदिमयुग के मानव की परम्परा से प्राप्त पशुवृत्ति का अपने अंदर से नाश करना ही सच्ची क्रांति है। यही नव जीवन को गतिशील करेगा।

बच्चा कुनमुनाया। पाचू का ध्यान उधर गया। उसे प्यार से थपथपा कर उसी तेजी से वह सोचने लगा— हमारा बलिदान, हमारी कमण्यता और हमारी क्रांति इस बच्चे की दुनिया को इंसान के रहने योग्य बनाएगी, जिसमें अमीर गरीब न होंगे, रंगभेद न होगा धर्मभेद न होगा जातीयता और राष्ट्रीयता न होगी—एक दुनिया होगी, एक मानव समाज होगा।"

एक सुखद कल्पना पूरी हुई। उससे मन आनंद से भर उठा। मगर उसके साथ ही उसने सोचा— लेकिन इस सपने को साकार करना है। विचारों के चौराहे पर खडे होकर अकमण्यता का तमाशा देखना फिजूल है। वे आदर्श और सिद्धांत झूठे हैं जिनपर अमल न हो सके। तब? मुझे क्या करना है?"

पूर्व निश्चय के साथ एक एक विचार उतरने लगा, घर चलना है। इस बच्चे की जान बचानी है। मानव हृदय में निस्स्वार्थ रहित प्रेम और

कर्तव्य का आभास मुझे इस बच्चे द्वारा मिला है, उसे कर्म में बदलना है—रोटी लेनी है, अपना जीने का अधिकार सुरक्षित करना है। दयाल और मोनाई वर्ग हमारा वह अधिकार अब अपने दाब में नहीं रख सकता। यह वर्ग हमारे ऊपर अत्याचार करता किस बल पर है? हमारे ही कुछ आदमियों को अपनी पूंजी और स्वार्थ में हिस्सेदार बनाकर बहका लेता है। छेदासिंह, दयाल के पछाहीं लठैत पुलिस फौज के सिपाही यह सब कौन हैं? हमारे ही आदमी हैं पीड़ित मनुष्यता के ही अंग हैं। ये हमसे दूर नहीं रह सकते। हमारा संगठन, हमारा नैतिक बल, हमारी न्याय की आवाज इन्हें बहुत दिनों तक हमसे दूर नहीं रख सकती। सत्तावादी पूंजीपतियों का वशीकरण मन्त्र अब अधिक दिनों तक इन्हें अपने जादू में नहीं बांधे रह सकता। जनशक्ति जनक्रांति सत्तावादियों के स्वार्थ के किले तोड़ देगी। तभी हमारी शक्ति से हमको ही डरानेवाला मानव समाज का यह छोटा-सा वर्ग अपंगु होकर चेतेगा। पैसा ही उसकी सर्वोपरि शक्ति है। जब वह पैसे से हमें खरीद नहीं सकेगा तो आप सही रास्ते पर आ जाएगा? उसकी घृणा का लक्ष्य भी वही होगा जो हमारा है—पूंजी और सत्ता!

सवेरा हो चला था। पूरब में लाली छा रही थी। पांचू घर की तरफ बढ़ रहा था। पांचू के मन में मार्ग स्पष्ट और निश्चित था।

परेश रात ही में मर चुका था। मुंह अंधियारे उठकर पार्वती मां पांचू को पुकारने के लिए सीढ़ी तक गई। दरवाजे के पास कोई सिर झुकाए बैठा था। अंधेरा था, कुछ साफ न सूझा। पूछा—'कौन?'

'मैं।''

मंगला की आवाज इतनी गंभीर कभी नहीं सुनी। पार्वती मां सन्न रह गई—"छोटी बहू तुम! पांचू कहां है?"

छोटी बहू के यहां बैठे रहने का और मतलब ही क्या हो सकता है? पार्वती मां झपटकर आगे आई। मंगला उठकर खड़ी हो गई। बड़ी बड़ी

आखें ज़बर्दस्ती खुश रहना चाहती थी। मंगला की चिंता में गहरा मान समाया था—"मुझसे बिना कहे चले गए ?"

रात बड़ी देर बाद भी जब पाचू ऊपर नहीं आया तब मंगला को संदेह हुआ। तब तक मंगला अपनी 'बकुल फूल' के बारे में ही सोचती रही थी, उसके दिल में इस वक्त क्या बीत रही होगी ? ज्याठा मोशाइ सदा के ऐसे ही हैं। बड़ी बहू बिचारी ने जाने ऐसे कौन से पाप किए हैं ? जनम की दुखियारी रहा है बिचारी। भगवान भला एस किसीकी लाज लेना है ? मैं तो फिर जीती न उठती।

छाती जकड़ गई, रोंगटे खड़े हो गए, सारे शरीर में कपकपी सी दौड़ गई, मंगला की आखें भर आई। ध्यान तुरंत ही पाचू की तरफ दौड़ा, अभी तक नहीं आए ?

मंगला का दिल धक् से हो उठा। वह फिर बैठी न रह सकी। उतर-कर नीचे आई। मां की कोठरी बंद थी। बाबा अपनी कोठरी में पड़े थे। कहीं नहीं। दरवाजा देखा, खुला था। मंगला के पैरों तले धरती निकल गई। फिर सोचा, भाई के पीछे गए होंगे। मगर ज्याठा मोशाइ इस वक्त आपे में थोड़े ही हैं। लाख बेहया हो, मगर कोई भी समझदार आदमी एसा काम हरगिज़ नहीं करेगा। वह ज़रूर पागल हो गए हैं। इनके बस के नहीं हैं। कहीं कुछ उलटा-सीधा न हो जाए !

मंगला दरवाजे के पास पाचू के लौट आने की आस में बैठी रही। ज्यों ज्यों रात बीतती जाती, अपने आसुओं को रोकने के लिए वह पत्थर होती चली जाती। वह मान किए बैठी रही— मुझसे बिना कहे गए क्यों ? जब बड़ी देर हो गई तो उसके मन में अनायास शंका जाग उठी— 'ज्याठा मोशाई के पीछे नहीं गए। वे चले गए हैं—सदा के लिए घर छोड़कर चले गए हैं। अब नहीं आएंगे। उनको बड़ा सदमा पहुंचा है। पर मुझसे कहकर क्या नहीं गए ? साथ नहीं रखना चाहते थे न सही ! मुझसे बताकर तो जाते।'

पार्वती मां के पूछने पर मंगला कुछ न कह सकी। साथ न चाहने

पर भी उसका मां गला भर आया, आखें छलछला उठीं। वह बोला—ज्याठा मोशाई के जाने के बाद ही वहीं

इससे अधिक वह न बोल सकी। सुनकर मा चुपचाप खड़ी रही। वे पत्थर हो गई थी। एक बार राह पाकर मंगला के आगे फिर न सके।

सहसा बाहर की कुंडी खटकी। पार्वती मां दरवाज़े की ओर देखने लगी। मंगला ने बड़ी आशा के साथ झपटकर दरवाज़े की कुंडी खोल दी। मंगला और मा सहमकर पीछे हट गईं। शिबू ने नूरुद्दीन के साथ घर में प्रवेश किया।

मंगला दरवाज़े के पीछे हो रही थी। मां से शिबू की आखें मिलीं। मां ने फौरन ही मुंह फेर लिया। भारी आवाज में शिबू नूरुद्दीन से बोला—'चले आओ भीतर।' कहकर शिबू अन्दर की ओर बढ़ा। नूरुद्दीन पीछे पीछे चला।

पार्वती मां ने उन्हें अन्दर जाते हुए देखा। मंगला दरवाज़े के पास ही सहमी हुई खड़ी थी।

शिबू ने दालान में प्रवेश किया। मां की कोठरी सामने थी। बड़ी बहू बुत की तरह बैठी थी। परेश की लाश पास ही पड़ी थी। दीनू और तुलसी पास ही लेटे हुए थे।

शिबू सीधा कोठरी में पहुंचा। तुलसी सहमकर उठ बैठी। बड़ी बहू ने आख ऊपर की ओर उठाई। वह शिबू को देखने लगी। वह भावना और विचार शून्य हो चुकी थी। शिबू को देखकर वह न तो चौंकी न सहमी—बस देखती ही रही। शिबू ने शक्ति भर कड़ककर हुक्म दिया—'उठ!'

बड़ी बहू चुपचाप बैठी ही रही। उसकी निगाहें बराबर शिबू पर ही जमी रहीं।

मां अन्दर आ गई थी। शिबू से तेज़ आवाज़ में बोली—क्या आया है यहां?

शिबू ने मां को कोई जवाब न दिया, उनकी तरफ देखा भी नहीं। तेज़ी से बड़ी बहू का हाथ पकड़कर घसीटा और डपटकर बोला—'उठ!'

घसीट जाने के कारण बड़ी बहू औंधी होकर जमीन पर गिर पड़ी।

मा ने आगे बढ़कर बहू का हाथ छुड़ाने की चेष्टा करते हुए शिबू से कहा—"छोड़ दे उसे। जा मेरे घर से चला जा।"

अपने दोनों हाथों से पावती मा शिबू को पीछे ढकेलने लगी। शिबू ने जोर से मा को धक्का देते हुए कहा—"चल हट!"

मा गिरने लगी। दीनू नीचे ही पड़ा था। चीख मारकर तुलसी झपटी और मा को दोनों हाथों से पकड़ लिया। दीनू तो बच गया मगर तुलसी न संभल सकी। मा को लिए दिए ही धरती पर गिर पड़ी।

मा घबरा गई थी। वह जल्दी उठ भी न सकी। बड़ी बहू पत्थर की तरह खड़ी रही। तुलसी नीचे ही दबी हुई थी, उठने की कोशिश कर रही थी। शिबू भी एक सेकंड के लिए सहम गया था। नूरुद्दीन कोठरी के दरवाजे पर आ गया था। उसे देखकर शिबू होश में आया। बड़ी बहू का हाथ झटककर बोला—'उठती है कि नहीं।

बड़ी बहू ने एक बार बच्चों की तरफ देखा, मुह फेर लिया और चुपचाप उठ खड़ी हुई।

मा चारों तरफ से घिर गई थी। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

शिबू जल्दी से बड़ी बहू को घसीटता हुआ कोठरी के बाहर ले आया।

'लाओ चावल लाओ।' बड़ी बहू को नूरू की ओर ढकेलते हुए उसने कहा।

मा से इसका आशय छिपा न रहा। नूरुद्दीन को देखकर मा के मन में जो आशंका उत्पन्न हुई थी, वह ठीक निकली। नूरुद्दीन से शिबू के चावल मांगते ही मां काबू से बाहर होकर तड़प उठीं। तुलसी अभी भी उन्हें पकड़े हुए खड़ी थी। तुलसी के हाथ से छूटकर मा आगे आईं। वह हिंसक रूप से क्रुद्ध हो उठी थीं। उन्होंने उछलकर दोनों हाथों में शिबू का गला पकड़ लिया—'मैं तुझे मार डालूंगी। मैं तुझे जीता न छोड़ूंगी।'

पीछे से वार हुआ था। शिबू का गला घुट रहा था। नूरुद्दीन ने आग

बढकर शिबू का पावती मा क हाथा से मुक्त किया। शिबू हाफते हुए पुन शक्ति सचय कर मा की ओर झपटते हुए बोला—"साली, मुझे मारना चाहती थी। हैं!

नूरुद्दीन ने फौरन ही शिबू को पकड लिया—'ये क्या बचपना करत हो बडे ठाकुर! अरे चावल लो, खाओ पियो, मौज करो। ये भी अपने धरमशाले जाएगी, खाएगी, पिएगी, मौज करेंगी। गहना है कपडा है '

"नही!" पावती मा ने झपटकर दोनो हाथो से तुलसी और बडी बहू को दबोच लिया— तेरे घर म बहू बेटिया नहीं हैं! जा, उन्हें धरमशाले मे ले जा। जा, चला जा। निकल!"

पावती मा इतने जोर से चीखी कि उनकी आवाज उखडने लगी। शिबू ने बडी बहू को अपनी तरफ घसीटकर कहा—"य मेरी वस्तु है। मैं इसे बेचूगा।"

'नही! नही! हट!' मा हाफ हाफकर धीरे धीरे अपना विरोध जाहिर कर गफलत मे डूब रही थी। वह गिरने लगी। तुलसी के कधे पर उनका एक हाथ था। अपनी शक्ति को एकत्रित करने के लिए वह जूझ रही थी। तुलसी के कधे पर दबाव पडा और वह भी मा के साथ लडखडा कर बठ रही।

शिबू की आखें लाल हो रही थी। वह तेज होकर बोला— मैं इसे बेचूगा। मुझे भूख लगी है भूख! ला, चावल ला!"

बडी बहू पत्थर की तरह चुपचाप खडी थी। तुलसी मा के हाथ को अपने कधे पर अनुभव करते हुए उसके भार को महसूस कर रही थी। उसका चेहरा तमतमा उठा था। वह अदर ही अदर अपने स लड रही थी।

नूरुद्दीन ने गठरी खोली। शिबू चावल देखकर हिंसक आह्लाद के साथ उस ओर झपटा। तुलसी ने भी चावलो को बडी भूखी दृष्टि स देखा।

मा अभी भी अपने काबू म न आई थी। सास बड जोर से चल रही थी।

नूरुद्दीन ने दो मुट्ठी चावल निकालकर धरती पर रख दिए और

पोटली बाधने लगा। शिबू ने चौंककर देखा—"बस ?"

'और क्या करू, क्या खजाना भर दू। हड्डिया का ढाचा तो खडा है। हा, इसके लिए आध सेर तक दिया जा सकता है।" नूरुद्दीन ने तुलसी की तरफ देखकर कहा।

तुलसी ने उत्साहित होकर उठना चाहा। मा ने उसे दोनो हाथों से दबोच लिया और भिखारी की तरह दयनीय दृष्टि से शिबू को देखकर कहने लगीं—"बेटा, मेरी जान न ले। मेरी आबरू न ले बेटा। मैं तेरे पाव पडती हू।"

पावती मा कहती जाती और तुलसी को दबोचती जाती। आसुओं का वेग प्रबल हो रहा था।

शिबू का ध्यान इस ओर न था। बडी बहू के लिए इतने कम चावल मिल सकें इसी बात पर अपने सारे गुस्से का भार रखकर वह बडी बहू की ओर झपटा— 'साली तेरे दाम कम लगे।'

पास आने के पहले ही सूखी हडिडया की शक्ति का भरपूर तमाचा शिबू के मुह पर पडा। बडी बहू के हाथ से तमाचा खाकर शिबू चौंक उठा, क्रोध आया। नूरुद्दीन फौरन ही आगे बढकर बडी बहू के आगे आते हुए, शिबू के दोनों हाथ पकडते हुए जोर देकर बोला—' अब ये मेरी हो चुकी है, बडे ठाकुर।'

मजबूत हाथो म पडकर शिबू का गुस्सा सहम गया। बडी बहू का हाथ पकडकर नूरुद्दीन चला। मूक पशु की भाति बडी बहू एक मालिक से दूसरे के हाथो मे चली गई।

कल रात की घटना के बाद से बडी बहू एक शब्द भी नही बोली थी। परेश मर गया। बडी बहू ने एक नजर से उसे देखकर मुह फेर लिया था। सारी रात घुटना को हाथा स बाघे सिकुडकर वह बठी रही थी। फटी आखा से किसी एक तरफ देखते हुए वह वक्त गुजार रही थी। उसका ध्यान किसी ओर भी नहीं था। लाज खोकर वह भावशून्य हो गई थी। उसके चेतन मन मे केवल घृणा के सस्कार शेप थे, उसके चित्त की

सारी भूमिका उसी भय हो गई थी। धनी बहू बिक गई। उसके मन में परमलाभ का जरा भी भय न था। विवाह के बाद से आज तक शिबू के प्रति उसके मन में घृणा की ही धारा। शिबू ने अपनी पत्नी को सदा दासी की तरह ही मान लिया था। जूते का धूल ज्यों बार बार झाड़ी जाती है और फिर लिपट जाती है—धनी बहू के लिए पति के चरणों के सिवा दूसरी गति ही नहीं थी। शिबू के अत्याचारों का सिलसिला धनी बहू को अपनी परवशता के प्रति दिन रात घृणा उत्पन्न कराता रहता। शिबू का भय उसपर हरदम छाया रहता था। दो मुट्ठी चावलों के बदले में बिक जाने के बाद वह पूर्ण रूप से भय मुक्त हो गई थी। शिबू को तमाचा मारने का साहस इसीकी प्रतिक्रिया थी। धर्मपत्नी सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी आदि विशेषणों की अधिकारिणी धर्म-पुराण पूजिता नारी व्यवहार में पुरुष की तुच्छ से तुच्छ दासी बनकर, अपने स्वामी द्वारा प्रतिदिन होनेवाले अत्याचारों की आदी हो गई थी। अत्याचारों के प्रति नारी का भय अपनी समस्त क्रिया प्रतिक्रिया की कभी आदी था सह चुकने के बाद निर्लज्ज हो चुका था। एक प्रकार का जीवन बिताते बिताते नारी जीवन का रस सूख चुकी थी। फिर दासता के रूप में ही सही, लेकिन नारी के जीवन में नया परिवर्तन आ रहा था, फिर प्रगति हो रही थी। एक क्षण के लिए ही सही, किंतु दासता की घोर अगति में परिवर्तन द्वारा गति का आभास पाकर नारी ने नया बल पाया था। स्वामी (पुरुष) के रूप में भय और घृणा को तमाचा मारकर नारी ने विद्रोह किया विद्रोह की भावना का जोश फिर नई अगति की ओर बढ़ा।

नूरुद्दीन और बड़ी बहू दालान पार कर दरवाजे की ओर बढ़ रहे थे। अपनी बेबसी में जकड़ी हुई पार्वती मां तुलसी को अपनी बांहों में पूरा बल लगाकर कसती जा रही थी।

चलते हुए नूरुद्दीन ने इशारे से तुलसी को अपनी तरफ बुलाया। उसके इस आमंत्रण में एक विचित्र मादकता थी, लालच था।

दादी का दादा को तमाचा मारना, उनका नूरुद्दीन के साथ आगे

बढना और नूरद्दीन का इशारा तुलसी को खुले विद्रोह के लिए प्रेरित कर रहा था। तुलसी मा के शरीर से चिपककर दबी जा रही थी। रो रोकर पावती मा गुहार कर रही थी— अरे मेरी आबरू गई! हाय! सुनते हो! तुम्हारे बेटे ने मेरी आबरू ले ली!'

"मैं भी जाऊगी।' सहसा तुलसी चीख उठी और पूरी ताकत लगाकर मा की बाहों के बंधन को तोडकर, उन्हे धक्का देते हुए तुलसी नूरद्दीन की तरफ धाई।

पावती मा का रुदन सहसा स्तम्भित हो गया। वह आखें फाडकर तुलसी को देखने लगी। तुलसी के पास जाने के लिए पावती मा के प्राण शरीर का मोह त्यागकर निकल आए।

शिबू चावलों के पास बैठा हुआ, पहली मुट्ठी फाकने जा रहा था वह चौंककर तुलसी को देखने लगा।

नूरद्दीन बड़ी बहू का हाथ पकडकर खडा हो गया। तुलसी के लिए उसने मुस्कराकर दूसरा हाथ बढा दिया।

शिबू कच्चे चावल चबाना छोडकर सहसा उठकर लपका। नूरद्दीन अपने बचाव के लिए सावधान हो गया। शिबू ने पास आकर गिडगिडाते हुए कहा— नूरद्दीन इसके चावल ?"

नूरू भभका —' किसके चावल जी ?"

उगली के इशारे से तुलसी को बताकर गिडगिडाते हुए शिबू चावल मागने लगा।

नूरद्दीन दोनों औरतों के साथ दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए बोला— 'अब कैसे चावल ? ये तो अपनी खुशी से जा रही है।"

तुलसी खुशी से जा रही थी। उसने सुन रखा था कि धरमशाले में सिर्फ जवान औरतें ही भरती की जाती हैं। वहा उन्हे खाने को मिलता है पहनने को मिलता है बडा सुख मिलता है। तुलसी भी खाना चाहती है, कपडा चाहती है और वह सुख चाहती है, जो उसे अभी तक नहीं मिला, जिसकी वह बरसों से कल्पना करती आई है।

नूरुद्दीन उसे आगे बढ़ाकर ले चला।

शिबू रोता हुआ बच्चों की तरह मचलता— मेरा चावल दो!

चलो! चलो! जरा रुककर नूरुद्दीन ने एक बार फिर से पर तक शिबू को देखा और हँस पड़ा। बोला—' अबे ये टापमिनार शिवाला किस है? भाग जा एक घूँसा मार दूँगा तो बस, बच्चे गर गे फट जाएगा। चल बैठ पर म। उल्लू को कुछ नहीं था।

मंगला अपने कमरे की खिड़िया पर छिपी हुई खड़ी थी। नूरुद्दीन के दलहीज म आते ही उसने जल्दी से अपने कमरे म जाकर भीतर से किवाड़ बंद कर लिए।

मंगला खिड़की से बाहर देखने लगी। धरमशाले वाला 'बकुल फूल' और दीदी मनि को लिए हुए चला जा रहा था।

मंगला जिंदगी के सूनेपन म खोई हुई खड़ी रही।

नूरुद्दीन तुलसी और बड़ी बहू को लेकर चला गया। नूरुद्दीन की डाट खाकर, अपनी असहायावस्था पर शिबू को बड़ी खिसियाहट छूटी। उसके होंठ काँपने लगे, आँखें बरस पड़ी। शिबू रोता जाता और बीच-बीच म चावल की फंकी भी लगाता जाता था। मा की तरफ देखा वह जमीन पर झुकी हुई पड़ी थी। शिबू रोता हुआ मा के पास आया। मा का सिर उठाकर देखा, मुँह खुला हुआ था, आँखें फटी की फटी रह गई थीं। बचपन से शिबू का यही एक सहारा था। जब उसे दुनिया की गोद म जगह न मिलती तब मा के पास आता। इस आश्रय के प्रति उसका विश्वास इतना गहरा था कि ऊपरी तौर पर वह उसकी परवाह करना छोड़ चुका था। मा को मरी हुई देखकर वह घबरा गया। उसकी आँखें उमड़ पड़ी। वह अपनी मा की लाश स चिमट गया। सहसा मा की लाश को जमीन पर लिटाकर उसने मा का खुला हुआ मुँह देखा। फिर अपनी आँखें पोंछी और लपककर सारा चावल मुट्ठी म उठा लिया। मा के खुले हुए मुँह म चावल डालकर, शिबू अपनी रूठी हुई मा को मना लेना चाहता था। फिर मृत्यु की चेतना हुई। शिबू का हाथ रुक गया। खोए हुए बच्चे की तरह वह

चारो ओर आखें फाड़ फाड़कर देखने लगा। कोठरी म दीनू पड़ा था, परेश पड़ा था। पिता का प्रेम आसुओ के साथ उमड़ रहा था। शिवू उठकर गया। देखा, परेश मर चुका था, दीनू के दिल की धड़कन धीमी धीमी चल रही थी, वह कुछ ही क्षणों का मेहमान था। शिवू कुछ देर तक आसुओ भरी आखो से उसकी तरफ देखता रहा। अचानक उसने बच्चे के अधखुले होठो म थोड़े से चावल डाल दिए और उठ खड़ा हुआ। वह बाबा की कोठरी के सामने आया। बाबा कोठरी के दरवाज़े का सहारा लिए खड़े थे। शिवू चुपचाप उनकी तरफ देखता रहा। सहसा उसकी मुट्ठी खुली। थोड़े से चावल बच रहे थे। हथेली झुकाकर, बाबा की कोठरी के सामने चावल गिराने लगा—उसकी नजरें बाबा के चेहरे पर ही रही। देखते-देखते वह चीख मारकर रोता हुआ घर से भागा।

खिड़की से मगला ने देखा, ज्याठा मोशाइ चीखकर बड़ी तेज़ी के साथ भागते चले जा रहे थे।

मगला की आखें भर आइ। शिवू उसके पति का भाई था। शिवू की आड म मगला को अपने पति के चले जाने पर रोना आ रहा था।

मगला अपने विश्वास को तोड़ना नहीं चाहती थी। वह रोकर अपना अमगल नही करना चाहती थी। उसके मन म कोई और दकर कह रहा था—"वह आएग। मुझे छोड़कर वह कसे रह सकते हैं।

आखें पोछकर मगला नीचे उतरी।

बाबा अपने दोनो हाथ फलाए दालान म कुछ टटोलते हुए आगे बढ रहे थे।

मगला ने आगे बढकर बाबा का हाथ पकड लिया।

बाबा झिझके। स्त्री का हाथ पहचाना—'छोटी बहू!"

ब्याहकर आई तब से आज तक कभी बाबा से बात नही की थी, मगला न कवल छोटी सी हू कहा।

कठोर सयम करते हुए भी बाबा का गला भर आया। गदगद होकर बोले— मा मगला! जब तू है तो जगत् का कल्याण अवश्य होगा।'

मंगला चुपचाप आंसू बहाती रही। मंगला के सिर पर हाथ फेरते हुए बाबा बोले—"पाप का कोई अमंगल नहीं होगा बेटी। वह एक दिन अवश्य आएगा। अवश्य आएगा। इसी विश्वास के बल पर ही मेरे प्राण मुक्ति पा रहे हैं।'

मंगला ने फौरन ही गले में आंचल डालकर बाबा के चरण छुए। उसके आंसू उनके चरणों पर टपक रहे थे। बाबा रुंधे हुए कंठ से बोले—"पगली न हो मां। चल उठ तो, मुझे अपनी मां के पास ले चल।

मंगला बाबा को सहारा देकर पार्वती मां की लाश के पास ले गई। मंगला का हृदय फटा जा रहा था। बाबा बैठ गए। पार्वती मां के सिर पर हाथ फेरते हुए बाबा ध्यानमग्न हो गए। अंधी आंखें छलछला उठीं। आवेश में आ रुंधे हुए कंठ से बाबा ने पाठ करना आरंभ किया

का तव कान्ता कस्ते पुत्र संसारोऽयमतीव विचित्र।
कस्य त्व वा कुत आयातस्तत्त्व चिंतय तदिह भ्रात॥
भज गोविन्द, भज गोपाल, गोविंद! गोपाल!! गोपाल!!!

बाबा पाठ कर रहे थे, मंगला का हृदय फटा जा रहा था। बाबा जब पाठ करते थे, मंगला और उसकी बकुल पून मुस्कराया करती थी और पार्वती मां को चिढ़ाकर, झुंझलाकर अंत में बाबा की कोठरी में जाना ही पड़ता था। बाबा का वह संन्यास आज सत्य को चरितार्थ कर रहा था। स्वर उखड़ने लगा, क्रमशः क्षीण होने लगा और अंत में होठों का कंपन भी रुक गया। मृत्यु को देखते देखते मंगला यद्यपि कठोर हो गई थी, फिर भी उसे इस समय भय लग रहा था। संसार में वह अकेली रह जाएगी। बाबा की आखिरी सांस तक घर में एक से दो का सहारा है। मंगला एक टक लगाए बाबा के शरीर में प्राणों की धुकधुकी को देख रही थी। सांसें जल्दी जल्दी चल रही थी—वेग क्रमशः शिथिल पड़ने लगा—सांसें टूट-टूटकर चलने लगी। हर सांस की गति के बाद इति का भ्रम होने लगा—और फिर अंत भी आ गया।

मंगला अकेली रह गई। घर में चार लाशें पड़ी थी। घर खाली था।

हर तरफ उसकी नजर जाती—ईंट ईंट मुर्दा मालूम पड़ रही थी। इस घर का विगत जीवन इस समय उसके ध्यान में नहीं था, भविष्य को वह देखना चाहती थी और वहीं वह निरुपाय थी, निस्सहाय थी। जी घुटकर रह जाता था।

जीवन के लिए मगला को कहीं से भी प्रेरणा नहीं मिल रही थी, फिर भी वह मरना नहीं चाहती थी। एक बार 'उनको' देखे बिना उसे मरकर भी चैन नहीं आएगा। मन घबराता भी था। कब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, कब आएगे? परतु मन अपनी एकमात्र आशा और विश्वास के साथ जीवित रहना चाहता था—जब भी आए, वह आएगे। विकलता अति तीव्र गति से अपनी चरम सीमा पर पहुचकर सासो से टकराने लगी। जीवन की इच्छा कठोर होकर अपनी रक्षा करने लगी। स्मृति म केवल 'उनकी' प्रतीक्षा का सस्कार-मात्र शेष था। मगला विचारशून्य, भावशून्य थी। मगला स्तब्ध थी

उसका शरीर हिला। चेतना ऊपर उठने लगी। अतर के स्तर मे उनका अति प्रिय स्वर गूज उठा, क्रमश सुनाई पडने लगा। अदर ही अदर मगला को भ्रम की चेतना हुई और उससे विकलता जागी। स्वर अधिक स्पष्ट हुआ।

मगला! मगला!!"

आखें यद्यपि खुली थी किंतु पथरा-सी गई थीं। देखने का अतहठ तीव्र से तीव्रतम हुआ। आकृति धुधली से स्पष्ट हुई। मगला ने देखा—वह सामने खडे थे, उनकी गोद म बच्चा था जो रो रहा था। पति को देखते ही सतोष के अतिरेक से मगला की आखो म आसू छलछला आए। अवरुद्ध कठ से स्वर लडखडाकर फूटा—'आ गए!'

पाचू ने देखा, मगला फिर झकोला खा रही है। पाचू को कुछ न सूझा। उसने जल्दी से मगला की गोद म बच्चे को डाल दिया और उसे पकडकर बैठ गया।

मगला अपने से लडकर सावधान हुई। उसने गोद फलाकर बच्चे को

ठीक तरह से सभाला, फिर उसे गौर से देखा। पाचू कहने लगा—"इसे *बचाना होगा, मगला! इसे बचाने के लिए ही मैं तुम्हारे पास लाया हू।"*

मगला ने बच्चे को गोद म चिपका लिया। बच्चे के सम्बन्ध म कोई प्रश्न पूछन क पहले उसके मन म पाचू को घर की बात बतान की इच्छा हो रही थी। आखो म आसू भरकर मगला ने बाबा और मां की लाशों की तरफ देखा।

पाचू ने पहले ही सब कुछ देख लिया था। घर म प्रवेश करते ही पहली नजर डालने के साथ ही साथ उसे अपने को मजबूत बनाना पडा था। मगला बैठी थी। उसने मगला को आवाज दी। मगला न बोली। वह पास आया दो आवाजें दी। मगला की आखें खुली हुई थी। पाचू को विश्वास हुआ, वह जीवित है, नाक के पास हाथ ले जाकर सास को महसूस किया। *उसे आश्चर्य हुआ मगला उसे देख क्या नहीं पाती*, उसकी आवाज क्या नही सुन पाती? उसने मगला को हिलाना शुरू किया, कई आवाजें दी। जब मगला को होश आया, तब उसने पाचू को देखा उसकी आखो म आसू आए और वह बोली। पाचू न तब सताप की एक गहरी सास ली थी। बच्चे को उसकी गोद मे डाल देने के बाद जब मगला ने अपने को सभालकर बच्चे को सभाल लिया तब उसे विश्वास के साथ साथ प्रसन्नता भी हुई। फिर जब वह बाबा और मा की लाशो को देखने लगी तो पाचू घबराया—दु ख का दौरा कही जीती बाजी फिर न हरा दे! उसने मगला के दिल से मृत्यु का बोझ हटाना चाहा। बडे धय के साथ उसने कहा—'जो होना था, वह हो गया। अब इसे सभालो। इसे *बचाओ! इसे बचान के लिए ही हम-तुम जिएगे।'*

अविश्वास के वातावरण म जीवन के प्रति विश्वास की इस दृढता न पति और पत्नी, दोना को ही, अपूव धय और बल दिया। स्वय पाचू को भी अपनी इस बात द्वारा अपने अन्दर की अदमनीय, चिर विजयी विकासमयी शक्ति का परिचय मिला। प्रलय म सष्टि के बीजाकुर फूटने लगे।

पाचू बोला—"मैं सब प्रबंध करने जाता हूं। बच्चे की जीवन रक्षा और जीवन या मृत्यु के प्रति ऋण भी उतारना है।" उसने सशंकित स्वर में पूछा—"तुम घबराओगी तो नहीं?"

पति को आश्वासन देते हुए मंगला ने गर्दन हिलाई, कहा—"अब नहीं।" फिर ममता भरी दृष्टि से वह अपनी गोद में सोते हुए बच्चे को देखने लगी।

□□□